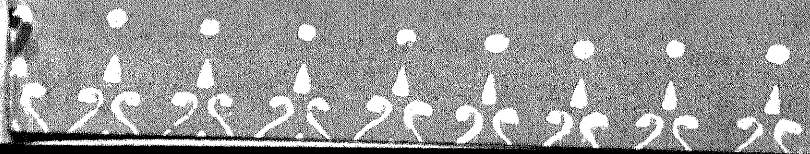
विवरण पत्र



अमर कथाशिल्पी श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव-ग्रन्थावली

डा० धीरेन्द्र [illegible] संपादक



जिज्ञासा प्रकाशन
देवनगर — कानपुर

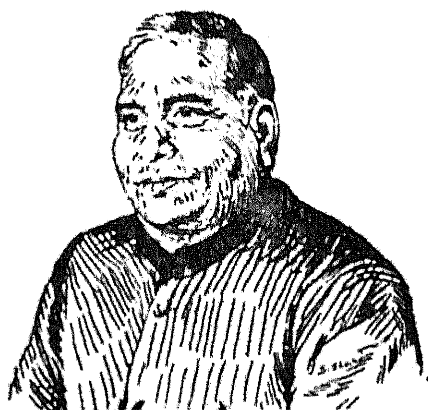
अमर कथाशिल्पी श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव-ग्रन्थावली

४

मूल्य : आठ रुपया

पुस्तक — व्यावर्तन (उपन्यास)
लेखक — प्रतापनारायण श्रीवास्तव
प्रकाशन-काल — मई १९६४
प्रकाशक — जिज्ञासा प्रकाशन, कानपुर
मुद्रक — अनुपम प्रेस, कानपुर

VYAVARTAN (Novel); Written by Pratap Narain Srivastava
Published by JIGYASA Prakashan, Deonagar, Kanpur
Price Rs. 8.00



अमर कथाशिल्पी श्री प्रतापनारायण श्रीवास्तव : एक परिचय

अमर कथाशिल्पी श्रीप्रतापनारायणजी श्रीवास्तव आधुनिक हिन्दी-कथा-साहित्य के प्रतिष्ठापकों, परिष्कारकों[1] और संवर्धकों में हैं। प्रेमचन्दजी ने ग्राम्य जीवन और निम्नवर्गों का सफल चित्रण करके अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया और श्रीवास्तव जी ने नागरिक जीवन और उच्च वर्गों के क्रिया-कलापों का यथार्थ तथा सम्यक् अंकन करके भावी कलाकारों का मार्ग-दर्शन किया। वह हिन्दी के शीर्षस्थ और अन्यतम कथाशिल्पियों में हैं। सुधी समीक्षकों की दृष्टि में श्रीवास्तव जी जेन आस्टीन[2] अलेक्जेण्डर ड्यूमा, विक्टर ह्यूगो आदि कथाकारों के समक्ष प्रतिष्ठित होते हैं।

1 He (Pratap Narain Srivastava) has achieved an organic unity which is definite advance on the techanique of Premchand. —Dr. Indra Nath Madan, Modern Hindi Literature, P. 172

२ डा० शिवनारायण, हिन्दी-उपन्यास, पृ० २४५

श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव का जन्म [illegible] सितम्बर, सन् १९०४ ई० को हरवंश मोहाल, कानपुर में हुआ। आप अपने माता-पिता की एक मात्र सन्तान थे। माता मथुरादेवीजी का देहान्त आपकी पन्द्रह वर्ष की अवस्था में हुआ तथा जब आप चौबीस वर्ष के थे, तब पिता श्रीमन्नारायण श्रीवास्तव दिवंगत हुए। आपने सन् [illegible] में क्राइस्ट चर्च कालेज, कानपुर से बी०ए० तथा सन् [illegible] में लखनऊ से एल-एल० बी० की उपाधि ग्रहण करने के पश्चात् सन् [illegible] में तत्कालीन [illegible] राज्य में न्याय-विभाग में पद-ग्रहण किया। बीस वर्षों तक न्यायाधीश के पद पर कार्य करने के पश्चात् सन् [illegible] में स्वेच्छा से अवकाश ग्रहण किया और स्थायीरूप से कानपुर में आ गये। हिन्दी की सेवा की दृष्टि से मित्रों के आग्रह पर सन् १९४९ से ५२ तक 'कानपुर विकास बोर्ड' में हिन्दी-अधिकारी के रूप में कार्य किया। तत्पश्चात् विगत बारह वर्षों से कानपुर में ही रहकर पूर्णरूप से साहित्य-सृजन में संलग्न हैं।

श्रीवास्तवजी ने अपने छात्र-जीवन से ही साहित्य-सृजन प्रारम्भ कर दिया था। आपकी 'बलिदान' नामक सबसे पहली कहानी सन् १९२० में 'हिन्दी-मनोरंजन' नामक पत्र में प्रकाशित हुई, जिसका अनुवाद गुजराती में हुआ। आपका पहला कहानी-संग्रह 'निकुंज' सन् १९२२ में प्रकाशित हुआ तथा पहला उपन्यास 'विदा' सन् १९२४ में लिखा गया, और सन् १९२७ में प्रकाशित हुआ। अब तक आपकी निम्नांकित पुस्तकें[1] प्रकाशित हो चुकी हैं :

● उपन्यास

१. विदा, सन् १९२७, प्र०, गंगा पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ
२. विजय, सन् १९३६, 　　,,　　,,　　,,
३. विकास, सन् १९३८, 　　,,　　,,　　,,

१ यहाँ पर प्रकाशन-काल और प्रकाशकों के नाम पुस्तकों के प्रथम संस्करण के ही दिये गये हैं।

४. बयालीस, सन् १९४७, प्र०, ज्ञान-मण्डल लि० बनारस
५. विसर्जन, सन् १९४९, प्र०, आत्माराम एण्ड सं० दिल्ली
६. बेकसी का मजार सन् १९५७, प्र०, भारती-प्रतिष्ठान, कानपुर
७. विषमुखी, सन् १९५८, प्र०, ,, ,, ,,
८. वेदना, सन् १९५९, प्र०, भारती-साहित्य-मन्दिर, दिल्ली
९. विश्वास की वेदी पर, सन् १९५९ प्र०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली
१०. वन्दना, सन् १९६१, प्र०, भारती-साहित्य-मन्दिर, दिल्ली
११. वंचना, सन् १९६२, प्र०, राजपाल एण्ड सं० दिल्ली
१२. विनाश के बादल, सन् १९६३, प्र०, हिन्द पाकेट बुक लि० दिल्ली
१३. विपथगा, सन् १९६४, प्र० जिज्ञासा प्रकाशन, कानपुर
१४. बन्धनविहीना, सन् १९६४, प्र०, ,, ,, ,,
१५. व्यावर्तन, सन् १९६४, प्र०, ,, ,, ,,

कहानी-संग्रह[१]

१. निकुंज, सन् १९२२, प्र०, हिन्दी-गल्प-मालाकार्यालय, काशी
२. आशीर्वाद, सन् १९३८, प्र०, गंगा-पुस्तक-माला-कार्या०, लखनऊ
३. दो साथी, सन् १९५०, प्र०, भीष्म एण्ड ब्रदर्स, कानपुर
४. नवयुग, सन् १९५३, प्र० सीता प्रकाशन, कानपुर
५. विधाता का विधान, सन् १९६१, प्र०, गंगा पुस्तक-माला कार्यालय, लखनऊ

एकांकी-संग्रह[१]

१. विवाह-विभ्राट, सन् १९४८, प्र०, हिन्दिया प्रकाशन, दिल्ली

१ अधिकांश समीक्षकों ने श्रीवास्तव जी के उपन्यासों पर समीक्षा लिखते हुये, 'निकुन्ज', 'नवयुग', 'आशीर्वाद' का उपन्यास के रूप में उल्लेख किया है, किन्तु ये उपन्यास नहीं कहानी-संग्रह हैं। समीक्षकों को भूल-सुधार कर लेना चाहिए।

अनुवाद

१. पाप की ओर, सन् १९[illegible], प्र०, [illegible]पुस्तक-माला-कार्यालय, लखनऊ

[यह पुस्तक जापानी उपन्यासकार जुन[illegible]चिरो टानाजाकी के जापानी भाषा के उपन्यास 'ओ मुइया कोरोसो' के अंग्रेजी संस्करण 'स्प्रिग टाइम केस' का हिन्दी रूपान्तर है ।]

उक्त पुस्तकाकार प्रकाशित साहित्य के अतिरिक्त, आपका विपुल साहित्य पत्र-पत्रिकाओं में बिखरा पड़ा है, जिसमें कहानियाँ, कवितायें, निबन्ध आदि हैं । इस सामग्री में आप द्वारा 'पोंगा हज़्के' उपनाम से लिखे गए हास्य-व्यंग्य-निबन्ध विशेष महत्वपूर्ण हैं, जो शीघ्र ही सम्पादित करके पुस्तकाकार प्रकाशित किए जा रहे हैं ।

श्रीवास्तव जी की रचनायें मुख्यतः इन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं :

हिन्दी-मनोरञ्जन (कानपुर), इन्दु (काशी), मर्यादा (प्रयाग), माधुरी (लखनऊ), सुधा (लखनऊ), प्रभा (कानपुर), श्रमार (कानपुर), कर्मयोगी (प्रयाग), गुलदस्ता (प्रयाग), माया (प्रयाग), प्रताप (कानपुर), सारथी (दिल्ली), चाँद (प्रयाग), सुमित्रा (कानपुर), सविता (कानपुर), सहयोगी (कानपुर) मनु (कानपुर), सारिका (बम्बई) आदि ।

समय-समय पर आल इण्डिया रेडियो से अनेक वार्तायें भी प्रसारित हुई हैं । अनुमानतः, श्रीवास्तव जी करीब बीस हजार पृष्ठों का साहित्य-सृजन कर चुके हैं । आज, आयु की साठ सीढ़ियाँ पार कर चुकने के बाद भी, वे सृजन-क्षेत्र में पूर्ण क्रियाशील और जागरूक हैं ।

श्रीवास्तव जी के अध्ययन और अनुभव का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक रहा है । आपने हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी और बंगला के साहित्य का विशेष अध्ययन किया है तथा उर्दू और संस्कृत के साहित्य का भी पर्याप्त

परिचय है। इतिहास, अध्यात्म, दर्शन, विज्ञान, ललित साहित्य और समसामयिक राजनीति आपके विशेष प्रिय विषय हैं। न्यायाधीश के रूप में आपको विविध प्रकार के व्यक्तियों, परिवारों और सामाजिक समूहों के असाधारण और जटिलतम पक्षों का सूक्ष्म रूप से अध्ययन करने का विशेष अवसर प्राप्त हुआ है।

वैचारिक दृष्टि से श्रीवास्तव जी किसी वाद की सीमा में संकुचित नहीं हुए हैं। यदि अनुसन्धानकर्ता उन्हें किसी वाद की रज्जु में संग्रथित ही करना चाहेंगे, तो वह मानवतावाद ही कहा जा सकेगा। जीवन-दर्शन के रूप में वे गांधी-दर्शन के शाश्वत और सार्वभौमिक जीवन-मूल्यों से विशेष प्रभावित हैं। फलतः विराट राष्ट्रीयता का स्वर उनकी समस्त रचनाओं में मुखरित रहा है। साहित्यिक प्रवृत्तियों में प्रकृतिवादी यथार्थ उन्हें ग्राह्य नहीं हो सका है तथा 'प्यूरिटन' आदर्श सदा अव्यावहारिक प्रतीत हुआ; गत्यावरोधक रूढ़ियों से उन्होंने विद्रोह किया है तथा लोकमंगलकारी परम्पराओं का प्रबल समर्थन किया है। नवीनता और प्रयोगशीलता उन्हें सदा प्रिय रही है, किन्तु प्रयोग उनका साध्य कभी नहीं रहा है। उनकी कला-कृतियों में मनोविश्लेषण की प्रक्रिया प्रकृत रूप में उपलब्ध हुई है, किन्तु फ्रायड के सिद्धान्तों का बलात् औपन्यासीकरण नहीं है; उनकी कला सामाजिक न्याय-समानता का निश्चित सन्देश अवश्य देती है, किन्तु मार्क्सवादी दुराग्रह का चीत्कार कहीं नहीं है; परार्थवादी सांस्कृतिक मूल्यों की अन्तःसलिला अपनी संजीवनी शक्ति से उनके सम्पूर्ण साहित्य को संपुष्ट अवश्य करती है, किन्तु चिन्तन का अवगुण्ठन कला के सौन्दर्य को आच्छादित कहीं नहीं करता है, अपितु सौन्दर्य में वृद्धि ही करता है। प्रेमचन्द-युगीन कथाकारों में सम्भवतः केवल प्रतापनारायण जी श्रीवास्तव ही ऐसे कलाकार हैं, जो 'वादों' के जलयानों में लटक कर साहित्य-सिन्धु के संतरण का प्रयास न करके कलातरी के सहारे साहसिक मार्ग से ही अपने लक्ष्य की ओर गतिशील हुए हैं।

श्रीप्रतापनारायण जी श्रीवास्तव का कलाकार अपने युग और समाज के प्रति सर्वाधिक संवेदनशील रहा है। उनका साहित्य आधुनिक काल की सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय गतिविधियों का अविकृत दर्पण है। यदि कोई शोध-कर्ता उनके उपन्यासों का इस क्रम—बेकसी का मजार, विदा, विजय, विकास, बयालीस, विसर्जन, वन्दना, वेदना, विश्वास की वेदी पर, वचना, विनाश के बादल—से अनुशीलन करे, तो उसे स्पष्ट रूप से सन् १८५७ से १९६४ तक की भारत की सांस्कृतिक और राष्ट्रीय प्रवृत्तियों तथा परिवर्तन-प्रक्रिया का क्रमबद्ध, समग्र, संश्लिष्ट और कलात्मक चित्र प्राप्त होगा। यह सांस्कृतिक निरूपण श्रम-साध्य और प्रयासजन्य न होकर स्वाभाविक और अचेतन रूप से हुआ है। इस तलस्पर्शी प्रयोजन और जीवन-मर्म की उपलब्धि या सिद्धि कथा-तत्व और सौन्दर्य भावना को समाहृत किये बिना, आनुषंगिक रूप से हुई है। वस्तुतः राष्ट्रीय चेतना और उदात्त सामाजिक मूल्यों का तत्व उनके सम्पूर्ण कथा-साहित्य में अप्रतिहत वेग से उसी प्रकार प्रवहमान है, जैसे मनुष्य—शरीर में सहस्रों धमनियाँ और शिराएँ अदृश्य रूप से रक्त-संचालन करती हुई शरीर के बाह्य सौन्दर्य की संवृद्धि तो करती ही है, साथ ही साथ शरीर को भी सशक्त करती है। श्रीवास्तव जी की कला की यह विशेषता उन्हें महान राष्ट्रीय कथाकार के पद का अधिकारी बना देती है।

श्रीवास्तव जी कथा-शिल्प की दृष्टि से हिन्दी—कथाकारों में अग्रिम पंक्ति में समासीन हैं। उनके उपन्यासों की सावयवी संश्लिष्टता का गुण विशेष उल्लेखनीय है। वह उपन्यास में विभिन्न तत्वों का उपयोग सफल रसायनशास्त्री की भांति काँटे से तुली-तुली मात्रा में करते हैं और अपनी तेजस्वी प्रतिभा की आंच से सिद्ध साहित्यिक रसायन की सृष्टि करते हैं। इसीलिए उन्होंने सदा अखण्डित और सर्वांगीण कलाकृतियों को जन्म दिया है; और विश्रृंखलता तथा असम्बद्धता के प्रचलित दोष से सर्वथा मुक्त रहे हैं। उनका प्रत्येक उपन्यास सुसंगठित और सन्तुलित

गद्यात्मक महाकाव्य है—उनमें महाकाव्यों की प्रबन्धात्मकता की सम्पूर्ण गरिमा उद्घाटित हुई है। श्रीवास्तव जी के उपन्यासों की लोकप्रियता और महनीयता का यही आधार है।

श्रीवास्तव जी के उपन्यासों की विषय-वस्तु अत्यन्त व्यापक और विस्तृत रही है। वैयक्तिक क्रिया-कलापों से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं तक को उन्होंने अपने कथानकों में समाविष्ट किया है, व्यष्टि की समस्याओं से लेकर सार्वभौमिक समस्याओं तक को रूपायित किया है। भारतीय जन-जीवन की अधिकांश विघटनकारी समस्याएँ उनकी लेखनी से छूटने नहीं पायी हैं और रंग-भेद, दासता, पूँजीवाद, अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष आदि विश्वव्यापी समस्याओं ने भी उनके उपन्यासों में यथेष्ट स्थान पाया है। सामाजिक व्याधियों के सूक्ष्म पर्यवेक्षण और विश्लेषण के कारण उनकी कृतियाँ समाजशास्त्र के भावी शोधकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण और रोचक विषय बन गई हैं तथा विषय-वस्तु की असीमित और असंकुचित पृष्ठभूमि के कारण सार्वभौमिक साहित्य का अपरिहार्य अंग हो गई हैं।

श्रीप्रतापनारायण जी श्रीवास्तव इस प्रचार-युग में मौन-मूक रह कर विगत तैंतालीस वर्षों से साहित्य-साधना कर रहे हैं। लेखन उनका व्यवसाय कभी नहीं रहा है; अन्तःप्रेरणा से निर्देशित होकर ही उन्होंने साहित्य-सृजन का कार्य किया है। उनके वैयक्तिक जीवन और साहित्य में अन्तर नहीं है। निजी जीवन में वह सुसंस्कृत, सच्चरित्र, कर्मनिष्ठ, उदात्त, संवेदनशील, सहृदय और संतुलित व्यक्ति हैं और उनके वैयक्तिक जीवन की इन मान्यताओं और मूल्यों से उनका सम्पूर्ण साहित्य सम्पृक्त है। उन्होंने व्यक्ति और समाज के श्रेय और प्रेय में कोई भेद-करण नहीं किया है। सम्भवतः; इसीलिए उनके उपन्यास हिन्दी के स्थायी उपन्यास-साहित्य का अपरिहार्य अंश बने हुए हैं। चालीस वर्षों पूर्व लिखे गये उनके उपन्यासों में आज भी आकर्षण, नवीनता और सौन्दर्य की अनुभूति होती है, तथा उनका नया साहित्य भी ओज और तेज से संचालित है, नूतन सौन्दर्य और माधुर्य से ओतप्रोत है।

अमर

श्रीवास्तव जी का साहित्य हिन्दी-जगत् में विशेष लोकप्रिय हुआ है। आपके 'विदा' उपन्यास की ही पचास हजार से अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं तथा अन्य कृतियों के भी अनेक संस्करण प्रकाशित हुए हैं। आपके अनेक उपन्यासों के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुए हैं। विशेषतः श्रीमती अम्बिका अम्बाट द्वारा किए गए 'विदा' और 'विषमुखी' के मलयालम अनुवाद तो दक्षिण में अत्यधिक समादृत हुए हैं। आपकी अनेक कृतियाँ काशी, गुजरात, पंजाब आदि विश्वविद्यालयों के स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में रह चुकी हैं। पाँच कृतियाँ विभिन्न सरकारों से पुरस्कृत हुई हैं। कथा-साहित्य के मूर्धन्य समीक्षकों ने आपके कृतित्व का समुचित मूल्यांकन किया है।

ऐसे महान राष्ट्रीय उपन्यासकार श्रीप्रतापनारायण जी श्रीवास्तव के सम्पूर्ण साहित्य को पाठकों और शोध-कर्ताओं के लिए सहज सुलभ करने की दृष्टि से 'अमर कथाशिल्पी श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव-ग्रंथावली' का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें लगभग पच्चीस भागों में उनके समस्त साहित्य को प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा। प्रस्तुत पुस्तक इसी प्रयास का परिणाम है।

इस व्ययसाध्य और श्रमसाध्य विशाल प्रकाशन-कार्यक्रम का शुभारम्भ साहित्यानुरागी श्री रामकुमार जी मिश्र के अदम्य उत्साह और अनवरत अध्यवसाय से ही सम्भव हो रहा है। इसकी आकर्षक रूप-सज्जा कलाप्रेमी श्री बसन्तजी कपूर की परिष्कृत अभिरुचि का परिणाम है। इस अनुकरणीय कार्य के लिए उक्त दोनों महानुभाव हमारे तथा हिन्दी-जगत् के बधाई के पात्र हैं।

मूल्य

'साहित्यायन'
२०८/१२१, पी० रोड
कानपुर

शम्भूरत्न त्रिपाठी
सम्पादक
श्रीप्रतापनारायण श्रीवास्तव-ग्रन्थावली

इतिहास के तलस्पर्शी विद्वान, हिन्दी के अनन्य संवर्द्धक
कुशल शिक्षक, सफल निबन्धकार

मान्यवर पं० लक्ष्मीकान्त जी त्रिपाठी

[भू०पू० अध्यक्ष, इतिहास-विभाग, क्राइस्ट चर्च कालेज, कानपुर]

को

सादर

भेंट

१

'मिस इन्डिया !'

वैद्युत प्रवाह की भाँति "मिस इन्डिया" के निर्वाचन का जयघोष उस छोटे से पंडाल को भेद कर दिल्ली को मुखरित करने के उद्योग में संलग्न हो गया। सहस्रों नेत्र उस नवयौवना को देखने के लिए आतुर हो उसके अनुपम सौन्दर्य-जाल में फँस गए, और जब मेयर ने उसके शिर को विजय-किरीट से सुशोभित किया, तब तालियों की गड़गड़ाहट से पंडाल गूँज गया। युवक-मण्डली उस नव-निर्वाचित 'मिस इण्डिया' को बधाई देने के लिए उद्विग्न हो उठी, और उसके समीप पहुँचने के लिए एक दूसरे को धकेलती हुई आगे बढ़ी। स्वयंसेवकों के जत्थे उनकी गति को रोकने के लिए पंक्तिबद्ध होकर खड़े हो गए, परन्तु उस समूह वेग को रोकना उनकी शक्ति के बाहर हो गया। उनकी सहायता के लिए जब पुलिस और समारोह के दर्शक फौजी जवान आगे बढ़े, तब वह बड़ी कठिनता से कुछ-कुछ रुका, परन्तु वे भी उसी भाँति सावित हुए जैसे प्रबल प्लावन की धारा के समक्ष मिट्टी के मकान होते हैं। मंच पर अवस्थित युवतियों का समूह भी आशंकित होकर त्रस्त नयनों से उस हर्ष-प्रवाह को देखने लगा। निर्वाचक मण्डल के अधिकारी उनको सुरक्षित निकाल ले जाने के लिये व्यस्त हो उठे। वे इधर-उधर दौड़ने लगे, परन्तु प्रत्येक निकास जनाकीर्ण था। हार कर वे भी उस प्रवाह को रोकने को लिये सन्नद्ध हो गए।

इसी समय एक नवयुवक फौजी जवान, जो वेष-भूषा से वायु सेना का कोई पदाधिकारी प्रतीत होता था, रंगमञ्च पर दौड़कर चढ़ गया और माइक से उन्हें शान्त रहने के लिये उद्बोधन करने लगा। उसने पूछा—"आप क्या चाहते हैं ? इस प्रकार गड़बड़ करने से आप जलसे को बिगाड़ रहे हैं।"

"हम 'मिस इन्डिया' को बधाई देना चाहते है।" भीड़ में से किसी ने उत्तर दिया।

सहसा 'मिस इन्डिया' माइक पर आकर बोली—"यदि आप लोग शांति के साथ अपने-अपने स्थानों पर बैठ जावें, तो मैं अपने को उपकृत समझूंगी। अपने भाइयों की बधाई लेने के लिए मैं स्वयं व्यग्र हूँ।"

युवक मण्डली उन शब्दों के प्रभाव से बिल्कुल शान्त हो गई।

'मिस इन्डिया' अपने प्रभाव से स्वयं चकित हो गई। उसने एक उड़ती दृष्टि उस आतुर युवक पर डाली और कहने लगी—"भाइयो, मैं आप लोगों से एक निवेदन करना चाहती हूँ।"

समूह के व्यक्तियों ने चिल्ला कर कहा—"कहिए, कहिए!" उनकी आवाज़ से पंडाल गूंज गया।

'मिस इन्डिया' अपनी शक्ति समेटते हुए बोली—"भाइयो, हमारे देश पर चीनी आक्रमण से जो विनाश के बादल घुमड़ रहे हैं, उनसे आप मुझसे अधिक परिचित हैं। हम सबका यह पावन कर्तव्य है कि हम तन-मन-धन से उनको बिखेरने में लग जायें। आप लोगों ने जो यह अद्भुत सम्मान देकर मुझे गौरवान्वित किया है, उससे मेरा कर्तव्य हो जाता है कि मैं इस महान पुण्य यज्ञ में अपनी ओर से कोई आहुति प्रदान करूँ। मैंने अपना जीवन देश के लिए समर्पित कर दिया है। मैं मन से देश-सेविका, तन से नर्स का काम अपना कर अपने इस गौरव प्रदान करने वाले विजय-किरीट के द्वारा धन संचय करने का निश्चय करती हूँ, और इसी उद्देश्य से इसको नीलाम पर चढ़ाती हूँ, जिस पर उपस्थित भाई-बहिन अपनी बोलियाँ लगावें।" कहते हुए उसने वह किरीट हाथ में लेकर जन-समूह के समक्ष किया।

जन समूह विचलित हो उठा। एक युवक ने बोली लगाई—"एक सौ रुपए।"

वायु सेना का अफसर, जो अभी तक 'मिस इन्डिया' के समीप मंच पर खड़ा था, उसके हाथ से किरीट लेकर नीलाम करने लगा।

युवकों का समूह आवेश से भर गया। वे बोलियाँ लगाने लगे। कई

लोगों में होड़ लग गई, और बोली प्रतिक्षण बढ़ने लगी। कुछ देर में बोली पाँच हजार तक पहुँच, क्षण भर के लिये ठहरी। वायु सेना का अफसर बोली दोहराने लगा। जब वह एक-दो कह ही रहा था, और उसकी भाव-भंगी से यह प्रतीत होने लगा कि वह समाप्त करने वाला है तब एक युवक ने कुर्सी पर खड़े होकर बोली लगाई—"छः हजार।" तुरन्त उसके प्रत्युत्तर में एक दूसरे युवक ने सात हजार की बोली दी। दोनों में होड़ लग गई, और बोली दस हजार पर जाकर पुनः रुकी। तब एक तीसरे युवक ने, जो अभी तक मौन खड़ा था, आवाज दी—'ग्यारह हजार।' दूसरा युवक मैदान से हट गया। अब पहले और तीसरे में बदा-बदी होने लगी। एक-एक हजार की बोलियां लगने लगीं। सबके नेत्र 'मिस इन्डिया' से हट कर उन दो नवयुवकों की ओर अटक गए। बोली अविराम गति से बढ़ रही थी। जब वह पचास हजार पर जाकर रुकी, तब पहले युवक को उसके साथियों ने कुर्सी से उतरने और बोली समाप्त करने का आग्रह किया, परन्तु उसने किसी पर ध्यान न देकर एकयावन हजार बोल दिए, उसका प्रतिद्वन्दी रुक कर अपने साथियों की ओर उनका मन्तव्य जानने के लिये, देखने लगा।

प्रथम बोली लगाने वाले युवक ने आवेशपूर्ण स्वर में कहा—"आइये, आइये, अपने बल-बूते पर बोली लगाइए। दोस्तों की तरफ क्यों देख रहे हैं?"

उसके प्रतिद्वन्दी ने मुस्कराते हुए कहा—"यदि मेरे पास भी उतने उद्योग-धन्धे, कल-कारखाने होते तो मैं ....।"

"अच्छा, जब आप हार मानते हैं, तब अपने दोस्तों से पूछ लीजिये। मैं आपकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

प्रतिद्वन्द्वी ने चोट खाए साँप की भांति फुफकारते हुए कहा—"हजार हजार की बोली लगाने से बहुत देर लगेगी। मैं एक लाख की बोली लगाता हूँ।"

जन-समूह ने ताली पीट कर बधाई दी। अभी तालियों की गड़गड़ाहट समाप्त भी न होने पाई थी कि पहले युवक ने दो लाख बोल दिए।

तमाशाई फिर तालियाँ बजाने लगे, और चकित होकर उसको देखने लगे। 'मिस इन्डिया' अपलक उसे देख रही थी।

अब बोलियाँ लाखों में बढ़ने लगी। छः लाख पर बोली पुनः क्षण भर के लिए ठहरी। प्रतिद्वन्दी ने अपने मित्रों से परामर्श किया और फिर उसने सात लाख सबके मना करने पर भी बोल दिए।

वायु सेना का अफसर सात लाख की बोली दोहराने लगा।

प्रथम युवक ने कुर्सी से नीचे उतरते हुए बोली लगाई—'आठ लाख।'

प्रतिद्वन्दी के मित्र उसको घसीटते हुए पंडाल के बाहर ले जाने लगे। वह छूटने के लिये अपने हाथ-पैर पटक रहा था, परन्तु वे उसको छोड़ते न थे। 'मिस इन्डिया' की दृष्टि उसका अनुसरण कर रही थी।

जाते-जाते उसने नौ लाख की बोली लगा ही दी।

वायु सेना का अधिकारी नौ लाख की बोली दोहराने लगा।

प्रथम नवयुवक ने तुरन्त ग्यारह लाख की बोली लगाई।

इस समय तक प्रतिद्वन्दी के साथी उसको बाहर घसीट ले जाने में सफल हो गये थे।

पंडाल में सन्नाटा छा गया। नीलाम बोलने वाले ने थोड़ी देर बोली दोहरा कर ग्यारह लाख पर समाप्त कर 'मिस इन्डिया' के किरीट को उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा—' बधाई है, यह मुकुट भारत की विजय का चिन्ह है, जो चीन के ताबूत पर एक कील की तरह साबित होगा। बधाई!"

युवक ने आगे बढ़ते हुए कहा—"मैं यह उनके हाथ से ग्रहण [illegible] जिनको मिला है।" कहते-कहते वह मंच के समीप आ गया और अपलक दृष्टि से मिस इण्डिया को निरखने लगा।

'मिस इन्डिया' किरीट ले कर काँपते पगों से आगे बढ़ी इसी समय मेयर ने उपस्थित युवक के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा—' पहले आप रकम चुकता कीजिए।"

"इस समय मैं आपको चेक दे सकता हूँ।"

"आपको कोई पहचानता है?" मेयर ने संदिग्ध दृष्टि से पूछा।

"दिल्ली ही क्यों, तमाम भारत में 'रमणलाल ग्रूप मिल्स' के एकमात्र स्वामी सर ब्रजमोहन दास को जानने-पहचानने वाले बहुत निकल आएँगे। मैं ब्रजमोहनदास का बड़ा पुत्र हूँ।"

इसी समय प्रतिद्वन्दी ने वहाँ पहुँचते हुए कहा—"मेयर महोदय, आप बेखटके इनकी चेक स्वीकार कीजिये। इतनी रकम की मैं ज़मानत करता हूँ। आप मेरे परिवार से परिचित हैं, और मैं भाई रमणीमोहन जी को जानता हूँ। बम्बई के ताज होटल में कल्याणचंद के पुत्र श्रीकान्त के विवाह के उपलक्ष में दी गई पार्टी में आपका परिचय प्राप्त हुआ था। वह इतनी जल्दी भूल गए, परन्तु मैं इन्हें अच्छी तरह पहचानता हूँ।''

विजय किरीट जीतने वाले युवक, रमणीमोहन की दृष्टि अपने प्रतिद्वन्दी को स्मरण करने का प्रयत्न करने लगी। दोनों ने एक दूसरे को नमस्कार किया।

रमणीमोहन ने मेयर से धीमे स्वर में कहा—''आप मुझे इनके सामने अपदस्थ न कीजिए।"

मेयर ने उसके हाथ से चेक लेते हुए कहा— 'आप कुछ ख्याल न करें। रकम बहुत बड़ी है, और दिल्ली में आप नए हैं, इसलिए'''।'

'यह कोई अखरने वाली बात नहीं है। रुपयों के लेन-देन में सावधानी बरती जाती है।''

चेक प्राप्त कर मेयर ने 'मिस इन्डिया को स्वर्ण-किरीट देने का संकेत किया। वह बड़े ध्यान से उसकी ओर देख रही थी। युवक ने भी उसकी ओर देखा, और वह सगर्व उसके सम्मुख उपस्थित हुआ।

युवक ने अपने दोनों हाथ उस विजय-चिन्ह को ग्रहण करने के लिए फैलाए, किन्तु 'मिस इन्डिया' ने अपनी मुस्कान दबाते हुए कहा—"कृपया, शिर ज़रा नीचा कीजिये ताकि मैं आपको पहना सकूं।"

"आप हाथ में दे दीजिये।" रमणीमोहन ने उसके अद्भुत सौन्दर्य को निरखते हुए संकेत किया।

'किरीट मस्तक पर शोभा पाता है।' कहती हुई वह मुस्कराई।

'किन्तु यह सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी का आभूषण है।'

'तब क्या आप इसे सर्वश्रेष्ठ युवक का आभूषण नहीं बनने देंगे ?'

प्रतिद्वन्दी युवक बीच में बोल उठा—"क्यों नहीं, रानी का पुरस्कार शिर पर ग्रहण किया जाता है।"

पीछे भीड़ से किसी युवक ने आवाज़ा कसा—"चप्पलों की भी जगह वही है।" कहकहों से पंडाल गूँज गया, किन्तु रमणीमोहन ने उत्तर दिया—"चप्पलों का तोहफ़ा उनके लिए है जो भीड़ में मुंह छिपाते हैं।"

किसी दूसरे युवक ने कहा—"भाई बिगड़ते क्यों हो? मीठा खाने वाले को कभी कड़ुवा भी खाना पड़ता है।"

एक तीसरे ने कहा—"भाई, आपको दोनों मुबारक हों विजय-किरीट और चप्पल भी!"

कहकहों से पंडाल गूंजने लगा।

प्रतिद्वन्दी युवक रमणीमोहन के पक्ष में बोला—"यह सब भाग्य की बात है। जिनके भाग्य में विजय-मुकुट है वह सम्मुख है, और जिनकी किस्मत में चप्पल हैं, वह पीछे भीड़ में छिपे हैं।"

उपस्थित जन समूह हँसने लगा।

मेयर ने कहा—"आप लोग व्यर्थ की बातों में समय बरबाद न कीजिए। देखिए 'मिस इन्डिया' प्रतीक्षा कर रही हैं। आइये श्री रमणीमोहन जी अपना पुरस्कार ग्रहण कीजिए।"

"मिस इन्डिया' मुकुट पहनाने के लिए आगे बढ़ी। ज्यों ही मुकुट उनके शिर से छुआ, त्यों ही उसने उसे हाथ में ले लिया, और बड़ी शीघ्रता से 'मिस इन्डिया' के शिर पर रखते हुए बोला—"अब मेरी यह तुच्छ भेंट स्वीकार करने की कृपा करें।"

'मिस इन्डिया' ने उसे उतारते हुए कहा—"दी हुई वस्तु मैं कैसे ले सकती हूँ।"

"आपकी दी हुई वस्तु का सौदा हो गया, अब यह मेरी वस्तु है, और मेरा उपहार है।" कहता हुआ वह मंच से वापस उतर आया। तालियों की गड़गड़ाहट से पंडाल पुनः गूंजने लगा।

'मिसइन्डिया' चकित होकर उस युवक को भीड़ में ढूंढने लगी परन्तु वह किस ओर कहाँ अदृश्य हो गया, कोई न जान सका।

'मिस इन्डिया' की सखी शेफालिका न उसके समीप आकर कहा—'अब

चलिए, यात्रा-समारोह में सम्मिलित होइए। अब उस युवक का पता नहीं लगेगा। वह इस भीड़ में अदृश्य हो गया। क्यों घबड़ाती हो, वह एक दिन स्वयं आपकी सेवा में उपस्थित होगा।"

"चुप चुप, क्या बकती हो। मैं उसको यह किरीट लौटाना चाहती हूँ।"

"उसने ठीक किया, बिना किरीट पहने आपकी शोभा-यात्रा कैसे होती ?"

"परन्तु यह मेरा नहीं, उसका है।"

"जब उसने आपको उपहार में दिया, तब यह पुनः आपका हो गया।"

"परन्तु एक अनजान का उपहार कैसे स्वीकार कर सकती हूँ।"

"अभी तो चलिए, जब उससे भेंट हो जाय तब वापस कर दीजिएगा।"

इसी समय अन्य सखियाँ उसे बधाई देने के लिए मंच पर आ गईं।

२

आकाश होटल के अपने कमरे में जब रमणीमोहन लौटे, तब वह कुछ चिन्तित थे। फोन द्वारा मैनेजर को सोडा और ह्विस्की भेजने का आदेश देकर सिगरेट पीने लगे। इसी समय उनके पड़ोसी कमरे का यात्री, जो अमेरिकन सैलानी था, कमरे के द्वार पर आकर बोला—"नमस्कार ! आज का दिन बहुत सुन्दर है। बादलों के हट जाने से दिन कितना सुहावना है।"

नमस्कार का प्रत्युत्तर देते हुए कहा—'आइये, पधारिए। हमारे देश में अक्टूबर महीने में प्रायः आकाश स्वच्छ रहता है, और कुछ थोड़ी गरमी दि को हो जाती है। आपके देश में अक्टूबर कैसा रहता है ?"

"लगभग ऐसा ही।"

उन्होंने उठते हुए कहा—"दो मिनट के लिये क्षमा कीजिए, मैं ज बात कर लूं।"

"हाँ, हाँ, अवश्य !" और वह उठकर बाहर जाने लगे।

"आपके बाहर जाने की आवश्यकता नहीं है, मिस्टर लैम्बर्ट। मैंने स बैंक के एजेन्ट से फोन मिलाने को कहा था, शायद यह वही है।"

मिस्टर लैम्बर्ट बैठ गए, और रमणीमोहन ने रिसीवर उठाते कहा—"हलो, क्या आप स्टेट बैंक के एजेन्ट हैं।"

स्वीकारात्मक सूचना मिलने पर उन्होंने कहा—"मेरा नाम रमणीमोहन है। 'रमणलाल ग्रुप मिल्स' के स्वामी ब्रजमोहन दास जी का खाता बम्बई शाखा में है। मैं उन्हीं ब्रजमोहनदास जी का पुत्र हूँ, और जेनरल आटोमोबाइल्स कम्पनी का मैनेजिंग डायरेक्टर। मैंने तार द्वारा आपकी बम्बई शाखा को सूचना दे दी है कि वह मेरे हिसाब से ग्यारह लाख रुपये आपकी शाखा में भेज दें। सम्भव है कि उसकी सूचना आपको शीघ्र मिल जावे। मैंने राष्ट्रीय सुरक्षा कोष के लिये इसी रकम का दान किया है और चेक काट दी है। यदि बम्बई शाखा से आपको सूचना मिलने के पूर्व मेरी चेक भुगतान के लिए भेजी जावे, तब आप कृपा कर उसे लौटाए नहीं। उसे आप अपने पास उस समय तक रोक रखें जब तक आपको बम्बई शाखा से सूचना नहीं मिल जाती। सूचना मिलने पर आप उसका भुगतान कर दीजिएगा। यद्यपि मैंने यहाँ के मेयर महोदय को सूचित कर दिया है कि वह चेक को दो दिन बाद आपके बैंक में पेश करें परन्तु इस भय से कहीं आप उसे वापस न कर देवें इसलिए आपको सूचित कर दिया है। मैं आकाश होटल के कमरा नं० ३०२ में ठहरा हूँ, और एक दो सप्ताह यहीं रहूँगा।"

उत्तर में स्वीकारोक्ति मिलने पर उन्होंने बात चीत बन्द कर दी।

मिस्टर लैम्बर्ट एक दैनिक का विशेष संस्करण मेज पर रखते हुए बोले—"राष्ट्रीय सुरक्षा कोष के लिए आपका यह दान सर्वथा उपयुक्त हुआ है। मेरी बधाई स्वीकार कीजिए।"

इसी समय होटल का खानसामा ह्विस्की और सोडा की बोतलें तथा पीने के गिलास लेकर आया।

उसे देख लैम्बर्ट उठने लगे।

रमणीमोहन ने साग्रह कहा—"बैठिये। आप भी मेरे साथ पीजिये।"

"नहीं मित्र, मैं दोपहर को ह्विस्की नहीं पिया करता। हाँ, बियर होती तो शायद पी लेता।"

"ठहरिए, मैं आपके लिए बियर मँगाता हूँ।"

"धन्यवाद ! आप कष्ट न कीजिए।"

"तब आप एक ही पेग लीजिएगा। मैं प्रायः दोपहर को ह्विस्की नहीं लेता, परन्तु आज मन कुछ उद्विग्न है, इसलिए गरूर की उतनी तेजी चाहता हूँ, जिसमें वह डूब जाय !" कहते हुए उन्होंने गिलासों में मदिरा डालना शुरू किया।

एक दूसरे की शुभकामना के साथ वे पीने लगे।

मदिरा पीते हुए लैम्बर्ट ने पूछा—"आप क्यों उद्विग्न हैं ? क्या मैं आपकी सहायता कर सकता हूँ ?"

"धन्यवाद ! कोई खास परेशानी नहीं है। बैठे-बिठाये नाहक ग्यारह लाख रुपए पानी में बहा दिए।"

"क्या बाजी खेले थे ?"

मैं जुआ नहीं खेलता, यहाँ तक कि मैं उस कमरे में नहीं जाता, जहाँ खेल होता है, परन्तु आज नीलामी जुए में फँस गया।"

"वह कैसे ?"

"कल मैंने अखबार में पढ़ा कि दिल्ली में सौन्दर्य प्रतियोगिता होने वाली है। आपके देश की भाँति यहाँ भी सौन्दर्य प्रतियोगिताएँ होने लगी हैं। आज वही तमाशा देखने मैं भी चला गया।"

"आपने मुझे क्यों नहीं बताया ? मैं भी आपके साथ चलता।"

"आपका कमरा बन्द था। सोचा कि शायद आप अभी सो रहे हैं।"

"क्या मिस दिल्ली का चुनाव था ? स्थानीय प्रतियोगिताएँ भी होने लगी हैं ?"

"यह अखिल भारतवर्षीय प्रतियोगिता थी ?"

"तब कहिए 'मिस इन्डिया' का निर्वाचन हो रहा था।"

"जी हाँ।"

"वह भाग्यवती किस प्रान्त की है ?

"यह नहीं मालूम। सम्भवतः वह दिल्ली की नागरिक है।"

"अच्छा ! दिल्ली की सुन्दरियाँ क्या सर्वश्रेष्ठ हैं ?"

"स्थानीय ज्ञान मुझे नहीं है, क्योंकि मैं बम्बई निवासी हूँ ।"

"आपके उत्तर तथा दक्षिण प्रदेशों के सौन्दर्य में बड़ा अन्तर है । इतना आप सहज ही अनुमान कर सकते हैं कि निर्वाचित 'मिस इन्डिया' दक्षिण अथवा उत्तर की हैं ।"

"शक्ल-सूरत से वह उत्तर-भारतीय मालूम होती है ।"

"क्या कश्मीर या पंजाब जैसी है ?"

"आपको हमारे देश की सुन्दरियों का बहुत अधिक ज्ञान है ।" कहते हुए रमणीमोहन मुस्कराने लगे ।

"मैं सौन्दर्य-प्रेमी हूँ । देश-देशों का सौन्दर्य निरखने के लिए, मैं यह यात्रा कर रहा हूँ । मैंने संसार के सभी प्रमुख देशों का भ्रमण किया है, और वहाँ की सुन्दरियों को निकट से देखा है । भारत में पंजाब और कश्मीर की सुन्दरियाँ सर्वश्रेष्ठ हैं । आपका क्या ख्याल है ?"

"सौन्दर्य देखने के दृष्टिकोण देश के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं ।"

"परन्तु गुलाब प्रत्येक देश में सुन्दर माना जाता है ?"

"मेरा मतलब है कि सौन्दर्य के निरूपण के लिए कोई निश्चित माप-दण्ड नहीं हो सकता ।"

"मैं आपकी बात स्वीकार करता हूँ । परन्तु हम लोग मुख्य विषय से बहुत दूर चले गये । आप मिस इन्डिया की बात कर रहे थे ।"

"जी हाँ; 'मिस इन्डिया' का सौन्दर्य निरूपण करने में मैं वस्तुतः असमर्थ रहा ।"

'क्या आपकी दृष्टि में 'मिस इन्डिया' भारत की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी नहीं है ।'

'हाँ, कुछ मेरा ऐसा ही विचार है । भारत की स्त्रियों का सौन्दर्य बाजार में परख करवाने के लिए नहीं आता । वह घरों की चारदीवारी में बन्द रहता है ।

"क्या मतलब ?"

"यहाँ की सुन्दरियाँ प्रतियोगिता में भाग लेने में अपना अपमान समझती हैं, और हमारी संस्कृति के प्रतिकूल भी बैठता है । भारत की आजादी के साथ

इस दिशा में कुछ परिवर्तन होने लगा है। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् भारत जितना पश्चिम का भक्त हो गया है, उतना वह कभी नहीं था।"

"इसमें आश्चर्य की क्या बात है? उत्कृष्ट संस्कृति अपना प्रभाव डालती है।"

"यह मैं स्वीकार नहीं करता, परन्तु इतना सत्य है कि हम लोग अधाधुन्ध पश्चिमीय वेष-भूषा, रीति-रिवाज का अनुकरण करने लगे हैं।"

"यदि मेरी बात सही नहीं है तो आप ही इसका कारण बताइए।" लैम्बर्ट की आँखें मुस्करा रही थीं।

"इसका कारण यही है कि हम अपनी सभ्यता भूलने लगे हैं।"

"क्या महात्मा गाँधी स्वयं उसी संस्कृति की उत्पत्ति नहीं थे?"

"महात्मा गांधी विलक्षण समन्वयी थे। उन्होंने संस्कृति की सूक्ष्मता अपनाई थी और वेष-भूषा नितान्त भारतीय रखी थी। वह स्वयं भारतीय किसान की भाँति रहते थे, और वैसा ही रहने को परामर्श देते थे।'

"उस समय भारत परतन्त्र था, और आज़ादी की लड़ाई लड़ रहा था। समय और साधन के अनुसार वह पहिनावा ठीक था, किन्तु अब जब भारत स्वतन्त्र है, उसकी सम्पत्ति उसको प्राप्त है, तब वह उसका उपयोग देशकाल के मुताबिक करेगा।"

"आपका विश्लेषण सत्य प्रतीत होता है।"

"तब आप पश्चिमीय सभ्यता की श्रेष्ठता स्वीकार करते हैं।"

"श्रेष्ठता स्वीकार नहीं कर सकता, परन्तु आजकल जो घटित हो रहा है वह कुछ ऐसा ही जैसा आप कह रहे हैं।"

"ऐसा क्यों है, यह आप ही बताइए? यदि हमारी सभ्यता-भाषा, श्रेष्ठ न होती तो आपके नेता उसे क्यों स्थायी बनाना चाहते? आपके नेता या भ्रमणार्थी जब कभी योरोप-अमेरिका की यात्रा करते हैं, तब वे हमारे देश में प्रचलित वेष-भूषा धारण करते हैं; भारतीय नहीं।"

"यह एक अपवाद है?"

"अपवाद नहीं, हमारी श्रेष्ठता है। आप स्वयं हमारी वेष-भूषा में

रहते हैं।"

"यह आदत है। ब्रिटिश काल से पहनते-पहनते हम इसके आदी हो गए हैं?"

"श्रेष्ठ वही है जो उपादेय हो, सुन्दर हो और कार्य में सहायक हो।"

"इस प्रश्न पर हम फिर कभी विचार करेंगे, अभी आप अपनी मुसीबत का कारण बताइए।"

"अजी मुसीबत नहीं, सिर्फ एक महंगा मोल मोल लाना।"

"क्या सिनेमा कम्पनियों में उसको लेने की होड़ लग गई थी, और क्या आप किसी सिनेमा कम्पनी के संचालक हैं?"

"नहीं जी, उसके विजय-किरीट को लेने के लिए होड़ लग गई थी।"

"क्या मतलब?"

"मिस इन्डिया बहुत सूझ-बूझ की सुदक्ष सुन्दरी है। उसने यशस्वी होने का एक अत्यन्त सुलभ उपाय ढूंढ़ निकाला।"

"आपकी भूमिका कब समाप्त होगी?"

"मिस इन्डिया ने सोचा कि बहती गंगा में क्यों न हाथ धो लिया जाए इसलिए उसने अपने विजय-किरीट को, राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में धन प्राप्त कराने के लिए नीलाम पर चढ़ा दिया। मैंने पहली बोली लगाई। दूसरों ने भी बोलियाँ लगाईं। नतीजा यह हुआ कि बढ़ा-चढ़ी होने लगी। मैंने कई बार बोली छोड़ने का विचार किया परन्तु खड़े नवयुवकों का दल मुझे उत्तेजित करने लगा। नीलाम का भूत मेरे ऊपर सवार हो गया, और अन्त में ग्यारह लाख पर मैंने ही उसको प्राप्त किया।"

"बधाई है! लक्ष्मी-पुत्र ही बात पर कटना जानते हैं। आपके स्थान पर यदि मैं होता तो मैं भी यही करता। वह ताज कहाँ है?"

"मैंने लेकर मिस इन्डिया को फिर वापस पहना दिया।"

"शाबाश, यह है वीरोचित कार्य! मेरी बधाई पुनः स्वीकार करें। तुच्छ ग्यारह लाख रुपयों में आपने वह कीर्ति उपार्जित की जो बहुत कम व्यक्तियों को मिलती है।"

"इसमें मुझे कोई अनैतिकता नहीं देख पड़ी, क्योंकि यह धन राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में जाएगा। पिता जी भी अधिक असन्तुष्ट नहीं होंगे।"

"भारत को इस समय धन की आवश्यकता है, जितना भी मिले वह थोड़ा है। आज भारत की सुरक्षा खतरे में है। चीनी आक्रमणकारियों से बराबरी पर लड़ने के लिए आधुनिक शस्त्रास्त्र चाहिए, जिनकी उसके पास बहुत कमी है।"

"हाँ, इसीलिए, तो मुझे कोई अधिक खेद नहीं है।"

"यदि आवश्यकता हो तो मैं सहायता करने के लिये तैयार हूँ।"

"धन्यवाद! ऐसी कोई जरूरत नहीं है। मैंने पिता जी को लिख दिया है।"

"मिस इन्डिया की शोभा-यात्रा निकल रही होगी?"

"हाँ, मैं भी उसमें जाता किन्तु पत्रकारों से बचने के लिये भाग आया?"

"मैं मिस इन्डिया को देखना चाहता हूँ चलिए भीड़ में कोई आपको पहचान नहीं सकता।"

"मेरी इच्छा नहीं है, आप जाइये।"

"यह कैसे हो सकता है। मैं दिल्ली के रास्तों से नावाकिफ हूँ, आपके साथ सुविधा रहेगी। क्या आप मेरी इस प्रार्थना को अस्वीकार करेंगे?"

"आप नहीं मानते, तो चलिए।"

दोनों उठ कर खड़े हो गए, और कमरा बन्द कर मिस इन्डिया की शोभा यात्रा देखने चल दिए।

३

मिस इन्डिया की शोभा-यात्रा देख कर लैम्बर्ट को बड़ी प्रसन्नता हुई। बहुत दूर तक जलूस के साथ चलते रहे। चांदनी चौक पहुँचकर लैम्बर्ट ने रमणीमोहन से कहा—"आइए, कहीं चाय पी जाए।"

रमणीमोहन ने प्रस्ताव टालते हुए कहा—"इस बाजार में कोई स्थान हमारे बैठने योग्य नहीं है।"

इसी समय योरोपियन वेषभूषा में एक युवती ने लैम्बर्ट के कन्धे पर हाथ रखकर उसका ध्यान आकर्षित किया। उसने पीछे घूमकर देखा,

और पहचान कर मुस्कराते हुए कहा—"वाह, आप दिल्ली में मौजूद हैं। कहिए कलकत्ता से कब आईं ?"

युवती जिसका वर्ण गौर और पीले रंग का सम्मिश्रण था और जो अपनी धवल दन्त पंक्ति का प्रदर्शन लिपस्टिक से रंगे ओष्ठों के मध्य कर रही थी, मृदुल स्वर में बोली—"मैं यहाँ कई दिनों से हूँ।"

"अर्थात्!"

"यही कोई एक हफ्ते से।"

"कहाँ ठहरी हैं ?"

"रिट्ज होटेल में ! और आप !"

"आकाश होटल में। 'आइये अपने मित्र से परिचय करा दूं।' फिर रमणीमोहन की ओर संकेत करते हुए कहा—'मिस्टर रमणीमोहन, रमणलाल ग्रुप मिल्स के मालिक सेठ सर ब्रजमोहनदास जी के बड़े पुत्र ! आपने आज ही ग्यारह लाख रुपए····।"

युवती ने भारतीयों की भाँति हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए कहा—"हाँ, याद आया ! आप ही आज प्रातः मिस इन्डिया के विजय-किरीट पर बोली लगा रहे थे। आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई।"

रमणीमोहन ने किञ्चित संकोच के साथ कहा—"जी हाँ आपका अनुमान सत्य है। क्या आप भी वहां मौजूद थीं ?'

"भला कौन महिला उस अवसर पर उपस्थित होना नचाहेगी। यदि मिस इन्डिया ने सौन्दर्य-पुरस्कार जीता, तो आपने····।"

"उपस्थित समुदाय पर अपनी धाक जमा दी !" लैम्बर्ट ने उसका वाक्य पूरा किया।

रमणीमोहन ने मुस्कराते हुए कहा—"आपने मेरा परिचय तो दे दिया, किन्तु·····।"

"जरूर-जरूर श्रीमती जी का परिचय देना भूला नहीं हूँ। आपका शुभ नाम मिस मिलर है। कलकत्ते में हम लोग एक ही होटल में ठहरे थे, और हमारे कमरे पास-पास थे।"

मिस मिलर ने मुस्कराते हुए कहा—"इससे अधिक मेरा कोई परिचय नहीं है।" कहते हुए मिस मिलर निस्संकोच रमणीमोहन का हाथ दबाने लगी, जैसे घनिष्ट मित्र आपस में किया करते हैं।

लैम्बर्ट ने रमणीमोहन की ओर देखते हुए कहा—"अबतो किसी जगह चाय पी जाय। वहीं बातें होंगी।"

रमणीमोहन ने फौव्वारे के पास खड़ी एक टैक्सी को बुलाया; और बैठते हुए किसी रेस्ट्रां ले चलने का आदेश दिया।

टैक्सी क्वालिटी रेस्ट्रां के सामने खड़ी हो गई। तीनों निःशब्द एक कोने की मेज़ पर जाकर बैठ गए।"

रमणीमोहन ने मीनू मिस मिलर को देते हुए पूछा—"आप क्या लेंगी बताइये ?"

"चाय और कोफ्ते मँगा लीजिए।"

"तीन पेग ह्विस्की भी मंगवा ली जाए तो कैसा रहेगा ?"

"ह्विस्की नहीं, बियर की तीन बोतलें मँगा लीजिए।" लैम्बर्ट ने सुझाव दिया।

रमणीमोहन ने वैसा ही आदेश दे दिया, फिर कहा—"मिस मिलर, रिट्ज में क्या आप ज्यादा आराम से हैं ?"

"हां कोई तकलीफ भी नहीं है।"

"क्या आप इन्हें आकाश होटेल में बुलाना चाहते हैं ?" लैम्बर्ट ने मुस्कराहट छिपाते हुए कहा।

"अपने कमरे के बगल का कमरा खाली है। उसमें बड़े मजे से आ सकती हैं। आपका क्या ख्याल है ?"

"आकाश होटल का किराया बहुत ज्यादा हैं। उससे रिट्ज कुछ सस्ता है।"

"यदि किराए की अटक है तो हम लोग बरदाश्त कर लेंगे ? लैम्बर्ट ने सुझाव दिया।

"धन्यवाद, मैं वहाँ बड़े आराम से हूँ ?"

"आप साथ रहतीं तो हम तीनों का समय बड़े आनन्द से कटता ।" लैंम्बर्ट ने कहा ।

मिस मिलर ने प्रसंग बदलते हुए कहा :—"बताइये मिस्टर मोहन, 'मिस इंडिया' आपको कैसी मालूम हुई ?"

"आपने उस पर ग्यारह लाख रुपए निछावर कर दिये ।"

"उसकी सुन्दरता में कोई कमी नहीं है, परन्तु मिस इन्डिया कहलाने योग्य नहीं है ।"

"उस पर नहीं, उसके विजय-मुकुट पर, और भारत की सैन्य शक्ति की सहायता के लिए ।"

"यह सिर्फ़ बहाना है । दरअसल आप उस पर मुग्ध हैं ।"

"यदि राष्ट्रीय सुरक्षा कोष का प्रश्न न होता, तब कोई ग्यारह लाख क्या, ग्यारह सौ भी न लगाता । इसके अतिरिक्त नीलाम में मनुष्य बिल्कुल पागल हो जाता है ।"

"यदि आप बोली छोड़ देते, तब आपके प्रतिद्वन्दी की मुसीबत हो जाती ।"

"ऐसा नहीं है, वह भी एक सम्पन्न घराने का है । वह भारत इन्डस्ट्रीज का मालिक है ।"

"आपसे कम अवश्य है ।"

"मैं ऐसा नहीं सोचता ।"

"क्यों ? आप कई उद्योगों के संचालक हैं, और मैंने पंडाल में सुना है कि आपका व्यापारिक सम्बंध दक्षिणी पूर्वीय एशिया के देशों से है । सिंगापुर, मलय, थाइलैन्ड, बरमा, इन्डोनेशिया आदि देशों में आपकी मिलों का माल विशेष रूप से खपता है ।"

"जी हाँ, इन सब देशों में हमारे व्यापारिक सम्बंध हैं ।"

इसी समय एक भारतीय वेषभूषा में एक सुन्दरी ने एक फौजी युवक के साथ प्रवेश किया । युवती ने उड़ती हुई दृष्टि उपस्थित व्यक्तियों की ओर डाली, और मिस मिलर को देखकर उसकी ओर बढ़ी । मिस मिलर उसे बढ़ते

देख कुछ त्रस्त हो गई और एक ऐसा संकेत किया, जिसे दूसरे न देख सके। युवती की गति अवरुद्ध हो गई, और वह ठिठककर वहीं एक खाली मेज पर अपने साथी के साथ बैठ गई।

कुछ देर तक इधर-उधर देखने के बाद, मिस मिलर उस फौजी जवान के पास जाकर मृदु स्वर से बोली—"मेजर सिंह, मालूम होता है कि आप अभी आ रहे हैं।"

मेजर कुलदीप सिंह ने उठकर हाथ मिलाते हुए कहा—"आपका अनुमान ठीक है। हम लोग अभी-अभी आये हैं।"

श्रीमती सिंह ने मुस्कराते हुए नमस्कार किया।

मिस मिलर ने उनके समीप बैठते हुए कहा—"पिछली बार जब हम मिले थे, तब आपने बताया था कि आप फ्रन्ट पर जा रहे हैं, फिर कैसे रुक गये?"

"पहले नेफा जाने का आदेश मिला था; परन्तु अधिकारियों ने उसे स्थगित कर दिया।"

"क्यों?"

"कारण नहीं मालूम।"

श्रीमती सिंह अपनी उँगलियों के साथ खेल रही थीं, जिसे मिस मिलर बड़े ध्यान से देखने लगी।

मिलर ने प्रसङ्ग बदलते हुए कहा—"आज क्या आप मिस इन्डिया का चुनाव देखने गए थे?"

"नहीं गया, परन्तु उसका जुलूस देखकर आ रहा हूँ।"

"आपने शायद यह भी सुना होगा कि उसका विजय-मुकुट ग्यारह लाख रुपयों में नीलाम हुआ है।"

"हाँ, जुलूस में इसकी चर्चा हो रही थी।"

"जिस व्यक्ति ने इतनी बड़ी रकम लगाई है, आप उनसे मिलना चाहेंगे?"

"अवश्य!"

"देखिए वह आपके पीछे बैठे हैं।"

"शायद वह बहुत बड़े आदमी हैं।"

"आइये, आपका परिचय करवा दूँ।" फिर श्रीमती सिंह की ओर देखते हुए कहा—"क्या आप दो मिनट का अवकाश मेजर साहब को देने की कृपा करेंगी?" श्रीमती सिंह ने मुस्कराते हुए स्वीकृति प्रदान की।

मिस मिलर ने वापस आकर रमणीमोहन से कहा—"मिस्टर मोहन आप मेजर सिंह से मिलिए। पश्चिमीय भारतीय सेना में आप मेजर हैं।" फिर मेजर सिंह से कहा—"आप ही मिस्टर आर० मोहन हैं जिन्होंने आज मिस इन्डिया का किरीट नीलाम में जीतकर ग्यारह लाख रुपयों की राशि भारतीय सुरक्षा कोष में प्रदान की है।"

मेजर सिंह ने बधाई देते हुए हाथ मिलाया। फिर लैम्बर्ट की ओर संकेत करती हुई बोली—"आप मिस्टर लैम्बर्ट हैं—एक सैलानी—संसार भ्रमण के लिए निकले हैं, और भारत में कई महीनों से यहाँ की संस्कृति का अध्ययन कर रहे हैं। आप भारतीय साधुओं संन्यासियों में बड़ी रुचि रखते हैं।"

लैम्बर्ट ने हाथ मिलाते हुए पूछा—"वह शायद आपकी पत्नी हैं।"

"जी हाँ! आपकी भाँति वह भी घुमक्कड़ हैं। वह जन्म से तिब्बती हैं, और जब चीन ने उसे हस्तगत कर लिया, तब भाग कर इस देश में आगईं।"

"अब भारतीय वेष-भूषा में रहने लगी हैं?" रमणीमोहन ने पूछा।

"जी हां, क्योंकि उनका पति भारतीय है", मेजर सिंह ने उत्तर दिया।

"आश्चर्य की बात यह है कि चेहरे-मोहरे से वह तिब्बती नहीं मालूम होतीं।"

"हिमाचल प्रदेश और तिब्बत में अधिक दूरी नहीं है। हमारे परिवार की अन्य नारियों से बहुत कुछ मिलती हैं। इनकी शिक्षा-दीक्षा यहीं दिल्ली में हुई है, इसलिये भारतीय सभ्यता में बिल्कुल रंग गई हैं।"

"चलिए, उनसे अवश्य मिलाइए। उनसे आलाप कर मुझे प्रसन्नता होगी।"

"उन्हें यहीं बुलाता हूँ।"

मेजर सिंह ने अपनी पत्नी को आने के लिए संकेत किया। वह सहर्ष उठकर आ गई।

मिस मिलर ने स्नेह के साथ उसे अपनी बगल में बैठाते हुए कहा—'यह जानकर मुझे बड़ी खुशी है कि आप तिब्बती महिला हैं। इन चीनियों के कारण सभ्य, शान्त व्यक्ति आराम से नहीं बैठ सकते। तिब्बत तो तिब्बत रहा, अब भारत पर भी धावा बोल रहे हैं।"

मेजर सिंह से न रहा गया, वह बोल उठे :—"तिब्बत की बात जाने दीजिये। वह एक शान्ति-प्रेमी निरीह देश था। वे सैनिक नहीं, भगवान बुद्ध के पुजारी थे। किन्तु भारत को जब उन्होंने युद्ध के लिये ललकारा है, तब समुचित उत्तर मिलेगा। भारतीय जवान चीन को चीनियों के रक्त से रंग कर सत्य ही उसे लाल बना देंगे।"

"जी हां, आशा तो यही है। भारतीय जवानों की वीरता विश्व-प्रसिद्ध है। उन्हें ललकारना मौत को ललकारना है।" लैम्बर्ट ने मेजर के कथन की पुष्टि में कहा।

"अपने देश के निकम्मों अर्थात् च्यांग काई शेक के भ्रष्ट अनुयाइयों को हराकर लाल चीन मदान्ध हो रहा है।" रमणीमोहन ने स्पष्ट किया।

"चीन को अपने मानव-बल का भरोसा है।" मिलर ने ध्यान दिलाया।

"भूखे, नंगे, संत्रस्त मानवों के बल पर विश्वास करना सबसे बड़ी भूल है। कोमिटांग के मुकाबले में लाल चीन की विजय इस लिए हुई थी, क्योंकि उनके शासन में चीनी प्रजा सुखी नहीं थी। कोमिटांग के अधिकारी अपना अपना घर भरने में लगे थे। कृषक और मजदूर जनता भूखों मर रही थी। उसने अनुमान किया कि कम्यूनिस्ट तो उनके ही भाई-बन्धु हैं, और कथनी करनी में कोई भेद नहीं होगा। उनके प्रचार को उन्होंने सत्य माना, और अपनी राष्ट्रीय सरकार का विरोध करने लगे। असलियत तो तब खुली, जब कम्युनिस्टों का अधिकार उन्होंने समूचे राष्ट्र पर करवा दिया, और वे स्वयं सैनिक शासन में जकड़े गये। उनके घर उनके नहीं रहे, उनके खेत उनके नहीं रहे, उनकी सन्तानें

उनकी न रही और वे स्वयं मनुष्य से पशु बनाये गए।" मेजर सिंह ने कुछ जोश के साथ कहा।

"पशु बल पर स्थापित सत्ता कभी स्थायी नहीं हुई, संसार का इतिहास इसका साक्षी है।" रमणीमोहन ने अवसर पाकर कहा।

"तिब्बत पर जैसा अत्याचार और अनाचार लाल चीन ने किया है, वैसा बर्बरता के इतिहास में कहीं मिलता है तो वह चंगेज और तैमूर के समय में। तिब्बत जो अजातशत्रु के नाम से प्रसिद्ध था, उसका नाम-निशान इन चीनियों ने मिटा दिया है। मैंने अपने माता-पिता-भाइयों को बुरी तरह मरते देखा है। यद्यपि उस समय मैं अबोध बालिका थी, तथापि उसकी छाप मेरे मानस-पटल पर आज भी अंकित है, और उसकी रेखाएँ इतनी गहरी है कि वे कभी मिट नहीं सकती।" भावावेश से श्रीमती सिंह के नयन अश्रुसिक्त होने लगे।

"अब भारतीयों से पाला पड़ा है, उनके दंभ का अब परदाफाश होगा। उन्होंने सोते हुए सिंह को ललकारा है। भारतीय सिंह चीनी अजगर के टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा, और संसार को उसके भय से मुक्त कर ही विराम लेगा।" मेजर सिंह सबकी ओर देखकर अपने कथन का प्रभाव आँकने लगे।

"इसमें सन्देह नही कि निरीह तिब्बत की शान्ति भंगकर उन्होंने प्रकृति के साथ अक्षम्य अपराध किया है। प्राकृतिक शक्तियों की प्रतिक्रिया अब आरंभ होने वाली है, और वह उनका विनाश करेगी। ईश्वरीय अथवा प्राकृतिक चक्की जरा धीरे-धीरे पीसती है, किन्तु जब पीसना शुरू करती है, तब बहुत महीन पीसती है।" रमणीमोहन कहकर श्रीमती सिंह को देखने लगे।

श्रीमती सिंह के नेत्रों से कृतज्ञता प्रकाशित होने लगी।

मेजर सिंह ने अनुमोदन किया—"बिल्कुल ठीक है, मिस्टर मोहन। आपके हार्दिक उद्‌गारों से हम फौजियों को बल मिलता है। अब तक युद्ध भारतीयों ने अपने पेट के लिए लड़े थे, जिनमें उस लगन, कट्टरता; दृढ़ता और आन्तरिक प्रेरणा का अभाव था, जिससे आज प्रत्येक जवान ओत-प्रोत है। आज भारत माता का जन जन माँ का दूध बख्शवाने के लिए उत्सुक है। वह अपने देश; अपनी जन्म भूमि, अपने घर और खेत, अपनी सन्तान और सबसे

अधिक अपनी तथा संसार की स्वतंत्रता की वेदी पर अपनी बलि देने को क़दम बढ़ा रहा है।"

"बहुत सुन्दर ! हमारा ध्येय किसी की भूमि अथवा अन्य जन्मजात अधिकारों का हनन करना नहीं है, इसलिए हमारा सङ्कल्प सत्य है। हम स्वयं हिंसक बनकर आक्रामक नहीं है, बल्कि अपनी स्वतंत्रता, अपने देश, अपनी भूमि की रक्षा के लिए कटिबद्ध हुए हैं, इसलिए अहिंसक हैं। अतएव सत्य और अहिंसा जो संसार की अजेय तथा शाश्वत शक्तियां हैं और हमारी आचार संहिता की प्रथम धाराएँ हैं, हमें अभेद्य कवच पहना कर हमारी रक्षा करेंगी।" रमणी मोहन ने जोश के साथ अपना योग दिया।

"निस्सन्देह, हमारा यह युद्ध अहिंसात्मक है। अपनी रक्षा किसी आततायी से करना कदापि हिंसा नहीं है। हिंसा तथा अहिंसा का विश्लेषण मानसिक पृष्ठभूमि में होता है—शस्त्रों के प्रयोग पर वह भावना आधारित नहीं है।" मेजर सिंह ने रमणीमोहन के कथन की पुष्टि की।

"बेशक, बेशक !" सबों ने एक स्वर से कहा।

"किन्तु इस समय चीन मानव-बल से ओतप्रोत है। उसकी संहारक शक्ति अधिक है, हमें इसका ध्यान रखना चाहिए।" मिस मिलर ने मुस्कराते हुए कहा।

"शक्ति का स्रोत मानव-बल अथवा शस्त्रास्त्रों पर आधारित नहीं है। वह सत्य के मनोबल पर है। सत्य के सिपाही को जो प्राकृतिक बल तथा साहस निरन्तर प्राप्त होता रहता है, उससे हिंसक, दस्यु और आततायी सदा रहित रहते हैं, अतएव उनकी पराजय अन्त में होती ही है। संसार के विजेताओं के अन्तिम परिणाम सदैव भयंकर त्रासजनक हुए हैं। अलकज़ेन्डर, चंगेज़, तैमूर, नैपोलियन, हिटलर, मुसोलिनी इसके जीवित प्रमाण हैं। वे धूमकेतु की भाँति उदय होते हैं और रक्तपात, ज्वाला तथा हिंसा का तांडव रचकर पुनः अपनी लगाई ज्वाला में भस्म हो शताब्दियों के लिए अस्त हो जाते हैं।" लैम्बर्ट ने सतेज कहा।

"आप ठीक कहते हैं। आततायी की जिन्दगी बहुत कम होती है।"

"फारसी की एक कहावत में यही कहा गया है कि जुल्म और अनाचार बालू की नींव पर आधारित होने के कारण बड़ी शीघ्रता से ढह जाते हैं। मिस्टर सिंह, हमारे जवानों में वह शक्ति है जो पशुत्व के बल को परास्त कर विश्राम लेंगी। देखिए इब्तिदाए इश्क है रोता है क्या, आगे आगे देखिए होता है क्या ?" मेजर सिंह ने समर्थन किया।

इसी समय सड़क पर नवयुवकों का दल चीन से युद्ध करने के लिए जन-जन को आह्वान करता हुआ निकला। सब उनके नारों को सुनने लगे।"

मिस मिलर ने कहा—"यह तो रोज़ का रवैया हो गया है।"

"युद्धज्वाला से लड़ने के लिए हम सबको निमंत्रण दे रहे हैं। भारत का जन-जन इस धर्मयुद्ध में सहयोग करेगा। यह चाय ठंडी हो गई अब दूसरी मँगाइए।" मेजर सिंह ने कहा।

रमणीमोहन ने प्यालों को छूते हुए कहा—"हाँ, यह तो बिल्कुल ठंडी हो गई। गरम चाय के लिए आदेश देता हूँ।"

उन्होंने परिचारक को चाय लाने का आदेश देकर बियर का एक गिलास मेजर सिंह को प्रदान किया।

सब चाय की प्रतीक्षा करने लगे।

४

मिस इन्डिया जब अपनी शोभा-यात्रा से अवकाश पाकर अपने घर पहुँची, तब रात्रि के नव बज चुके थे। उसकी सखियाँ और उसके प्रशंसक उसे घर तक पहुँचाने आये थे। 'मिस इन्डिया' अपने मुहल्ले में 'कला' नाम से विख्यात थी। वस्तुतः वह कौन थी, कहाँ से वहाँ आकर बसी थी, कोई नहीं जानता था। उसके साथ अप-टू-डेट फैशन में रहने वाली एक प्रौढ़ा थी, जो अपने को उसकी माँ बताकर परिचय देती थी। प्रौढ़ा अपने को एक फौजी अफ़सर की विधवा, तथा अपना निवास-स्थान काश्मीर का एक गाँव 'ब्रेन' बताती थी। जब कोई बाचाल और उसकी समवयस्क महिला कह देती कि 'आपका नाक-नकशा काश्मीरियों से मेल नहीं खाता, बल्कि वह पड़ोसियों जैसा देख पड़ता

है' तब वह बहुत चिढ़ती; और कभी-कभी अनर्गल बातें भी सुनाती। उस मुहल्ले में कई घर फौजी अफसरों के थे। उनके घरों में वह कभी न जाती परन्तु फल-मिठाइयाँ आदि उपहार भेजा करती, जिससे वह सम्मान की दृष्टि से देखी जाने लगी।

उसने मिसेज रिपुदमन सिंह के नाम की पट्टिका अपने घरमें लगा रखी थी, अतएव वह इसी नाम से विख्यात हुई। वह अपने को भारतीय कहती थी—किसी जाति विशेष से अपने को सम्बन्धित नहीं बताती थी। यदि कदाचित् कोई उसकी जाति पूछ बैठता, तो उसका उत्तर नाक-भौंह चढ़ा कर देती—'मेरी जाति भारतीय है, और मुझे तुम्हारे यहाँ कोई विवाह आदि तो करना नहीं है, इसलिए मैं उसके पचड़े में नहीं पड़ती।' यदि कोई चिढ़ाने के लिये पूछ बैठता कि 'क्यों तुम अपनी लड़की कुंवारी रखोगी?' तब उत्तर देती कि 'मैं जब उसके विवाह के लिए चिन्तित नहीं हूँ, तब तुम्हारे शिर में क्यों दर्द होता है? जब तुम्हारे लड़के के साथ मंगनी करने आऊँ, तब सब बता दूंगी।' उत्तर पाकर उनको आगे पूछने का साहस नहीं होता था।

यद्यपि वह अपनी कथित पुत्री के साथ अकेली रहती थी, तथापि उसने उस पूरे मकान को ले रखा था। मकान मालिक कौन था, यह भी कोई नहीं जानता, था। उसके घर की सजावट भी उच्च कोटि की थी। प्रत्येक कमरा उत्कृष्ट साज-सामानों से सजाया गया था। उसी रंग के बेशकीमत परदे प्रत्येक द्वार तथा खिड़कियों पर पड़े थे। उनके फ़र्श काश्मीरी कालीनों से ढके थे। उसमें दर्पणों से मण्डित एक कमरा था, जिसे वह 'शीश महल' के नाम से पुकारती थी। उसमें रंग-बिरंगे शीशे इस भाँति कोनों में बैठाए गए थे, कि उनके भीतर से प्रकाश निकल कर दर्शकों को कुछ देर के लिए विस्मित कर देता था। छत भी दर्पण मण्डित थी, अतएव उनके प्रकाश का प्रतिबिम्ब जब उन पर पड़ता था, तब एक अद्भुत कल्पना साकार होती देख पड़ती थी। इस कमरे का उपयोग कम और केवल विशिष्ट अतिथियों के लिए किया जाता था। एक विशेष बात यह थी कि उसके सब नौकर गूंगे, बहिरे मालूम पड़ते थे। वे नाटे और देखने में पहाड़ी प्रतीत होते थे। उनके शरीर का वर्ण भी कुछ पीला

पन लिये था, और उनके चेहरे चौड़े और चिपटे थे।

वह आर्थिक दृष्टि से भी बहुत सम्पन्न प्रतीत होती थी। उस मोहल्ले में दैनिक व्यवहार की वस्तुएँ प्रायः उधार बेची-खरीदी जाती थीं, परन्तु मिसेज रिपुदमन सिंह का व्यवहार रोकड़ में होता था। उन फेरी वाले व्यापारियों को वह कभी-कभी इनाम-इकराम भी देती और मुँहमाँगा दाम तो वह चुकाया ही करती थी, इसलिए वे उसके बहुत प्रशंसक थे। जहाँ-जहाँ वे जाते किसी न किसी बहाने उसकी प्रशंसा करते थे; और इससे वह दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो गई थी। उसने अपने निवास-स्थान का नाम रखा था 'अलका'।

बहु प्रशंसित होने पर भी 'अलका' एक रहस्यमय घर बना हुआ था। उसके अन्दर की व्यवस्था से कोई परिचित नहीं था, अतएव अनुमान तथा कल्पनाओं के अनेक सूत्रों ने उसके रहस्य को अधिकाधिक प्रगाढ़ बना दिया था। दिन में वह प्रायः बन्द रहता था, परन्तु रात्रि को उसके कमरों की खिड़कियों से प्रकाश बाहर झांका करता था, और चहल-पहल भी दिखाई देती थी। कभी-कभी रात्रि की निस्तब्धता वाद्य, नृत्य तथा संगीत की ध्वनि से भंग होती थी, जिससे तरल जीवन का संकेत मिलता था।

'अलका' का मुख्य द्वार दिन को प्रायः बन्द रहता था, परन्तु संध्या समय वह खुल जाता और दो शस्त्रधारी गूंगे-बहिरे नौकर, सन्तरी की भांति पहरा देते देखे जाते। उसमें आने वाले व्यक्ति सदैव मोटर पर आते और उसकी खिड़कियाँ बन्द रहने से कोई उन्हें देख नहीं सकता था।

'अलका' का पिछला द्वार एक गली में खुलता था। वहाँ पर भी दो बन्दूक धारी सन्तरी गुप्त रूप से पहरा देते थे। इधर से प्रवेश करने वाले पैदल आते थे, और उनमें प्रायः सब बुरकापोश रमणियाँ होती थीं। उन्हें अन्दर जाने के लिए एक रेशमी लाल फूल दिखाना पड़ता था। मोहल्ले वालों ने लुक-छिप कर उसके रहस्य को जानने के अनेक प्रयत्न किये थे, परन्तु सफल कोई नहीं हुआ।

जब 'मिस इन्डिया' अथवा कला विजय-किरीट से सुसज्जित अपने घर के द्वार पर पहुँची, तब उसके साथ अनेक बाहरी व्यक्ति भी 'अलका' में प्रवेश

कर गए। मकान के सामने का लान बड़ी खूबसूरती से सजाया गया था। जहाँ कला ने फाटक में प्रवेश किया, वहाँ विद्युत-आलोक मालाओं से वह जगमगा उठा। लान पर मेजें लगी थीं, जिन पर भोजन सामग्री सजाई हुई थी। मिसेज रिपुदमन सिंह ने आगे बढ़ कर मिस इन्डिया का स्वागत किया, और गर्व के साथ उसे अपने हृदय से लगा लिया। उसे उसने एक चौड़ी तथा बड़ी मेज के सामने बैठाया, तथा उसके चारों ओर उसकी सखियाँ बैठाई गईं। पुरुष अतिथियों के बैठने की व्यवस्था कुछ दूर थी।

उस दिन प्रवेश के नियम कुछ शिथिल कर दिए गए थे, इसलिए अनेक पड़ोसी, जिनमें फौजी अफसर अधिक थे, निमन्त्रित थे। सबके नेत्र मिस इन्डिया को देखने में संलग्न थे। अभिवादन और बधाई का तांता लगा था। वह अपने प्रशंसकों की जयजयकार में डूब-उतरा रही थी।

सबके यथास्थान बैठ जाने पर डीसोजा का कन्सर्ट स्वागतगान करने लगा। वाद्यवृन्द की धुन समाप्त होने पर मिसेज रिपुदमन सिंह ने सबसे पहले परीक्षक समिति को धन्यवाद दिया, और अपने को गौरवान्वित बताया। इसके बाद अपनी पुत्री कला 'मिस इन्डिया' के गुणों की प्रशंसा की, और फिर अपनी ओर से बधाई दी।'

उसके पश्चात् परीक्षक समिति के प्रधान ने कला के सौन्दर्य पक्ष का विश्लेषण विस्तार के साथ किया और बताया कि यह चुनाव सर्व सम्मति से हुआ है।

उसके सहकारी ने आधुनिक सौन्दर्य की व्याख्या कला के संदर्भ में की। उन्होंने खेद भी प्रकट किया कि भारत की नवयुवतियों की रुचि इस दिशा में अभी नहीं है और अधिक से अधिक संख्या में आगामी प्रतियोगिताओं में भाग लेने को आमन्त्रित किया।

फिर कारपोरेशन के अधिकारी ने उसके विजय-किरीट को राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में प्रदान करने की घटना बताकर उसके राष्ट्रीय प्रेम की सराहना की, तथा बताया कि बम्बई के प्रमुख उद्योग केन्द्र 'रमणलाल ग्रूप' के स्वामी के पुत्र रमणीमोहन ने उसे ग्यारह लाख रुपयों में प्राप्त कर उसे पुनः मिस-

इन्डिया को समर्पित कर दिया। यह भी बताया कि नीलाम से प्राप्त सब रकम राष्ट्रीय सुरक्षा-कोष में अर्पण कर दी गई है।

दर्शकों को आशा थी कि उसके बाद ग्यारह लाख रुपए निछावर करने वाले व्यक्ति का भाषण होगा, परन्तु उस समय अत्यन्त निराशा हुई, जब उन्हें बताया गया कि नीलाम समाप्त होने के पश्चात् वह अदृश्य हो गए, और वह उनके मध्य उपस्थित नहीं हैं।

सबके अन्त में मिस इन्डिया ने सबको धन्यवाद देकर कृतज्ञता ज्ञापित की। उसके भाषण के पश्चात् वाद्य वृन्द मधुर धुन में पुनः बज उठा, और आमंत्रित व्यक्ति अल्पाहार करने लगे।

५

आगत व्यक्तियों के विदा होने के पश्चात् कला अपनी माँ और अन्तरंग सहेलियों तथा मित्रों के साथ 'अलका' की बाहरी बैठक में आकर बैठ गई। उसकी माँ ने उसे विश्राम लेने के लिये बहुत आग्रह किया, किन्तु वह इतनी हर्ष-विभोर थी कि उसे कोई थकावट महसूस नहीं हो रही थी। वह अपनी प्रशंसा बार-बार सुनने के लिए आकुल थी।

मिसेज रिपुदमन सिंह जब पुनः आग्रह करने लगीं, तब उनके एक मित्र सन्तोष कुमार ने, जो केन्द्रीय सचिवालय के एक अधिकारी थे, कहा—"आप क्यों जिद करती हैं, मिसेज सिंह। 'मिस इन्डिया' को थोड़ी देर हम लोगों के समीप बैठने दीजिए।"

'मैं डर रही हूं, कि कड़ी मेहनत से वह कहीं बीमार न हो जाय।"

"आप निश्चिन्त रहिए, वह बीमार नहीं पड़ेंगी।"

एक दूसरे अन्तरंग मित्र नैयर जो सुरक्षा विभाग के वरिष्ट अधिकारी थे, बोले—"आज का दिन बड़े गौरव और हर्ष का है। खुशी में कहीं नींद आती है।"

"आप ही देखिये कि ममी कितनी बेतुकी है।" कला ने उन दोनों से सहास्य कहा।

नैयर जो अभी तक उससे कुछ दूर बैठे थे, उसके समीप सोफा पर आकर बैठ गए।

सन्तोषकुमार यह सहन न कर सके और वह भी सोफा के दूसरे कोने पर जम गए। मिस इन्डिया इन दोनों के मध्य बैठ हर्ष-विभोर होने लगी, किन्तु दोनों का इस प्रकार बैठना मिसेज़ रिपुदमन सिंह को अच्छा नहीं लगा।

"आधी रात बीत गई है, नैयर साहब अब ..."

"किन्तु आज से अधिक सुहावनी रात्रि क्या जीवन में दुबारा आ सकती है। अबतो आपका मन-चाहा हो गया। क्या आप सोच सकती हैं कि कला के लिये मुझे कितना परिश्रम करना पड़ा है ?"

"आप लोगों का ही सहारा है। मैं भी एक फौजी अफसर की विधवा हूँ। जो कुछ आपने परिश्रम किया है, वह एक फौजी भाई की लड़की के लिए किया है।"

इसी समय कमरे में घंटी बजने लगी। मिसेज़ रिपुदमन सिंह उसकी आवाज सुन कर चौकन्नी हुई, और तेजी से जाती हुई बोली—"कला, अब तुम जाकर विश्राम करो, तुम्हारे यहाँ बैठने की कोई जरूरत नहीं है।"

कला आदेश पाकर उठ खड़ी हुई। नैयर और सन्तोषकुमार भी मजबूरन उठे। कला उनके साथ उनको विदा करने के लिए सदर दरवाजे तक आई और हाथ मिलाते हुए बोली—'आप ममी की बात पर ध्यान न दीजिएगा। इनका स्वभाव कुछ चिड़चिड़ा है, और कभी-कभी रूखा हो जाता है। आप दोनों ने जो अहसान मेरे ऊपर किया है, उसके लिए मैं विशेष रूप से आभारी हूँ", कहते हुए उसने उसका हाथ कुछ जोर से दबाया।

उसका दूसरा हाथ सन्तोष कुमार के हाथ में दबा था। उसने उसे दबाते हुए कहा—"किन्तु काम निकल जाने पर कौन किसको पूछता है ?"

"आप लोगों को शिकायत का अवसर नहीं मिलेगा।"

"उम्मीद तो यही है, लेकिन तुम्हारी माँ ...।"

"उनकी बात छोड़िए ! मैं अब वयस्क हूँ।"

"अबतो उनके नियन्त्रण से निकलिए। आजाद होकर दुनिया का रंग देखिए।"

"वह दिन शीघ्र आने वाला है। धैर्य रखिए।"

इसी समय मिसेज रिपुदमन सिंह ने पीछे से आकर कहा—"नैयर साहब, अभी आप यहीं ठहरे हैं। अगर ठहरना है तो अन्दर बैठकर बातें कीजिए। अभी होटल वाले मौजूद हैं, उनके आदमी देख जाते हैं।"

नैयर और सन्तोष ने कला का हाथ छोड़ दिया, और कहा—"अब बैठूंगा नहीं।"

"तब जाइए।"

दोनों नमस्कार कर साथ-साथ विदा हुए।

उनके जाने के पश्चात् उसने कला का हाथ पकड़ते हुए कहा—"चल अन्दर, इन लोगों को क्यों मुंह लगाती है?"

"तुम भी तो उन पर बहुत माया फैलाती हो।"

"मेरी दूसरी बात है। अगर माया न फैलाऊँ तो काम कैसे बने?"

"वही मैं भी करती हूँ।"

"क्या मतलब?"

"चीन के पक्ष को सबल बनाना हमारा ध्येय है।"

"मिलर तुझसे मिलने आई है।"

वे दोनों वहाँ आईं जहाँ मिस मिलर बैठी थी।

मिस मिलर ने कला को अपने अंक में भरते हुए कहा—"बधाई है मिनचू!" मिसेज रिपुदमन सिंह ने त्रस्त स्वर में कहा—"यह नाम क्यों ले रही हो मिलर!"

"भावावेश में निकल गया। फिर यहाँ कोई दूसरा नहीं है।"

"यह ठीक है, किन्तु अपने ऊपर सदैव नियन्त्रण रखना चाहिए। परदा-फाश धोखे में होता है।"

"हमारा जाल चारो ओर इतनी गहराई से फैल गया है कि छोटी-मोटी भूलों से कुछ नहीं बिगड़ सकता। आज एक मोटी मुर्गी फँसी है।"

"कौन ?"

"वही जिसने मिनचू के ताज की बोली लगाई थी।"

"उससे तुम्हारी भेंट हो गई ?"

"जुलूस जब चाँदनी चौक पहुँचा तबसे उसके साथ हूँ।"

"अच्छा यह कैसे ?"

"अनायास ! मेरे एक पुराने दोस्त लैम्बर्ट के साथ वह भी जुलूस देख रहे थे।"

"यह लैम्बर्ट कौन है ?"

"एक अमेरिकन सैलानी। अच्छे घर-बार का मनचला युवक है, जो पैसे को पानी की तरह बहाना जानता है। कलकत्ते में उससे मिलाप हुआ था, और कई हजार डालर मैंने उससे झटक लिये थे।"

"तब वह तुम्हारा अन्तरंग मित्र है। कहीं भावावेश में अपना भेद तो नहीं खोल दिया ?"

"मिलर मूर्ख नहीं है। भेद लेती है, देती नहीं। 'कहो तो उस करोड़पती को यहाँ लिवा लाऊँ। अच्छी मोटी मुर्गी है, सोने के अंडे देती है। और सबसे बड़ी बात यह है कि उसका व्यापारिक सम्बन्ध दक्षिण-पूर्वीय एशिया के देशों तथा आस्ट्रेलिया से है। हम इसके माध्यम से अपने देश को सहायता पहुँचा सकते हैं।"

"कैसे ?"

"रबड, तेल, अन्न आदि वस्तुएँ, जिनकी चीन को अत्यन्त जरूरत है, इसके अढ़तियों के मारफत भेजा जा सकता है।"

"बिना अपने दल में मिलाए क्या वह सब करेगा ?"

"इसीलिए कहती हूँ कि अगर तुम्हारी राय हो तो उसको ले आऊँ। उसने ग्यारह लाख रुपये मिनचू··नहीं नहीं, कला के ताज के लिए दिए हैं, तब कम से कम बीस लाख वह इसको पाने के लिए बिला उज्र देगा।"

"हाँ, इतनी रकम मिलने की उम्मीद हो तो फिर इस विषय में सोचा जाए।"

"मेरा यही ख्याल है कि वह बीस क्या पच्चीस-तीस लाख भी दे सकता है।"

"क्या सत्य ही वह कला पर इतना अधिक मोहित हो गया ?"

"गहराई तो नहीं जानती, परन्तु मोहित अवश्य है ।"

"कैसे जाना ।"

"यदि मोहित न होता तो इतनी बड़ी रकम खर्च करता ?"

"सम्भव है कि उसने भारतीय सुरक्षा कोष के आकर्षण से द्रव्य प्रदान किया हो ।"

"हो सकता है कि एक कारण यह भी हो, परन्तु मोह की बात उड़ाई नही जा सकती ।"

"किन्तु नवयुवक है !"

"इससे क्या ? यौवन ही तो विवेक को असन्तुलित करता है ।"

"किन्तु स्थिरता नहीं होती । वे भावुक होते है ।"

"भावुक ही फँसते हैं ।"

'भय यही है कि कहीं परदाफाश न हो जाय । आजकल सरकार बहुत सचेत है ।"

"सचेत कहाँ तक होगी ? हमारे दल के लोग सर्वत्र मौजूद है । कोई दुर्घटना घटित होने के पहले हमें सूचना प्राप्त हो जाती है ।"

"अभी तक यह सम्भव था, परन्तु अब परिस्थिति बदल गई है ।"

"यह तो भारत है, एक अजीब देश ! अभी तक तो यह फ्रांस को भी मुहब्बत और इश्कबाजी में मात दे रहा था ।"

"परन्तु इस समय तो उसने वह केंचुल उतार फेंकी है ।"

"हमारे आक्रमण से कुछ परिवर्तन हुआ है, परन्तु क्या वह स्थायी हो सकता हैं ?"

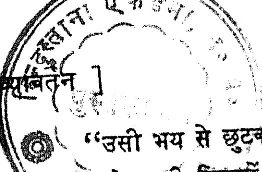
"मैंने आक्रमण के लिये मना किया था ।"

"हम लोग नौकर हैं—हमारी कौन सुनता है ?"

"वहाँ के कुछ लोगों ने हमारा खेल बिगाड़ दिया ।"

"लेकिन हमारी असलियत ज्यों की त्यों सुरक्षित है ।"

"मालूम होने पर हम लोग अन्य चीनियों की भाँति गिरफ्तार हो जाते ।"



"उसी भय से छुटकारा पाने के लिए हमने यह खेल रचा था, और समीक्षकों को गहरी रिश्वतें दी थीं।"

"यह चाल बहुत उपयुक्त रही। 'मिस इन्डिया' बन कर कला सचमुच भारतीय हो गई।"

"और हमारे कारण सुरक्षाकोष को इतनी सम्पदा मिल गई। यह दान तो हमारा ही माना जायगा।"

"निस्सन्देह।"

"अच्छा! इस भारतीय भोंदू को ले आओ। आजकल खर्च की बहुत कमी महसूस हो रही है। हमारा व्यापार भी एक प्रकार ठप हो गया है।"

"हाँ, कुछ ऐसे आसार नज़र आते हैं। रंग महल सूना है, जुए का फड़ भी सूना है।"

"यों तो आज भी कई युवतियाँ आई थीं, किन्तु समारोह होने से उनको लौटा दिया।"

"कुछ मनचले भी तो आए होंगे?"

"आजकल वे लोग नहीं आते। जबसे देश-प्रेम की लहर उठी है, तबसे उनकी संख्या घट गई है।"

"आमदनी के जब दोनों द्वार बन्द हैं, तब गरीबी आवेगी ही।"

"इसीलिए तो हमें इस नए रंगरूट को अपने दल में मिलाना है।"

"वह मनचला युवक देख पड़ता है। जल्दी हत्थे चढ़ जाएगा, परन्तु कला को समर्पित करना होगा।"

"बीस लाख से अधिक मूल्य उसका नहीं हो सकता।"

"यह कला की बुद्धि पर निर्भर करता है। उसमें बुद्धि हो तो बीस लाख क्या सम्पूर्ण सम्पत्ति अपने अधिकार में कर सकती है।"

"यह ठीक है, हमारे दल की वह पहाड़िन जैसी दिखने वाली लूंग आज मेजर कुलदीप सिंह की सम्पत्ति की मालकिन बनी बैठी है।"

"अरे हाँ, क्वालिटी में आज उससे भेंट हुई थी।"

"क्वालिटी रेस्ट्राँ में?"

"हाँ वहीं । बता चुकी हूँ कि चाँदनी चौक में कला के ताज की बोली लगाने वाले साहब मेरे पुराने मित्र लैम्बर्ट के साथ मिल गए थे । वहाँ से हम लोग क्वालिटी चले गये । संयोग से मेजर और लूंग भी आ गए । लूंग मुझको देख कर मेरे पास आने वाली थी कि मैंने गुप्त भाषा में संकेत किया, जिससे वह सावधान हो गई ।"

"मेजर कैसा देख पड़ा ?"

"उन दोनों के आपसी व्यवहार से प्रकट होता था कि उनकी पटरी बैठ गई है ।"

"लूंग का चेहरा ही ऐसा बना है, जो स्वयमेव विश्वास पैदा करता है ।"

"दिखती भी है बिल्कुल पहाड़िन ।"

"वह तिब्बती या हिमालय प्रदेश की निवासिनी मालूम पड़ती है ।"

"और नाटक करना भी खूब आता है । जब जोश के साथ चीनियों की बुराई करती है, तब ऐसा मालूम होता है कि अपनी बीती सुना रही है ।"

"ऐसा ही होना चाहिए । तुम भी तो अमेरिकन मालूम पड़ती हो ।"

"मेरे पिता अमेरिकन थे, इससे उनकी मुखाकृति और लम्बाई पाई है ।"

"किन्तु हृदय तो तुमने चीनियों का पाया है ।"

"क्योंकि शिक्षा-दीक्षा चीन में मिली है और वस्तुतः मैं चीनी हूँ, क्योंकि चीन मेरी जन्मभूमि है ।"

"उसी प्रकार हम सबों की जन्मभूमि चीन है ।"

"आप तो बड़े मजे से कश्मीरिन का पार्ट अदा करती हैं । आपकी चाल-ढाल, बात-चीत का लहजा आपको भारतीय सिद्ध करते हैं ।"

"यहाँ आने के पहले मुझे बहुत दिनों तक एक कश्मीरी परिवार में रहना पड़ा था ।"

"यहाँ भारत में ?"

"नहीं हांगकांग में । वहाँ एक कश्मीरी परिवार रहता था ।"

"कश्मीरी भारत के बाहर बहुत कम मिलते हैं, क्योंकि व्यापार व्यवसाय नहीं करते ।"

"उस परिवार का स्वामी दरअसल एक गुजराती व्यवसायी का रसोइया बन कर गया था, और फिर वह चीनी महिला से विवाह कर वहीं बस गया।"

"क्या आप उसकी सन्तान है ?"

"हाँ ! मेरे पिता की मृत्यु के पश्चात् मेरी माँ चीन के कैन्टन नगर में मज़दूरी करने चली गई थी। जब कोमिटांग का पतन हुआ, तब लाल चीन के अधिकारियों ने मेरी माँ को पकड़कर चीन के किसी भीतरी गांव में खेती करने भेज दिया।"

"आप भी उनके साथ गई थीं ?"

"नहीं ! उससे मुझे पृथक कर दिया गया, और गुप्तचरी की शिक्षा के लिए मुझे शंघाई में रखा गया।"

"फिर कभी आप अपनी माँ से मिली ?"

"नहीं ! क्या तुम नहीं जानती कि चीन में सन्तान उसके माता-पिता की नहीं, बल्कि सरकार की होती है।"

"तब तो आपकी उम्र ज्यादा नहीं होगी।"

"नहीं, मेरी आयु कुल पैंतीस वर्षों की है, किन्तु पचास की दिखाना पड़ती है।"

"आपको इसमें कुछ बुरा नहीं लगता।"

"कोई उपाय नहीं है। आदेश तो आदेश है।"

"कम उम्र तो स्त्रियां बताया करती हैं, परन्तु अधिक··।"

"जाने दो इन भूली-बिसरी बातों को। कल्पा की माँ का पार्ट अदा करने के लिए अधिक उम्र दिखाना आवश्यक है।"

"दरअसल मिनचू भी हमारी भाँति कोई अनाथ बालिका होगी।"

"हाँ, वह जब तीन वर्ष की थी, उसे उसकी माँ से छीन कर मेरे साथ कर दिया गया, तबसे वह मेरे साथ है। इसको पूर्ण रूप से भारतीय आचार-विचार का ज्ञान हो जाय, इसलिए मेरे साथ उसे सात वर्ष की आयु में भारत भेज दिया, कुछ दिनों तक हम कश्मीर के गांवों में रहते रहे। इसके बाद हम लोगों को दिल्ली जाने का आदेश मिला।"

"तबसे आप यहीं है ?"

"दिल्ली हमारे कार्यक्षेत्र का केन्द्र है। मेरे यहाँ से कितनी ही लड़कियाँ फौजी जवानों के घरों में आनन्द कर रही हैं। हमारे जासूस सर्वत्र पहुँच गए हैं।"

"इसीलिए हमारी जीत सर्वत्र हो रही है। भारतीय सेना की सब गति-विधि हमारी सेना के अधिकारियों को पहले मालूम हो जाती है, और उसी के अनुसार हम प्रबन्ध करते हैं।"

"हमें पंचमांगियों की सेना बनाने में भी अपूर्व सफलता मिल रही है।"

"यदि हम उस करोड़पती सेठ को पंचमांगी बनाने में सफल हो जायें, तब एक तीर से दो शिकार हो सकेंगे।"

"अर्थात् !"

"अर्थात्, यह कि हम इसके माध्यम से चीन में फैली भुखमरी को दूर कर सकेंगे और उसकी सम्पत्ति का उपयोग हमारे कार्यों में होगा।"

"पंचमांगियों से और भी फायदे हैं। देश को अन्दर से खोखला बनाने में वे बड़े सहायक सिद्ध होते हैं। तैमूर की विजय का यही रहस्य था।"

"क्या उस समय पंचमांगियों का निर्माण हुआ था ?"

"तैमूर बहुत दूरदर्शी सेनानायक, कूटनीति का निष्णात आचार्य, और साहस का अवतार था। उसकी बनाई हुई योजनायें आज भी उतनी ही सत्य तथा फलदायक हैं, जितनी उसके समय में थीं।"

"हमारे अधिकारी भी उसी के पदचिन्हों पर चल रहे हैं।"

"चीन विश्व-विजेताओं की जन्मभूमि रही है। चंगेज और तैमूर ऐति-हासिक प्रमाण हैं।"

"उन्हीं की युद्ध नीति का हमारी सेना अनुसरण कर रही है।"

"मानव शक्ति के सहारे हमने सदैव विजय पायी है। आज भी चीन की जनसंख्या अस्सी करोड़ से किसी भाँति कम नहीं है।"

"और शिक्षित सेना भी लगभग तीन करोड़ सन् १९५९ में थी। अब तक तो उसमें अधिक वृद्धि हुई होगी।"

"बेशक, हम भारत की सैन्य-शक्ति को हेच समझते हैं।"

"अच्छा, अब बहुत रात बीत गई ।"

"यदि कोई रुकावट न हो तो आज यहीं सो जाओ ।"

"कल सुबह आकाश होटल का चक्कर लगाना है ।"

"क्यों ?"

"आपका करोड़पती वहीं ठहरा है । वह मुझे वहीं पास के कमरे में ठहराने के लिए आतुर है ।"

"यदि तुम उसे फाँस सको, तब तो अत्युत्तम । कला अभी अल्हड़ है, शायद चूक जाय ।"

"आपका कोई शिष्य भूल-चूक नहीं कर सकता ।"

"बहुत तारीफ न करो । चलो आज यहीं रात काटो । सुबह उठकर चली जाना ।"

"बातों-बातों में रात बीत गई ! चलिए, कुछ खा-पीकर सोया जाय ।"

मिसेज रिपुदमन सिंह सन्तोष के साथ हँसने लगी और सोने के लिये चली गई ।

६

रमणीमोहन ने उत्सुकता के साथ विजटिंग कार्ड पर आगन्तुक का नाम पढ़ आकाश होटेल के कर्मचारी से कहा—"बोलो, साहब मुलाकात देना नहीं माँगता ।"

अंग्रेजी द्वारा बोली जाने वाली हिन्दी का बोलबाला अब भी होटलों में है ।

कर्मचारी जाने वाला था कि कमरे के परदे को हटाते हुए एक नवयुवक ने पूछा—"क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?"

रमणीमोहन ने बिना ध्यान दिए उत्तर दिया—"जी हां, आइये ।"

युवक ने मुस्कराते हुए, कर्मचारी की प्लेट से कार्ड उठाकर कहा—"मैं 'जनमत' नामक दैनिक पत्र का सम्बाददाता हूँ । आपने कल 'मिस इन्डिया' के विजय मुकुट को ग्यारह लाख की बोली लगाकर जीता था, इसलिए मेरी और

मेरे पत्र तथा दिल्ली जनता की ओर से बधाई स्वीकार कीजिए और......।"

"धन्यवाद, मैं मुलाकात देने से इनकार कर चुका हूँ।"

"किन्तु आपकी अनुमति प्राप्त होने के बाद आया हूँ।"

"मैं नहीं जानता था कि दिल्ली के अखबार वाले अपने आगमन की सूचना देने के साथ कमरे में घुस आते हैं।"

"आपकी अनुमति पाकर ही मैंने प्रवेश किया है।" सम्वाददाता मुस्कराने लगा।

"यह मैं कैसे जान सकता था कि जिन्होंने मुलाकाती कार्ड भेजा है, वही उत्तर की प्रतीक्षा न कर, स्वयं प्रवेश की अनुमति माँग रहे हैं।"

"इस अपराध के लिए मैं क्षमा मांगता हूँ। आपको अधिक परेशान नहीं करूँगा, केवल दो-तीन प्रश्न पूँछूगा।"

"किन्तु आपके प्रश्नों के उत्तर देने के मिज़ाज में नहीं हूँ।"

इसी समय लैम्बर्ट के साथ मिस मिलर ने प्रवेश किया।

उनका उठकर स्वागत करते हुए सम्वाददाता से कहा—"देखिए, मेरे मित्र आ गए हैं। आप किसी अन्य समय आइये।"

"कृपया, समय निश्चित कर दीजिए।"

"इस समय नहीं, मैं व्यस्त हूँ।"

मिस मिलर ने मुस्कराते हुए कहा—"मिस्टर मोहन, मुलाकात जरूर दीजिये। एक ही दिन में आपने वह कीर्ति उपार्जन कर ली, जो विरलों को मिलती है।"

"यही मेरा सुझाव है।" सम्वाददाता ने आशान्वित होकर कहा।

"मैं विज्ञापन से दूर रहता हूँ।"

"परन्तु अखबार वाले कब किसी को छोड़ते हैं।" फिर सम्वाददाता से पूछा—"क्या आप मिस्टर मोहन का चित्र छापेंगे ?"

"बड़ी खुशी के साथ।"

"देर क्यों करते हैं। कैमरा निकालिए।"

सम्वाददाता कैमरा ठीक करने लगा।

"यह क्या ग़ज़ब करती हैं मिस मिलर ?" रमणीमोहन ने आपत्ति प्रगट की।

"अजी, आपके साथ हम लोगों का भी चित्र छप जायगा। ऐसा सुयोग भला कब मिलेगा ?"

लैम्बर्ट को रमणीमोहन के दाहिनी ओर बैठने का संकेत करती हुई वह स्वयं बाईं ओर बैठ गई। सम्वाददाता ने फोटो उतार लिया।

"देखिए मिस्टर, इस फोटो-ग्रुप के साथ हम लोगों के नामों का भी उल्लेख कीजियेगा। मेरा नाम मिस मिलर है, और दूसरे सज्जन का नाम मिस्टर जे० लैम्बर्ट है। हम दोनों अमेरिकन सैलानी हैं।"

"अवश्य आपके नामों का उल्लेख करूँगा, परन्तु····।"

"क्या मिस्टर मोहन 'इन्टर व्यू' देने से इनकार करते हैं ?"

"जी हाँ।"

"जो बातें आप पूछना चाहें, मुझसे पूछ लीजिए।"

"आप इनको जाने दीजिए। व्यर्थ में इनका और अपना समय बरबाद कर रहीं हैं।" रमणीमोहन ने आपत्ति पुनः प्रगट की।

मिस मिलर ने बिना ध्यान दिये कहा—"आप नाम जानना चाहते होंगे। नाम है मिस्टर आर० मोहन। आप रमणलाल ग्रुप मिल्स के स्वामी सर ब्रज मोहन दास के ज्येष्ठ पुत्र और स्वयं एक मिल के मैनेजिंग डाइरेक्टर हैं। मैर करने के लिए दिल्ली आए थे, और मिस इण्डिया का विजय-किरीट ग्यारह लाख रुपयों में खरीद कर वह रकम राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में प्रदान की है, और कुछ····। बाकी आप जोड़–गाँठ लीजिए। इस हुनर में आप लोग माहिर होते हैं। तिल का ताड़ बनाने की कला आप बखूबी जानते हैं।"

"बस इतना ही पर्याप्त है। आगे मैं खाना पूरी कर लूँगा।"

सम्वाददाता ने धन्यवाद देते हुए विदा ली।

"यह आपने क्या कर डाला ?" रमणीमोहन ने उसके जाने के बाद कहा।

"वही किया जो उचित है। जब आप एक नगण्य वस्तु के लिए ग्यारह

लाख रुपए खर्च कर सकते हैं, तब अखबार वाले आपके पीछे न दौड़ेंगे, तो क्या हमारे पीछे !"

"शायद मेरा कार्य अनुचित था ।"

"नहीं, मेरी हँसी का यह मतलब न निकालिए । प्रेम और युद्ध में सब कुछ निहित है ।"

लैम्बर्ट जो अभी तक चुप था, बोला—"मिस मिलर, किसी के प्रेम की ओर संकेत करना अनुचित है ।"

"तब आपका भी मत है कि मिस्टर मोहन मिस इन्डिया के प्रेम में फँस गए हैं ।"

"हमें इसकी चर्चा न करनी चाहिए ।"

"मैं इसीलिए कह रही थी कि मिस्टर मोहन ने मुझे अपने पड़ोस में रहने के लिए आमंत्रित किया है ।"

"आप उस विचार को निकाल दीजिए । वह कमरा अब खाली नहीं है । कल रात को कोई सज्जन आकर ठहर गए हैं ।"

"चलिए, मेरा स्वप्न भंग हुआ ।"

"क्यों ?"

"कल से यही विचार कर रही थी कि रिट्ज से उठ कर मैं यहाँ आ जाऊँ, परन्तु· · · ·।"

"उससे क्या हुआ ? दूसरे कमरे खाली हैं ।"

"जाने दीजिए, मैं वहीं अच्छी हूँ । यह जानकर आप लोगों को आश्चर्य होगा कि मैंने 'मिस इन्डिया' के निवास स्थान का पता लगा लिया है ।"

"बधाई है । परन्तु क्या हम लोग वहाँ जा सकते हैं ?"

"यदि मिस्टर मोहन की इच्छा हो तो मैं उसका प्रबन्ध कर सकती हूँ ।" वह कनखियों से रमणीमोहन को देखने लगी ।

"मेरी कोई इच्छा नहीं है, धन्यवाद !"

"लैम्बर्ट तो अवश्य उससे मिलना चाहेंगे, क्योंकि वह सौन्दर्यप्रेमी हैं ।"

"जब हम लोग चलेंगे तब मिस्टर मोहन हमारे साथ जाएगें ही ।"

"यह कोई जरूरी है।" रमणीमोहन ने मुस्कराते हुए कहा।

"ग्यारह लाख रुपए खर्च करना भी तो जरूरी नहीं था।" मिस मिलर हँसने लगी।

"उस बहाने मैंने राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में दान दिया है।"

"बेशक, इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता। उसी तरह यह भी सत्य है कि आकर्षण मिस इन्डिया का ही था।"

"मनुष्य किसी न किसी बहाने काम करता है।"

"ठीक है, हम लोगों को मिस इन्डिया के दर्शन करना चाहिए।"

"आप लोग जाइए, मैं नहीं जाऊँगा।" रमणीमोहन ने कहा।

"यदि मिस इन्डिया तथा उसकी माँ आपको निमंत्रित करें, तो भी आप जाने से इनकार करेंगे?"

"क्या तुम यहां तक सफल हुई हो?" लैम्बर्ट ने पूछा।

"तुम जानते हो, मिलर कोई काम अधूरा नहीं करती।"

"फिर उस निमंत्रण पत्र को तुम अब तक छिपाये क्यों हो?"

"छिपाया कहाँ, मैं उसी सम्बन्ध में बात कर रही हूं। लीजिये आप दोनों को सांध्य-भोजन के लिए मिसेज रिपुदमन सिंह निमंत्रित करती हैं।" उसने दो लिफाफे अपने झोले से निकालकर उनको दिए।

लैम्बर्ट ने पढ़कर कहा—"यह तो आज ही शाम के लिए हैं।"

"जी हाँ। मिस इन्डिया की विजय के उपलक्ष में मिसेज रिपुदमनसिंह ने कुछ अन्तरंग मित्रों को शाम के भोजन के लिए आमंत्रित किया है।"

"यह मिसेज़ रिपुदमनसिंह कौन हैं? कभी इनका नाम नहीं सुना।"

"एक कश्मारी फौजी अफसर की विधवा हैं, और दिल्ली में कई वर्षों से निवास कर रही हैं।'

"तब मिस इन्डिया कश्मीरिन हैं। कश्मीरियों के अतिरिक्त और कौन इतना सुन्दर हो सकता है।"

"आप सौन्दर्य पारखी हैं, मिस्टर लैम्बर्ट। उसके नाक-नकशे से आप परख नहीं सकते थे?"

"मेरा भी कुछ ऐसा ही विचार था। हालांकि मिस्टर मोहन मुझसे सहमत नहीं थे।

"अपनी आँखों से देख कर परख लीजिएगा कि सोना कितने कैरेट का है।"

"मिस इण्डिया, क्या मिसेज त्रिभुवन सिंह की पत्नी है ?"

"और क्या वह उसे कहीं से उठा लाई है ?" कहते हुए वह हँसने लगी।

"अमीर मालूम पड़ती है ?"

"मैंने उनका बैंक-बैलन्स नहीं देखा, किन्तु उनके रहने का स्थान चमत्कारिक है।"

"तब क्या तुम्हारा उनसे घनिष्ठ सम्बन्ध है।"

"घनिष्ठता नहीं है, किन्तु दो-तीन बार अवश्य गई हूँ।"

"किन्तु कल तुमने कोई जिक्र नहीं किया ?"

"आप लोगों ने न पूछा, और न मैंने कुछ कहा।"

"कल की घटना प्रमुख थी। आपको बताना चाहिए था कि मिस-इन्डिया को आप जानती है।"

"जब तक प्रमाण न इकट्ठा कर लूं, तब तक कहना-सुनना व्यर्थ था।"

"यह निमंत्रणपत्र आप प्रमाण स्वरूप लाई हैं ?"

"और आपको वहाँ तक ले जाने के लिए भी !"

"मिस इन्डिया क्या वस्तुतः इतनी सुन्दर है, जितनी वह कल देख पड़ती थी।"

"आज शाम को आप स्वयं निर्णय कर लीजिएगा।"

"मुझे तो 'मेक-अप' ज्यादा मालूम हो रहा था"

"मेकअप नारी का शृंगार है।"

"वह धोखे की टट्टी है।"

"किन्तु हमेशा नहीं। पारखी आँखें धोखा नहीं खाती। शृंगार वास्तविक सौन्दर्य में चार चाँद लगाता है।"

"मिस इण्डिया को आपने बिना मेकअप के भी देखा होगा।"

"इस जमाने में कोई सुन्दरी बिना मेक-अप किए अपने कमरे से बाहर नहीं निकलती।"

"तब आप उसकी वास्तविकता से अपरिचित हैं।"

"यह शायद आपको नहीं मालूम कि जो वस्तुतः सुन्दर होता है, उसी पर मेक-अप खिलता है, नहीं तो भूसे पर लीपना छिपा नहीं रहता।"

"यह आपका निष्कर्ष है ?"

"जब हाथ में कंगन तब आरसी की क्या जरूरत ? आप भी उसके वास्तविक सौन्दर्य का पता लगा लीजिएगा।"

"मुझे इनमें न घसीटिए। आप दोनों जाइये।" रमणीमोहन ने कहा।"

"वाह ! बिना दूलह के कहीं बरात होती है।"

"दूलह, मुझे जबरदस्ती बना रही हैं आप।"

"जो ग्यारह लाख रुपये खर्च करे वह दूलह नहीं तो क्या है ? यदि वह जमाना होता जब गुलाम बेचे और खरीदे जाते थे, तब हजरत आपकी सबसे ऊँची बोली होने के कारण आप ही उसके मालिक होते।"

"क्या गजब कर रही हैं, आप ! मैंने बोली मिस इण्डिया के लिए नहीं बल्कि उसके विजय-किरीट के लिए लगाई थी।"

"जिसका ताज मोल लोगे, उसको··।"

"इस बहस को यहीं खतम कीजिये, मिस मिलर। मिस्टर मोहन को अधिक तंग न कीजिए।"

"ठीक है, अब कुछ न कहूँगी। मेरी प्रगल्भता पर आप ध्यान न दीजिएगा, मिस्टर मोहन ! मैं अपने दोस्तों को बहुत प्यार करती हूँ, इसलिये औपचारिकता भूल जाती हूँ।"

"आप मुझे अपना मित्र समझती हैं, इसके लिए मैं कृतज्ञ हूँ।" रमणीमोहन ने सहास्य कहा।

"तब आप अवश्य निमन्त्रण-रक्षा करेंगे ?"

"आपका हठ हमें रखना पड़ेगा। कहिए प्रातकलेवा के लिए क्या

मंगाया जाय ?"

"लैम्बर्ट और मैंने प्रातकलेवा कर लिया है। क्या आपने अभी तक कुछ नहीं लिया ?"

कल रात को अच्छी नींद नहीं आई। सुबह आँख लग गई, इसलिये देर तक सोता रहा।"

"जब मैं लैम्बर्ट के कमरे में जा रही थी, तब आपका द्वार बन्द था, फिर लैम्बर्ट को देखा, वह मजे से आज का समाचार पत्र पढ़ रहे थे।"

"मिस्टर मोहन आप कलेवा कर लीजिए, फिर आज कुतुब चलेंगे" लैम्बर्ट ने सुझाव दिया।

'मैं उस मनहूस जगह नहीं जाऊँगी, जो आत्म-हत्याओं का केन्द्र बन रहा है।'

"हम दोनों आपको आत्म-हत्या नहीं करने देंगे, आप निश्चिन्त रहिए।"

"उसकी आबहवा शायद आपको ही आत्महत्या के लिए उत्तेजित करदे।"

"तब आप मेरी रक्षा कीजिएगा।"

"यदि हम दोनों को वही पागलपन सवार हो जाय ?"

"फिर मिस्टर मोहन हमारी रक्षा करेंगे।"

"यदि मैं भी उससे प्रभावित हो जाऊँ ?" रमणीमोहन ने सहास्य कहा।

"तब कोई हर्ज नहीं। हम तीनों साथ मरेंगे। अकेले मरने से डरती हूँ, किन्तु किसी के साथ नहीं।

"बहुत ठीक।"

इसी समय होटल के खानसामह ने एक ट्रे में प्रातकलेवा लिए प्रवेश किया और वे सब यथास्थान बैठकर आहार करने लगे।

७

"अलका" का शृंगार अतिथियों की आँखों में चकाचौंध उत्पन्न करने के उद्देश्य से किया गया था। रंगबिरंगे शीशों के अन्दर से झांकती प्रकाश की किरणें दर्पण मण्डित कमरे की छटा निखारती हुई चमत्कारिक दृश्य उत्पन्न कर

रही थी। मिसेज़ रिपुदमनसिंह ने उस दिन अपनी 'अलका' के कुछ अन्तरंग मित्रों को आमन्त्रित किया था। उसने कला को इस प्रकार सजाया कि वह स्वर्ग की अप्सरा प्रतीत होने लगी। आज भी 'मिस इन्डिया' का स्वर्ण मुकुट उसके शिर पर शोभित था, और भारतीय वैजयन्ती के तीन रंगों में रंगी साड़ी उसके रूप में चार चांद लगा रही थी। गले और हाथों में पन्ना, माणिक और हीरों से जड़ित आभूषण उसके सौन्दर्य को बढ़ा रहे थे। मिसेज़ रिपुदमन सिंह भी अत्युत्तम वेष-भूषा में थी, किन्तु उसके परिधान श्वेत रेशम के होने से उसके वैधव्य की साक्षी दे रहे थे। उस सादगी में भी वह अद्‌भुत सुन्दरी देख पड़ती थी। यह समस्त आयोजन था रमणीमोहन को मुग्ध करने का और उनके आने की प्रतीक्षा वह बड़ी उत्सुकता से कर रही थी।

दोपहर को मिस मिलर ने टेलीफोन से रमणीमोहन के आने की सूचना दे दी थी। किन्तु समय के सम्बन्ध में वह कुछ निश्चित उत्तर न दे सकी थी। केवल उसने इतना कहा था कि निश्चित समय के आसपास वह उन्हें लाने का प्रयत्न करेगी, और आश्वासन दिया था कि यदि कुछ देर हो जाय तो कोई शंका न की जाय।

सबसे प्रथम आने वाले अतिथि थे नैपाल के जागीरदार राणा बीरेन्द्रसिंह थापा, जो दिल्ली और काठमाण्डू दोनों नगरों में रहते थे। दोनों जगह उनकी कोठियाँ थीं और भारत तथा नैपाल सरकारों से उनके घनिष्ट सम्बन्ध थे। वह ठिगने कद, और कसरती गठीले शरीर के रोबीले जवान थे। उनकी शिक्षा-दीक्षा दिल्ली विश्वविद्यालय में हुई थी, राजनीति में वह अपनी पैठ रखते थे, परन्तु खुलकर कभी उसके प्रांगण में नहीं आए। अपने देश और भारत में वह कोई अन्तर नहीं मानते। वह अपने को महाराणा उदयपुर के वंशजों में बताते थे और अपने किसी पूर्व पुरुष बलभद्र थापा के शौर्य की कहानी किसी न किसी बहाने अवश्य सुनाया करते थे। वह निरभिमानी, हँसमुख और जिन्दादिल आदमी थे। पैसे पर उनका कोई मोह नहीं था। बड़ी शान से रहते थे, तथा दिल्ली के सभ्य समाज के एक विशिष्ट व्यक्ति माने जाते थे।

उनके पश्चात् आने वाले थे, नवाबज़ादा मुश्ताक अली। वह अवि-

भाजित भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति थे, और विभाजन के पश्चात् दोनों देशों के उद्योगपति बन गये ।

पाकिस्तान में उन्होंने अपने दो पुत्रों को वहां के स्थापित उद्योग-धन्धों का स्वामी बना अपने परिवार से पृथक कर दिया । वह स्वयं और उनके दो छोटे पुत्र दिल्ली में रह कर भारत में फैले कारबार को देखते । यद्यपि इस समय वह प्रौढ़ थे, तथापि मिजाज रंगीला होने से सुरा-सुन्दरी के अनन्य उपासक थे । पारपत्रों के द्वारा वह स्वयं और उनके पुत्र पाकिस्तान और भारत बराबर आते-जाते थे । कुछ लोगों का यह भी कहना था कि उनके दौरे व्यापारिक कारणों से होते थे, और वे अपनी चल सम्पत्ति भारत से पाकिस्तान ले जाते थे । अरब आदि पश्चिमीय देशों से उनका गहरा व्यापारिक सम्बन्ध था, और उनके पुत्र सोने का तस्कर व्यापार भी करते थे । चूंकि भारत में सोने का मूल्य अपेक्षाकृत उन देशों से अधिक था, इसलिए वह बहावल-पुर के मार्ग से उसको चोरी छिपा मँगवा भारत के बाजारों में बेचा करते थे । तस्कर व्यापार से उन्हें प्रचुर लाभ होता था, और वह सरकार की आँखों में परदा डालने के लिए अनेकानेक सामाजिक संस्थाओं का पोषण करते थे । एक समारोह में उनका परिचय मिसेज रिपुदमन सिंह से हुआ । उनको धनी मान कर उसने बड़ी तत्परता से उन्हें अपनी गुप्त संस्था का सदस्य बना लिया ।

तीसरे आमंत्रित अतिथि थे मेजर कुलदीप सिंह । चूंकि उनका विवाह इसी 'अलका' की एक सदस्या लूंग से हुआ था, और रमणीमोहन से उनका साक्षात् पहले दिन 'क्वालिटी रेस्ट्रां' में हो चुका था, जिसकी सूचना मिस मिलर द्वारा मिल गई थी, इसलिए उनको भी निमंत्रित किया गया । मिसेज रिपुदमन सिंह लूंग को अपनी पोष्य पुत्री कहती थी, जिसको उसने शरणार्थी तिब्बतियों से प्राप्त करना जाहिर किया था । मेजर कुलदीप सिंह हिमाचल प्रदेश निवासी थे, और दिल्ली आकर रहने लगे थे । वह अपनी सैनिक-टुकड़ी में साहस और शक्ति के लिए विख्यात थे । लूँग ने अपने प्रेम प्रदर्शन से उन्हें इतना अनुगत बना लिया कि वह उसे छाया की भाँति अपने साथ रखते थे । वह उसे प्रकाश कौर के नाम से पुकारते थे । मेजर के माता-पिता का देहान्त

हो चुका था, और वह स्वतन्त्र थे। हिमाचल प्रदेश में उनकी पुश्तैनी जागीर थी जिसके इस समय वही एकमात्र स्वामी थे। उनके पूर्वजों ने महाराणा रणजीत सिंह की सेना में रहकर काबुल और कश्मीर विजय किया था, और वहाँ से अपार सम्पत्ति लाए थे और वह ज्यों की त्यों मेजर को मिली थी। उस धन भंडार में बेगमों तथा रानियों के रत्न जटित आभूषण थे, जिनसे लूंग अपने को हमेशा सजाये रहती थी।

लूंग और मंचू दोनों गले मिलकर दूसरे कमरे में बातें करने चली गईं। केवल मिसेज रिपुदमन सिंह अपने अतिथियों का मनोरंजन करने में व्यस्त हो गई।

नवाबजादा मुश्ताक अली ने प्रवेश करते हुए कहा—"आज बड़ी बहार कर रखी है, आपने?"

"जी हां, आह लोगों की सेवा करना मेरा एकमात्र लक्ष्य है।"

फिर राणा वीरेन्द्र सिंह को देखकर कहा—"अच्छा, राणा साहब पहले से ही डटे हैं।"

"हां, आज आपसे पहले बाजी जीत ली।"

"अजी आप राणा, महाराणा हैं, आपकी जगह हमेशा सर-आंखों पर है, कहिए मिजाज कैसा है?"

"शुक्रिया, आप बुजुर्गों की इनायत है।"

"आपके दोस्त राजा साहब हरी नगर के क्या हाल-चाल हैं?"

"उनसे इन दिनों मुलाकात नहीं हुई। कल पुछवाया था, तो मालूम हुआ कि सेना के लिए अपनी रियासत के जवानों की भरती कराने गये हैं।"

"बहुत खूब! मौक़ा ही ऐसा आ गया है। बैठे बिठाए इन अहमक़ चीनियों को क्या सूझी?"

"चीटियों के पंख निकले हैं।"

"दुनियां अमन की हामी हो रही है, और ये कमबख्त चीनी बे-सुरा राग अलाप रहे हैं।"

"आखिर इनकी तादाद कैसे कम होगी?"

"जापानियों की तरह हाराकारी कर लें तो ज्यादा बेहतर है ।"

"वही एक दूसरी शकल में कर रहे हैं ।"

"यानी ।"

"यानी यही कि हिमालय से सर टकरा रहे हैं ।"

"लेकिन हिन्दुस्तान पर भी हमला कर रहे हैं ।"

"वह हिमालय से भी मोटी दीवार है, जहाँ तोपें, बन्दूक और टैंक आग उगलते हैं ।"

"लेकिन इस दफ़े शिकस्त हमारी हुई ।"

"अजी लड़ाई में यों ऊँच नीच हुआ ही करता है । अंग्रेजी कहावत है कि 'हँसना उसी का सार्थक है, जो हँसता है ।"

"इसमें क्या शक़ ! लेकिन ...।"

"लेकिन वेकिन कुछ नहीं । अंत में जीत हमारी होगी ।"

"यही मैं कहने जा रहा था । चीनियों ने धोखे से हमला बोला है ।"

"यह कोई नई बात नहीं की । उनकी नीति ही विश्वासघात पर अवलम्बित है ।"

"लेकिन इस हमले ने दुनिया की आँखें खोल दी हैं ।"

"यदि दुनिया अब भी नहीं चेतती तब परिणाम भयंकर होगा ।"

"हम लोगों की भी नींद उचट गई है । हिन्दुस्तान का बच्चा-बच्चा लोहा लेने को तैयार हो गया है ।"

"यह तैमूर का जमाना नहीं है । उस वक्त दुनियाँ अलग-अलग बटी थी, आने-जाने के साधन दक़ियानूसी थे । कोई मुल्क किसी की मदद को नहीं आ सकता था ।"

"मगर इस वक्त कुछ घंटों में कुमुक एक मुल्क से दूसरे मुल्क भेजी जा सकती है ।"

"बेशक, और इसी वजह से चीनी अपने सपने सत्य होते नहीं देख सकते ।"

"आज कल हिन्दुस्तान कमर कस कर तैयार हो गया है । तैमूर के

जमाने में केवल राजे महाराजे लड़ा करते थे, लेकिन आज की फिजां दूसरी है। यह लड़ाई हिन्दुस्तान के अदना से अदना आदमी की है, और हर एक मुल्की बाशिन्दा सिपाही है।"

"अजी, हम लोग तिब्बत को स्वतन्त्र कर विश्राम लेंगे। इसके बिना हमारी संस्कृति के शिखर कैलाश और मानसरोवर हमारे न रहकर विदेशियों के हो जायंगे।"

"आपके ख्याल से हिन्दुस्तान की चौहद्दी मानसरोवर झील तक है।"

"बेशक! मानसरोवर और कैलाश उसी भांति नेपालियों के भी पूज्य हैं जिस प्रकार भारतीयों को। नैपाल उत्तरी भारत का सन्तरी है।"

"लेकिन कुछ दिनों से उसका रवैया हिन्दुस्तान के खिलाफ़ है।"

"भाइयों में प्रायः खटपट हो जाती है, लेकिन क्या इससे खून में तब-दीली होती है नवाब साहब। आप हिन्दुस्तानी हैं, क्योंकि आपने हिन्दुस्तान को अपनी जन्मभूमि मान ली है, लेकिन अगर पाकिस्तान पर कोई विदेशी हुकूमत हमला करती है, तो क्या आपका खून नहीं खौलेगा।"

"क्यों नहीं, क्योंकि दरअसल हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का खून एक है। मुल्की निजाम में हम अपनी-अपनी डफ़ली पर गाते हैं, बाकी हम में और पाकिस्तानियों में कोई फर्क नहीं है।"

"उसी तरह नैपाल और हिन्दुस्तान में कोई फर्क नहीं है। पानी से कहीं ज्यादा गाढ़ा खून होता है। यह मुमकिन नहीं कि भारत पर हमला हो और नैपाल उससे बच जाए। जब किसी घर में आग लगती है तब पड़ोसी घर भी सुरक्षित नहीं समझे जाते।"

"यही बात पाकिस्तान पर भी लागू होती है।"

"लेकिन पाकिस्तान तो चीन के सुर में सुर मिला रहा है। वह उसके प्रचार को 'हिज़ मास्टर्स वायस' की भाँति दोहराता है।"

"पाकिस्तान दरअसल हिन्दुस्तान से बहुत कमजोर है। वह दुश्मन से मिलकर हिन्दुस्तान को दबाना चाहता है।"

"उसने दो-मुंह साँप से दोस्ती की है, जिसका एक मुंह दोस्ती करता है,

दूसरा कातिल वार करता है।"

"बेशक ! लेकिन राना साहब, उनको उस वक्त अक्ल आयेगी, जब वे भी चीनी अजदहे के निवाला बनेंगे।"

"जरा चीन की कूटनीति पर गौर कीजिए। उसने एक-एक करके प्रायः सभी हिन्दुस्तान के पड़ोसियों को लालच देकर अपनी तरफ मिला लिया है। मैकमहोन रेखा को स्वीकार कर बरमा से उसने अपना समझौता कर लिया !"

"उसी तरह नैपाल से भी किया।"

"हाँ, लेकिन नैपाल की जनता भारत के साथ है। सीमा सम्बंधी मुआहिदे हुए जरूर, लेकिन नैपाल दबा नहीं।"

"जनाब पाकिस्तान ही कहाँ दबा है; बल्कि चीन उसकी खुशामद कर रहा है।"

"चीन खुशामद करेगा ही, क्योंकि हिन्दुस्तान को दबा देने के बाद चीन का मुक़ाबला करने वाला एशिया महाद्वीप में कोई दूसरा नहीं है।"

"पाकिस्तान जरूर हिन्दुस्तान का साथ दे, लेकिन कश्मीर का मामला है बीच में हायल है।"

"यह भी कोई तुक है। भाई का घर जल रहा है, और दूसरा कहता है कि आग बुझाने में तब शिरकत करूँगा, जब हमारा बंटवारा हो जाएगा।"

मिसेज रिपुदमनसिंह अभी तक उनकी बहस गौर से सुन रही थी, किन्तु चुप थी। इसी समय पोर्टिको में मोटर आने का शब्द सुन पड़ा। वह स्वागत करने के लिए बाहर पोर्टिको में आकर खड़ी हो गई। सबसे पहले मिस मिलर ने टैक्सी से उतरते हुए कहा—"शायद हम लोग ठीक समय पर आये हैं।" फिर रमणीमोहन से कहा—"मिसेज आर० सिंह से मिलिए।" रमणीमोहन ने उन्हें नमस्कार किया।

मिसेज आर० सिंह ने अपनत्व प्रदर्शन करते हुए कहा—"मैं डर रही थी कि आप जैसे महानुभाव मेरा निमन्त्रण स्वीकार नहीं करेंगे।" फिर मिलर से पूछा—"अमरीकन सैलानी लैम्बर्ट कहाँ हैं ?"

"वह नहीं आए और मिस्टर मोहन को भी हिचकिचाहट थी।"

"क्यों ?"

"यह ज़रा शर्मीले मिज़ाज के है, हालांकि डा० हैं, लेकिन मरीज़ों से घबड़ाते है।"

"आप डाक्टर भी हैं। मैंने सुना था कि बहुत बड़े व्यवसायी हैं।"

"वह तो है ही, साथ-साथ बम्बई के मेडीकल ग्रेजुएट हैं। यह भेद उस समय खुला जब मैंने उनका छपा हुआ लेटर-पेपर सहसा देख लिया।"

"तब सोने में सुगन्ध है। मिस्टर मोहन, वस्तुतः आपके दर्शनों से मैं कृतार्थ हुई।"

मिस मिलर ने आगे बढ़ते हुए कहा—"मिसेज़ सिंह, आप क्या अपने अतिथियों को यहीं खड़ा रखना चाहती हैं।"

"धन्यवाद मिलर ! मैं हर्षावेग में सब कुछ भूल गई। क्षमा कीजिएगा।" फिर उनको कमरे की ओर बढ़ने का संकेत किया।

रमणीमोहन घर की मनोहर सजावट देखते हुए आगे बढ़े। कमरे को देखकर कहा—"मिसेज सिंह वस्तुतः आप कला-प्रेमी हैं।"

"जब वह कला की माँ है, तब कला-प्रेमी होना आश्चर्य नहीं है।"

"क्या मतलब ?"

"यही कि जिसके ताज को आपने ग्यारह लाख रुपयों में खरीदा था, उसका नाम कला है।"

"यह भेद आपने अभी तक नहीं खोला।"

"ज्यों-ज्यों गुत्थियाँ सामने आती जाएँगी, त्यों-त्यों खोलती जाऊँगी।" आपसे भूल नहीं होने दूँगी।

यह कहकर वह मधुर ध्वनि से हँसने लगी।

फिर पूछा—"दूसरे मेहमान आ गए हैं ?"

"राणा और नवाबजादा आ गए हैं। आपके आ जाने से हमारी पार्टी पूरी हो गई। यह एक बहुत छोटा आयोजन है।"

"उनको कहाँ बैठाया है ?"

"शीश महल में। हमारे नए मेहमान के लिए उससे अधिक सुन्दर

कमरा मेरे घर में नहीं है।"

"मिस्टर मोहन कला-पारखी और सौन्दर्य-प्रेमी हैं। यही कमरा इनके बैठने योग्य है।"

"चलिए, अब आपका परिचय राणा और नवाबजादा से करवा दूं।" यह कहकर वह उनको लेकर आगे बढ़ी।

८

कराकोरम शैल के पठार पर तिब्बत के पश्चिमीय भाग में चीनियों ने एक नए नगर—नोलिंग का निर्माण तिब्बत पर अपना अधिकार जमाने के पश्चात् आरम्भ किया और वह थोड़े दिनों में एक अच्छी-खासी आबादी में परिणत हो गया। उसको बसाने के लिए चीनी अधिकारियों ने कई प्रकार के प्रलोभन चीन निवासियों को दिए। यद्यपि वह पहाड़ी, बंजर और बीहड़ भूमि खेती के लिए अनुपयुक्त है, तथापि सामरिक दृष्टि से वह बहुत महत्त्वपूर्ण है। प्रथम तो वह चीनियों द्वारा नई बनाई गई अक्साई-चिन सड़क पर अवस्थित है, दूसरे वह अधिकृत तिब्बत और लद्दाख के मुहाने पर होने से उसका सम्बन्ध पेकिंग से है, तीसरे वह पेकिंग से सामरिक सामग्री को इकट्ठा करने के लिए सर्वथा सुरक्षित है। जो चीनी वहां बसाये गये हैं वे चीनी साम्यवाद के कट्टर अनुयायी हैं, जिन्हें अधिकारियों ने एक विशेष पद्धति से शिक्षित किया है। उसके सब निवासी अपने पूर्ण यौवनकाल में हैं, जिन्हें बचपन में उनके मां-बाप तथा परिवार से छीन कर पृथक-पृथक शिक्षालयों में सिखाया-पढ़ाया गया है। जिस प्रकार जर्मनी में हिटलर ने बीसवीं शताब्दि के तीसरे दशक में जर्मन-बच्चों को नात्सी पद्धति से शिक्षित कर उनके मस्तिष्क में यह भावना भर दी थी कि केवल जर्मन निवासी विशुद्ध आर्य हैं, इसलिये वे सर्वोपरि हैं, और उन्हें अधिकार प्राप्त है कि वे ससागरा पृथ्वी को अपने शासन के अधीन ले आवें। उसी प्रकार चीनी कम्यूनिस्टों ने चीनी नैशलिस्टों पर विजय पाकर मदमत्त हो अपने को अजेय समझा, और रूसी कम्यूनिस्टों के सिद्धान्तों के विपरीत एक नया मार्ग अपनाया। नवचीन के नायक माओत्से तुंग ने भी 'मीकाफ़' की

भाँति अपने कम्यूनी सिद्धान्तों की आचरण—संहिता बनाई। चीन में सर्वत्र उसका प्रचार किया गया, और उसी के सिद्धान्तों के अनुसार चीन की जनता गढ़ी जाने लगी।

चीन ने अपनी नव-जाग्रति के साथ माओवाद को पुष्ट करने के उद्देश्य से तिब्बत के चांतांग और पश्चिमीय चीन के सिक्यांग प्रदेशों को चुना, और उनमें कई शिक्षा-केन्द्र भी स्थापित किए हैं। इन दोनों प्रदेशों में लगभग तीस लाख चीनी बसाए गए जिन्हें माओ के उग्रवाद की शिक्षा दी जाती है।

चीनी अधिकारियों का अनुमान है कि जब इस तीस लाख आबादी का विस्तार ज्यामितीय गुणोत्तर श्रेणी के अनुसार हो जायगा, तब चीन इनके द्वारा अपना प्रभाव विश्व में स्थापित करने में समर्थ तथा सफल होगा। इन उपनिवेशों में बसने वाले प्रत्येक व्यक्ति को तीन 'के' अर्थात् ढाई एकड़ भूमि सुरा गाय और भेड़ों की जोड़ी, तथा खेती के औजार जैसे हल, हँसिया, खुरपी आदि मुफ्त दिए गए। इसके साथ उन्हें कई प्रकार की आर्थिक सहायता दानों-अनुदानों के रूप में भी दी गई। संक्षेप में यह कि दबाव के साथ-साथ उन्हें वे प्रलोभन भी दिए गए, जो अन्य चीन निवासियों को प्राप्त नहीं थे। धीरे-धीरे ये शिक्षा केन्द्र माओवाद के उग्र समर्थक विश्वविद्यालयों में परिणत हो गए हैं, तथा इनके विद्यार्थी शिक्षा समाप्त होने पर अन्य स्थानों में माओवाद का प्रचार करने के लिये भेजे जाते हैं।

इन विद्यालयों की शिक्षा पद्धति एक विशेष रीति की है। खेती करने के साथ उन्हें रात्रि पाठशालाओं में पढ़ना अनिवार्य है। पहले उनकी विचार-स्वतन्त्रता को समाप्त किया जाता है। उनके मस्तिष्क में यह विचार निरन्तर भरा जाता है कि वे केवल पार्टी के शतरंजी मोहरे हैं, तथा उनको वही सोचना-विचारना चाहिए जो पार्टी के कर्णधार कहते हैं, और वही करना चाहिए जो वे आदेश देते हैं, क्योंकि इन सिद्धान्तों के प्रतिपादक होने के कारण वे शक्ति के उद्गम तथा केन्द्र हैं। अन्धानुकरण के विपरीत, आचरण न सह्य है और न क्षम्य ! दण्ड व्यवस्था भी सर्वथा अमानुषिक और बर्बर है। जिस प्रकार पशुओं को शिक्षा भय-संचार और भूखा रख कर दी जाती है, तदनुरूप प्रणाली

उनके लिए भी निश्चित है। कोड़ों की मार और भूख की ज्वाला में सब काम कराए जाते हैं।

कालान्तर में अविराम शिक्षण से उनका निजत्व नष्ट हो जाता है, और वे माओवाद के उग्र समर्थक और गुलाम बन जाते हैं।

प्रत्येक विद्यार्थी को दया, करुणा, स्नेह-प्रेम से रहित बनाया जाता है। परिवार बनाने की उन्हें अनुमति नहीं है और न तत्सम्बन्धी विचारों को प्रश्रय ही दिया जाता है। नर-नारी के सम्बन्धों में कोई जटिलता नहीं है, और अबाध रीति से सन्तानोत्पत्ति करने की छूट मिली है, परन्तु उनकी सन्तान उनकी न होकर माओवाद की सन्तान मानी जाती है।

सन्तान उत्पन्न होते ही उसकी माँ से उसे पृथक कर दिया जाता है। उसे एक ऐसे शिक्षा-गृह में दूर भेजा जाता है जहाँ उसके माता-पिता नहीं जा सकते। यदि कोई माँ अपनी सन्तान के प्रति किञ्चित माया-मोह दिखाती है, या वैसा भाव परोक्ष में भी प्रकट करती है, तो उसे नियमानुसार कठोर दण्ड दिया जाता है। ऐसे भी उदाहरण मिले हैं कि जब किसी जननी ने उक्त नियम को मानने में आनाकानी की तो उसे हिंस्र पशु की भाँति बन्दूक का शिकार बनाया गया। यह नैसर्गिक सिद्धान्त कि सन्तान का जन्मजात अधिकार है अपनी माँ के दुग्ध-पान का—उसे नव-प्रदेश में चीन के अधिकारियों ने उठा दिया। बालक का पालन-पोषण अन्य प्रान्त की स्त्रियों के स्तन-पान से कराया जाता है और उनसे भी सम्बन्ध केवल उस समय तक रखा जाता है जब तक दूध पिलाने का समय रहता है। बालक के चारो ओर ऐसी वस्तुओं तथा खिलौने का संग्रह रहता है, जिनसे उनकी प्रवृत्ति एवं रुचि भयंकर और क्रूर कर्मों की ओर स्वतः उत्पन्न हो। उनको बाल्यकाल से उसी प्रकार अनुगत, अनुशासित तथा अधीन बनाया जाता है, जिस प्रकार सरकस वाले हिंस्र पशुओं को बनाते हैं। माओवाद का पक्का अनुयायी बनाने में इन समस्याओं के अधीक्षक कोई दक़ीका उठा नहीं रखते। वे उन चल-चित्रों, नाटकों और नृत्य का प्रदर्शन उनके सामने कराते हैं, जिनसे माओवाद पुष्ट हो।

शिक्षा केन्द्रों की किसी निवासिनी के जब गर्भ रह जाता है तब उसे

ऐसे गृह तथा मातृ-मन्दिर में रहने के लिये भेजा जाता है, जहाँ का समग्र वातावरण माओवाद के सिद्धान्तों की भावनाओं से ओत-प्रोत होता है। प्रत्येक क्षण जच्चा के मस्तिष्क में ये विचार ठूँसे जाते हैं कि दुनिया में सर्वोत्तम पीली जाति है, और उसमें भी वही उनके सच्चे मित्र तथा साथी हैं, जो माओवाद के अनुयायी हैं। पीतांगों के ही विलास और भोग के लिए संसार की रचना हुई है, और वही ससागरा पृथ्वी के स्वामी हैं।

श्वेतांगों तथा अन्य वर्णों के मनुष्यों के प्रति, उनमें कूट-कूट कर घृणा, हिंसा, द्वेष तथा शत्रुता के भाव भरे जाते हैं।

जच्चा को न केवल माओवाद के सिद्धान्तों का अनुकरण करना सिखाया जाता है, बल्कि यह भी सूक्ष्मता से निरीक्षण किया जाता है कि वह उनको कहाँ तक अपने जीवन में क्रियात्मक रूप देती है, और उसकी शिक्षा की क्या तथा कैसी प्रतिक्रिया होती है। उसके सभी व्यक्ति एक दूसरे से शंकित रहते है तथा निकट से निकट मैत्री सम्बन्ध भी अविश्वास की छाया से आक्रान्त रहते हैं। उनमें इस कदर फूट फैलाई जाती है कि कोई किसी को अपने मन का भेद नहीं बता सकती। उसकी वैयक्तिक स्वतन्त्रता का सम्पूर्ण लोप हो जाता है और वह ऊबकर निहायत मजबूरी के साथ, अपने प्राणों की रक्षा के लिए माओवाद को अपनाने में विवश होती, फिर अनवरत शिक्षण से उसकी आन्तरिक प्रेरणा तथा अन्तःकरण वैसा ही रूप धारण कर लेता है।

जब कोई माओवादी कलात्मक प्रदर्शन समाप्त होता, तब उसके निष्णात आचार्य सभी सदस्यों से बारी-बारी प्रश्न कर उसकी समीक्षा करवाते हैं और पूछते हैं कि उनके जीवन में उन सिद्धान्तों के मुकाबले में कौन कमी रह गई है। पहले उन न्यूनताओं को स्वयं दूर करने के लिए प्रोत्साहन देते हैं, उपाय बताते हैं, और यदि इतने परिश्रम के बावजूद दूर नहीं होती, तब उन्हें घोर दण्ड दिया जाता है। यदि अधीक्षकों को ज़रा भी शंका हो गई कि कोई हठ कर रहा है तब उसे मौत के घाट तुरन्त उतार दिया जाता है। मृत्युदण्ड उन्हें किसी फाँसी घर में नहीं दिया जाता और न उसके लिए निश्चित स्थान ही नियत है। जब कोई जच्चा अपराधिनी करार दी जाती है, तब उसका

विचार समग्र प्रसूतिगृह की निवासिनीयों के सम्मुख सभा उपस्थिति में होता है। अधीक्षक प्रायः ऐसा विचार बालक उत्पन्न होने के बाद करते हैं। ढोल पीट कर नगर में मुनादी कर दी जाती है और किसी मैदान में सबको एकत्रित होने के आदेश जारी होते हैं। दर्शकों में सात आदमी छांट कर लिये जाते हैं और अधीक्षक उस न्याय समिति का अध्यक्ष बन कर न्याय का संचालन करता है। अपराधिनी के अपराधों का वर्णन अधीक्षक करता है, और माओवाद के अनुसार जो दण्ड उस अपराध के लिये नियत है, उसकी व्याख्या करता है। दर्शकों में से जो जूरी अथवा पंच बनाये जाते हैं वे अधीक्षक द्वारा प्रदत्त दण्ड के विरुद्ध सम्मति प्रदान नहीं कर सकते। वे अपनी सहमति गिने-चुने शब्दों में देते हैं, और तत्काल उस अपराधिनी को माओवाद की वेदी पर चढ़ा दिया जाता है, माओवाद में छोटे-छोटे अपराध के लिए मृत्यु-दण्ड का ही विधान है।

इन शिक्षा केन्द्रों में प्रत्येक सप्ताह एक नया नारा दिये जाने की प्रथा प्रचलित है। इनको दिन में कई बार समूहों में दोहराना अनिवार्य है। उसके प्रदर्शन के लिए घण्टी बजती है तब जो जहाँ होता है वहीं से सप्ताह का नारा लगाता है। यदि कोई नारा न लगाता हुआ देखा या पकड़ा जाता है—जो किसी भाँति छिपा नहीं रह सकता—तब उसे कठोर दण्ड, जैसे दो दिनों का राशन बन्द करना, रात्रि को खड़े-खड़े जागना, आदि, दिया जाता है। कुछ नियमित संख्या की अवहेलना के पश्चात्, जो उसकी भूल का परिचायक न होकर हठ माना जाता है, उसको उसी भाँति न्याय का नाटक रच कर मृत्युदण्ड दे दिया जाता है। इस प्रकार दण्ड देने की कहानियां सब नये आगन्तुकों को सुना कर सावधान किया जाता है। चीन के सभी कम्यूनों में पट्टिकायें टँगी हैं, जिनमें किसी एक में लिखा है—"सावधान, तुम्हारे समग्र कार्य-कलाप पर चीन के संरक्षकों की प्रखर दृष्टि है।" किसी दूसरे में लिखा है—"तुम सर्वश्रेष्ठ पीतांग जाति से उत्पन्न हो। पीतांगों की जन्मभूमि चीन है। चीन के लिये शहीद होना पीतांग के जीवन के चरमोत्कर्षता है?" किसी अन्य में लिखा है, "माओ तुम्हारे चीन का नेता है, उसकी आज्ञा का अक्षरशः पालन करना

प्रत्येक चीनी का धर्म है।" उपर्युक्त नारे प्रसूतिगृह में रहने वाली जच्चाओं के पिताओं को सप्ताह में एक बार सामूहिक रूप से दोहराने पड़ते है, ताकि उनकी वासना की शिकार भावी माताएँ अपना कर्त्तव्य माओवाद के प्रति भूल न जायें।

प्रसूति गृहों में उत्पन्न शिशुओं के नामकरण का रिवाज नहीं है। पैदा होते ही उन्हें एक संख्यांक दिया जाता है, और फिर वे जीवन भर उसी अंक से जाने-पहचाने जाते हैं। यह व्यवस्था पार्टी के कर्णधारों अथवा संचालकों के लिए लागू नहीं है। यह उन तक सीमित है, जो संसार में जनता नाम से प्रसिद्ध होते हैं, जिनका धर्म, कर्त्तव्य और ध्येय पार्टी के नेताओं का आदेश पालन करना मात्र है। प्रसूतिगृहों में उत्पन्न शिशुओं से उनके जनक तथा जननी को मिलने नहीं दिया जाता और उनके मस्तिष्क में केवल माओवाद के सिद्धान्त भरे जाते हैं इसलिए वे केवल कम्यूनिस्ट पार्टी के नेताओं को ही अपना जनक और जननी मानने के लिये विवश होते हैं।

इसी प्रकार कम्यूनी व्यवस्था नोलिंग नगर में स्थापित है। इसके निवासियों को एक लाख दस हजार 'हेक्टेयर' अथवा लगभग छः लाख एकड़ भूमि खेती तथा ढोर चराने के लिए चीनी अधिकारियों द्वारा दिए गए हैं। उसी प्रकार कृषि उपयोगी सामग्री, याकों और भेड़ों की जोड़ियाँ तथा दान-अनुदान भी दिए गए हैं।

नोलिंग नगर को इस उद्देश्य से बसाया गया है ताकि तिब्बत के निवासियों को कम्यूनी सिद्धान्तों का अनुयायी बनाया जा सके। तिब्बती लामाओं को गृहस्थ बनाया गया है, और साथ-साथ कृषक तथा गड़रिया भी। स्वतन्त्रता के दिनों में लामा इन दोनों कामों को अपने अधीन सेवकों से करवाते थे, और स्वयं गद्दीधारी महाजन व स्वामी बन कर उनके कमाए हुए धन को हड़प लिया करते थे। उनको ऐसा अधिकार इसलिए था कि वे धर्माचार्य माने और उसी भाँति पूजे जाते थे। तिब्बत पतन के पश्चात् लामाओं पर जो अत्याचार चीनियों ने किए वे अभूतपूर्व हैं। उनको मीलों पेट के बल रेंगवाया गया, उनसे सड़कें पहाड़ों को कटवाकर बनवाई गई, उन्हें

भूखे रख कर तब तक घोर परिश्रम करवाया गया, जब तक उनके प्राण शरीर त्याग कर मुक्त नहीं हुए।

जिन तिब्बत निवासियों ने चीन के नेताओं का कथन स्वीकार भी कर लिया, उनको भी यंत्रणा देने से छोड़ा नही गया। चीनियों का विश्वास है कि बिना यंत्रणा के दिए किसी के जीवन को मोड़ा नही जा सकता, और न वह कम्यूनी सिद्धान्तों का अनुयायी बनाया जा सकता है। उनकी आचरण-संहिता का प्रथम सोपान है—भय प्रदर्शन ! वे मानसिक परिवर्तन उस समय तक सम्भव नहीं मानते, जब तक भय का भूत उन पर सवार न कराया जाय। जन साधारण सत्य विवेक से रहित होता है—ऐसी ही उनकी धारणा है।

लाल चीन किसी धर्म अथवा ईश्वर पर विश्वास नही करता। ईश्वर का नाम लेना एक गुरु अपराध समझा जाता है, जैसा भारत के अतीत में हिरण्यकश्यप के समय में था। जिस प्रकार उस समय के भारत में आतंकवाद का बोलबाला था, उसी भाँति चीन के साम्राज्य में आज दिन है। लामाओं के विशाल मठ, जिनमें सहस्रों व्यक्ति रहते थे, चीनी खच्चरों और जानवरों के अस्तबल बन गए हैं। पंछेन लामा केवल उन पीड़ाओं से बच गए, जो दूसरे छोटे लामाओं को दी गई हैं। उसका केवल यही कारण है कि चीनी उसकी ओट में कूटनीतिक शिकार खेल रहे हैं। उसको अपनी शतरंजी चालों का बादशाह बनाए हैं, और वे उसके द्वारा अन्य विपक्षी लामाओं को, जो चीन के विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं, नियंत्रण में लाना चाहते हैं।

नोलिंग में ऐसे अनेक लामा बसाए गए हैं, जिन्हें यन्त्रणाओं द्वारा पशु सदृश बना दिया गया है। उनके सोचने-समझने की शक्ति विलुप्त हो चुकी है, और वे वैसा ही करते हैं, जैसा आदेश उनको मिलता है। उस जीवन से ऊब कर कई लोग आत्महत्या करने पर अमादा हो जाते हैं। चीनी सैनिक उनको इस प्रकार सुख से मरने भी नहीं देते। आत्महत्या पूर्ण हो गई, तो ठीक, और यदि वह बीच में पकड़ लिया गया, तब उसको ऐसी विकट यंत्रणा दी जाती है कि वह तिल-तिल कर मारा जाता है।

नोलिंग का एक खड्ड लामाओं के शवों से पटा है, और उनको

जीवनान्त की कहानी आज दिन प्रभंजन सांय-सांय शब्दों से प्रकट कर रहा है।

९

नोलिंग सामरिक प्रयासों का वृहत्केन्द्र भी है, जहाँ से चीन तिब्बत के दक्षिणी-पश्चिमीय सीमाओं में युद्ध सञ्चालित करता है। चीन का उद्देश्य है कि वह भारत की उत्तरीय सीमा को मैकमोहन पंक्ति के दक्षिण की ओर हटा कर उन सब दर्रों पर, जो हिमालय शृंग भेद कर भारतीय मैदानों में प्रवेश-मार्ग बनाते हैं, अपना आधिपत्य स्थापित कर ले, ताकि तिब्बत में कोई शत्रु राष्ट्र प्रवेश कर उस पर आक्रमण न कर सके। वस्तुतः उसकी महत्वाकांक्षाओं का यह प्रथम चरण मात्र है। अपनी मानव शक्ति से वह समग्र संसार को पद दलित करना चाहता है। उसकी वैसी ही महत्वाकांक्षा है जैसी हिटलर की थी, और वह उसी के पदांकों पर चल रहा है। जिस प्रकार जर्मन प्रचार के नेता, जिनमें डाक्टर गोयबेल्स प्रमुख थे, मिथ्यावाद के द्वारा संसार के सत्यचक्र को भ्रमित, दूषित तथा कलंकित करने का प्रयास करते थे उसी प्रकार तथा उसी पद्धति से चीन भी कर रहा है। जितना वह नहीं बोलता, उतना ही सत्य है बाकी जो भी वह कहता है, सब झूठ का आडम्बर होता है। डाक्टर गोयबेल्स का सिद्धान्त था कि मिथ्या भी बार-बार दोहराकर सत्य में परिणत किया जा सकता है, उसी प्रकार चीनियों का भी विश्वास है कि सत्य वही हो जाता है जो बार-बार दोहराया जाता है।

इसमें सन्देह नहीं कि चीन कई आविष्कारों का जन्मदाता प्रसिद्ध है, किन्तु उन सबमें प्रबलतम तथा अभूतपूर्व आविष्कार है नकशों के माध्यम से पड़ोसियों की भूमि को हड़प करने की नीति का ! पड़ोसी देशों की सीमाओं का निर्धारण सदैव प्राकृतिक रेखाओं, जैसे पहाड़ों तथा नदियों के प्रवाह से किए जाने की परम्परा है, और नकशे उसी के अनुसार बनाये जाते हैं। अथवा दूसरे शब्दों में पहले सीमा निर्धारित होती है, फिर नक्शे बाद में बनाए जाते हैं, परन्तु चीन की रीति इस परम्परा के विरुद्ध तथा विपरीत है। पहले वह अपनी इच्छानुसार नक्शे बनाता है, फिर उनके अनुसार पड़ोसी देशों की भूमि को

हस्तगत करने का कौशल छल-छद्म से रखता है, तत्पश्चात् अवसर होने पर उसको बलात् अधिकार करने का प्रयत्न करता है। यही नहीं कि उसके नक्शों में दिखाई गई सीमाओं का कोई अन्तिम रूप हो, वे उनके नवीनीकरण के साथ बार-बार आगे ही बढ़ती जाती है। उसके रूप कभी स्थिर नहीं रहते, बल्कि नदी के प्रवाह की भाँति निरन्तर अग्रसर होते रहते हैं। इस विषय में उनके लिए कोई नियम नहीं, कोई परम्परा नहीं, कोई विश्व मान्य परिपाटी नहीं—उनके रूप केवल चीन की इच्छा पर निर्भर करते हैं, तथा उसी के अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं। चीन उतना ही खतरनाक है अपने पड़ोसियों के लिए, जितना कोई जंगली व्याघ्र अपने पड़ोसी गाँवों की जनता के लिए होता है।

उसका यह कौशल लाल चीन की नई उपज नहीं है। वह कई पिछली शताब्दियों से विश्व को आक्रान्त करने का स्वप्न देखता आया है, और सबल होने पर उसने सदैव अपने पड़ोसियों की भूमि हड़प ली, यद्यपि उसका शासन विजित प्रान्तों पर स्थायी नहीं रहा। उसकी यह नीति सदैव रही है कि एक बार जिस प्रदेश पर उसका अवैध अधिकार पड़ोसी राष्ट्र की कमजोरी से हो गया, वह फिर उसे अपना ही समझने लगा, और पड़ोसी देश जब अपना प्रदेश पुनः प्राप्त करने में सफल हो गया, तब भी वह अपना स्वामित्व कभी त्याग करने को तैयार नहीं हुआ। ऐसी ही नीति उसने तिब्बत के सम्बन्ध में अपनाई थी। यद्यपि तिब्बत शताब्दियों से पूर्ण स्वतन्त्रता भोगता रहा, और किसी प्रकार चीन का आधिपत्य उसने स्वीकार नहीं किया, तथापि चीन उसे अपने एक प्रदेश की भाँति अपने अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत मानता रहा। ब्रिटिश अधिकारियों ने भारतीय सीमा को अक्षुण्ण बनाए रखने के उद्देश्य से चीन का कोई भी अधिकार तिब्बत पर नहीं माना।

उन्होंने केवल मुंह छूने के लिए चीन को भी आमन्त्रित किया उस त्रिदेशीय सम्मेलन में जो भारत और बरमा की सीमाओं का समुचित निर्धारण करने के लिए सन् १९१४ में आयोजित किया गया था। चीन उस समय आन्तरिक विप्लव में विदग्ध था। चीनी सम्राट की सत्ता लोप हो गई थी, और

लाल क्रान्ति का जन्म हो रहा था। चीन की अनुपस्थिति में वह सम्मेलन हुआ और तिब्बत के साथ यह निश्चय किया गया कि हिमालय विभाजन रेखा मान कर वह भूमि उस देश की समझी जाय, जिधर उसकी नदियां बहती है। इसीलिए ब्रह्मपुत्र का बहाव पहले तिब्बत में होने से वह भाग उसका स्वीकार किया गया, और वह भूमि जहाँ से वह दक्षिणाभिमुखी हुआ, वहाँ से भारतीय सीमा मानी गई। इसी प्रकार चीन तथा बरमा की भी सीमा निर्धारित की गई, और उसे चीन ने स्वीकार भी किया। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश अधिकारियों ने तिब्बत को नियंत्रित रखने के लिए अपनी एक सैनिक टुकड़ी, तार आदि की व्यवस्था भी वहाँ स्थापित की। यह व्यवस्था सर्वथा न्यायपूर्ण और प्राकृतिक भूमि के अनुसार निष्पक्ष रूप से बनाई गई थी, और वह लाल चीन के उदय होने के समय तक दोनों पक्षों से स्वीकार की जाती रही। जब लाल चीन ने राष्ट्रीय पक्ष को पराजित कर चीन पर अपना आधिपत्य जमा लिया, तब उसने आगे पैर पसारना आरम्भ किया। चूंकि भारत और तिब्बत में मैत्री थी, और एक प्रकार से उसका संरक्षकत्व भी उसे प्राप्त था, इसलिए बिना भारत को मिलाए वह तिब्बत को हस्तगत नहीं कर सकता था। तब उसने कूटनीति का प्रश्रय लिया।

स्वतन्त्र होने के पश्चात् भारत ने सर्व-मैत्री की नीति अपनाई। चीन के प्रति उसके मन में वैसा ही सम्मान था जो समान स्थिति में रहने वाले में स्वतः हो जाता है। इसके अतिरिक्त चीन बौद्ध मतावलम्बी होने से उसके घनिष्ठ सम्बन्ध भारत के साथ शताब्दियों से थे, और दोनों ने पंचशील के सिद्धान्तों को स्वीकार किया, और अफ्रीका, एशिया के नवराष्ट्रों के साथ बाडुंग सम्मेलन में उनकी पुष्टि की। चीन की योजना सफल हो गई और भारत ने अपना नियन्त्रण तिब्बत से हटाकर उसे तिब्बत के अधिराज पद पर प्रतिष्ठित कर दिया, यहाँ तक कि उसने वह सब साज-सामान जो तिब्बत में था, उसे सेंत-मेंत सौंप दिया। यदि चीन के स्थान पर कोई अन्य राष्ट्र होता तो वह भारत के इस त्याग की सराहना करता, और वह उसके साथ मिल कर संसार में शान्ति स्थापित करने में सहयोग देता। यह सत्य है कि दोनों देशों में सांस्कृतिक

मंडलों का विनमय होने लगा, और हिन्दी चीनी भाई-भाई का नारा भी बुलन्द किया गया। दोनों देशों के मैत्री प्रदर्शन से संसार भी एक बार चकित रह गया। भारत ने चीन की वकालत भी राष्ट्र संघ में आरम्भ कर दी, हालांकि उसके इस कार्य को पश्चिमीय राष्ट्र सुदृष्टि से देखने में असमर्थ रहे। अमेरिका बहुत दिनों से लाल चीन की नीति का आलोचक था। उसे लाल चीन की कपटपूर्ण अभिसन्धियों का ज्ञान और अनुभव भी था। उसने अपने गुट के प्रभाव से लाल चीन को राष्ट्र संघ का सदस्य नहीं बनने दिया।

कपटी कभी अपने कपट को बहुत दिनों तक छिपा कर नहीं रख सकता। अवसर मिलते ही उसने तिब्बत पर आक्रमण कर दिया, और उसे वस्तुतः अपना एक प्रदेश बना लिया। तिब्बत पर चीन ने जो जो अत्याचार किए हैं, उनकी गणना नहीं हो सकती। तिब्बत की संस्कृति बावजूद शताब्दियाँ बीत जाने से, अक्षुण्ण थी, और आध्यात्मिक ज्ञान का जितना भण्डार वहाँ सुरक्षित था, उतना संसार के किसी भी देश में नहीं है। चीन ने नवजागरण का नारा देकर उसे नष्ट-भ्रष्ट कर डाला, और उसके अधिपति को निर्वासित होने के लिये बाध्य किया। तिब्बत अजातशत्रु था, परन्तु चीन की महत्त्वाकांक्षा से वह बच न सका, हालांकि उसने चीन को किसी प्रकार भी कुपित नहीं किया था।

जिस आततायी ने तिब्बत की अटूट शान्ति को भंग किया है—उसके क्रूर कर्मों की प्रतिक्रिया, फलस्वरूप होकर उसका भी उसी भाँति नाश करने को उद्यत होंगी। क्रिया की प्रतिक्रिया अवश्यभावी है। एशिया-भूखण्ड के एक भाग पर घोर विनाश का ताण्डव हुआ है अवएव एशिया निवासियों से ही उसकी प्रतिक्रिया भी सम्पन्न होगी। एशिया ही नहीं, बल्कि समस्त विश्व में भारत के अतिरिक्त किसी देश में चीन के मुकाबले का मानव-बल नहीं है, अतएव प्राकृतिक शक्तियाँ भारत के द्वारा उसका विनाश भी करावेंगी। चीन और भारत की भिड़न्त में प्राकृतिक शक्तियों की गुप्त अभिसंधि है, और उस सत्ता को जो उसने भारत के द्वारा प्राप्त की है अब उसका ह्रास भी उसी के माध्यम से होना अनिवार्य है।

इन्ही नैसर्गिक शक्तियों ने चीन के अधिकारियों में विश्व विजय की अभिलाषा महत्वाकांक्षा को पनपा कर पोषित किया, और अब मुंह की खिलाने के लिए उसे दक्षिण में, जो हिन्दू धर्म के अनुसार यमराज की दिशा है, पग बढ़ाने को उद्यत किया है। भारत को पराजित करने के लिए उसने अपना सैनिक केन्द्र एक ऐसे स्थान पर बनाने का निश्चय किया जहाँ से वह सुगमता के साथ युद्ध संचालन कर सके। इसी लक्ष्य को सामने रखकर नोलिंग नगर की प्रतिष्ठा हुई।

चीन में जहाँ अन्य सैनिक तैयारियाँ हुईं, वहाँ उसने अपने गुप्तचर विभाग को भी संगठित तथा दृढ़ बनाने में कोई कसर नहीं उठा रखी। चीन वस्तुत: वह तैमूर की युद्ध-पद्धति पर चलने का प्रयत्न कर रहा है। उसने एशिया के समस्त प्रदेशों में अपनी कूटनीति से पंचमांगी सेनाएं किसी न किसी 'वाद' के रूप में बना दी हैं जिनका संचालन उसके अधिकारी करते हैं। दक्षिण-पूर्वीय एशिया में उसके कई लाख निवासी अनेक रूपों में बसे हुए हैं, और वे वहाँ की जनता को चीन की काल्पनिक सफलताओं को सुनहला रंग देकर बहकाने का प्रयत्न करते हैं। उन देशों के निवासियों से भाई-चारे के मधुर तथा घनिष्ट सम्बन्ध बनाकर उन्हें क्रमशः पंचमांगी बनाते हैं। इतना ही नहीं, बल्कि आर्थिक सहायता भी कई रूपों में उन्हें दी जाती है। चीनी साहित्य का प्रचार उनके द्वारा कराया जाता है। सहस्त्रों चीनी रमणियों को भी उसने गुप्तचरी के लिए प्राय: सभी देशों में भेजा, और भारत में उनकी कितनी संख्या है, इसका अनुमान करना कठिन है। इन नवयुवतियों को उस देश के रीति-रिवाज और भाषा से पूर्ण परिचित कराया जाता है, और जब वे उनकी परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो जाती हैं तब उस देश को अनेक वेषों में भेजी जाती हैं। वे उस देश में जा, वहाँ के चीनी निवासियों से सम्पर्क बढ़ा कर अपना कार्य आरंभ कर देती हैं।

इसी प्रकार और ऐसे ही उद्देश्यों से प्रेरित होकर न मालूम कितनी संख्या में चीनी गुप्तचर भारत में भी भेजे गए हैं। उन नवयुवतियों ने यहाँ की जनता से सम्पर्क स्थापित किया, और छल-छद्म से वे सैनिक अफसरों को मोहित कर उनके द्वारा सैनिक भेदों को प्राप्त कर अपने स्वामियों को सूचित

करने लगी। कोई-कोई तो उनकी पत्नियाँ भी बन गईं, और इस प्रकार वे उनके घर-सम्पत्ति की स्वामिनी बन बैठीं।

इन गुप्तचरों को चीन ने उन समस्त उपकरणों से लैस कर भेजा है, जिनके द्वारा वे समस्त समाचार उनके अधिकारियों को पहुँचाया करते हैं। उनके पास दियासलाई की डिबिया के आकार के रेडियो सेट हैं, ट्रैनजिस्टर सेट हैं, जिनसे वे समाचार भेजते और आदेश प्राप्त करते हैं।

चीन जब पंचमांगी सेना बनाने में सफल हो जाता है, तब वह आक्रमण करता है। उसे अपने मानव बल पर नाज है, और इसमें वह अपने को अजेय समझता है। उसकी कूटनीति भी इतनी गुह्य होती है जिसे समझना यदि असंभव नहीं तो दुष्कर अवश्य है। चीन अपनी कूटनीति और सैनिक शक्ति के द्वारा संसार-विजेता बनने की महत्वाकांक्षा से प्रेरित है—और इसीलिए संसार की समस्त शक्तियों को सावधान होने की आवश्यकता है।

१०

नौलिंग में स्थित चीन के गुप्तचर विभाग के कार्यालय में उसके अध्यक्ष काउचो अपने सहकारी के साथ परामर्श कर रहे थे।

काउचो ने एक नक्शा देखते हुए कहा—"सबसे नवीनतम रिपोर्ट से मालूम होता है कि हमारी विजय अवश्य होगी।"

"जी हाँ, हमने समग्र भारत में अपना जाल बिछा दिया है।"

"क्या तुम्हारे गुप्तचरों ने भारतीयों की देशभक्ति की भावना नष्ट करने में सफलता पाई है?"

"मुझे विश्वास है, कि उनका एक दल चीनी कम्यूनिज्म का अनुयायी है, और जब हमारा सैनिक अभियान होगा, तब वे देश में तोड़-फोड़ की कार्रवाई आरंभ कर आन्तरिक उत्पात खड़ा करेंगे।"

"क्या उनको यह आश्वासन दे दिया है कि उनको ही भारत की राज-सत्ता सौंपी जाएगी।"

"जी हाँ।"

"नारी-विभाग का क्या हाल है ?"

"उसको अभूत-पूर्व सफलता मिली है। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद भारतीय विलासी हो गये हैं। भारत का वातावरण कामुक भावनाओं से ओत-प्रोत है। उसके चलचित्र, रेडियो, साहित्य आदि प्रचार के साधन कामुक वासनाओं का प्रदर्शन तथा चित्रण करते हैं, जिनसे उनकी बौद्धिक शक्ति का ह्रास हो रहा है।"

काउचो प्रसन्नता से हँस पड़ा। उसका सहकारी भी हँसने लगा।

"उनके पास हमारे गुप्तचर विभाग की नारियाँ पहुँचा दी जाय।"

"वही हम कर रहे हैं।"

"नेफा क्षेत्र की जनता में आप लोग क्या कर रहे हैं ?"

"हमारे गुप्तचर वहाँ भी भेज दिए गए हैं, और वहाँ की जनता में घुल-मिल गए हैं।"

"नेफा की जंगली जातियों को चीन का समर्थक बनाने में सफलता मिली ?"

"कई जातियों को हमने अपनी ओर मिला लिया है, और वे भारतीय सेना की गतिविधि तथा उसके सैनिक अड्डों के गुप्त भेद हमें बराबर भेज रहे हैं।"

"उस क्षेत्र के जंगलों के गुप्त मार्गों का ज्ञान भी प्राप्त कर लिया है ?"

"हमें उस क्षेत्र के सभी गुप्त मार्गों की जानकारी है। बड़ी आसानी से उनकी सैनिक चौकियों को घेर तथा बरबाद कर सकते हैं।"

"लद्दाख के क्या समाचार हैं ?"

"यह क्षेत्र जनहीन होने से हमारे जासूस अपना कौशल नहीं दिखा सकते।"

"नेफा अधीन होने से असम के तेल-भंडार हमारे अधिकार में आ जायेंगे ?"

"उसके आगे बरमा, मलय और इन्डोनेशिया में भी तेल के अक्षय भंडार हैं।"

"भारत के पतन के पश्चात् उसके हस्तगत करेंगे। चीन की राजनीति सफल हो रही है। भारत को उसके पड़ोसी राष्ट्रों से पृथक करवा दिया है। हम जिस देश पर अपना आधिपत्य जमाना चाहते हैं, पहले उसके पड़ोसी राष्ट्रों से अपनी मैत्री कर उनको उससे पृथक करवा देते हैं, फिर उस पर अपना दबाव लेने में कोई कठिनता नहीं होती।"

"इसी नीति से तो हमने भारत को इस समय नेपाल, बरमा और पाकिस्तान से पृथक कर दिया है।"

"ठीक, हमने उनके साथ सीमा-समझौते कर उनकी सहानुभूति प्राप्त कर ली है। इन तीनों देशों को भारत से अलग करना आवश्यक था, क्योंकि इनके द्वारा चीन पर प्रत्याक्रमण करने के मार्ग मिलते हैं।"

"जहां तक नैपाल और बरमा का प्रश्न था, वे स्वतन्त्र राष्ट्र हैं, उनकी तनहाई अवस्था ने उन्हें हमारे साथ समझौता करने को विवश किया, किन्तु पाकिस्तान अमरीका-ब्रिटिश संचालित गुटों का सदस्य है। क्या वह हमारे नियंत्रण में आकर हमारे साथ सीमा-सन्धि करेगा?"

"राष्ट्रों की गुटबन्दी तभी तक चलती है, जब तक उनके स्वार्थ साधन के बने। पाकिस्तान सेन्टो और सिएटो का सदस्य इसलिए बना, क्योंकि उसकी उलझनें भारत के साथ हैं। सबसे बड़ी उलझन कश्मीर है।"

"यदि कश्मीर हम पाकिस्तान को दिलवा दें, तब क्या उसके साथ सन्धि नहीं हो सकती।"

"हमारा प्रयत्न इसी दिशा में है। हम चाहते हैं कि वह कश्मीर की घाटी लेकर लद्दाख पर हमारा आधिपत्य बना रहने दे।"

"ठीक, लद्दाख हमारे लिए उपयोगी है, और कश्मीर पाकिस्तान के लिए। दोनों के स्वार्थों की पूर्ति होती है।"

"राष्ट्र की शक्ति क्षीण करने के लिए उसे खंडों में विभक्त करना होता है। हमारा लक्ष्य है कि भारत की अखंडता जैसे पाकिस्तान ने मिटाई है, वैसे हम उसको कई भागों में विखंडित कर दें। वस्तुतः उत्तरी भारत ही हमारे लिए उपयोगी है।"

"क्या दक्षिणी भारत की उपयोगिता हमारे लिये नहीं है।"

"वह हमारी दूरगामी योजना के अन्तर्गत है। फिलहाल हमें असम, बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश और पंजाब चाहिए, जहाँ की भूमि उर्वर तथा सजल है, जहाँ हमारी जनता बसाई जा सकती है, और ये प्रदेश वस्तुतः अन्न उत्पादक होने से इनसे हमारा अन्न-संकट दूर होगा।"

"किन्तु इनके बीच में पाकिस्तान भी आता है, वह पंजाब और बंगाल को क्यों लेने देगा ?"

"अभी हम कश्मीर का प्रलोभन देकर उसको अपनी ओर मिलाते हैं। इस समय हमारा उद्देश्य उसको भारत से पृथक रखना है। हालांकि पश्चिमीय राष्ट्रों ने अपने सैनिक अड्डे वहाँ बनाए हैं। हम उन्हें तभी विफल कर सकते हैं, जब हम पाकिस्तान को कश्मीर देकर अपने पक्ष में कर लें। वस्तुतः पाकिस्तान कश्मीर प्राप्त करने के लोभ से ही इन सामरिक अड्डों को अपनी भूमि में स्थापित कराने के लिए तैयार हुआ था।"

"यदि ऐसा हो सके तो फिर भारत को विजय करने में कोई कठिनता न होगी। किन्तु··।"

"किन्तु क्या ?"

"क्या हमें पाकिस्तान पर भरोसा करना चाहिए ? मुझे भय है कि कहीं वह आगे धोखा न दे।"

"जो स्वयं दूसरों को धोखा देता है, अथवा जिसकी नीति का आधार ही मायाजाल तथा प्रवंचना है, उसे भला कौन धोखा सकता है ?"

"यह तो आप ही कह सकते हैं, हम लोग नहीं।" काउ-चो कह कर हँसने लगा।

"हाँ, ठीक कहते हो, हमें यह न कहना चाहिए और न स्वीकार करना, किन्तु सत्य यही है। विश्व में सर्वत्र यह सिद्धान्त है कि भूमि की अवस्था के अनुसार नकशे बनते हैं, परन्तु हमने अपनी नई प्रणाली को जन्म दिया है। हम अपनी इच्छानुसार नकशे बनाकर भूमि पर कब्जा करते हैं।"

"अर्थात् !"

"अर्थात् यह कि हमें जहाँ तक प्रथम चरण में अधिकार करना है, और भूमि किसी अन्य राष्ट्र की है, हम पहले उस भूमि को अपने बनाए हुए नक्शों में चीन को दिखा कर संसार के समक्ष रखते हैं। दो-तीन वर्षों बाद हम उस भूमि के अधिकारी देश का ध्यान आकर्षित कर समझौता-वार्ता चलाते हैं। उधर उस समझौते की बातें चला करती हैं, और इधर हम अपनी सैनिक चौकियाँ, तथा अड्डे बनाते हैं। हमारे समझौते की वार्ता भी इतनी जटिल उलझी, और भ्रमपूर्ण होती है कि पड़ोसी राष्ट्र उनको समझने-सुलझाने में बहुत समय लगा देते हैं। वे हमारी बनाई भूल-भुलैया में किसी प्रकार निकल नहीं पाते, और इसी बीच उस प्रदेश पर हम अपना कब्जा कर लेते हैं।"

"यही नीति हमने भारत के प्रति अपनाई है।"

"वैसा ही आचरण हमारा पाकिस्तान के प्रति भी होगा, किन्तु कालान्तर में; जब भारत हमारे अधीन हो जायगा।"

"किन्तु भारत-विजय के साथ हमारी शक्ति कई गुना बढ़ जाएगी।"

"ठीक कहते हो, भारत का पतन होने दो, फिर दक्षिण-पूर्वीय एशिया, बरमा, इन्डोनेशिया, आस्ट्रेलिया और दक्षिणी अमरीका हमारे उपनिवेश बनेंगे, और संसार में पीतांगों का साम्राज्य पुन: स्थापित होगा।"

"आप बहुत दूर जाते हैं। पश्चिमीय राष्ट्रों को क्या हमारा प्रसार सहन होगा?"

"वे उस समय तक पंगु हो जायगें। हमारा प्रयत्न है कि संसार की आणविक शक्तियाँ आपस में लड़ कर कट-मर जाएँ। इनके समाप्त हो जाने पर फिर चीन की वीरवाहिनी को अग्रसर होने में कौन रोकेगा?"

"रूस को क्या हमारा यह प्रसार सह्य होगा?"

"उस समय रूस का अस्तित्व नहीं रहेगा।"

"क्यों?"

'अमेरिका से कौन लड़ेगा? कम्यूनी देशों में अमेरिका के मुकाबले में रूस की ही शक्ति है, जिसके पास आणविक शस्त्रास्त्र हैं।"

"किन्तु पश्चिमीय राष्ट्रों में अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रान्स के पास

आणविक अस्त्र हैं।"

"रूस भी कमजोर नहीं है। हम ऐसी परिस्थति उत्पन्न कर रहे हैं, जिसमें रूस की भिड़न्त अमेरिका के साथ हो जाए। इसमें दोनों नष्ट हो जाएंगे, बचेगा केवल चीन ! यह भी सम्भव है कि इस युद्ध में हमारे भी कुछ सैनिक मारे जाएँ।"

"सैनिकों की कौन कमी हमारे यहाँ है। सन् १९५९ में हमारे पास पैंतालीस लाख शिक्षित और ढाई करोड़ अर्ध-शिक्षित सेना थी। जिसे पन्द्रह दिनों की शिक्षा के बाद रणक्षेत्र में उतारा जा सकता है।"

"यह संख्या पुरानी है, जो प्रकाशित होती रहती है, इसके अतिरिक्त हमारे पास कुछ गुप्त सेना भी है, जिन्हें प्रत्येक जलवायु की स्थिति में लड़ने के लिए तैयार किया गया है। उनकी संख्या एक करोड़ के लगभग है।

"फिर हमारे देश का प्रत्येक जवान सिपाही है, जो अनिवार्य सैनिक-शिक्षा तथा सेवा के लिए बाध्य है।"

"अब यह संख्या दुगुनी है, इसके अतिरिक्त हम अब नारियों को भी सैनिक शिक्षा दे रहे हैं।"

इसी समय एक कर्मचारी ने आकर सूचना दी—"कृपया रेडियोगृह में पधारने का कष्ट करें। संख्या ४७६३ आपसे कुछ निवेदन करना चाहती हैं।"

"क्या संख्या ४७६३ का रेडियो सन्देश है ?"

"जी हाँ, संख्या तो यही बताई है।" सूचना देकर वह फौजी सलाम कर चला गया। उसके जाने के पश्चात् काउ-चो ने कहा—"आप यहीं प्रतीक्षा कीजिए। मैं अभी बात कर आता हूँ। यह सांकेतिक संख्या हमने भारत के लिए स्थिर की है। भारत में स्थित किसी हमारे गुप्तचर का सन्देश प्रतीत होता है। हमारे इस आरम्भिक आक्रमण की प्रतिक्रिया सुनने को मिलेगी।"

"आप रिपोर्ट सुन आइए। मैं प्रतीक्षा करता हूँ।" काउ-चो अपने सहकारी को प्रतीक्षा करने को कह, उसके साथ चला गया।

रेडियो गृह में आकर सन्देश प्रसारक यन्त्र से पूछा—"क्या संख्या ४७६३ बोल रही है ? अपना नाम बताओ।"

उत्तर मिला—"मैं कुईन्तान हूँ, स क्या ? मैं जानना चाहती हूँ।"

"मैं स क्या २ हूँ। चाहती, परन्तु अपना पूर्ण परिचय दीजिए।"

"कृपया देखिए, मेरी रजिस्टर्ड सं क्या ६, पॉकेट ८, भारत भाग के अन्तर्गत है। मैं सन् १९५६ में कश्मीर भेजी गई थी। कुछ दिनों समय के आदेशा-नुसार कश्मीर के एक गाँव में रही, फिर दिल्ली आने का आदेश मिला। अब दिल्ली में हूँ। मैंने जो सेवायें यहाँ आकर की हैं, क्या उनकी सूची बनाना होगा।"

"नहीं, अब स्पष्ट हो गया। तुम दिल्ली में रिपुदमन सिंह की विधवा बन कर रहती हो।"

"जी हाँ ! आज हमारा मनोरथ सफल हो गया है। मिनचू को आप शायद जानते होंगे।"

"हाँ, जिसकी माँ तुमको बनाया गया है।"

"जी हाँ ! वही मिनचू आज सौंदर्य प्रतियोगिता में प्रथम उत्तीर्ण होकर मिस इन्डिया बन गई।"

"उसको मेरी बधाई दे देना।"

"उसने अपने विजय-किरीट को भारतीय सुरक्षा कोष में दान कर दिया है। और आपको सुन कर आश्चर्य होगा कि एक भारतीय करोड़पति ने उसे ग्यारह लाख रुपयों में नीलाम में प्राप्त किया और उसने फिर वह किरीट मिनचू को वापस कर दिया।"

"क्या ग्यारह लाख रुपये, उस मूर्ख ने भारत-सुरक्षाकोष में दिए हैं ?"

"जी हाँ !" दो युवकों में बढ़ा-चढ़ा हो गई, दोनों अमीर हैं, इसलिए बोली इतनी बढ़ गई।

"परन्तु हमारे हित में यह नहीं हुआ। हमें यह सूचना बराबर मिल रही है कि भारतीय जनता युद्ध के लिए तैयार नहीं है।"

"पहले लक्षण तो ऐसे थे, परन्तु अब परिस्थितियों में कुछ परिवर्तन हुआ है।"

"इस परिवर्तन को तुम लोग रोक नहीं सके ?"

"हम असावधान नहीं हैं। मैं यह पूछना चाहती हूँ कि क्या हम उस युवक

को अपने संघ में मिलाने का प्रयत्न करें ?''

'अवश्य ! इसमें पूछने की क्या बात है ?''

''सम्भव है कि उस युवक को मिलाने के लिए हमें मिनचू का विवाह उसके साथ करना पड़े ?''

''यदि ऐसा हो सके तो अत्युत्तम ! सिलर की बच्ची ताईची कहाँ है ?''

''वह आजकल दिल्ली में है, कुछ दिन पहले वह आई ही है। ताईची के द्वारा हम उस युवक से अपना सम्बन्ध बनाएंगी।''

''परिस्थिति देखने के लिए मैं शीघ्र आऊँगा। और कुछ कहना है ?''

''नहीं !''

वार्ता समाप्त कर काउ-चो अपने कक्ष में चला गया।

११

केन्द्रीय सचिवालय के कुछ अधिकारी मिस इन्डिया के रूप-सौन्दर्य की विवेचना सरकारी कैन्टीन में बैठे कर रहे थे। बहुतों की दृष्टि में यह चुनाव निष्पक्ष नहीं हुआ था। विरोधी उसके दोषों को बीन-बीन कर निकाल रहे थे, और उसके पक्षपाती अनेक सौन्दर्य विशेषज्ञों के उद्धरण देकर उसे न्याय-संगत सिद्ध करने में संलग्न थे। श्री सन्तोषकुमार और नैयर भी एक कोने में बैठे काफी पीते हुए दोनों पक्षों के तर्क-कुतर्क सुन रहे थे। उन्होंने जब एक तरुण को यह कहते सुना—''यह सब बेवक्त की शहनाई है। मुझे तो इसमें चीनी दुश्मनों की किसी गुप्त अभिसन्धि की बू आती है, तब उनके कान खड़े हुए, और दोनों ने एक दूसरे को मतलब भरी दृष्टि से देखा।

नैयर ने उठते हुए कहा—''चलिए, समय समाप्त हो रहा है।''

''सन्तोष ने उसको बैठाते हुए कहा—''अब वातावरण राजनीतिक हो गया है।''

''तो क्या हुआ ? हम लोग राजनीतिक कार्यालयों में काम करते हैं।''

''न मालूम; क्यों मुझे कई दिनों से भय लग रहा है।''

''किस बात का ?''

"आजकल का समय खराब है। किसी को तनिक भी सन्देह हो गया, तब हमें नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा।"

"चुप रहो ! तुम स्वयं अपना परदा फाश कर रहे हो। जब तुम्हें सन्देह था, तब 'अलका' से सम्बन्ध क्यों स्थापित किया, और अपने साथ मुझे भी फंसाया।"

"झूठी खबरें देकर पैसा कमाने में कोई खतरा न देखा, इसीलिए वहाँ जाने-आने लगा। चूंकि अकेले काम बनता नहीं; इसलिए तुमको भी अपना साधक बनाया।"

"हाँ तुम्हें अपनी सूचनाओं को पुष्ट भी तो कराना था।"

"हाँ, सिद्ध और साधक का जोड़ा होता है। जब तुम कालान्तर में मेरी दी हुई सूचनाओं की पुष्टि करते थे, तब बात चोकस बैठ जाती थी, और हम दोनों समान रूप से पुरस्कृत होते थे।"

"भाई पैसे की प्राप्ति के साथ दिल बस्तगी भी होती थी। सत्य तो यह है कि मेरी दिलचस्पी कांचन में उतनी नहीं, जितनी कामिनियों में है।"

"मेरी रुचि कांचन में है।"

"रुपया मुझे नहीं काटता, किन्तु ईश्वर की रचना कामिनी है—कांचन नहीं।"

"ठीक है, आपकी दोनों जरूरतें पूरी हो गई ?"

"क्यों छिपाते हो, तुम भी तो कई रातें वहाँ बिता चुके हो।"

"परसी थाली कौन ठुकरा सकता है ?"

"वस्तुतः यह मिसेज रिपुदमन सिंह कौन है।"

"एक सुशिक्षित, संस्कृत महिला जो हमारे जैसे सरकारी अफसरों की दिलबस्तगी करती है।"

"परन्तु इनकी असलियत क्या है ?"

"अपने को कश्मीरिन कहती हैं, और नाम से विधवा प्रकट होती हैं।"
इतना मैं भी जानता हूँ। इसके आगे कुछ जानते हो तो बताओ।"

"मैं अपने मतलब से मतलब रखता हूँ। किसी के पचड़ों में नहीं

पड़ता। दिन में पैसा पैदा करना, रात में मौज लूटना।"

"न मालूम इसके पास कितनी सम्पत्ति है! कुछ थाह नहीं मिलती।"

"मकान भी कितना सजा रखा है। ऐसी सजावट तो शायद बड़े-बड़े महाराजाओं के महलों में भी न होगी।"

"एक से एक सुन्दरियाँ भी जुटा रखी हैं।"

"मेरा यह ख्याल है कि यह कोई ऊँचे स्तर की वेश्या है, जो अनेक शहरों से निकाली गई वेश्याओं को जुटा कर उनकी नायिका बन बैठी है।"

"वेश्याएँ धन संग्रह करती हैं, लुटाती नहीं। क्या तुमने कभी वहाँ एक पैसा भी खर्च किया है?"

"नहीं, बल्कि वहाँ से बहुमूल्य उपहार और नक़दी लेकर लौटे हैं।"

"इसमें कोई गहरा राज़ छिपा है।"

"मेरा भी यही ख्याल है।"

"कहीं, यह दुश्मनों की कार्यवाही से संबंधित न हो?"

"दुश्मन कौन—चीनी?"

"उनके सिवाय भारत का दुश्मन कौन है?"

"यदि तुम्हारा सन्देह सत्य है, तब तो इसके दुष्परिणाम निकल सकते हैं?"

"वहाँ की कई लड़कियाँ मुझे चीनी मालूम होती हैं?"

"ऐसा शक क्यों हुआ?"

"उनका नाक-नकशा, बोली और रंग-ढंग सब चीनियों जैसे हैं।"

"तब हम लोग बुरे फँसे।"

"कहीं मिसेज रिपुदमनसिंह की कथित लड़की कला, जिसे हम लोगों ने मिस इन्डिया बनवा दिया है, कोई चीनी गुप्तचर न हो?"

"यदि मिसेज रिपुदमनसिंह चीनी गुप्तचर हैं, तब कला भी है।"

"अर्थात्!"

"अर्थात्, यही कि कला भी कोई चीनी गुप्तचर है।"

"क्या हम लोग मुल्क के साथ गद्दारी कर रहे हैं?"

"अपने भेद बताना, क्या देशभक्ति का परिचायक माना जायगा ?"

"मैं असली भेद नहीं देता था ।"

"लेकिन वे लड़कियाँ जिनके साथ हम शाम बिताते थे, हमारे गुप्त सैनिक भेदों को खोद-खोद कर पूछती थीं ?"

"हाँ, यह बात ठीक है । कई बार मुझे ऐसा शक हुआ है कि वे हमारे कोट की जेबों की तलाशी लेती हैं ।"

"कुछ जरूरी कागज भी एक दिन के लिए गायब हो गए हैं ।"

"कैसे ?"

"कई बार दफ्तर से सीधे वहाँ जाने का निमंत्रण बड़े प्यार-दुलार से मिलता, और मैं अपने हस्ब मामूल तरीके से फायलों का बस्ता साथ लिए "अलका" चला जाता था ।"

"अच्छा, तुम भी इतनी बड़ी गल्ती करते थे ?"

"हाँ, ऐसा कई बार हो चुका है ।"

"फिर !"

"फिर क्या, उस दिन बड़ी खातिर होती, यों तो अच्छी किस्म की शराब हमेशा पीने को मिलती थी, लेकिन उस दिन शैम्पेन खुलती थी ।"

"और ।"

"और बढ़िया-बढ़िया भोजन मिलता, शीशमहल में नाचरंग जमता, और एक नहीं, कई नाजनीयों से घिर जाता । हँसी-मजाक खुलकर होता, और जो बहार आती थी, उसको मैं लफ्जों में बयान नहीं कर सकता ।

"कुछ इसी किस्म का तजुरबा मेरा भी है । शीशमहल का वायुमंडल तरह-तरह की खुशगवार अगरबत्तियों से गमक उठता था ।"

"सचमुच दोस्त, उस वक्त ऐसा मालूम होता कि हम सचमुच अलका-पुरी पहुँच गए हैं ।"

"फिर तुम्हें नींद कब आती थी ?"

"जब किसी मन पसन्द लड़की के साथ दूसरे कमरे में चला जाता, तब वहाँ जाने के साथ नींद का ऐसा गलबा सवार होता कि हजार मन चाहते हुए

भी थोड़ी देर में वेखबर हो जाते।"

"जागते कब ?"

"कोई तीन–चार बजे प्रातःकाल।"

"और वह छोकरी वहाँ होती या नहीं ?"

"वह मुझे हमेशा जागती मिलती थी।"

"क्या तुम उससे पूछते नहीं थे, कि उसने तुम्हें सोने क्यों दिया ?"

"अजी कुछ पूछने के पहले ही वह शिकायतों के ढेर लगा देती।"

"कैसी शिकायतें करती ?"

"ऐसी कि 'तुम बहुत पी जाते हो,' 'अपने ऊपर कोई नियंत्रण क्यों नहीं रखते', लाख जगाओ तुम जागते ही नहीं ?"

"ठीक ऐसी ही शिकायतें मुझे भी सुनने को मिलती थी, फायलें तुम्हें सही सलामत मिलती थीं ?"

"फायलों का बंडल उसी जगह मिलता, जहां मैं छोड़ जाता, लेकिन कभी-कभी ऐसा शक हुआ है कि वे उल्टी–पल्टी गई हैं।

"तुमने कभी उस सन्देह को जाहिर नहीं किया ?"

"वहां देखने-सँभालने का मौका कहां मिलता। उठाकर सीधे घर चला जाता। दफ्तर में जब सँभालता, तब कई कागज इधर–उधर मिलते थे।"

"मिल सब जाते थे ?"

"हाँ, करीब–करीब हमेशा, सिर्फ एक दो बार कोई जरूरी कागज नहीं मिला। मैं जब उनके लिए उद्विग्न होता, तब उस दिन मिसेज रिपुदमनसिंह का फोन आता कि 'तुम्हारी फायलों के कुछ कागज़ात यहाँ भूल से छूट गये हैं, शाम को आकर ले जाना।"

"उस दिन भी शाम वहीं गुजारते थे।"

"हाँ, लेकिन उस दिन बहुत सावधानी के साथ शराब पीता था, इतनी, जितनी पीने में बेहोश न हो जाऊँ।"

"तुमने कभी पूछा कि फायलों में बँधे कागजात कैसे निकल गए।"

"अपनी चीनी बिल्ली, जो उन लोगों ने पाल रखी है, का नाम लगा

देती ।"

"कौन बिल्ली का नाम लगाता, मिसेज़ क्रिप्टमनोमस ?"

"उनके तो उस दिन दर्शन नहीं होते थे । किसी कार्यवश बाहर चली जाती थी । यह बात या तो कला बताती, या फिर वह नाज़नीन जो मेरा स्वागत-सत्कार करती । प्रायः वही नाज़नीन, मुझे पहले प्रेम की डाँट-फटकार बताती, फिर बड़े नाज़-अन्दाज़ से वे कागज़ात मेरे हवाले करती ।"

"अजी तुम निरे भोंदू जाट हो । भला पूछते तो, यह सब कैसे होता था ?"

"उस वक्त पूछना—बूझना सब भूल जाता । बादशाह जहाँगीर भी कहता था कि एक प्याले शराब और नूरजहाँ के लिए मैं अपनी सल्तनत निछावर कर सकता हूँ ।"

"तुम सरकारी भेद, शैम्पेन के गिलास और उस नाज़नीन के लिए निछावर करते थे ?"

"निछावर करने का सवाल ही कहाँ उठता है ? वह कागज़ात मुझे मिल जाते थे ।"

"मेरा क्या ख्याल है कि कुछ कागज़ात की नकल ले ली जाती, और जो बहुत ज़रूरी होते, उनकी फोटो-कापी उतारी जाती होगी । इसीलिए उन्हें फायल से निकाल रख लिया जाता था ।"

"दोस्त, तुम्हारी सूझ बूझ बहुत पैनी है, लेकिन बेवकूफ हम दोनों बने हैं ।"

"बात तो तुम सही कहते हो । मैंने भी इसी तरह धोखा एक नहीं कई बार खाया है ।"

"अरे भाई, गुज़श्त-गुज़श्त ! अब बताओ हमें क्या करना चाहिए ।"

"कुछ सोच समझकर बताऊँगा । फँसे तो बुरे हैं ।"

"अभी क्या बिगड़ा है ? ये भेद मेरे और तुम्हारे सिवाय कोई जानता नहीं ।"

"कोई न भी जाने, हमारा मन तो जानता है ।"

"अब हमें वहाँ न जाना चाहिए ?"

"अभी मैं कोई सलाह नहीं दे सकता । शान्ति से सोचते-विचारने दो ।"

"अच्छा, तुम भी सोचो, और मैं भी सोचूंगा ।" फिर घड़ी देखते हुए कहा—"बातों–बातों में बहुत वक्त निकल गया । कैन्टीन कब खाली हो गई, हमें मालूम ही नहीं पड़ा ।"

दोनों मित्र कुंठित मन से अपने–अपने कार्यालयों में चले गए ।

१२

मिस्टर नैयर आकर अपनी मेज पर बैठे ही थे कि टेलीफोन की घंटी बजने लगी । उन्होंने रिसीवर उठाते हुए पूछा—"हलो, मैं मिस्टर नैयर बोल रहा हूँ ।"

उत्तर मिला—"मैं अलका से कला बोल रही हूँ । ममी आपसे बात करना चाहती हैं । मैं उनको फोन दे रही हूँ ।"

"क्या तुम बात करना नहीं चाहती ?"

"उनके बाद मैं बात करूँगी । उन्हें आपसे कुछ खास बातें करना है । पहले ममी से बातें कर लीजिए ।"

नमस्कार के पश्चात् मिसेज रिपुदमनसिंह बोलीं—"नैयर, कल तुम कहाँ रहे । मैंने कई वार फोन मिलाया, लेकिन तुम मिले नहीं । कहाँ गए थे ?"

"आपने कब फोन किया था ?"

"लगभग इसी समय ।"

"उस समय मेरे फोन का तार किसी ने काट दिया था ।"

"आपका फोन कट गया था, आप क्या कहते हैं ?"

"कहता तो ठीक हूँ । फोन ठीक होता तो आपका सन्देश न मिलता ?"

'आप बड़े तअज्जुब की बात कह रहे हैं । सुरक्षा कार्यालय का तार काटा गया ?"

"हाँ, किसी ने यह शरारत जरूर की है ।"

"दिया तले अँधेरा की कहावत चरितार्थ होनी है ।"

"हां, बात तो कुछ ऐसी देख पड़ती है। जानती हैं कि तार कहाँ काटा गया है ?"

"भला मैं कैसे जान सकती हूँ ?"

"मेरी मेज पर ही काटा गया।"

"यह बड़ी अनहोनी घटना घटी है। आपने कुछ पता लगाया ?"

"मैं सन्तोष के कमरे में बड़ी देर तक बैठा रहा, उसी बीच या फिर जब हम लोग कैन्टीन में थे, तब काटा गया है।"

"मैंने सन्तोष बाबू को फोन किया था। उनसे भी फोन नहीं मिला।"

"उनका फोन सबेरे ही बिगड़ गया था।"

"क्या उनसे भी किसी ने शरारत की थी ?"

"तार नहीं काटा गया, लेकिन साकेट से निकाला गया था।"

"अपने-आप तार कभी साकेट से नहीं निकल सकता। जरूर उनके साथ भी ऐसी ही कारंवाई की गई है।"

"संभव है, किन्तु यह शैतानी हरकत करेगा कौन ?"

"कोई मजाकिया !"

"अगर पता चल गया तो मजाक करने का मजा चखा दूंगा।"

"यही तो मुश्किल है। अब आप लोगों की सरकार का रोब उठ गया। मजाल थी कि कोई ऐसी हरकत अँग्रेजी राज में करता !"

"उनके जमाने में भी काम करने वाले हमीं लोग थे।"

"आप उस जमाने में अफसर न होकर क्लर्क होंगे।" फोन पर हँसी की आवाज आई।

"इस वक्त आप हँस लीजिए····।"

"अरे, आप नाराज हो रहे हैं। मैं आपका मजाक नहीं उड़ा रही।"

"तब क्या ठकुर-सुहाती कह रही हैं।"

"खुशामद की आदत मेरी नहीं है। मैं दोस्त को दोस्त, यानी बराबरी का मानती हूँ। हँसी आ गई आपके कार्यालय की अक्षमता पर।"

"ऐसी छोटी-छोटी गड़बड़ी हर राज और हर देश में होती है।"

"आप यह मामला किसी खुफिया को सौंप दीजिए। वह पता लगा लेगा।"

"आपके सुझाव के लिए धन्यवाद ! जासूस की कोई जरूरत नहीं, मैं स्वयं पता लगा लूंगा।"

"मेरा मतलब यह था कि आप ऐसा प्रबन्ध करें, जिसमें कोई गैर शख्स वहाँ पर न मार सके।"

"हाँ, प्रबन्ध ऐसा ही है। यह पहला मौक़ा है !"

"कहीं चीनी गुप्तचरों की यह कार्रवाई न हो।"

"चीनी गुप्तचर काग़जात चुराने आवेंगे, या टेलीफोन का तार काटने ?',

"यह न पूछिए कि वे क्या करते हैं, क्या करने जा रहे हैं, और क्या करेंगे ? वे बड़े धूर्त हैं।"

"आपको क्या कोई जाती तजुरबा है ?"

"इन बदजातों का।"

"हाँ।"

"नहीं इनसे कभी मेरा पाला नहीं पड़ा और भगवान न करे कि कभी पड़े।"

"आप फिर कैसे कहती हैं कि तार काटने में चीनियों की साजिश है।"

"यों ही। किसी खास मक़सद से नहीं। चूंकि आजकल हर शख्स के जबान पर उनका ही नाम है इसलिए मेरे भी मुंह से निकल गया।"

'आपने मेरा ध्यान इस दिशा में दिलाया है, इसलिए मैं इस पर विचार करूँगा।"

"अच्छा, इन फिजूल बातों को छाड़िए। क्या आप आज शाम की बैठक में तशरीफ़ लावेंगे ?"

"कोई जलसा है क्या ?"

"आप लोगों की मेहरबानी से हमारा हर दिन जलसे का है।"

"मेरा मतलब किसी खास किस्म के जलसे से हैं।"

"नहीं, ऐसी कोई खास बात नहीं है। कल शाम के जलसे में जरूर

खुसूसियत थी ।"

"वह क्या ? उसमें आपने मुझे नहीं बुलाया ।"

"बुलाने के लिए फोन किया था, लेकिन फोन न मिलने से आपको सूचना न दे सकी ।"

"कल क्या खास बात थी ?"

"कला के विजय-किरीट को लेने के लिए जिन शरीफजादे ने ग्यारह लाख की बोली लगाई थी, वह कल गरीबखाने पर तशरीफ लाए थे ।"

'तब एक मोटी मछली जाल में फँसी ।"

"आप कैसी भाषा का प्रयोग कर रहे हैं ?"

"आप तो जरा-सी बात पर नाराज होती हैं । उधर दोस्ती का भी दम भरती हैं, और इधर नाराज भी होती हैं ?"

"मैं नाराज नहीं होती, इतना जरूर चाहती हूँ कि दोस्तों के दरम्यान भी खुशगवार अलफ़ाज इस्तेमाल होने चाहिए । सोचिए जरा, कि अगर कोई तीसरा शख्स हमारी गुफ्तगू सुने, तो वह यही मतलब निकालेगा कि हम बदकार हैं और हमारा पेशा ठगी है ।"

"अजी वाह ! मैंने चलताऊ जबान इस्तेमाल की है । फिजूल आप तिल का ताड़ बना रही हैं ।"

"अगर यही चलताऊ जबान है, तब यह बेशक शरीफजादों की जबान नहीं है ।"

"जाने दीजिए । मतलब यह कि वह साहब, शरीफजादे आपके शरीफ जलसे में रौनक अफरोज हुए थे । वह कैसे वहाँ पहुँच गए ?"

"उनकी जान-पहचान मिस मिलर नामक एक अमेरिकन छोकरी से है । उसी के जरिए वह तशरीफ लाए थे ।"

"यानी वह बुला लाई थी ।"

"हो सकता है ।"

"इस अमेरिकन मिस मिलर को कभी देखने का मौका नहीं आया ।"

"उनसे कोई ज्यादा तअल्लुक नहीं है । वह एक सैलानी है । करोड़पति

वाल्दैन की लड़की हैं। एक जलसे में मुलाकात हो गई थी।"

"क्या आपकी छोकरियों से ज्यादा खूबसूरत हैं ?"

"उससे मिलने की क्या ख्वाहिश हो रही हैं ?"

"जरूर, अगर मुनकिन हो।"

"यह मौका कल ही था, काश आपका टेलीफोन कटा न होता। आज वह आएगी नहीं।"

"कोई बात नहीं, किसी और दिन सही। अपना किस्सा पूरा कीजिए।"

"जी हाँ, वह जनाब, शरीफ़जादे ही नहीं, तबियत भी शहजादों की पाई है।"

"जरूर जरूर। शहजादे से भी किसी क़दर ज्यादा है, तभी तो ग्यारह लाख पानी में बहा दिए।"

"पानी में वहा दिए, कि राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में दिए हैं ? महकमा बचाव के आप एक बड़े अफसर हैं।"

'सुरक्षा कोष में देना होता तो सीधे-सीधे दे सकते थे। असल दान तो कला का था। वह शरीफ़जादे या शहजादे साहब कला पर असर डालने के लिए बोली लगा रहे थे।"

"जो भी हो, रक़म सुरक्षा कोष में गई है। आम खाइये, गुठलियाँ मत गिनिए।"

"कोई ख़ास बात हुई ?"

"ख़ास बात यही हुई कि आज फिर उनको बुलाया है। आप भी सन्तोष बाबू को लेकर आ जावें।"

"क्या वह अमरीकन छोकरी आवेगी।"

"अब शायद उसकी तरफ कोशिश ज्यादा हो गई है ?"

"अजी तोबा करो। मैंने यों ही पूछा था।"

"पहले सब लोग 'यों ही' पूछा करते हैं, रीझना तो बाद की कार्रवाई है।"

"अजी, जब मुलाकात होगी तब देखा जायगा।"

"आप क्या आज आ रहे हैं ?"

"माफ़ कीजिए, अब अफ़सरों ने हमारे ऊपर कई पाबन्दियाँ लगा दी हैं, इसलिए मजबूर हूँ ।"

यह नई बात है, ऐसा कभी नहीं हो सकता । "भारत में प्रजातन्त्र है, चीन की तरह तानाशाही नहीं ।"

"आज आप चीन को बार-बार याद कर रहे हैं ?"

"जमाना कर रहा है, मैं जमाने के बाहर नहीं हूँ ।"

"ज़माना उस पर थूक रहा है ।"

"और मैं क्या पूज रही हूँ ?"

"नहीं, नहीं यह मैं नहीं कहता । लेकिन आज दो बार चीन का नाम ले चुकी हैं ।"

"मालूम होता है कि आपने आज दोपहर में कुछ पी ली है ।"

"आपका यह हरबा तो चीनी पेटेन्ट है ।"

"क्या मतलब ।"

"चीनी जब कोई कार्रवाई करते हैं, तब तोहमत पहले मुखालिफ़ पार्टी पर लगाते हैं ।"

"अच्छा, समझी ! आप खूबी जानते हैं कि मैं विधवा हूँ, पीने का हक नहीं रखती ।'

"कसम तो नहीं खाई ?"

"राँड़-बेवा के लिए कसम से भी ज्यादा है । आप आज आइये तो खास बिलायती पिलाऊँगी ।"

"लालच मत दीजिए । आज किसी तरह नहीं आ सकता । माफ़ी बख्शिए ।"

"और सन्तोष बाबू ।"

उनसे पूछ लीजिए । "मेरा ख्याल है कि शायद वह भी न आ सकेंगे ।"

"आप दोनों के बिना जलसा फ़ीका रहता है । आइए, शायद मिस्टर से मुलाकात हो जाय ।"

"आप तो लालच पर लालच दे रही हैं।"

"झूठा लालच नहीं, सच कह रही हूँ। मिलर अपना सानी नहीं रखती"

"अब आज नहीं; किसी दूसरे दिन देखा जायगा। मुझे आज ज़रूरी काम निबटाना है।"

"माफ कीजिएगा, आपका वक्त फिज़ूल जाया किया। नमस्कार !"

टेलीफोन का सम्बन्ध विच्छेद होते ही नैयर सन्तोषकुमार से बात करने के लिए सम्बन्ध स्थापित करने लगे। सम्बन्ध जुड़ते ही कहा—'हलो सन्तोष, मैं नैयर हूँ।"

"हाँ, कहिए ! क्या कोई बहुत जरूरी बात है ?"

"क्या कोई ज़रूरी काम में मशगूल हो।"

"हाँ, लेकिन अपनी बात कहिए।"

"अभी-अभी मिसेज़ रिपुदमन सिंह का फोन आया था। वह आज जलसे में शिरकत के लिए बुला रही थी। मैंने तो बहाना बता दिया। शायद इसके बाद तुमसे वह बात करें।"

"कहा था कि मैं तुम्हें लेकर वहाँ आज शाम को आऊँ। मैंने कह दिया है कि शायद तुम भी न जा सकोगे।"

"बहुत ठीक, अब हमें वहाँ नहीं जाना। इस वक्त हमें फूंक-फूंक कर कदम रखना है।"

"बेशक ! आज वह चीनी जासूसों की बड़ाई कर रही थी, उससे ऐसा मालूम हुआ कि उसका दुश्मन से कुछ लगाव जरूर है।"

"ज्यों-ज्यों पिछली बातों पर गौर करता हूँ, त्यों-त्यों मेरा शक बढ़ता जाता है।"

"क्या कोई नई घटना घटी है ?"

"हाँ, क़यास यही है। पूरी तहकीक के बाद किसी नतीजे पर पहुँचूगा।"

"कुछ बताओ।"

"फोन पर कहना मुनासिब नहीं है। शाम को सब बातें विस्तार से कहूँगा।"

"बात न हो तो····।"

"हाँ, हाँ, तुम काम करो। शाम को साथ चलेंगे।"

"बस उस वक्त सब बात बताऊँगा। नमस्कार!"

"अच्छा" कह कर नैयर ने सम्बन्ध विच्छेद कर दिया।

१३

मिसेज रिपुदमन सिंह की आँखों से आँसुओं की झड़ी बँध गई। रमणीमोहन असमंजस में पड़े उसकी ओर विस्मित दृष्टि से देखने लगे। कुछ सान्त्वना के शब्द जहाँ वह बोलते, वहाँ उसका रुदन और बढ़ जाता। पहले कला उन दोनों के पास बैठी थी, परन्तु मिसेज सिंह ने उसे हटा दिया, उस समय जब रमणीमोहन उसका अतीत जीवन पूछने लगे।

जब किसी प्रकार उसका रोना बन्द नहीं हुआ, तब ऊब कर कहा—"मैं नहीं जानता था कि आपको मेरे प्रश्न से कष्ट होगा, नहीं तो हर्गिज इस दुखद प्रसंग को न छेड़ता।"

मिसेज सिंह ने जब अनुभव किया कि स्थिति सम पर आ गई है, तब रूमाल से आँसुओं को पोंछती हुई बोली—"मोहन राजा, क्या बताऊँ, पुरानी बात कुरेदने से कलेजा मुँह को आता है।"

मिसेज रिपुदमन सिंह प्यार तथा अपनत्व प्रदर्शन करने के उद्देश्य से रमणीमोहन को 'मोहन राजा' कहने लगी थी। उसके हजार मना करने पर उसने अपना हठ न छोड़ा, और रमणीमोहन को लाचार होकर उस सम्बोधन को स्वीकार करना पड़ा।

"आप सच कहती हैं, बीती बातें कभी-कभी सुखद नहीं होतीं।"

"फिर एक ऐसी विधवा की, जिसने तमाम उम्र प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष किया हो, और जिसके जीवन का सब रस निचुड़ गया हो, उसकी जीवन-कहानी न सुनने में सुखद है, और न कहने में।"

"मुझे क्षमा कीजिए, मेरा मतलब आपको दुखी करना नहीं था।"

"जानती हूँ, मोहन राजा, किन्तु तुमसे न कहूँगी तो फिर किससे कहूँगी,

इसमें चाहे जितनी वेदना हो।"

"आज ही क्या जल्दी है। किसी अन्य दिन देखा जायगा।"

"जब तुमने प्रश्न किया है, तब अपने सम्बन्ध में सब बातें बता देना लाजमी है। इन बातों को वही पूछता है, जिसके दिल में दर्द होता है, और इन्सानियत होती है। ऐरे-गैरे तो अपने मतलब से मतलब रखते हैं।"

"आपके प्रति मेरे मन में सम्मान और सहानुभूति है।"

"आपका व्यवहार बराबर लक्ष्य कर रही हूँ कि आपका कितना प्यार-दुलार मेरी एकमात्र पुत्री कला पर है। वही मेरे जीवन का सहारा है, और इसी को समाज में प्रवेश कराने के लिए इतना आडम्बर रचना पड़ा।"

"कला का भविष्य उज्ज्वल है! इसमें सन्देह की गुंजाइश नहीं है।"

"भगवान करे तुम्हारी वाणी सफल हो, बेटा। यह किसी ठौर ठिकाने से लग जाय, तब मेरी चिन्ता का अन्त हो। उसके बाद जितनी जल्दी प्राण-विसर्जन हो, उतना अच्छा!"

"वाह, अभी आपकी उम्र ही क्या है? मैं समझता हूँ कि आप पैंतीस-चालीस साल से ज्यादा न होंगी।"

"वाह बेटा, कितना सच्चा अन्दाजा है। उनतालीसवाँ खत्म होकर चालीसवां साल इसी सावन के महीने से लगा है।"

"आप दरअसल इससे भी कम देख पड़ती हैं। मैंने कला की आयु से यह निष्कर्ष निकाला है।

"ठीक, कला जब पैदा हुई थी, तब मैं बीस वर्ष की थी। उसी साल उसके पिता का, जो अंग्रेजी फौज में कर्नेल थे, देहान्त हुआ।"

"दूसरे महायुद्ध में?"

"हाँ, जर्मनी, फ्रान्स आदि देश में लड़े थे और उन्हें विक्टोरिया क्रास मिला था।"

"इसके बाद और भी विपत्तियाँ मेरे ऊपर आईं।"

"वह क्या?"

उसी साल पाकिस्तान ने कश्मीर पर हमला बोल दिया। उन

दिनों हम लोग मुज्जफराबाद में रहते थे। वहाँ हमारी पैतृक जायदाद थी। खाते-पीते हम लोग खुशहाल थे, और पुश्तैनी जमींदारी से हमारी रुपयों की आमदनी थी। परिवार में हम केवल दो प्राणी थे, इसलिए सारी आमदनी जमा होती रही। उसी का कुछ हिस्सा अपने साथ ला सकी हूँ, बाकी लाखों की सम्पत्ति वहीं छोड़ आना पड़ा।"

"यह कैसे ?"

"पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण कर मुजफ्फराबाद पर अपना अधिकार जमा लिया था, जो आजदिन भी उसके कब्जे में है।"

"जब पाकिस्तान ने आक्रमण किया था, तब आप मुजफ्फराबाद में थी ?"

"हाँ बेटा, अफवाहें सुनकर मैं सतर्क हो गई थी, और धीरे-धीरे वहाँ से, जेवर और नकदी हटाने का विचार कर रही थी कि आक्रमण हो गया।"

"उस समय जान बचा कर भागने के सिवाय कुछ सूझा न होगा ?"

'हाँ बेटा, उस वक्त जान के लाले पड़े थे, किसी तरह हम माँ-बेटी बच कर निकल भागी, इतना ही बहुत हुआ।'

"आप अपनी दूरदर्शिता से बच गईं, और कुछ पैसा भी ले आईं, नहीं तो····।"

"कौन जानता कि जीवन के शेष दिन कैसे बीतते। हमारा मकान किसी राजमहल से कम सजा नहीं था। कला के पिता ने विदेशों से अनेक प्रकार की साज-सज्जा लाकर उसे सजाया था। उसकी सजावट देखने के लिए दूर-दूर से लोग आया करते थे।"

"सब तो आप ला न सकी होंगी ?"

"सब क्या उसकी एक वस्तु नहीं ला सकी। सब दुश्मनों के लिये छोड़ देना पड़ा। यदि कभी उन दिनों तुमसे परिचय होता, तब दिखाती कि सजावट किसको कहते हैं। कला के पिता को यदि कोई शौक था, तो बस यही।"

"शायद उनकी प्रतिमा कला में साकार उतरी है।"

"अपनी बेटी है, कुछ अधिक कहना अनुचित है, किन्तु इतना तो कह सकती हूँ, कि कला की सब कलात्मक रुचि उन्हीं के पुण्य प्रभाव से प्राप्त

हुई है।"

"मैं भी निरख रहा हूँ, कि आपकी कला वस्तुतः कला का साकार रूप है।"

"अभी तक केवल तुमने ही उसके यथार्थ रूप को पहचाना है।"

"जब पाकिस्तान ने आक्रमण किया, तब आप मुजफ्फराबाद से कहाँ गईं?"

"कन्या गोद में थी, उसको लेकर बहुत दूर जा नहीं सकती थी। यातायात बन्द हो चुका था। यहाँ तक कि सवारी के लिए घोड़े भी न मिलते थे। चारों ओर मार-काट, लूट-खसोट मची थी। कोई किसी का पुरसा-हाल नहीं था। मैं अपनी कमर में कुछ थोड़े जवाहिरात, सोने के गहने, और नकदी में नोट छिपा, कन्या को छाती से लगाए ईश्वर पर भरोसा रख कर भाग निकली। कहीं जाने का कोई निश्चय नहीं था।"

"सचमुच आपको बहुत बुरे दिन देखने पड़े हैं।"

"भगवान करे ऐसे बुरे दिन दुश्मन को भी न देखना पड़े। घाटियों में छिपती-छिपाती, रोती-बिलखती, भूखी लाचार सुनसान-बीहड़ मुकामों में रैन-बसेरा लेती किसी तरह श्रीनगर पहुँची। लेकिन यहाँ भी कबायली पहुँच चुके थे। बिजली घर तोड़ दिया गया था, और नगर पर भी उनका कब्ज़ा करीब-करीब हो जाता कि भारतीय हवाबाजों की कुमुक आ गई, और उससे लड़ाई का रंग-बदरंग हो गया।"

"रास्ते में किसी ने आपको सताया नहीं?"

"गाँव सब उजड़ गये थे। ईश्वर ने मुझे प्रेरणा दी कि मैं उन जंगली रास्तों से भागूँ, जिनसे केवल भेड़ चराने वाले वाक़िफ होते हैं। ऐसे ही रास्ते में मेरी भेंट एक चरवाहे से हो गई। उसे मेरे हाल पर रहम आया, और अपने साथ भेड़ों-बकरों को चराने के लिए रख लिया।"

"भागवत्-शक्तियाँ सदैव सहायता के लिए उन्मुख रहती हैं, फिर भी मनुष्य ईश्वर पर विश्वास नहीं करता।"

"मुसीबत पड़ने पर आँखों की माया का परदा हटता है। मैंने भी

उसी दिन भगवान के उस छिपे हाथ को देखा जो हर मुसीबत ज़दा इन्सान की मदद करता है।"

"आपको यह अनुभव हुआ ?"

"हां, बखूबी। अगर उसकी कृपा न होती तो क्या मैं बचकर उस आग से निकल पाती ?"

"जिन्दगी और मौत सबल से सबल मनुष्य की इच्छा पर निर्भर नहीं होती। उन पर केवल भगवान का ही अधिकार है। फिर आप कहां गईं ?"

"उनकी इच्छा से ही मैं निकल भागी और श्रीनगर के समीप ब्रेन नामक गांव में कुछ दिनों ठहरी। बाद में अमन कायम होने पर भारत चली आई।"

"तबसे आप दिल्ली में हैं ?"

"पहले दिल्ली नहीं आई। मैदानों का गर्म वायुमंडल हमारे अनुकूल न बैठा, इसलिए पहाड़ी प्रदेशों की धूल छानती रही। जब कुछ अभ्यस्त हुई तब दिल्ली आकर कयाम किया।"

"आप दिल्ली में कितने दिनों से हैं ?"

"यही दो-तीन साल से।

"शायद यह मकान आपने मोल लिया है।"

"इतनी हैसियत कहां है, जो दिल्ली में मकान खरीद सकती। किराये पर रहती हूं, और चूंकि किराया महीने-महीने चुका देती हूं, इसलिए मकान मालिक को कोई बहाना निकालने का नहीं मिलता। यह बस्ती नौ-आबाद हो रही थी, इसलिए सस्ता-मद्दा पा गई हूं।"

"किराये के मकान को इस तरह सजाने-सवाँरने से प्रमाणित होता है कि आप में भी कला के प्रति आकर्षण है।"

'क्या बताऊं, अपनी आदत से मजबूर हूं। शुरू से सजे–सजाये मकान में रहती आरही हूं, इसलिये सादगी पसन्द नहीं है।"

"ठीक कहती हैं, गरीबी और अमीरी की बू बारह वर्षों तक नहीं जाती।"

"हाँ, कुछ ऐसा ही समझो, बेटा। कला को शिक्षित करना था, और समाज में भी उसका परिचय कराना था, इसलिये इतना बोझ उठाये हूं। आजकल दिखावट का जमाना है। चमक-दमक से सब काम आसानी से बन जाते हैं, नहीं तो सादगी को लोग मुफलिसी समझते हैं।"

"यह परिवर्तन अभी हाल कुछ ही दिनों में हुआ ?"

"और क्या ? जबसे भारत आजाद हुआ, तबसे नैतिक स्तर में तो पतन ही हुआ है, चाहे अन्य दिशाओं में उसने भले ही तरक्की की हो। पहले पैसे के प्रति इतना आकर्षण कभी नहीं था।"

"जमाना बदलता ही रहता है। संसार परिवर्तनशील है। अब औद्योगिक उन्नति के साथ भारतीय विचारधारा भौतिक हो गई है।"

"पहले पैसे का इतना बाहुल्य नहीं था, जितना आजकल है। चीजें मंहगी हो गई और पैसा बढ़ गया है।"

"अब आमदनी का जरिया क्या है ?"

"जमीन थी, वह पाकिस्तान में चली गई। जो जवाहिरात वगैरह लाई थी, उन्हें सस्ते-मद्दे दामों पर बेचना पड़ा। जो कुछ मिला उसका कुछ हिस्सा बैंक में जमाकर दिया, कुछ से कारोबारों में शेयर खरीद लिये। बस इस छोटी रकम से किसी तरह गुजर बसर करती हूं। कला के दहेज के लिये खर्च में कमी कर कुछ बचाने की कोशिश करती हूं, लेकिन बचत कुछ नहीं होती। कभी कभी ब्याज के अलावा मूल से भी लेना पड़ता है।"

"यह समस्या आपके सामने अवश्य है। भगवान सहायता करेंगे।"

"उनका ही तो एकमात्र भरोसा है। नरसी का मायरा अगर उन्होंने भरा था, तो मेरी कला का विवाह भी वही करायेंगे।

"निस्सन्देह वही करेंगे। भगवान चीनी खाने वाले को चीनी, और गुड़ खाने वाले को गुड़ देता है।"

"चीनी की बात कहकर आपने चीनियों की याद दिलादी, जो भारत पर अधिकार जमाने की कोशिश में है। भारत को आजाद हुए अभी मुश्किल से चौदह वर्ष बीते हैं कि चीनियों की नई बला मंडराने लगी।"

"हमारी प्रगति में अवश्य कुछ रुकावट आयेगी, लेकिन अब भारत पुनः गुलाम नहीं बन सकता।"

"मेरा भी यही यकीन है। तीसरी पंचवर्षीय योजना यदि पूरी हो जाती, तब हमें कोई भय नहीं था।"

"इस समय भी नहीं है। लड़ाई में जो पहल करता है, कुछ हद तक उसे प्रारम्भिक सफलता मिल जाती है, किन्तु आजाद मुल्क अपनी आजादी हर कीमत पर कायम रखता है, और उसके लिए बड़ी से बड़ी कीमत चुकाता है।"

"जिनको आजादी प्यारी है, वे इन बलाओं से नहीं घबड़ाते। हमारा इतिहास ऐसी मिसालों से भरा है कि जब जब आजादी ने खून की भेंट मांगी है तब-तब हमारे जवानों ने उसके खप्पर भरे हैं।"

"और बेटा, तुम्हारे जैसे भामाशाहों का आविर्भाव स्वमेव होता है।"

"आज भारत की गरीब जनता उत्सर्ग में भामाशाह से आगे जा रही है। भारत का जन–जन अपना सर्वस्व निछावर करने की होड़ लगाये है।"

"गोरा और बादल की भांति हमारे विद्यार्थी सरफरोशी की तमन्ना लिए घूम रहे हैं।"

"बेटा तुमने भी तो ग्यारह लाख राष्ट्रीय सुरक्षा फंड में बिना किसी हिचक के दिए हैं।"

"वह दान नहीं, बदा–बदी थी।"

"बदाबदी सही, किन्तु रकम तो गई सुरक्षाकोष में।"

"एक बहाना बन गया अवश्य, किन्तु सत्य यह है कि उस समय इसका कोई ध्यान ही न था। कुछ पैसे की गरमी थी, कुछ तैश था, कुछ आन रखने की बात थी।"

"सब कुछ होते हुए भी दिल की कुशादगी थी। बेटा तुम्हें ईश्वर ने सब तरह भरा पूरा बनाया है, पैसा दिया है, उद्योग–धन्धे दिये हैं, इज्जत आबरू दी है और सबसे बड़ी चीज इतना कुशादा दिल दिया है जिसमें हम जैसे गरीबों की पैठ है।"

"आप मुझे क्यों शर्मिन्दा करती हैं। जब आप मुझे बेटा कहकर

पुकारती हैं, तब आप क्यों ऐसी बातें करती हैं ?"

"यह हक मुझे हमेशा के लिये दे दो, बेटा ।'

"अब यह सम्बन्ध स्थायी समझिये । जब जब दिल्ली आऊँगा, तब तब आपका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए अवश्य आपकी सेवा में उपस्थित होता रहूँगा ।"

"क्या कहीं जारहे हो, बेटा ?

"घर तो वापस जाना है ।"

' बेशक, बहू प्रतीक्षा कर रही होगी ।"

"अभी बहू आई नहीं, माँ अवश्य प्रतीक्षा कर रही होगी ।"

"बेटा, तुम कितने भाई-बहिन हो ?"

"मुझसे दो बड़े भाई, और दो छोटे हैं, बहिन एक है, और वह सबसे छोटी है ।"

"तब तो तुम सब पंच-पांडवों जैसे हो । मेरा ख्याल है कि तुम अर्जुन की तरह बिचले हो इसलिये उसकी तरह तुम भी गरीबों का उद्धार करने वाले हो ।"

"आप तो तिल का ताड़ ही नहीं बल्कि पहाड़ बना रही हैं ।" कहाँ दैविक विभूतियों से सम्पन्न अर्जुन महारथी, और कहां मैं वणिक व्यवसायी ।"

"दैविक विभूतियों से तुम भी सम्पन्न हो बेटा । अर्जुन क्षत्रिय थे इस लिए शस्त्र विद्या के निष्णात आचार्य थे. और तुम जमाने के मुताबिक उद्योग-व्यापार करते हो इसलिए उस दिशा में अप्रतिभ हो ।"

"आपसे तर्क में पार पाना मुश्किल है । संध्या हो रही है, अब जाने की अनुमति दीजिए ।"

"वाह, अनुमति कैसे दे सकती हूँ । आज ब्यालू यहीं करो, बेटा ।"

"आज नहीं, किसी दूसरे दिन देखा जायगा ।"

"मैं दावा नहीं करती कि आकाश होटल जैसा भोजन मेरी कुटिया में तुम्हें मिलेगा, किन्तु स्नेह और ममता का अभाव वहाँ अवश्य होगा, जो इस में तुम्हें प्रचुरता से प्राप्त होगा ।"

"इससे मैं भली भाँति परिचित हूँ ।"

"तब बेटा आज यहीं भोजन कर अपनी माँ की अभिलाषा पूर्ण करो । कला भी बड़े मनोयोग से भोजन बना रही है । मैंने कहा था कि आज मेरी पाक-परीक्षा है, देखूँ मोहन राजा मुझे उत्तीर्ण करते हैं या नहीं ।"

"आप मजबूर कर रही हैं ।"

"इधर माँ की खुशी है, और उधर कला का स्नेहपूर्ण मौन निमंत्रण ! वह रो रोकर सारी रात काटेगी, अगर इतनी साध से उसका बनाया भोजन ठुकरा कर चले जाओगे ।"

"अब कैसे संभव है कि मैं भोजन का अनुरोध न मानूँ ।"

"शाबाश बेटा ! अब मेरी तबियत खुश हुई । मैं जाकर कला को भेजती हूँ । गा-बजाकर वह तुम्हारा मन बहलायेगी ।"

यह कहकर वह शीघ्रता से चली गई ।

१४

जब रमणीमोहन अर्धरात्रि के लगभग आकाश होटल पहुँचे, तब उन्हें लैम्बर्ट का कमरा खुला मिला । हास्य का मधुर गुंजन भी बरामदे से सुन, उन्होंने कमरे के अन्दर झाँककर देखा कि मिस मिलर और लैम्बर्ट मदिरा पान कर रहे हैं । वह उल्टे पैरों वहाँ से लौटने वाले थे कि मिस मिलर की दृष्टि उन पर पड़ गई । उसने मुँह से लगा गिलास नीचे रख, और लैम्बर्ट को दृष्टि से संकेत करते हुए कहा—"आइये, मोहन राजा, आप वापस क्यों लौटे जा रहे हैं । हम दोनों आपकी ही प्रतीक्षा में बैठे हैं ।"

लैम्बर्ट ने कुरसी से उठते हुए कहा—"आइए मिस्टर मोहन, आप वापस आने को कह गए थे नौ बजे, और आए अर्ध रात्रि को ।"

"नए दोस्तों के सामने पुरानों को भूल जाते हैं ।"—मिस मिलर ने प्रहार किया ।"

"और जब नया साथी मिस इन्डिया हो, तब !"

रमणीमोहन ने प्रवेश करते हुए कहा—"आपको कोई शिकायत न होना

चाहिए लैम्बर्ट ।"

"क्यों ?"

"इसलिए यदि मैं मिस इन्डिया के साथ था, तो आप मिस अमेरिका के साथ पी रहे हैं ।"

मिलर ने नाटकीय मुद्रा से कहा—"धन्यवाद ! काश मैं सचमुच मिस अमेरिका होती......।"

"तब आपकी भी ख़ुशामद मिस्टर मोहन उसी भांति करते, जैसे वह अभी मिस इन्डिया की करके आ रहे हैं ।"

"तब शायद मेरे ताज के लिए ग्यारह लाख रुपयों की जगह ग्यारह लाख डालर की बोली लगाते ?" मिलर मदभरी दृष्टि से उनको देखने लगी ।"

लैम्बर्ट ने चुटकी ली—' किन्तु भुगतान रुपयों में होता, डालर में नहीं। क्योंकि भारत में विदेशी मुद्रा की कमी है ।"

' मुझे भारत में रहना है; मैं भुगतान रुपयों में स्वीकार करती ।"

"ख़ुदा गंजे को नाख़ून नहीं देता । न तुम मिस अमेरिका हो; और न मिस्टर मोहन तुम्हारा ताज ही ख़रीदेंगे ।"

"लैम्बर्ट; तुम मनहूस हो । किसी की उन्नति नहीं देख सकते ।"

"उन्नति न देखने वाले ईर्ष्यालु होते हैं कि मनहूस ।"

"अगर मुझे बोलने की इजाजत दें तो मैं कहूँगा कि आप दोनों स्वार्थी हैं और किसी भले आदमी का सत्कार करना नहीं जानते ।" रमणीमोहन ने बैठते हुए कहा ।

"मन्जूर करता हूँ दोस्त ! तुमको पीने के लिए निमंत्रित करने जा रहा था कि......।"

"मिसेज सिंह के शैम्पेन के मुकाबले में यह ठर्रा है । राजा कहीं ठर्रा पीते हैं ?"

"तुम्हारी बात सही है मिलर । यहां शैम्पेन ख्वाब में पी जाती है ।"

' न पिलाने का यह अच्छा बहाना है । तुम दोनों की ख़ुदगर्जी की कोई

हद है ?"

"आइये आप भी ठीक से पीजिए। यह व्हिस्की नहीं, रम है।"

"यह कम्बख्त रम। जो सिर दर्द पैदा करती है।"

"वही तो मैं भी कह रही थी कि इन्हें पीकर अपनी प्यास बुझा रहे थे।"

"मेरे कमरे में चलिए; बढ़िया व्हिस्की पीजिए।"

"हम लोग बहुत देर से पी रहे हैं; अब ज्यादा हो जायगी।" लेम्बर्ट ने मिलर की ओर देखकर समर्थन चाहा।

"बेशक; मिकदार से ज्यादा पी जाना नशाखोरी है।"

"और यह ।"

"यह प्यास बुझाना है।"

"इन्सान की प्यास कभी बुझी है? चलिए, सोने के पहले एक दो पैग ले ली जाय।"

"मैं तो जा नहीं सकती; कहीं ज्यादा हो गई तो फिर अपने होटल नहीं जा सकूंगी।"

"कोई हर्ज नहीं; यहीं आराम करने की व्यवस्था हो जायगी।" लैम्बर्ट मुस्कराने लगा।

"बेवकूफी की बातें न करो; लैम्बर्ट।"

"यदि यह बेवकूफी का सुझाव है तो आपको रिट्ज होटल तक पहुँचाने का जिम्मा मेरा रहा।"

"तुम लोग बड़े नटखट हो। व्हिस्की सुनकर मन मचलने लगा है।"

"तब आइये।"

अपने कमरे में प्रवेश कर ज्यों ही रमणीमोहन ने बत्ती जलाई, त्यों ही उनकी दृष्टि कागजों के एक बण्डल पर पड़ी। उलट-पलट कर उसे देखते हुए बोले—"यह बण्डल क्या बला है ?"

लैम्बर्ट उसे खोलने लगे। मिलर ने उसका हाथ पकड़कर कहा—"अजी फेंको उधर पुराने रद्दी कागज भरे हैं।

"रद्दी कागज नहीं, किसी मासिक पत्र की फायल मालूम होती है।

मिस्टर मोहन, देखिये कहीं आपकी तो नहीं है।"

रमणीमोहन ने अलमारी से ह्विस्की की बोतल निकालते हुए कहा—"मैं किसी मासिक पत्र की फायल नहीं रखता। न मालूम कौन यहाँ फ्रेंक गया है।"

"आपके बन्द कमरे में कौन फेंक जायगा। यदि सच है तो कहना पड़ेगा कि यह नक़बजनी है, क्यों लैम्बर्ट तुम्हारा क्या ख्याल है ?" यह कह कर मिलर उन्हें देखने लगी।

"होटेल के अधिकारियों को इसकी सूचना देना चाहिए।"

रमणीमोहन ने बोतल की काग खोलते हुए कहा—"लैम्बर्ट छोड़ो उन बातों को। कोई फ़र्राश भूल गया होगा। दोपहर में मैंने कमरा पुनः साफ करवाया था। सम्भव है कि वह अपने साथ लाया हो, और जल्दी में भूल गया हो।"

लैम्बर्ट उसे बड़े मनोयोग से देख रहा था। उसने कहा—"अरे, इसमें अंग्रेजी के साथ, कहीं-कहीं चीनी भाषा भी लिखी हुई है। पेकिंग से निकलने वाली पत्रिका 'न्यू एज' की फाइल है।"

रमणीमोहन ने उसे देखते हुए कहा—"चीनी पत्रिकाएं किसकी हैं ? क्या कोई चीनी गुप्तचर अशोका होटल में घुस आया है ?"

मिस मिलर खिलखिला कर हँस पड़ी।

लैम्बर्ट ने प्रश्न किया—"आप हँस क्यों रही हैं ?"

"हँस रही हूँ, अपने मोहन राजा के सन्देह पर। चीन का हौआ प्रत्येक भारतीय दिल पर ऐसा छा गया है, कि हर सड़ी बात की तह में वह चीन की कारगुज़ारी का सन्देह करने लगता है।"

"मिस्टर मोहन का अनुमान गलत नहीं है। समग्र भारत में चीन के जासूस फैले हुए हैं।"

"तुमको इसकी पक्की जानकारी है, शायद।" मिलर पेग में ह्विस्की ढालती बोली।

"बिना जानकारी हुए, मैं कच्ची बात नहीं कहता।" लैम्बर्ट ने गम्भीर

वाणी में कहा ।

"फिर क्यों नहीं तुम भारतीय सरकार को उनकी सूची पेश कर देते ?"

"समय आने पर आपके सुझाव के अनुसार अमल करना चाहूँगा ।"

"पहले मोहन राजा की ह्विस्की पिओ, फिर मेरे सुझाव को अमल में लाना ।"

तीनों एक दूसरे की शुभ कामना पर मदिरा पान करने लगे ।

रमणीमोहन ने मुस्कराते हुए कहा—"मेरा सुझाव है कि मिस मिलर आज यहीं रात बिताएं ।" क्यों लैम्बर्ट तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

"मुझे कोई आपत्ति नहीं है, यदि मिलर यह शुभ प्रस्ताव मन्जूर करे ।"

"लैम्बर्ट से मुझे अब डर लगता है कि न मालूम कब किसको चीनी जासूस कह कर गिरफ्तार न करा दें ।" कह कर वह मुस्कराने लगी ।

"आप बेखौफ रहिए मिस लैम्बर्ट, आपको चीनी गुप्तचर नहीं बनायेंगे ।" मोहन ने आश्वासन दिया ।

"यदि वह आपका प्रस्ताव मान ले तो ।"

मिलर ने आधा गिलास खाली कर शेष लैम्बर्ट के मुंह में लगाते हुए कहा—"मेरे हिस्से की भी पी जाओ । अब नहीं पी सकूंगी । सिर चकरा रहा है ।"

"सर चकरा रहा है तब यहीं सो जाना । हम लोग सुरक्षित स्थान में हैं ।"

"अब मैं जाऊँगी, एक ब ज गया है ।"

"यहीं सो जाओ, इतनी रात गए कहाँ जाओगी ?"

"सच कहती हूँ, शिर में दर्द हो रहा है ।"

"नखरे न कीजिए, पी जाइये । एक यह दूसरा ही पेग है । तुम्हें दावा है कि तुम कभी बेहोश नहीं होती ।" चाहे जितनी पिलाई जाय । लैम्बर्ट हँसने लगा ।

"अब वह बात नहीं रही । कलकत्ते में रहते हुए आदत जरूर पड़ गई थी ।"

"कलकत्ता छोड़े हुए तुम्हें कुछ महीने हुए हैं ।"

"हाँ।"

"इतने दिनों में यह फर्क आ गया ?"

'उन दिनों मैं कलिम्पोंग से लौटी थी, वहां के जलवायु में अधिक पी लेने से भी बेहोशी न आती थी। दिल्ली का जलवायु मेरे अनुकूल नहीं है।"

"क्या दिल्ली छोड़ने का इरादा है ?" रमणीमोहन ने पूछा।

"हाँ, यहाँ जी नहीं लगता। इस जगह चीनी आक्रमण की चर्चा सुनते-सुनते मन ऊब गया है।"

"भारत में रहते दूसरी बात नहीं सुन सकोगी, क्योंकि यहां का जन-जन चीनी आक्रमण से व्यथित और चौकन्ना हुआ है।"

"वास्तव में लैम्बर्ट के कथन में अतिशयोक्ति नहीं है। भारत के प्रत्येक निवासी ने चीनियों की चुनौती स्वीकार की है। इतनी एकता आज के पहले कभी देखने में नहीं आई।"

"इसी का नाम है राष्ट्रीय चेतना !" लैम्बर्ट ने अपना गिलास खाली करते हुए कहा।

रमणीमोहन ने लैम्बर्ट का गिलास पुनः ह्विस्की और सोडा से भर दिया, परन्तु जब वह मिलर का गिलास भरने लगे तब उसने आपत्ति करते हुए कहा—"नहीं मोहन राजा, अब इतनी कीमती चीज खराब न करो। मैं अगर पी लूंगी तो होश गंवा बैठूंगी।"

लैम्बर्ट ने जबरन उसके मुंह से गिलास लगाते हुए कहा—"कहता हूँ, पी जाओ, नखरे न करो। अगर सीधी तरह नहीं पिओगी तो जबरदस्ती करना पड़ेगा।"

"यह भी कोई शराफत है ?"

"पिओ, पिओ, नहीं तो नाक दबाता हूँ।" लैम्बर्ट उसकी नाक पकड़ने को उद्यत हुआ।

मिलर ने एक ही सांस में गिलास खाली कर दिया। रमणीमोहन उसे पुनः भरने पर तत्पर हुए, किन्तु उसने उनका हाथ पकड़ते हुए कहा—"मोहन राजा, मान जाओ। मैं सच कह रही हूँ कि अब पीने की ताब नहीं है। लैम्बर्ट

के साथ रम काफी ले चुकी हूँ ।"

रमणीमोहन ने उसका गिलास छीन लिया, और भरते हुए कहा—"बस एक पेग और यह बस आखिरी दौर है ।"

"जिद न करो मोहन राजा ! तुम्हारा अनुरोध टालने में कष्ट होता है ।"

"जब इस कदर मोहन राजा पर फिदा हो, तब खुशामद क्यों करवाती हो ?" लैम्बर्ट हँसने लगा ।

"खराब करो अपनी मदिरा, मैं एक बूंद न पिऊँगी ।"

लैम्बर्ट ने रमणीमोहन को पिलाने का संकेत किया । वह गिलास उठा कर उसके मुंह से लगाते हुए बोला—"पी जाओ, इसके बाद मत पीना ।"

"इतने अनुरोध पर पीना ही पड़ेगा, लेकिन इतना कहे देती हूँ कि यहीं मेरे सोने का बंदोबस्त करो ।"

"तुम बे फिक्र रहो । लैम्बर्ट मेरे कमरे में सो जायेगा, और तुम उसके कमरे में ।"

"मैं अपना कमरा नहीं दे सकता । मिस्टर मोहन चाहें तो अपने कमरे में जगह दे सकते हैं !"

"आप दोनों कोई तकलीफ न करें, मैं होटल चली जाऊँगी । लैम्बर्ट मुझे पहुँचा आएगा ।"

"जरूर लेकिन क्या कोई टैक्सी इस वक्त मिलेगी ?" रमणीमोहन ने पूछा ।

"होटल के बाहर बहुत खड़ी मिलेंगी । अभी नृत्य समाप्त नहीं हुआ है, इसलिए कई दर्शकों को ले जाने के लिए प्रतीक्षाकर रही होंगी । अगर आप अपने कमरे में इन्हें लेटने दें तब इतनी जहमत उठाने की कोई जरूरत नहीं है !"

"अविवाहितों के कमरे में कहीं कोई युवती रह सकती है ।" मिलर की जबान लड़खड़ाने लगी ।

"ठीक है, मैं तुम्हें पहुँचा आऊँगा, यदि लैम्बर्ट यह मीठा भार उठाने

में पशोपेश करेंगे। बस एक पेग और पी लिया जाय। रमणीमोहन तीनों के गिलास भरने लगे।

मिस मिलर उठकर खड़ी होने लगी, किन्तु चक्कर खाकर वह कुरसी पर गिर पड़ी। उसकी आखें झिपने लगीं।

उसकी हालत देखकर रमणीमोहन ने कहा—"अब रहने दो। सचमुच इसकी हालत खराब हो रही है।"

लैम्बर्ट ने उसका गिलास उठा लिया और मिलर के मुँह से लगाना चाहा, परन्तु रमणीमोहन ने उसका हाथ पकड़ लिया। लैम्बर्ट ने आंखों से हाथ छोड़ने का संकेत किया, और मिलर को पिलाने लगे। वह इस समय अर्द्ध अचेत थी। उसने लैम्बर्ट का हाथ हटाना चाहा, परन्तु वह असमर्थ थी, उसमें विरोध-शक्ति अवशेष नहीं थी। वह ग़टग़ट कर पीने लगी। लैम्बर्ट अपने कौशल पर मुस्कराने लगा। उधर मिस मिलर अचेत होकर कुरसी पर उढ़क गई।

रमणीमोहन ने किञ्चित घबड़ाहट के साथ कहा—"यह क्या किया लैम्बर्ट। अब इस मांस के लोयड़े को रिट्ज होटेल कैसे पहुँचाया जायगा ?"

"इतनी तकलीफ उठाने की कौन ज़रूरत ? इसी कुरसी पर पड़ी रहेगी।"

"मैं अपने कमरे में कैसे इसे रख सकता हूँ।"

"जैसे अभी तक थी।"

"किन्तु वह होश-हवास में थी।"

"अब बेहोश सही। देखिए, इसको होश में लाने का प्रयत्न करता हूँ।"

वह उसे हिलाने–झुलाने लगा। मिलर की संज्ञा विलुप्त हो चुकी थी। जब उसे बिल्कुल अचेत होने का विश्वास हो गया, तब वह उसके वक्षस्थल के पास अन्तरपट में हाथ डालने लगा। उसकी इस बेहूदा हरकत पर रमणीमोहन ने सक्रोध कहा—"यह बहुत अनुचित है लैम्बर्ट। किसी अचेत का अपमान करना अथवा अनुचित लाभ उठाना भद्रता नहीं है ?"

"भद्र व्यक्तियों के साथ भद्रता बरती जाती है, गुप्तचरों के साथ नहीं।"

"यह तुम क्या कह रहे हो ? मिस्टर गुप्तचर है ?"

"हाँ, यदि अभी प्रमाण मिल गया, तो अभी दूँगा, नहीं तो किसी अन्य समय।"

रमणीमोहन ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा—"मान लो, कि यह गुप्तचर है, परन्तु नारी है, असहाय है, उसकी इज्जत न लो।"

लैम्बर्ट ने उसके वक्षस्थल से एक कागज निकालते हुए कहा—"प्रायः जासूस नारियाँ गुप्त वस्तुएँ अपने वक्षस्थल में रखती हैं। देखिए, एक कपड़ा मिल ही गया। अब देखूँ इसमें क्या गुप्त भेद बन्द है।

रमणीमोहन अवाक होकर लैम्बर्ट और उसके हाथ के कपड़े को देखने लगे। लैम्बर्ट ने उसकी तहें खोलते हुए कहा—"यह किसी स्थान का नकशा मालूम होता है।"

रमणीमोहन उसके समीप आकर देखने लगे, किन्तु उनकी समझ में नहीं आया। लैम्बर्ट ने कुछ देर ध्यानपूर्वक देखने के बाद कहा—"मिस्टर मोहन, आप जानते हैं कि यह नकशा किस स्थान का है ?"

उन्होंने भी ध्यान से देखने के बाद उत्तर दिया—"यह सब मेरी समझ से बाहर है।"

"इतना आप देख सकते हैं कि जिस कपड़े पर यह नकशा खींचा गया है वह बहुत ही उच्च कोटि का टैरीलीन कपड़ा है।"

"हाँ, बहुत बढ़िया किस्म का टैरीलीन है।"

"इसमें कई रेखायें दिखाई गई हैं, और महीन अक्षरों में विचित्र लिपि में जगह-जगह कुछ लिखा है।"

"क्या इस लिपि से आप परिचित हैं ?"

"परिचित नहीं हूँ, ;परन्तु घंटे-दो घंटे के परिश्रम से अर्थ निकाल सकूंगा।"

"क्या किसी भी सांकेतिक भाषा का हल निकालना मालूम है।"

"अभ्यास और स्थितियों का ज्ञान होने से संकेतों का अर्थ निकाला जा सकता है।"

"आपको अभ्यास है ?"

"मैंने वाशिंगटन में इस सम्बन्ध में ज्ञान और अभ्यास प्राप्त किया है।"

"क्षमा करना, शायद आप भी किसी न किसी तरह अमरीकी जासूस विभाग से सम्बद्ध हैं ?"

"पहले था, किन्तु अब नहीं हूँ। विश्व भ्रमण के लिए यह एक आवश्यक ज्ञान है, और इसी उद्देश्य से मैंने इसे सीखा था।"

"क्या मिस मिलर पर पहले कभी सन्देह हुआ था ?"

"कलकत्ता में साथ रहते हुए सन्देह अवश्य हुआ था। वहाँ के चीनियों से इसका बहुत घोलमेल था।"

"इतना सन्देह के लिए पर्याप्त नहीं है।"

"पर्याप्त अवश्य नहीं है, किन्तु किसी राष्ट्रीय अमरीकन का इतना अधिक घाल-पेल चीनियों से नहीं हो सकता।"

"क्यों, कोमिटाँग वाले भी तो चीनी हैं।"

"बड़ी आसानी से मालूम किया जा सकता है कि कौन चीनी राष्ट्रीय है और कौन कम्युनिस्ट ?"

"हाँ। भारत के बसे कई चीनी परिवार लाल चीन के समर्थक हैं।"

"यहाँ दिल्ली में भी होंगे ?"

"कहाँ नहीं हैं, यह तो बताइए। चीनी नाना प्रकार के व्यवसायी बने हुए सर्वत्र छाए हुए हैं। जबसे हिन्दी-चीनी भाई-भाई का आन्दोलन चला, तबसे कई हज़ार चीनी अनेक वेषों में आकर भारत में बस गए हैं। और कई तिब्बती शरणार्थियों के वेष में आ गए हैं।"

"और वे सब कम्युनिस्ट चीन के जासूस हैं ?"

"अधिकांश, निन्यानबे फीसदी !"

"उफ़ ?"

"इतने से ही उफ न कीजिए। केवल चीनी ही गुप्तचरी नहीं करते, दूसरे भी हैं।"

"कौन ?"

"आपके देश के निवासी भी यही काम करते है।"

"वे कम्यूनिस्ट होंगे।"

"कम्यूनिस्ट भी है और दूसरे भी, जो पैसे को देश से अधिक प्यार करते हैं।"

"अर्थात् वे गद्दार है।"

"आप उन्हें किसी नाम से पुकार सकते है।"

"कितनी संख्या होगी उनकी।"

"यह मैं नहीं बता सकता, परन्तु बहुत है।"

"आप हमारी सरकार को इसकी सूचना क्यों नहीं देते।"

"यह मेरी कर्त्तव्य-परिधि के बाहर है।"

"परन्तु भारत तो अमेरिका का मित्र है।"

"किन्तु यह कर्त्तव्य है आपकी सरकार और उसके गुप्तचर विभाग का। दूसरे देश वाले यदि ऐसे भेद बतावें, तो उनके कथन पर विश्वास कौन करेगा?"

"पहले नहीं, किन्तु अब विश्वास किया जायगा।"

"आप क्यों नहीं अपनी सरकार को सूचित करते।"

"मेरे पास प्रमाण नहीं है।"

"एक अखंड प्रमाण अभी प्राप्त हुआ है; दूसरे भी मिल जायगे।"

"किन्तु मिलर अमरीकन है।"

"अमेरिकन नहीं चीनी है।"

"उसकी बोली, शक्ल-सूरत सभी अमेरिकनों जैसी है।"

"इसका पिता अमरीकन था जो कोमिटांग चीन की सेना की परामर्श-दात्री समिति का सदस्य था। उसने चीनी महिला से विवाह कर लिया।"

"फिर यह कम्यूनिस्ट कैसे हो गई ?"

"राष्ट्रीय चीन का जब पतन हुआ, तब इसके माता-पिता लालचीन के अधिकारियों द्वारा मारे गये। इस अनाथ लड़की को शिक्षा-दीक्षा अपनी पद्धति से दी।

"उस समय इसकी क्या आयु होगी।"

"होगी बारह तेरह साल की। उन्होंने देखा कि यह गुप्तचरी के लिए उपयुक्त है, तब उसकी शिक्षा उसी रीति से दी गई। कालान्तर में वह एक सुदक्ष गुप्तचर बन गई।"

"बड़ी भयानक है।"

"अपने को अमेरिकन बताकर अन्य देशों के गुप्तचरों की आखों में धूल डालती रही। इसने कई अमेरिकनों को धोखा दिया है।"

"किन्तु आपने भी कभी धोखा खाया ?"

'सन्देह कई बार हुआ, परन्तु प्रमाण कभी नहीं मिला।"

"भारत में क्या अन्य राष्ट्रों के गुप्तचर हैं ?"

"किस देश में किस देश के गुप्तचर नहीं हैं। आजकल बिना सुदृढ़ गुप्तचर विभाग के कोई देश अपनी रक्षा नहीं कर सकता। सुरक्षा का यह एक विशेष अंग है।"

"यहाँ अमेरिकन गुप्तचर भी होंगे ?"

"अमरीकन ही क्यों, सभी देशों के गुप्तचर यहाँ काम कर रहे हैं।"

"उन्हें कैसे पहचाना जा सकता है ?"

"उनके पहचानने की दृष्टि कुछ और है। सब नहीं पहचान सकते। हाँ, गुप्तचर ही गुप्तचर को पहचान सकता है।"

"भारतीय गुप्तचर बिभाग अवश्य पहचानता होगा।"

"यह मैं नहीं बता सकता, क्योंकि इस कला का विकास भारत में कहाँ तक हुआ है, नहीं जानता।"

"जानने का प्रयत्न कीजिए।"

"यह मेरे कर्त्तव्य-सीमा के बाहर है।"

"आप तो हमेशा यह कहकर टाल देते हैं कि यह मेरे कर्त्तव्य-सीमा के बाहर है।"

"भला बताइये, आपके देश की राजनीति में मैं कैसे दखल दे सकता हूँ।"

"अब आप इस नकशे का भेद कब बतावेंगे ?"

"कल प्रातःकाल दस बजे तक।"

"और इन श्रीमती जी का क्या किया जावे ?"

"यहीं सोफा पर उठाकर डाल दीजिए ।"

"किन्तु इसमें मेरी बदनामी होगी ।"

"यहाँ कौन पूछता है ? कौन समझेगा कि इसने रात्रि यहाँ बिताई । अगर कोई जान ले, या शक करे तो हमारी कोई हानि नहीं होगी ।"

"यदि इसे होश आ गया तो.....।"

"तो क्या, परिस्थितियों के अनुसार जो मुनासिब हो कीजिएगा ।"

"मैं बड़े संकट में फँस गया हूँ ।"

"आप घबड़ाइये नहीं, सुबह तक इसकी बेहोशी दूर नहीं होगी ।"

"आप मेरे कमरे में सो जाइये, और मैं आपके कमरे में ।"

"अजी वाह, आप मर्द होकर औरत से डरते हैं ।"

"डरता हूँ, अपनी इज्जत को ।"

"यह विचार दूर कीजिए । आराम से सोइए । यदि कोई समस्या आ जाय तो मुझे बुला लीजिएगा । मैं जरा खुटके से जाग जाता हूँ ।"

नमस्कार कहकर लैम्बर्ट अपने कमरे में चला गया । रमणीमोहन कुछ देर बैठे इस गम्भीर समस्या पर विचार करते रहे । जब नींद का आक्रमण किसी प्रकार दूर न कर सके, तब वहीं लुढ़क कर सो गए ।

१५

प्रातःकाल की श्वेत रेखाएँ रमणीमोहन के कमरे में प्रवेश कर मिस मिलर की संज्ञा जाग्रत करने के लिए उसे गुदगुदाने लगी । उसके नेत्र सहसा खुल गए, और वह अपने चारों ओर देख कर बीती घटनाओं को स्मरण करने लगी । उसने देखा कि वह रमणीमोहन के कमरे में एक कुरसी पर पड़ी है, और दूर सोफा पर वह स्वयं सोए हुए हैं । हकबका कर वह उठ खड़ी हुई, और अंगड़ाइयों द्वारा अपने शैथिल्य को दूर करने का प्रयत्न करने लगी । उसके नेत्र अलसाये थे, और पुनः सो जाने के लिए उसका मन मचलने लगा । आलस्य तथा तन्द्रा दूर करने के लिये वह बाथरूम चली गई ।

उसके जाने के पश्चात् सहसा रमणीमोहन की नींद उचटी, और वह हड़बड़ा कर उठ बैठे। सामने की कुरसी पर मिस मिलर को न देख आकुल दृष्टि से अपने कमरे की सिटकनी देखने लगे। उसको चढ़ी पाकर वह कुछ आश्वस्त हुए। उन्होंने अनुमान लगाया कि वह बाथरूम गई है। सिगरेट सुलगाते हुए दरवाजा खोल कर बरामदे में आये, और लैम्बर्ट के दरवाजे पर दस्तक देने लगे। लैम्बर्ट ने भीतर से पूछा—कौन ?

"मैं रमणीमोहन हूँ। दरवाजा जल्दी खोलो।"

दरवाजा खोलकर लैम्बर्ट ने पूछा—"क्या बात है ? इतने घबड़ाये हुए क्यों ?"

"मेरे कमरे में आइए, वह जागकर बाथरूम गई है।"

'ठीक है, रात में कोई दुर्घटना तो नहीं घटी।"

"नहीं, आपके जाने के बाद कुछ देर जागता रहा, परन्तु कब अचानक नींद ने धर दबाया, नहीं जानता।"

"उसने आपको जगाया नहीं ?"

"नहीं।"

"आप चलिए, मैं एक मिनट में आता हूँ। कागज-पत्र जरा छिपा दूं।"

"नकशे का हल निकल आया ?"

"हाँ ! वह बिलकुल स्पष्ट था। कमरे में आकर ध्यान दौड़ाते ही समझ आ गया।"

"क्या ?"

"अभी नहीं ?"

"बाथरूम में उसे मालूम हो जायगा कि उसका नकशा चोरी गया है। उसका सन्देह मेरे ऊपर होगा।"

"सन्देह आप पर नहीं, मेरे ऊपर होगा।"

"क्यों ? चुराया तो मेरे कमरे में गया है।"

"हाँ, किन्तु वह वस्तुतः अपराधी आपको नहीं, मुझको समझेगी।"

"क्यों ?"

"दुर्भाग्य कि वह मुझे भी उसी सन्देह दृष्टि से देखती है, जैसे मैं उसे देखता था।"

"आपको कैसे मालूम हुआ?"

"वाह, आप तो बच्चों जैसी बात करते हैं। गुप्तचर प्रायः सबको सन्देह की दृष्टि से देखता है।"

"भई, मैं इस पेशे की गुत्थियाँ नहीं समझता।"

"अब समझने लगेंगे! भारत की स्थिति देखते हुए जरूरी है कि उन्हें पहचानने की कला ज्ञात हो जाए, जिससे उनके षड्यन्त्रों का भण्डाफोड़ हो सके, और राष्ट्र सुरक्षित रहे।"

'हाँ, परन्तु··!"

"यह परन्तु ही सबसे रोड़ा है।"

"मैं समझा नहीं।"

"आप घबड़ाए हुए हैं इससे समझते नहीं।"।

'नहीं, ऐसा कुछ घबड़ाया हुआ भी नहीं हूँ।"

"आप नहीं जानते, किन्तु मैं जानता हूँ। अब आप अपने कमरे में में जाइए। मैं थोड़ी देर में आता हूँ।"

"बहुत जल्द आना।" कह कर वह लौट आए।

अभी तक मिस मिलर बाथ रूम से नहीं निकली थी। वह कुरसी पर बैठ कर पिछली घटनाओं पर विचार करने लगे।

जब मिस मिलर बाथ रूम से बाहर निकली, उसके चेहरे पर शिकन नहीं थी, किन्तु आँखें सजग थी। वह बिना कुछ बोले सामने की कुर्सी पर बैठ रमणीमोहन को निहारने लगी।

कुछ देर तक उसके बोलने की प्रतीक्षा कर वह बोले :—"कैसी तबियत है मिस।"

"मिस को जबरिया पिलाकर बेहोश करदो, फिर लूट लो।"

"लूट लो, यह क्या कह रही हैं आप? यह अपवाद ठीक नहीं। बताइये, आपकी कौन वस्तु लूटी गई है।"

"चोरी की चोरी और सीना जोरी इसको कहते हैं।"

इसी समय लैम्बर्ट ने मुस्कराते हुए प्रवेश किया, और पूछा—"वाह

आप जाग गई, शुक्र है।"

मिस मिलर उत्तर न देकर कुपित दृष्टि से देखने लगी।

"माजरा क्या है ? आपकी तबियत ठीक है ?"

"आप हमारे ऊपर चोरी का अपवाद लगा रही हैं।" रमणीमोहन ने कहा।

"क्या मतलब ?"

"आप मदिरा पिला कर बेहोश करने और लूट लेने की तोहमत लगा रही हैं।"

"क्या लूट लिया हम लोगों ने, यह तो बताइए ?"

"जितना उन्होंने कहा, उतना बता दिया। बाकी आप पूछिये ?"

"क्यों मिस, हम लोगों ने क्या लूट लिया ?"

"मिस मिलर ने कोई उत्तर न दिया। उसी तरह कुपित बैठी रही।

"जब तक आप वस्तु का नाम नहीं बतावेंगी, तब तक हम कैसे जाने कि यहां आपकी कौन वस्तु चुराई गई है ?"

मिस मिलर फिर भी न बोली।

"अब समझ में आया, आपका होश हम लोगों ने लूट लिया था। मोहन, इनका अभियोग सत्य है। बेशक हम लोगों ने ह्विस्की पिलाने का बहुत इसरार किया था।"

"यदि पिलाना भी अपराध है, तो आगे किसी से अनुरोध नहीं करूंगा।"

मिस मिलर ने सक्रोध कहा –"देखो, लैम्बर्ट मैं सब समझती हूँ। तुम्हारा कोई भेद छिपा नहीं है।"

"लैम्बर्ट हँसने लगा। फिर कहा––"भेद खुलने से वह डरे, जिसका कोई भेद हो। आप मेरे सब भेद जानती हैं, यह सन्तोष की बात है। यह बताइये कि आपकी कौन वस्तु खोई है ?"

"मैं क्या बताऊँ, तुम सब जानते हो !",

"आपकी इज्जत बरकरार है। हममें से किसी ने आपकी बेहोशी से

नाजायज फायदा नहीं उठाया।"

"मैं कब कहती हूँ ?"

"फिर आप अपना 'पर्स' देख लीजिए।"

"नहीं, मेरा द्रव्य चोरी नहीं गया, और न जा सकता है। मोहन राजा इतने नीच नहीं है।"

"लीजिए मिस्टर मोहन, आप तो मुफ्त दोष हुए। चोरी का इलजाम अब मेरे ऊपर है। बताइए मिस, मैंने आपकी कौन चीज चुराई है ?"

"क्या तुम नहीं जानते ?"

"यह खूब, वस्तु आपकी चोरी जाय, और बताऊँ मैं ? ऐसी रिपोर्ट किसी पुलिस थाने में दर्ज नहीं हो सकती।"

"पुलिस में रिपोर्ट वह करता है, जो शत्रु के मुकाबले में कमजोर हो। यह याद रखिए, मैं सिहनी से भी अधिक खूंखार हूँ।" यह कहती वह उठ खड़ी हुई, और जब तक कोई उसे रोके, वह कमरे के बाहर चली गई।

रमणीमोहन ने आवाज लगाई—"नाश्ता तो कर लीजिए।"

लैम्बर्ट ने हँसते हुए कहा—"अरे जाने भी दो कमबख्त को। इसकी नापाक सूरत फिर देखने को न मिले।"

"धमकी तो बहुत कड़ी दे गई है।"

"बड़ी खतरनाक औरत है। इसने भारत का बहुत अहित किया है ?"

"क्या ?"

"यह चीनी जासूस है। इसने यहाँ के कई भेद चीनियों को बेचे हैं।"

"उनकी वेतनभोगी नौकर नहीं है।"

"कुछ वेतन और कुछ उजरत पर काम करती है।"

"उजरत पर कैसे ?"

"इस तरह कि जब किसी अन्य देश के जासूस को कोई भेद मिल जाता है, तब वह उसे उस देश को बेच देता है, जिसको उसकी जरूरत होती है।"

"क्या इसकी भी बाजार है ?"

"यह बाज़ार किसी स्थान तक सीमित नहीं है। यों समझिये कि चीन इस समय भारत पर आक्रमण कर रहा है, अतएव इसके गुप्त भेदों को चीन हमेशा खरीदने के लिए तैयार रहेगा। चाहे वे किसी दूसरे देश के जासूस द्वारा प्राप्त हों।"

"चीन के अधिकारियों तक उसकी पहुँच कैसे होगी ?"

"उसी देश के गुप्तचरों द्वारा, जो जाने-पहचाने रहते हैं, और भेद खरीदने वाली एजन्सियाँ भी कई मुख्य नगरों में स्थापित हैं।"

"ऐसी एजन्सी शायद दिल्ली में होगी ?"

"दिल्ली उसका मुख्य केन्द्र है, किन्तु कलिम्पोंग, कलकत्ता, तथा बम्बई में इसकी शाखाएं हैं। अधिकतर इनका सम्बन्ध वाणिज्य दूतावासों से होता है।"

"ये वाणिज्य दूतावास देश के लिए खतरा पैदा करते हैं।"

"लड़ाई छिड़ जाने पर बन्द कर दिए जाते हैं।"

"यह बताइए कि वह नक्शा किस स्थान का है।"

"पूरे उत्तर भारत का, लद्दाख से नेफा तक के क्षेत्र का है।"

"किन्तु इस सीमा से चीनी बखूबी वाकिफ़ हैं।"

"इसी लिए तो चीन के गुप्तचर विभाग द्वारा प्रकाशित हुआ है। तैयार किया गया है आपके देश के पंच मांगियों की सुविधा के लिए।"

"क्या इस देश में पंचमांगी भी हैं ?"

"आप अपने देश की वास्तविक स्थिति से शायद बखूबी वाकिफ़ नहीं हैं ?"

"इस दिशा में मैंने कभी नहीं सोचा।"

"सोचने की जरूरत भी नहीं हुई, क्योंकि भारत और चीन में भाई-चारा था।" लैम्बर्ट हँसने लगा।

"सत्य ही भारत को इसी अन्ध विश्वास के लिए महँगी कीमत चुकाना पड़ रहा है ?"

"जितने समय तक इस सम्बन्ध की ओट में उन्हें अपनी तैयारी करनी

थी, उतने समय तक दोस्ती की नकाब मुंह पर डाले रहे, और जहाँ वह पूरी हो गई उन्होंने फाड़कर फेंक दिया।"

"हुआ तो कुछ ऐसा ही है।"

"कूटनीति यही सिखाती है। आजकल की राजनीति धोखे-धड़ी और छल-कपट की है। जो राष्ट्र जितना चालाक होगा, उतना ही वह सफल होगा, बिल्ली अपने नाखून उस वक्त तक छिपाये रहती है, जब तक उसे आक्रमण नहीं करना होता।"

"यह विश्वासघात है ?"

"आपके लिए यह विश्वासघात है, परन्तु उनकी कूटनीतिक सफलता है। आप चूंकि छले गये हैं, इसलिये विश्वासघात कहते हैं, और वे सफल हुए हैं, इसलिए उसे कूटनीति कहते हैं।"

"तब तो छोटे-छोटे निर्बल देशों की खैर नहीं।"

"छोटे निर्बल देश किसी बड़े शक्तिशाली देश से अपने को सम्बद्ध कर लेते हैं। संसार को कम्यूनिज्म से भय है, इसलिए पश्चिमी राष्ट्रों ने कई संगठन एशिया के छोटे देशों की सुरक्षा के लिए स्थापित किए हैं।"

"परन्तु इससे वैयक्तिक स्वतन्त्रता समाप्त हो जाती है।"

"अन्य क्षेत्रों में नहीं, किन्तु वैदेशिक नीति अवश्य उनकी नीति से बँधी होती है।"

"तब स्वतन्त्रता कहाँ रही, वैदेशिक नीति ही तो देश की मुख्य नीति है, वह उसके स्वतन्त्र अस्तित्व का परिचायक है।"

"यह बंधन केवल समान शत्रु से युद्ध तक सीमित है, शेष अन्य बातों में वह बिल्कुल स्वतन्त्र रहता है।"

"बंधन छोटा या बड़ा, किसी एक या अधिक बातों में, वह बंधन ही रहता है।"

"परन्तु समान नीति में यह खटकने वाला नहीं है, बल्कि किसी हद तक सहायक है। इसे केवल बौद्धिक भ्रम ही कहना चाहिए।"

"मेरे दिल में यह बात नहीं पैठती।"

"तभी तो चीन को आक्रमण करने का साहस हुआ कोरिया, वियेतनाम, थाईलैन्ड आदि देशों पर चीन आक्रमण करने का साहस नहीं कर सकता ।"

"परन्तु वहाँ युद्ध हुए हैं ।"

"किन्तु परिणाम चीन के हित में नहीं हुए । उसकी सेनाएँ आगे नहीं बढ़ सकीं । इन संगठनों का अर्थ केवल सुरक्षा है, आक्रमण नहीं । यदि कोई देश इस संगठन में शामिल नहीं होता, तब उसको अपने पैरों पर खड़े होना चाहिए । उसे भी अन्य बड़े राष्ट्रों के समान आधुनिक शस्त्रास्त्रों से लैस, और यथेष्ट सैनिक बल बनाना चाहिए ।"

"हाँ, यह रास्ता उचित है ।"

"यह उन्हीं राष्ट्रों के लिए संभव है, जिनमें औद्योगिक विकास समुचित रूप से हुआ है । आजकल आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों का उत्पादन औद्योगिक विकास पर निर्भर है, और पूंजी भी यथेष्ट होना चाहिए ।"

"मैं इससे सहमत हूँ ।"

"परन्तु सभी निर्बल राष्ट्रों के लिए यह संभव नहीं है । उनके लिए दो ही रास्ते हैं, एक किसी शक्तिशाली संगठन में सम्मिलित होना, दूसरा पड़ोसी राष्ट्रों में विलय हो जाना ।"

"मित्र राष्ट्र क्या किसी के द्वारा आक्रमण होने पर सहायता नहीं करेंगे ?"

"कर सकते हैं, परन्तु इसके लिए वे बाध्य नहीं हैं । मुख्यतः उनको अपने धन जन-बल पर निर्भर रहना पड़ेगा । इसके अतिरिक्त परिस्थितियों वश वे सहायता भी करते हैं, तो उतनी ही जितनी कोई किसी मित्र की सहायता उसके आपत्काल में करने की क्षमता रखता है ।"

"वह बात आपने छोड़ दी कि हमारी भारतीय सीमा का नक्शा किस प्रकार पंचमांगियों के लिए सहायक होगा ।"

"चीन का इरादा अब समग्र सीमा पर आक्रमण करने का मालूम होता है । हिमाचल प्रदेश, दिल्ली और उत्तर प्रदेश पर भी वे आक्रमण करने की

योजना बना रहे हैं। इस नकशे में उन दर्रों को बहुत स्पष्ट दिखाया गया है जो तिब्बत और इन प्रदेशों से सम्बन्ध बनाते हैं। शिपकी, मुलम सुभदा, नीलांग, बाराहोती, सांगचमल्ला, लपथाल के दर्रे, उनके धरातल आदि दिखाए गए हैं, और बाण-चिन्हों द्वारा बताया गया है कि वे किस दर्रे से किस प्रदेश पर आक्रमण करेंगे। उसी समय अनुकूल परिस्थितियों में पंचमांगी अपनी विविध कार्यवाही से आन्तरिक शक्ति को छिन्न-भिन्न करें।"

"यह बड़े काम की चीज हाथ आ गई है।"

"तभी मिलर इतनी क्रुद्ध हुई है।"

"नकशा यथास्थान न पहुँचाने से शायद उसे दंडित भी किया जाय।"

"पिस्तौल की गोली या छुरे का शिकार उसे होना पड़ेगा।"

"तब तो यह बुरा हुआ।"

"शत्रु पर दया, ममता केवल आप कर सकते हैं, हम लोग नहीं! सांप का फ़न कुचलने में ही अपनी सुरक्षा है।"

"अब आप उस नकशे का क्या करेंगे।"

"अभी कोई निर्णय नहीं ले सकता। विचार करूँगा ?"

इसी समय होटेल के कर्मचारी ने प्रात-कलेवा लिए हुए प्रवेश किया। रमणीमोहन ने लैम्बर्ट को खाने के लिये आमंत्रित किया। वे दोनों बैठकर खाने लगे।

१६

मिसेज़ रिपुदमनसिंह श्रंगार कक्ष में अपना श्रंगार कर रही थी। मेज पर अनेक देशी तथा विलायती प्रसाधन करीने से सजाये रखे थे। सामने मानवाकार दर्पण में वह अपनी छवि बार-बार निरखती, और प्रत्येक वार कुछ न कुछ सुधार कर उसे पुनः देखती। चतुर्थ प्रहर के चार बज चुके थे। वह रमणीमोहन के आगमन की प्रतीक्षा में अपना समय काट रही थी। इसी समय द्वार खोल मिनचू और लूँग ने प्रवेश किया। दर्पण में उनकी छाया देखकर मिसेज सिंह बोली:—

"लूंग आज बेवक्त कैसे आईं ?"

"मैडम, मैं मिनचू से मिलने आई थी। हम लोग कल-परसों में फ्रन्ट पर जा रहे हैं।"

"आओ, यहीं बैठो। मिनचू जरा वह कुरसी इधर सरका दे।"

"मैडम; मैं आप घसीटे लेती हूँ।"

वस्तुतः मिसेज रिपुदमनसिंह अपने गुट में 'मैडम' नाम से सम्बोधित की जाती थी। वह उत्तरी भारत में चीनी गुप्तचरों की संचालिका थी। लूंग के बैठ जाने पर वह बोली—"अभी तुम्हारे जाने की बात नहीं थी।"

"कल तक कोई बात नहीं थी, आदेश आज प्राप्त हुआ है।

"मेजर कहाँ है ?"

"वह फौजी दोस्तों के साथ ओखला गए हैं।"

"क्यों ?"

"मछली का शिकार करने, और सैर-सपाटे के लिए।"

"मालूम होता है कि इंडिया इस बार कड़ा मुकाबला करेगा।"

"आसार कुछ ऐसे ही नजर आ रहे हैं। दिल्ली और पंजाब की सभी पलटनें भेजी जा रही हैं।"

"तुमने क्या अभी तक उनकी सूची मेजर से पूछकर नहीं बनाई ?"

"अभी पूरी खबर कहाँ मालूम कर सकी हूँ।"

"मेजर से पूछा नहीं ?"

"उन्हें खुद नहीं मालूम। इतना ही बताया कि देश के कोने-कोने से जवान बुलाये गए हैं।"

"मालूम होता है कि तुम ठीक काम नहीं कर रही हो।"

"वाह, मैडम आप ही जब यह कहेंगी, तब दूसरे अधिकारी जो दूर बैठे हैं, कहेंगे ही।"

"मैं कहूँगी, डाटूँ-फटकारूँगी भी किन्तु ऊपर के अधिकारियों से तुम लोगों के कार्य की सराहना ही करती हूँ।"

"आपका ही भरोसा है, नहीं तो ऊपर के अधिकारी जो हत्यारे हैं।"

मैडम दाँतों तले जीभ दबाती हुई बोली—"चुप-चुप ऐसे शब्द मुंह के बाहर नहीं निकाले जाते। जानती हो दीवालों के भी कान होते हैं। मैं स्वयं नहीं जानती कि मेरे ऊपर कितने गुप्तचरों की आँखें हैं।"

"वे दूसरे देशों के गुप्तचर होंगे।"

"दूसरे देशों के गुप्तचरों को हमसे क्या प्रयोजन ? हमारे चीनी गुप्तचर ही हमारी कारगुज़ारी की थाह लेते रहते हैं।"

"जब हम लोग यहां काम कर रहे हैं, तब दूसरों को क्यों भेजते हैं।"

"निगरानी के लिए गुप्तचर के ऊपर गुप्तचर लगाए जाते हैं।"

"उन निगरानी करने वाले गुप्तचरों के ऊपर भी कोई अन्य गुप्तचर निगरानी करते होंगे। यह सिलसिला कभी खत्म नहीं हो सकता।"

"लेकिन इन प्रपंचों से क्या मतलब ? इतना मुझे बख़ूबी मालूम है कि हमारी रिपोंटों की जाँच वक्तन-फवक्तन मुआयना होता रहता है।"

"क्या कोई मुआयने के लिए आ रहा है ?"

"कुछ दिनों के लिए मैंने नम्बर एक से बात की थी, तब मालूम हुआ कि कोई आ रहा हैं।"

"मिनचू की निस्बत आपने क्या तय किया ?

"बह बेवकूफ रमणीमोहन इस पर लट्टू है। शादी कर देना चाहती हूँ, जैसी तुम्हारी की है।"

"भला वह कौन फौजी जवान हैं, और उससे क्या भेद मिलेंगे ?"

"हमारा उद्देश्य सिर्फ फौजी भेदों के जानने तक महसूद नहीं है, पंचमाँगी बनाना भी तो है।"

"इसको पंचमांगी बनाने से लाभ ? तोड़-फोड़ की कार्रवाई कर नहीं सकेगा।"

"पंचमांगियों को भी कई शाखाओं में विभक्त किया है, हमारे अधि-कारियों ने। कुछ तोड़-फोड़ करेंगे, कुछ जनता का हौसला अफवाह फैला कर पस्त करेंगे, और कुछ हमारा यहाँ शासन जमाने में सहायता करेंगे।"

"शायद इनसे तीसरे किस्म का काम लिया जावेगा।"

"बेशक ! रमणीमोहन स्वयं उद्योगपति है, और अनेक चोटी के उद्योग-पतियों से उसकी घनिष्ठता है। जब वह हमारे शासन को स्वीकार कर उसका पृष्ठ-पोषक बनेगा, तब इसका प्रभाव दूसरे व्यापारियों, व्यवसाइयों, उद्योगपतियों पर पड़ेगा, और बहुत आसानी से हमारी पूर्ण विजय हो जायगी।"

"किन्तु यह भी संभव है कि वह इसके प्रतिकूल करे।"

"उसको अपने अनुकूल बनाना मिनचू का काम है। पुरुषों में खुद की बुद्धि नहीं होती, वे स्त्रियों की बुद्धि-सूझ-बूझ से परिचालित होते हैं। दुनिया में सबकी बात वह टाल देगा, परन्तु अपनी प्रेयसी का तिरस्कार नहीं कर सकता।"

"आप सच कहती हैं। मेजर को मैं जैसा नचाती हूँ, वैसा वह नाचता है।"

"उतना ही पानी वह पीता होगा, जितना तुम पिलाती होगी।"

"हाँ।" और वह सफलता से हँसने लगी।

"इसी तरह मिनचू भी उस वेदुम के बन्दर को नचाएगी।"

"आपकी सूझ-बूझ और दूरन्देशी की जितनी तारीफ़ की जाय, थोड़ी है।"

"हमारा लक्ष्य है भारत को अधीन करना, उसके हरे-भरे खेतों पर कब्जा करना, उसकी कई पंचवर्षीय प्रगतियों से लाभ उठाना, और करोड़ों को मजदूर बनाकर अपने लाभ के लिए उद्योग-धन्धे चलवाना। हमारा शिकंजा ब्रिटिश शिकंजे से कहीं दृढ़ और फौलादी होगा।"

"तभी चीन की भुखमरी दूर होगी और चीन ऐश्वर्यशाली बनेगा।"

"यदि भारत की शक्ति चीन प्राप्त कर लेता है, तब वह अजेय बन जायगा। अमरीका, रूस, ब्रिटेन, फ्रान्स सबकी सम्मिलित शक्ति को पराजित करने की क्षमता आ जायगी। उसका साम्राज्य ससागरा पृथ्वी और आकाश पर होगा।"

"यह कल्पना बड़ी दूरगामी है।"

"कोरी कल्पना नहीं, हमारा योजनाबद्ध कार्यक्रम है।

"अच्छा !"

"हाँ, हमने छल-छद्म से, भाईचारे से तिब्बत बिना एक बूंद चीनी रक्त बहाये हस्तगत कर लिया। सैनिक बल की धमकी और कौशल से हम भारत पर अपना अधिकार जमावेंगे, और फिर बरमा इण्डोनेशिया, आस्ट्रेलिया, अमेरिका हमारे पैरों तले दिखाई देंगे।"

"तब तो चीन स्वर्ग बन जायगा।"

"वह तो बनेगा ही। सदियों से सोया हुआ चीन अब जागा है। हमने पुराने संस्कारों से मुक्ति पाई हैं। नवजागरण का जोशीला खून हमारी रग-रग में दौड़ रहा है। अब हम कुछ करके रहेंगे, कुछ करके दिखायेंगे और पीतांग जाति पुनः समग्र संसार में छा जायगी।"

"मैडम, ऐसा समय क्या सचमुच हमें देखने को मिलेगा ?"

"अवश्य, इसमें शताब्दियों की नहीं, कुछ दशाब्दियों की देर है। यह भी संभव है कि हम उसके पहले ही अपने लक्ष्य में सफल हो जायें।"

"कैसे ?"

"यदि हम रूस और अमेरिका को लड़वाने में सफल हो गए।"

"रूस में यदि स्टैलिन होता, तब शायद यह सम्भव भी होता, किन्तु आजकल वह शान्ति और सहअस्तित्व का नारा लगा रहा है।"

"रूस का ख्याल गलत है कि पूंजीवाद और साम्यवाद में सहअस्तित्व हो सकता है। थोड़े दिनों तक प्रतीक्षा करो। उसका यह भ्रम दूर हो जायगा।"

"अभी क्यूबा के प्रश्न पर तीसरा विश्व युद्ध छेड़ा जा सकता था, किन्तु रूस ने भय से अपना कदम पीछे हटा लिया।"

"इसी वजह से रूस तथा चीन में मनोमालिन्य हो गया है।"

"क्या कम्यूनिस्ट संसार भी दो शाखाओं में विभक्त हो जायगा ?"

"सम्भव है। किन्तु चीनी अधिकारी ऐसा होने नहीं देंगे ? यदि चीन का अधिकार इस बीच भारत पर हो गया, तब वह रूस की भी परवा नहीं करेगा।"

"किन्तु यह मामला अभी 'यदि' पर टँगा हुआ है।"

"यह 'यदि' थोड़े दिनों में दूर हो जायगा।"

"किन्तु भारत जी-जान से चीन के मुकाबले की तैयारी कर रहा है।"

"जो राष्ट्र गत बारह वर्षों से अपनी यौद्धिक योजनाएं बना कर प्रयास कर रहा है, उसका मुक़ाबला भारत क्या करेगा, जो आजाद होने के बाद अपनी काल्पनिक दुनिया में विचरण करता रहा हो।"

"किन्तु उसका वह स्वप्न भंग हो गया है।"

"अब भंग भी हुआ, तो क्या ?"

"मेजर कहता है कि भारत अब भी चीन को पराजित कर देगा।"

"वह बकता है। अब तो तुम फ्रन्ट पर जा ही रही हो। हिन्दुस्तानी और चीनी जवानों की बीरता सन्मुख आ जायेगी।"

"हाँ, किन्तु मुझे वहाँ तो भारतीय सेना को हरवाने की कोशिश करनी पड़ेगी।"

"बेशक, इसीलिए तुम्हारी नियुक्ति हुई है। मेजर से हिन्दुस्तानी सेनाओं की गतिविधि की सूचना प्राप्त करना और सीधे हेड क्वार्टर भेजना।"

"वह तो करूँगी ही, क्या आपको भी कोई सूचना देना होगा।"

"मेरे पास रिपोर्ट भेजने की कोई ज़रूरत नहीं है। तुम्हारी कारगुजारी का पता भारत के समाचारपत्र देंगे।"

"कैसे ? समाचार-पत्रों को मेरी कारगुजारी कैसे मालूम होगी ? यदि मेरी पोल खुल गई तो मैं मौत के घाट उतार दी जाऊँगी।"

"भारतीय सेना की यदि हार होगी, तो अवश्य इसमें तुम्हारी कार-गुजारी झलकेगी।"

"हाँ इस प्रकार ठीक है। मैं समझी थी कि यदि मेरी पोल खुल गई तो मौत के घाट उतार दी जाऊँगी।"

"जब तक मेजर तुम्हारे वश में रहेगा, तब तक तुम्हारी जान का जोखिम में जाने का कोई भय नहीं है।"

"चाहे जितना प्रभाव मेरा हो, मेजर की देशभक्ति अटल है।"

"क्या अभी तक मेजर के विचारों को पलट नहीं सकी ?"

"प्यार तो वह मुझे जी-जान से करता है, किन्तु उसकी तेवर फौरन

चढ़ जाती है, जब कभी मैं चीन की प्रशंसा, अथवा भारत की बुराई करती हूँ ।"

"तब तो तुम कामयाब नहीं हुई, और न उसके लक्षण ही देख पड़ते हैं ।"

"अभी तक मैं इस विषय में उसकी नाक में नकेल नहीं डाल सकी। भेद मैं सब निकाल लेती हूँ उसके पेट से और वह छिपाता भी नहीं, लेकिन इस मामले में पटरी नहीं बैठ पाती ।"

"इसके बिना सब काम अधूरा है ।"

"प्रयत्न कर रही हूँ । यदि सफलता नहीं मिली, तब कोई दूसरा उपाय रचूंगी ।"

"बेशक, ऐसे साँप को कुचल देना चाहिए ।"

"फ्रन्ट में कोई न कोई मौक़ा आवेगा ही ।"

"वहाँ तुम बिलकुल आजाद रहोगी । तुम्हें मेजर वहाँ ले जायगा ।"

"उसको मैं मजबूर कर दूंगी । जहाँ रूमाल में मिर्च का सफूफ लगा आँखें पोंछी, वहाँ वे आँसुओं के झरने बन जायँगे, और फिर वह किसी न किसी उपाय से ले जायगा ।"

"उसको ले जाने लिए मजबूर कर देना । फ्रन्ट पर ही तुम्हारी कार-गुज़ारी देखी जायगी ।"

"आप बेफिक्र रहिये, मैं फ्रन्ट पर जाऊँगी । इधर मिलर से भेंट नहीं हुई ?"

"दो दिनों से यहाँ भी नहीं आई । लैम्बर्ट के साथ उसकी सांठ-गांठ चल रही है ।"

"यह लैम्बर्ट कौन है ?"

"एक अमरीकन जासूस ।"

"वह यहाँ क्या कर रहा है ।"

"वही जाने ! मुझे कोई ख़बर नहीं ।"

"इन अमरीकनों के सबब, नाकों दम है ।

"हाँ, ये लोग बहुत उछल-कूद मचा रहे हैं । हमारे हर एक काम में

रोड़े अटकाते हैं।'

"वह नहीं चाहते कि भारत परास्त हो।"

"उनका यही लक्ष्य है। वह जानते हैं कि यदि चीन को भारत की शक्ति प्राप्त हो गई, तो वह शीघ्र उन्हें मसल देगा।"

"तब शायद भारत की सहायता के लिए वह दौड़ें।"

"हमें यह ख्याल नज़र-अन्दाज न करना चाहिए।"

"शायद लैम्बर्ट का भेद जानने के लिए ही मिलर उसके पीछे लगी है।"

"हाँ, वह कलकत्ते से उसका पीछा कर रही है।"

"क्या कलकत्ता में उसकी भेंट हुई थी ?"

"सन्देह तो उसे कलिम्पोंग में हुआ था। उसके बाद वह अचानक गायब हो गया। जब कलकत्ता में हम लोगों की बैठक हुई, तब वह आई थी। उसी दरमियान फिर लैम्बर्ट से भेंट हो गई। उसने उस पर डोरे डालने शुरू कर दिये। वह उसके चंगुल में फँसने वाला था कि वह फिर अचानक गायब हो गया। जिस दिन मिनचू का जुलूस निकला, उस दिन अचानक चांदनी चौक में भेंट हो गई। तबसे वह उसके पीछे पड़ी है।"

"मिलर जन्म से अमरीकन पिता की पुत्री है, नाम भी उसने वही कायम रखा, कहीं वह उधर ढुलक न जाय।"

"मैं उधर से ग़ाफिल नहीं हूँ। उसके पग-पग आचरण की खबर रखती हूँ।"

"वह दो–दिनों से आई नहीं, इसलिए सन्देह होता है।"

"मैं भी चिन्तित हूँ। आज किसी को उसके होटेल भेजूँगी।"

"अब शाम होने आई, क्या रात को भेजोगी ?"

"हाँ, यदि आज रात्रि में वह नहीं आई, तब अर्धरात्रि के पश्चात् किसी को भेजकर पता लगाऊँगी। सम्भव है, बीमार पड़ गई हो।"

"टेलीफोन से सूचना दे सकती थी।"

"जरूर, किन्तु सूचना मुझे कोई नहीं मिली।"

"तब क्या सन्देह नहीं होता ?"

"अभी कोई कारण नहीं मिला। तुम्हें केवल अपने काम का ध्यान रखना चाहिये। दूसरों की कारगुजारी देखने की जिम्मेदारी मेरी है।"

"मैंने केवल आपका ध्यान खींचा है। अच्छा अब जाऊँगी। शायद मेजर आ गया हो।"

"हाँ, अब तुम जाओ। रमणीमोहन के आने का समय हो गया है। मैं नहीं चाहती कि वह तुम्हें यहाँ देखे।"

"मैं पिछले दरवाजे से निकल जाऊँगी।"

"ठीक, मैं भी अपना प्रसाधन समाप्त करती हूँ।"

"मिनचू को आज आपने बहुत सजाया है।"

"मक्खी फाँसने के लिए मकड़ी को रेशमी जाला फैलाना पड़ता है। मूर्ख पुरुष जाति केवल वाह्य आडम्बर देखने की क्षमता रखती है।"

दोनों हँसने लगी।

१७

रमणीमोहन अवाक होकर मिनचू अथवा कला का कलात्मक शृंगार देखने लगे। लज्जा से अवगुंठित होने का उसने वह भाव प्रदर्शित किया, जिसे उच्चकोटि की अभिनेत्रियाँ ही दिखाने में समर्थ होती है। उन्होंने पूछा—"आज किसको पराजित करने की तैयारी की गई है?" मिनचू ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह और सिकुड़ गई।

रमणीमोहन उसे सोफ़ा पर बैठने का संकेत करते हुए बोले—"इस शीशमहल में तुम ही तुम छाई हुई हो। जिधर देखता हूँ, उधर तुम्हारी ही छबि निरखने को मिलती है।"

"और मुझे आपकी।"

"शुक्र है, तुम बोली तो।"

"जन्म से गूंगी नहीं हूँ, किन्तु आपके सामने सचमुच गूंगी हो जाती हूँ।"

"तब मुझे नहीं आना चाहिए।"

"उस वक्त मेरी आँखों से झरने बहने लगेंगे। न मालूम आपने कौन सा जादू कर दिया है कि बिना आपको देखे, आपकी बात सुने, दिल काबू में नहीं रहता।"

"तुम भी बातें बनाना अन्य लोगों की भाँति सीख गई हो।"

"आपकी अनुपस्थिति में मेरा क्या हाल होता है, कैसे बताऊँ? कहते कहते उसकी आँखें सजल होने लगीं।"

"यह क्या? तुम रोने लगीं?"

"न–मालूम कैसी आग आपने मेरे दिल में लगा दी है कि वह बुझाये नहीं बुझती। जबसे आप जाते हैं, तबसे आपके पुनः देखने की घड़ियाँ गिनना शुरू करती हूँ।"

"और तभी गिनना समाप्त करती हो, जब मैं आ जाता हूँ? यह कह रमणीमोहन मुस्कराने लगे।"

"आपको क्यों विश्वास होगा?" और वह अपनी साड़ी के छोर से आँखें पोंछने लगी।

रमणीमोहन ने उसे अपनी ओर घसीटते हुए कहा—"इन मोतियों की लड़ी को देखकर भी क्या विश्वास नहीं होगा?

"मैं स्वभाव से बहुत भीरु हूँ। जब आपको अपने सम्मुख नहीं देखती तब न मालूम कितनी आशंकाएँ घेर लेती हैं।"

"कैसी आशंकाए?"

"क्या बताऊँ वे कैसी हैं। न किसी से बोलने का मन होता है, और न हँसने को जी चाहता है। खाना–पीना भी नहीं भाता। ममी बार-बार खाने का आग्रह करती हैं, किन्तु कुछ अच्छा ही नहीं लगता।"

"तब इस तरह बीमार पड़ जाओगी।"

"बीमार होने में क्या कसर बाकी है? चारपाई से नहीं लगी, बस खैरियत है।"

"यह अच्छी बात नहीं है।"

"जानती हूँ कि यह अच्छी बात नहीं है, परन्तु मेरा मन काबू में नहीं

है। जानते हो मेरा दिल क्या चाहता है।"

"बिना बताये कैसे जान सकता हूँ।"

"आप मेरा मज़ाक़ उड़ायेंगे ?"

"वाह, मैं मज़ाक़ क्यों उड़ाऊँगा ?"

"अगर मजाक नहीं उड़ायेंगे तो दोस्तों में बैठकर हसेंगे।"

"यहाँ मेरा कोई दोस्त नहीं है।"

"वह अमरीकन लैम्बर्ट।"

"वह केवल मेरा पड़ोसी है—कमरे के बग़ल में रहता है।"

"आपका यहाँ आना उससे छिपा न होगा।"

"यद्यपि उससे कहकर यहाँ नहीं आता, तथापि वह जानता अवश्य है।"

"वह जरूर यहाँ की बातें जानने का प्रयत्न करना होगा।"

"नहीं, वह एक प्रश्न भी नहीं पूछता। दूसरों की निजी बातें जानने का प्रयत्न हमारे देशवासी ज्यादा करते हैं। पश्चिमीय व्यक्तिगत रहस्यों में प्रवेश नहीं करते।"

"फिर आपसे उसकी कैसी बात-चीत होती है !"

"वह अपने में मस्त रहता है और मैं अपने में। हाँ, कभी-कभी साथ बैठकर चाय-वाय पी ली, अथवा कभी अखबारी घटनाओं पर चर्चा हो गई।"

"आप यहाँ से कभी आधी रात के बाद जाते हैं। इतनी देर आप क्या करते हैं, कहाँ रहते हैं, वह जानना चाहता होगा।"

"वह जानता हैं कि मैं यहाँ आता जाता हूँ।"

"आप यहां क्या करते हैं, जरूर जानना चाहता होगा।"

"इस सम्बन्ध में उसने कभी प्रश्न नहीं किया।"

"अगर वह प्रश्न करता, तो शायद आप हमारी बातें उसे बता देते।"

"आज तुम क्यों उस बेचारे के पीछे पड़ी हो ?"

"मैं चाहती हूँ कि कोई हमारे प्रेम को न जाने, और न नजर लगाए।"

"किसको जरूरत पड़ी है हमारी प्रेम कहानी के जानने तथा सुनने की।"

"इन अमेरिकनों पर तनिक विश्वास नहीं है। ये बड़े दग़ाबाज़ होते हैं।"

"दुनियाँ इनकी तारीफ़ के पुल बाँधती है, और तुम उस तमाम जाति को धोखेबाज़ कहती हो। क्या किसी अमेरिकन से तुम ठगी गई हो ?"

"मैं किसी अमेरिकन को नहीं जानती। ममी अकसर उनकी बुराई करती है ?"

"क्यों ?"

"डैडी से कई अमेरिकनों की दोस्ती थी, और उनकी वजह से उन्हें और हमारे परिवार की बड़ी हानि हुई है।"

"किन्तु तुम्हारी माँ ने कभी इसकी चर्चा नहीं की।"

"बहुत पुरानी बात हो गई है, इसलिए न कहा होगा। अब विस्तार से पूछ लीजिएगा।"

"देखो, सब देशों में कुछ लोग भले, और कुछ बुरे होते हैं। भलाई और बुराई किसी खास देश तक महदूद नहीं है। संभव है कि तुम्हारे डैडी के अमरीकन दोस्त बुरे आदमी हों।"

"मुझे क्या मालूम कि वे कैसे थे। मैं उस समय पैदा नहीं हुई थी।"

"इतनी पुरानी बात भी तुम्हारे दिमाग़ पर अभी तक छाई है।"

"जैसे बच्चे हौआ से डरते हैं, वैसे मैं अमरीकनों से डरती हूँ।" यद्यपि कोई कारण नहीं है, तथापि यह डर जाता नहीं।"

"यह खामख्याली है। दुनियाँ में रहकर सब देशों के निवासियों से सम्बन्ध बनाये रखने पड़ते हैं। यही देखो, चीनियों ने हमारे साथ कितना बड़ा विश्वासघात किया है, किन्तु इसके यह मानी नहीं हैं कि हम प्रत्येक चीनी से घृणा करें।

"चीनी एशियाई हैं, विदेशी नहीं।"

"भारत भी एशिया का एक प्रदेश है, किन्तु आक्रमण किसी विदेशी ने नहीं, एशियाई ने किया है।"

"यह लड़ाई वैसी ही है, जैसी पारिवारिक व्यक्तियों में होती है।"

"तुमको कुछ मालूम नहीं है, इसलिए तुम ऐसा कहती हो। चीनियों से बढ़कर कोई दुनियाँ का दुश्मन नहीं है।"

"मुझे इसका कोई इल्म नहीं है।"

"फिर तुमने अपना विजय-किरीट क्यों राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में दान किया था?"

"मैं नहीं बता सकती। शायद किसी पास में खड़ी सहेली ने सुझाव दिया और भावावेश में मैंने वैसा कर दिया। सच पूछिए, मुझे राष्ट्रीय सुरक्षा कोष का पता तक नहीं था।"

"क्या तुम कभी समाचारपत्र नहीं पढ़ती?"

"उन्हें देखने से ही डर मालूम पड़ता है। अल्लम-गल्लम लिखा करते हैं, और तिल का ताड़ बनाया करते हैं। ममी तो प्राय: दिल्ली के सभी अखबार और मासिक पत्रिकाएँ मँगवाती हैं। अखबार तो भूलकर नहीं छूती, हाँ, कभी-कभी कोई मासिक पत्र पढ़ लिया करती हूँ। मेरे ऊपर कोर्स की किताबों का ही इतना बोझ रहता है कि किसी दूसरी चीज को पढ़ने का अवकाश नहीं मिलता।"

"यदि पढ़ाई का बोझ ज्यादा हो तो पढ़ना छोड़ दो।"

"मैं छोड़ दूं, परन्तु ममी नहीं मानती।"

"क्यों?"

"कहती हैं कि पढ़ी लिखी होगी तो कहीं भी नौकरी कर पेट पाल लोगी।"

"वह ठीक कहती हैं। आत्मनिर्भर बनने के लिए शिक्षित होना आवश्यक है।"

"आपकी भी यही राय है।"

"इस विषय में मेरी कोई राय नहीं हो सकती।"

"तब आप मुझे तनिक भी प्यार नहीं करते।"

"कैसे?"

"साफ है, यदि प्यार करते होते तो मेरे बारे में कुछ सोचते-विचारते। मेरी भलाई-बुराई का ध्यान होता।"

"अभी मैं तुम्हारी मां और तुम्हारे बीच कैसे दखल दे सकता हूँ।"

"आप दखल नहीं देंगे तब क्या कोई दूसरा मेरी भलाई सोचेगा ?"

रमणीमोहन ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह सिगरेट निकालकर पीने लगे। कला उन्हें अन्यमनस्क देखकर बोली—"मैं आपको देखकर सब भूल जाती हूँ। खातिर-तवाजा करने की भी याद नहीं रहती।"

वह सामने की मेज से बिलायती सुरा का पात्र भरकर देती हुई बोली—"माफ कीजिएगा मेरी भूल को। ममी को यदि यह असावधानी मालूम हो जाय तो मेरी खाल खींच ले।"

रमणीमोहन ने सुरापात्र उसकी ओर बढ़ाते हुये कहा—"पहले, तुम पिओ।"

"नहीं, नहीं, पहले आप पीजिए। मैं आपकी दासी होकर यह हौसला नहीं कर सकती।"

"आजकल लड़कियां दासीत्व नहीं, स्वामीत्व करती हैं।"

"मैं उनमें नहीं हूँ। आपको मेरे प्रेम पर विश्वास नहीं होता।"

"यह तुम गलत कहती हो।"

"गलत नहीं सही कहती हूँ। प्रेम होता तो क्या इस तरह मेरे दिए सुरा पात्र का अपमान होता ?"

"अपमान कैसा ? मैं चाहता हूँ कि तुम भी मेरे साथ पिओ।"

"आप भर कर दीजिए, फिर देखिए कि मैं पीती हूँ या नहीं।"

"इसी में हम दोनों क्यों न पियें।"

"मन्जूर है, पहले आप इसे पीकर पवित्र करें, फिर आपका प्रसाद ग्रहण कर सकती हूँ।"

रमणीमोहन ने एक घूंट पीकर पात्र को उसके मुंह से लगाते हुए कहा—"तुम्हारी ज़िद पूरी हुई। अब अच्छी लड़की की तरह इसे खाली कर दो।"

"आपका आदेश सर माथे-पर।" कला ने एक ही साँस में पात्र खाली कर दिया, और दूसरा भरकर अपने हाथ से पिलाते हुए कहा—"अब आप पीजिए।" रमणीमोहन ने भी एक साँस में पी डाला।

मदिरा बहुत तेज थी। कुछ ही क्षणों में उसकी उष्मा से मस्तिष्क गर्म

होने लगा। कला ने मुझे माँस का टुकड़ा देते हुए कहा—"कुछ खाइए भी।"

रमणीमोहन ने उसे खाते हुए कहा—'बहूत लजीज है।"

कला ने दूसरा पात्र भरकर उनके मुंह से लगाते हुए कहा—"इसे पी जाइये।"

"अब तुम्हारी बारी है। बारी-बारी से पीने की बात है।"

"यद्यपि मेरे लिए कुछ ज्यादा हो जायगी, तथापि आपकी बात टालने का साहस नहीं है।"

कहकर वह उसे पी गई। फिर उसने पात्र भरकर रमणीमोहन को पिलाया।

मदभरी आँखों से कला उन्हें एकटक देखने लगी। रमणीमोहन ने पूछा—"क्या देख रही हो?"

"आपका अनन्त रूप, जिसको देखते हुए कभी अघाती नहीं। आप इतने सुन्दर, सज्जन, महत्····।" कहते-कहते वह रुक गई।

"क्या और विशेषण याद नहीं आ रहे?"

"बहुत कुछ सोच रखती हूँ, परन्तु आपके सामने सब भूल जाती हूँ।"

"इसी तरह अपना सबक़ भी भूल जाती होगी।"

"इस समय मेरे तन मन में आप ही व्याप्त हैं।" यह कहती-कहती उनके पैरों पर गिर पड़ी, और उनके चरणों को अपने हृदय से चिपटा लिया।

रमणीमोहन ने उसे उठाते हुए कहा—"यह क्या करती हो? तुम्हारी स्थान यहाँ नहीं यहाँ है।" और उन्होंने उसे गोद में ले लिया।

उसने विशाल उरस्थल में अपना मुंह छिपाते हुए कहा—"मुझे अपने चरणों की दासी बना लो। बस इतना ही बहुत है, इससे ज्यादा कुछ नहीं माँगती।"

उसकी पीठ सहलाते हुए कहा—"कला ···।" फिर कहते कहते रुक गये।

"मेरे स्वामी बोलो, क्या आप इतनी भी भीख इस दासी को नहीं देंगे।"

"किन्तु कला ····।"

"मैं अधिक कुछ नहीं माँगती, केवल चरणों में पड़ी रहने दो ।"

"विवाह ·····।"

"मैं कब कहती हूँ कि मुझसे विवाह करो । मैं वामन होकर चाँद नहीं छूना चाहती ।"

"फिर विवाह बिना कैसे सम्भव है ?"

"बड़े लोग नौकर नौकरानियाँ रखते हैं, मैं आपके महल में एक दासी बनकर रहूँगी । मेरी एकमात्र अभिलाषा यही है कि आपको हमेशा देखा करूँ, जैसे चकोर चाँद को देखता है ।"

"अपनी माँ से····।"

"उनसे कहने-पूछने की कोई जरूरत नहीं है । जिससे मुझे शान्ति मिलेगी, वह मैं करूँगी ।"

"अपनी माँ को छोड़ सकोगी ।"

"कोई लड़की आजन्म अपनी माँ के घर नहीं रहती । उसका घर उसके स्वामी के चरणों में है । मैं तुम्हें पाने के लिए पागल हूँ ।"

"अब बराबरी पर आई हो । अभी तक 'आप' कहकर तुम मुझसे अलगाव रखती थी ।"

"तुम इन्द्र के समान राजेश्वर हो ।"

"तुम अप्सरा के समान सुन्दर हो ।"

"नहीं, मैं मीन हूँ, और तुम रत्नाकर । जैसे मछली जलहीन होकर नहीं जी सकती । मेरे स्वामी, यदि तुम मुझे अपने चरणों में स्थान नहीं दे सकते, तब विष खाकर इन चरणों में मरने की अनुमति दो ।"

रमणीमोहन उसे दुलराने लगे । "यह क्या कहती हो कला !"

"तुम्हारे बिना मैं जी नहीं सकती ।" वह सिसकने लगी ।

"किन्तु विवाह करने के लिए मैं स्वतंत्र नहीं हूँ । माता-पिता से अनुमति लेना पड़ेगा ।"

"मैं कब विवाह की जिद करती हूँ ।"

"फिर कैसे ?"

"यह तुम जानो। बस अपने चरणों में स्थान दो, इतना ही मैं चाहती हूँ।"

"मैं वणिक पुत्र हूँ, और तुम राजपूत !"

"मैं केवल नारी हूँ, और नारी की कोई जाति नहीं।"

"तुम्हारी माँ से बात करूँगा।"

"वह मेरी इच्छापूर्ति में कभी बाधक नहीं होगी—हो नहीं सकती।"

"किन्तु मुझे माता-पिता की आज्ञा लेना होगा ?"

"मैं विवाह का आग्रह कब करती हूँ। विवाह मन का होता है। मैं लक्ष्य देखती हूँ, साधन नहीं। मैंने अपनी तरफ से अपने को समर्पित कर दिया। ठुकराओ, या स्थान दो। यदि ठुकराते हो, तब मेरी मौत निश्चित है। अपनी साध लिए जाना, यह भी तो सुख है।" कहती-कहती वह दृढ़ता के साथ उनसे चिपट गई।

रमणीमोहन असमन्जस में पड़े उसे सहलाने लगे।

१८

दिल्ली के मिनिस्टरों, अफसरों के यहाँ नित्य चक्कर लगाना, राणा वीरेन्द्रसिंह थापा का दैनिक कार्यक्रम था। प्रातः आठ बजे तक वह अपने घर से निकल जाते, तथा अपनी बनाई सूची के अनुसार उनके घर जाते, कुशल-मंगल पूछते, और कभी किसी के यहाँ चाय पीते, और किसी के यहाँ पान खाते, और कभी साधारण रूप से दो-चार बातें कर ग्यारह बजे तक वापस आ जाते। मालिश कराने का उन्हें व्यसन था। जब एक घन्टे कसकर मालिश हो जाती, तब स्नान करते, और भोजन के पश्चात् वह उस दिन के दैनिक समाचार पढ़ते-पढ़ते सो जाते। लगभग चार बजे उठते, तथा नित्यकर्म से फरागत हो, शाम को क्लब अथवा किसी मित्र के यहाँ, जहाँ कोई नृत्य-संगीत का आयोजन होता, जाते। सुरा प्रेमी थे, परन्तु उतनी ही पीते, जितना हज़म कर सकते। उन्हें अपने मन पर पूर्ण नियन्त्रण था, और कोई काम किसी निश्चित परिधि के बाहर नहीं करते थे।

वह अविवाहित थे, और कुछ दिनों तक रहना चाहते थे। उन्हें व्यायाम से लगाव था, और जब वह छात्रावस्था में थे, तब सभी प्रकार के खेलों में अगुआ रहते थे। यूनीवर्सिटी के वह लाड़ले छात्र थे। सबसे परिचित और सबके हितैषी थे। उनके माता-पिता बचपन में ही काल कबलित हो गये थे, और रियासत का इन्तिजाम नैपाल नरेश का नाबालिगी विभाग करता था। पैसे की कोई कमी नहीं थी, इसलिए शुरू से ही ठाट-बाट से रहते तथा मित्रों की सहायता करते, इसलिए वह हर-दिल-अजीज़ और सबके प्रेम-पात्र थे। पढ़ने-लिखने में भी कुछ बुरे नहीं थे—औसत से कुछ ज्यादा थे, इसलिए शिक्षक समुदाय उनसे प्रसन्न रहता था।

यूनिवर्सिटी छोड़ने के पश्चात् उन्होंने बहुत जल्द सरकारी तबक़े से मेलजोल बढ़ाना आरम्भ कर दिया। सरकारी तबक़ा अभी वैसा ही था जैसा वह ब्रिटिश जमाने में था। उस पर आजादी का कोई खास असर नहीं हुआ। मुल्क की खिदमत का ज़ज्बा अभी पूरी तरह उभरा नहीं था। राणा उसके रवैये से परिचित थे, इसलिए छोटे-मोटे तोहफ़ों से वह सबको अपना मुरीद बनाने में कामयाब हुए। जब हुक्काम उनके शार्गिद बन गये, तब उन्होंने आगे कदम बढ़ाये, और होते–होते दिल्ली के सभ्य समाज के केन्द्र बन गये।

यूनिवर्सिटी में रहते हुए उन्होंने एन–सी–सी की ट्रेनिंग ली थी, और उसमें वह अच्छी तरह चमके थे। फौजी शिक्षा में उनकी रुचि भी थी। अपने पूर्वजों की कीर्ति बढ़ाने के लिये विशेष रूप से तत्पर तथा उत्सुक रहते थे। यद्यपि उनकी आन्तरिक अभिलाषा थी कि फौज में भरती हों, किसी मुहीम को सर कर अपने पूर्वज बलभद्र थापा की भाँति यशस्वी हों, तथापि दिल्ली की रँगीनियाँ उनके इरादे को पूरा नहीं होने देती थी। जब कभी दोस्तों में बैठे वह फौज में प्रवेश करने की बात उठाते, तब वे सब एक आवाज में उसका विरोध करते। इस विचार के कट्टर विरोधी थे—नबाबजादा मुश्ताक़ अलीखाँ जिनसे उनकी खूब घुटती थी। हालांकि दोनों की उम्रों में काफी अन्तर था, फिर भी दोनों बराबरी दर्जे के दोस्त थे। इस धांलमेल का सबब था, कि दोनों मिसेज रिपुदमनसिंह की "सैर–ए–फ़लक" नामक संस्था के सदस्य थे, और वहाँ

कभी साथ, और कभी अलग-अलग जाते थे।

यह सच है कि मिसेज रिपुदमनसिंह की गुप्त संस्था सैर-ए-फ़लक लोगों को काफी मँहगी पड़ती थी, और वहाँ एक रात बिताने की फीस बहुत बड़ी थी। वहाँ जुए का फड़ भी जमता था, जिसमें कभी-कभी हजारों के वारे-न्यारे होते थे। एक अजीब बात वहाँ के जुए में यह थी कि मिसेज रिपुदमनसिंह ही अधिकतर जीतती थी। दूसरों की जेबों से रकम बराबर निकलकर उसकी तिजोरी भरती रहती थी, और यह भी उसकी आमदनी का एक जरिया था।

जिस दिन मिसेज रिपुदमनसिंह ने रमणीमोहन को निमन्त्रित किया था, तब से नवाबजादा मुश्ताकअली खाँ से राणा की भेंट नहीं हुई थी। नवाबजादा अपनी किसी व्यापारिक आवश्यकता से दिल्ली के बाहर गये थे। दो-तीन दिनों में वापस आने का वादा था। उनकी खोज खबर लेने का कस्द कर राणा उस दिन अपने बँगले से निकले। अभी कुछ दूर गए होंगे कि नवाबज़ादा की चिर-परिचित मोटर उन्हीं के बँगले की ओर आती दिखाई दी। दोनों ने एक दूसरे को देखा, और गाड़ियां खड़ी कर पीछे चलाकर वापस ले आये।

बगल में पहुँचकर नवाबजादा ने हँसकर पूछा—"कहाँ की तैयारी करदी राणा साहब।"

"मैं आपके यहाँ जा रहा था। सोचा कि आप वापस आगये होंगे, इसलिए ज़ियारत कर आऊँ।"

"लाहौल वलाक़ूबत, मेरा घर कोई मन्दिर-मसजिद है, जो आप जियारत करने जाते ?"

"मेरे लिए तो वह मक्का और बनारस से कम नहीं है।"

"नवाबजादा दिल खोलकर हँसने लगे। उनकी हँसी की ध्वनि से पथिक चकित होकर देखने लगे।"

भीड़ जमती देखकर राणा ने कहा—"आइये, अब हम लोग चलें, नहीं तो हम दोनों तमाशा बन जायेंगे।"

"पहले यह तय हो, कि कौन किसके यहाँ जाय।"

"मेरे गरीब खाने पर तशरीफ ले चलें।"

"यही सवाल अगर मेरी तरफ से पेश हो तब।"

"उस हालत में न आप मेरे यहाँ, और न मैं आपके यहाँ। चलिए हम लोग किसी तीसरी जगह चलें।"

"मिसेज सिंह के यहाँ चलकर सैर–ए–फलक की जाती, मगर अभी दिन ही निकला है।"

"वहाँ जाने के लिए जेब गरम चाहिए। चलिए किसी अच्छे किस्म के रेस्तराँ में कुछ नाश्ता किया जाय।"

"क्या बिना कुछ नाश्ता लिए ही घर से निकलते हैं जनाब !"

"नाश्ता मैंने ले लिया, लेकिन आपकी खातिरदारी का भी ख्याल है।"

"लाहौल बोलो, मेरी खातिरदारी की। अच्छा चलो, पहले आप अपनी गाड़ी गैरेज में बन्द कर दें, क्यों पेट्रौल फिजूल खर्च किया जाय। पेट्रौल लड़ाई की खास जरूरियात में है, उसका नुक्सान गुनाह है।"

"आपके मुल्क परस्ती के जज्बे की मैं तहे दिल से दाद देता हूँ।"

"यही तो आप हम लोगों को ग़लत समझते हैं। मुसलमान के भी दिल है, जज्बा है। उसको अपना वतन उतना ही प्यारा है, जितना एक हिन्दू और ईसाई या बौद्ध को होता है। तअस्सुबी ख्याल वालों के लिए पाकिस्तान बन गया है, और वह भी हमारी आजादी में दुश्मनों की चाल थी, लेकिन दर-असल दोनों मुल्कों की रियाया हम क़ौम और हम ख्याल हैं। कहीं लाठी मारने से पानी अलाहिदा होता है।"

"वल्लाह, आपको लेक्चरबाजी सूझी है। यह राजपथ है, हाल या शाम-याना नहीं।"

"तुम्हीं फिर क्यों गुस्सा दिलवाते हो ?"

"माफी बख्शिए क़िबला। आप चलिए, मैं गाड़ी घुमाकर आता हूँ।"

दोनों की मोटरें जब वापस राणा के बंगले में प्रविष्ट हुई, और राणा ने नौकर को गाड़ी गैरेज में बन्द कर देने का आदेश दे दिया, तब नवाबजादा की मोटर के पास आकर कहा—"आइए, एक-दो पेग पी लिया जावे।"

"क्या आप पर शैतान सवार है, जो सूरज की किरन निकलने के साथ पीने की दावत देने लगे।"

"आपको देखकर दिल मचलने लगता है।"

"गोया मैं कोई नाज़नी हूँ।"

"नाज़नी नहीं, नाजबरदार तो हैं।"

"आप सीधी तरह नहीं मानेंगे। मालूम होता है कि गोशमाली करना पड़ेगी।"

"आपको पूरा अख्त्यार है, आप मेरे बुजुर्ग भी हैं।"

"अगर बुजुर्ग मानते हो तो आओ मेरे पास बैठ जाओ। हम लोग आकाश होटल चलेंगे ?"

"कोई खास बात है ?"

"हाँ, उन शरीफजादे से मिलना है, जिन्होंने मिसेज सिंह की छोकरी के ताज के लिये ग्यारह लाख रुपये पानी में बहाए हैं।"

राणा ने बैठते हुए कहा—"पानी में क्यों बहाए, वह रकम सुरक्षा कोष में गई हैं ?"

नवाबजादा ने मोटर चलाते हुए कहा—"अजी छोड़ो यह बहानेबाजी। सुरक्षाकोष में रुपया देना था, तो सीधी तौर से देता। वह उस छोकरी पर फिदा है।"

"होगा, हमसे मतलब ?"

"मतलब न होता, तो जाता ही क्यों ?"

"क्या कोई नई बात हुई है ?"

"हां जी, उसके वालिद का खत आया है।"

"क्या उसके वाल्दि से आपकी जान-पहचान है ?"

"हां, व्योपाराना !"

"क्या लिखा है ?"

"आप खुद पढ़ लें।"

राणा वीरेन्द्र सिंह पत्र पढ़ कर बोले—"यह कहिए, ग्यारह लाख खर्च

करने की गूँज वहाँ तक पहुँची है।"

"बेशक यह नादानी नहीं है, तो क्या है ?"

"आपने क्या जवाब दिया ?"

"जवाब अभी नहीं लिखा, जरा शरीफजादे से मिल कर कुछ ज्यादा हाल जान लूँ।"

'भला, शरीफजादे क्यों बतायेंगे ? मिसेज सिंह से शायद कोई बात निकल आये।"

"अजी वह शैतान की खाला है। वह कोई भेद उगलेगी ?"

"तब दीवालों से टक्कर लीजिए।"

"नहीं, बातचीत से कोई न कोई बात निकल आवेगी। इश्क और मुश्क छिपाए नहीं छिपती।"

"क्या वह भी कस्तूरी हैं ?"

"उससे ज्यादा महकदार।"

"अगर दरअसल वह इश्क में बीमार है, तब क्या करेंगे ?"

"वालिद का पार्ट अदा करूँगा। उसको समझा-बुझाकर घर भेजने की कोशिश करूँगा !"

"मिसेज सिंह जब अपना शिकार हाथ से बे हाथ होते देखेगी, तब क्या वह खुश होगी ?"

"उसकी खुशी-नाखुशी की कौन परवा करता है। वह दरअसल शैतान की नानी है।"

"अब खाला से नानी बन गई ! कुछ तरक्की तो उसने की !"

"आपको मजाक सूझता है, और यहाँ गुस्सा आ रहा है कि उसकी शराफत का परदा फाश कर दूँ।"

"याद रखिए, फिर हम लोग फलक की सैर नहीं कर सकेंगे।"

"हजार लानत, हजार फटकार है उस पर और उसकी सैर-ए-फलक पर।"

'आज आप बहुत बेरुखे हो रहे हैं। क्या मिसेज सिंह ने आपको नाराज

कर दिया है ?"

"मैं उस दिन से गया नहीं, जब हम उन शरीफ़जादे की इस्तकबाली के लिए बुलाए गए थे, और वह पहला मौका था जब बिना पैसे दिए खाने-पीने को मिला था।"

"हमारे खाने-पीने के लिए हमें कुछ नहीं देना पड़ता था।"

"देखिए, होटेल आ गया। आप खामोश रहिए।"

"गोया आकाश होटेल होटेल नहीं, कोई मन्दिर-मसजिद है।"

"उससे भी बढ़ कर। मन्दिर-मसजिद गरीबों के कयामगाह हैं, लेकिन आकाश जरदारों का है।"

"हम लोग भी कुछ हैसियत रखते हैं।"

"मेरा यह मतलब नहीं है।"

फिर ?"

"यही कि अब आप अपनी बकवास बन्द कर उस शरीफजादे की तरफ देखें।"

होटेल के मैदान में मोटर खड़ी कर वे दोनों आगे बढ़े।

१९

रमणीमोहन और लैम्बर्ट उस नकशे को, जो उन्हें मिस मिलर से प्राप्त हुआ था, सामने रखे, बड़े गौर से देख रहे थे। उनका ध्यान उस समय बँटा, जब होटेल के कर्मचारी ने नवाबजादा और राणा वीरेन्द्र सिंह के मुलाकाती कार्ड उनके सामने पेश किया नाम पढ़कर लैम्बर्ट ने पूछा—"ये नवाबजादा मुश्ताक अली और राणा वीरेन्द्र सिंह कौन हैं ?"

"मिसेज़ रिपुदमनसिंह के एक जलसे में इनसे परिचय हुआ था।"

"शायद उसके दोस्तों में होंगे।"

"यही मेरा अन्दाजा है।"

"आप इनसे बात कीजिए, मैं भी जरूरियात से फारिश होने जाता हूँ।

दोपहर को या किसी और समय आपको इस नकशे का भेद समझा दूंगा।"

लैम्बर्ट के जाते ही नवाबजादा और राणा ने मुस्कराते हुए प्रवेश किया! रमणीमोहन ने उठ कर उनका स्वागत करते कहा—"आइए, आइए, ! आपकी इस मेहरबानी का कैसे शुक्रिया अदा करूँ ! घर बैठे गंगा आई ?"

"वाह जनाब ! आप इस छोटी-सी जमुना को भुलाए देते हैं ?" राणा बैठते हुए बोले।

"गोया मिस्टर रमणीमोहन के मिल जाने से अब यह तिगड्डम 'परयाग' हो गया।" नवाबजादा हँसने लगे, और उनके साथ उन दोनों ने भी योग दिया।"

रमणीमोहन ने घंटी बजाते हुए पूछा—"कहिए इस वक्त आप लोग क्या लेंगे ? काफी या चाय ?"

"आप यह तकलीफ न फरमावें। हम लोग सिर्फ आपके दर्शनों के लिए आए हैं ?"

"दर्शनों के साथ प्रसाद भी तो चढ़ता है। जब आपने इसे तीर्थराज प्रयाग बना दिया, तब कैसे मुमकिन है कि प्रसाद न चढ़ाया जाय।"

"वाह, आपने तो लाजवाब कर दिया। काफी का ही दौर चले, क्यों राणा साहब, आपका ख्याल है ?"

""आप बुजुर्ग हैं, आपकी पसन्द के खिलाफ जाना गुस्ताखी में शुमार होगा।"

रमणीमोहन ने होटल के कर्मचारी को काफी और कलेवा लाने का आदेश देने के बाद पूछा—"कुछ पीने-पिलाने का शग़ल भी हो जाय।"

"लाहौल वलाकूव्वत ! आप नौजवानों को यही सूझता है। राणा साहब भी यही इसरार कर रहे थे, उनसे किसी तरह जान छुड़ाई, तो यहाँ भी वही मसला पेश है।"

"आप जब सुबह नहीं पीते, तब जाने दीजिए।"

"जी हाँ, मैं सिर्फ दिलगीरी दूर करने के लिए शाम को थोड़ी सी ले लेता हूँ।"

"जी हां, मैं आपकी ताईद करूंगा। कहिए कैसे तकलीफ फरमाई ?"

"अजी दोस्तों से मुलाकात करने में दिलबस्तगी होती है या तकलीफ ?"

"महज़ मुलाकात के लिए आप सुबह-सुबह तकलीफ न उठाते।"

"नहीं, कोई खास काम भी नहीं है। मिसेज सिंह के घर में आपसे नियाज़ हासिल हुआ था, फिर दुबारा मुलाकात नहीं हुई।"

"जी हाँ, उसके बाद वह खुशनसीबी आज मिल रही है।"

"उस दिन मिसेज सिंह की लड़की की फतेह का जलसा था, इसलिए वहाँ हम लोग एक दूसरे के नजदीक नहीं आ सके थे।"

"जी हाँ, आप सही फरमाते हैं।"

"कला की खुश किस्मती के बायस आप ही थे।"

"यह कैसे, उसके मिस इन्डिया चुने जाने में मेरा कोई हाथ नहीं था।"

"आप ठीक फरमाते हैं, लेकिन वह दिल्ली की खास तहरीक न बनती, अगर आपने उसके ताज को हासिल करने के लिए ग्यारह लाख रुपयों की बोली न लगाई होती।"

"वह राष्ट्रीय सुरक्षा फंड में कुछ देने का बहाना था।"

"बस, क्या इतनी ही बात है ?"

"मेरी जानकारी में दूसरी कोई बात नहीं है। आपको कुछ वक़फियत हो तो बताइए।"

"वल्लाह, ग्यारह लाख रुपए आप खर्च करें और वक़फियत मुझे हो ?"

"दरअसल, मैंने किसी दूसरे ख्याल से बोली नहीं लगाई थी।"

"यारान चोरी, पीरान दगाबाजी नहीं होना चाहिए।"

"क्या मतलब ?"

"यही कि आपका दिल उस छोकरी पर आ गया है।"

"यह ग़ज़ब न कीजिए क़िबला।"

"फिर क्यों आपने ग्यारह लाख पानी की तरह बहा दिए ?"

"मैंने अर्ज़ किया कि वह रकम मैंने सुरक्षा फंड में दी है।"

"दुनिया इसके दूसरे मानी निकालती है।"

"निकाला करे, मैं क्या कर सकता हूँ ? मेरे दिल में कोई दूसरी बात नहीं थी।"

"उस वक्त न होगी, लेकिन इस वक्त है।"

"वाह जनाब, जबरदस्त का ठेंगा सर पर।"

"देखिये जनाब, हमें दुनियाँ में रहते हुए उसकी नुक़ता चीनियों की कद्र कर उसी के मुताबिक अपने तर्ज़-ए-अमल को ढालना पड़ेगा।"

"मैं कब इसकी मुखालफत करता हूँ।"

"आप तसलीम करते हैं कि दुनियाँ का शक सही है।"

"एक-दो आदमियों का शक रफा किया जा सकता है, लेकिन तमाम दुनियाँ का मुंह बन्द नहीं किया जा सकता।"

"दुरस्त है, लेकिन दुनियां की आवाज खुदा की आवाज होती है।"

"आपको भी मेरी बात पर यक़ीन नहीं आता।"

"देखिये, मैं आपके वालिद की उम्र का, या दो-तीन साल छोटा-बड़ा हूँ। दुनियां का मुझे बहुत तजुरुबा है— और खासकर रंगीनी दुनियां का।"

"मैं आपको उसी नजर से देखता हूँ ?"

"जनाब मैं इस मिसेज सिंह के रग-रेशे से वाकिफ हूँ। इसे शैतान की खाला समझिये।"

"माफ कीजिएगा मेरी गुस्ताखी। अभी थोड़ी देर कब्ल नवाब साहब उसे 'शैतान की नानी' बता चुके हैं।" राणा ने मुस्कराते हुए टोंका।

"चाहे उसे शैतान की नानी कहिए, चाहे खाला। बहरहाल वह दुनियां की बहुत नाक़िस औरत है, जो चकला चलाती है, और उसी की आमदनी से जिन्दगी बसर करती है।"

"नवाब साहब की पहली बात की निस्बत मैं कुछ नहीं कह सकता, लेकिन जहाँ तक दूसरी बात का तअल्लुक है, वहाँ मैं भी ताईद करता हूँ।" राणा बोल उठे।

"मुझे यह भेद कतई नहीं मालूम ! वह अपने को किसी फौजी अफसर की बेवा जाहिर करती है।"

'खुदा जाने, वह कौन है, और जो कुछ वह कहती है, कहाँ तक सच है ?"

"आप उसके पुराने दोस्तों में हैं, मुझसे ज्यादा जानते होंगे ।"

"जी हाँ, आपका ख्याल दुरुस्त है । कई साल से उसके 'सैर-ए-फलक' में हमारी आमद-रफ्त है ।"

"यह सैर-ए-फलक क्या बला है ?"

"चकले का शायराना नाम है, जिसका मतलब जो चाहो निकाल लीजिए ।"

"कुछ आप ही बताने की तकलीफ फरमावें ।

"बता तो दिया कि वह रँडीखाना है ।"

"सरकार ने यह पेशा बन्द कर दिया है ? '

"सरकार पेशा बदल सकती है, लेकिन इन्सानी खसलत नहीं । पहले उनकी एक बाजार थी, जहाँ लोग सरे आम जाते घबड़ाते थे । अगर जाते भी तो मुंह छिपाकर या गलियों के अन्धेरे में छिपते-झिझकते ! लेकिन दुनिया की तरक्की के साथ इन पेशे वालों ने भी अपना रवैया बदल दिया । पहले वे खुद मुख्त्यारी से कोठों पर बैठकर अपने हुस्न का सौदा करती थी, और अब नौकरी करती है ।"

"अब नौकरी करती है ?"

'जी हाँ, इनको अब मजबूरन किसी सरमायादार का सहारा ढूंढना पड़ता है जो इनका व्यापार चलाना चाहते हैं, वे भले मानुसों की बस्ती में एक आलीशान मकान या बँगला लेकर कला-मन्दिर का नाम देते हैं, और बाँदियों-खादिमों के बहाने नौ उम्र और खूबसूरत इन पेशा करने वालों को नौकर रखते हैं । गाने-बजाने, नाच-रंग की महफिलें जमती हैं जहाँ एक तरफ, वहाँ दूसरी जानिब जुए के फड़ों में हजारों के वारे-न्यारे होते हैं । शराब के दौर चलते ही रहते हैं, और तबियतदारों के लिए वहाँ रात बिताने का भी साज सामान मुहैया रहता है ।" अन्धेरे कमरे में बन्द होना पड़ता है ।

"इसलिए कि आप उस लड़की की शक्ल से कहीं वाकिफ न हो जाय,

और आपकी तबियत आसूदा न हो जाय। इन्सान हमेशा नई–नई चीजों का ख्वाहिशमन्द रहता है। जब तक कोई एक चीज पहचानी नहीं जाती तब तक वह नई बनी रहती है।"

"अच्छा ! यह सब क्या दिल्ली में होता है।"

"अजी एक दिल्ली ही नहीं, हिन्दुस्तान के उन सभी शहरों में यह व्यापार धड़ल्ले से चलता है, जहाँ क़सब कमाने का पेशा बन्द किया गया है।"

"बम्बई में ऐसी कोई बात सुनने में नहीं आई ?"

"बम्बई में इस किस्म के अड्डे इतने हैं कि उनका शुमार नहीं हो सकता। अभी आप नौ उम्र हैं, दुनियां का तजुरबा उम्र गुजारने के साथ होता है। आप परसाल डाक्टरी पासकर दुनियाँ में दाखिल हुए हैं। जुमा–जुमा अभी आठ दिन भी पूरे नहीं हुए ?"

"यह आपने कैसे जाना कि मैंने डाक्टरी पास की है।"

"बस यह राज न पूछिये ! मुश्ताक़ अली से कुछ छिपा नहीं रह सकता।"

"आप दोस्ती करने के क़ब्ल उसके विषय में सब बातें जान लेते हैं ?"

"जी नहीं, हर एक का आमालनामा खुद–बखुद जाहिर हो जाता है।"

"बताइये, आपको कैसे मालूम हुआ कि मैं डाक्टर हूँ। अपने एक मिल का मैनेजिंग डायरेक्टर भी हूँ।"

"यह भी मुझसे छिपा नहीं है, लेकिन आपको ग्यारह लाख रुपये हासिल करने में कितनी तबालत उठाना पड़ी, यह भी बखूबी मालूम है।"

"ऐसी कोई दिक्कत सामने नहीं आई, कुछ उलट–फेर करना पड़ा।"

"वही उलट–फेर तो दिक्कत तलब साबित हुआ। आपके वालिद को आपके खाते में रुपया जमा करना पड़ा, तब आपकी चेक भुनी।"

"हाँ, कुछ ऐसा ही किया गया है।"

"बरखुरदार, अभी तुम्हारे वाल्दैन जिन्दा हैं, उनका ख्याल रखकर कोई काम किया करो।"

रमणीमोहन ने कोई उत्तर नहीं दिया।

नवाबजादा कुछ देर चुप रहकर अपने कथन का प्रभाव आंकने लगे। फिर बोले—"यह दिल्ली है—यानी भलाई और बुराई की देहली। इसके एक रास्ते से आप बहुत ऊँची तरक्की हासिल कर सकते हैं, और दूसरा रास्ता अगर इख्तियार करेंगे तो वह आपको तनज्जुली की सिम्त ले जायगा। एक नौजवान और नातजुरवेकार के लिए यहाँ इतने फन्दे फैले हैं, जिनसे निकल बचना आसान नहीं है।"

"मेरी समझ में नहीं आता कि मुझसे ऐसी कौन ग़ल्ती हुई है।"

"शुक्र खुदा का है कि अभी तुम बचे हुए हो, लेकिन वह बूढ़ी मकड़ी, जिसे हम लोग मिसेज सिंह के नाम से जानते हैं, ऐसा जाल तुम्हारे चारों ओर बुन रही होगी कि अगर पहले से होशियार नहीं रहोगे, तो जरूर उसमें फँस जाओगे। वह तुम्हारा वही हाल करेगी उस वक्त, जो मकड़ी, एक मक्खी के साथ करती है।"

रमणीमोहन विचार करने लगे।

"आगा-पीछा सोचने की ताकत सिर्फ इन्सान को अता हुई है, और जो इन्सान इस ताकत का इस्तेमाल जानता है, वह हरगिज किसी के फन्दे में नहीं फँस सकता।"

"शुक्रिया, मैं अब होशियार रहूँगा।" रमणीमोहन ने धीमे स्वर में कहा।

"होशियार रहूँगा के मानी हैं कि मकड़ी ने जाल फलाना शुरू कर दिया है?"

रमणीमोहन फिर चुप रहे।

नवाबजादा उनके मनोभावों को पढ़ने का प्रयास करते हुए बोले—"उसके चकले में एक से एक आला खूबसूरत छोकरियाँ हैं। खुदा जाने वह इनको कहां से दस्तयाब करती है। दिन को कोई दिखाई नही देती, मगर रात को उनका ठट लगता है।"

"ऐसी कोई बात मेरे देखने में नहीं आई।'

"तब उसका कोई गहरा मक़सद है!" राणा ने इशारा किया।

"अभी तक वह खुलकर नहीं खेली, इसलिए वमुजिव राणा साहब, कोई दूर की कौड़ी लाने के फेर में है।"

"आपने मुझे होशियार कर दिया, इसका तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ।"

"बरखुरदार, तुम मेरे बेटे की तरह हो। तुम्हें होशियार करना मेरा फर्ज है। दुनियाँ सैर करने के लिए बनी है, हर चीज का लुत्फ उठाओ, मगर आखें और दिमाग़ खोलकर। बेवकूफ़ वहीं तक बनो, जहाँ तक बनना तुम्हारे हक में है। जहां महसूस करो कि तुम्हारे खान्दान या वाल्दैन की इज्जत और हुरमत पर दाग लगने वाला है, फौरन उससे किनाराकशी कर लात मार दो।"

"मैं आगे से ऐसा ही अमल करूँगा।"

"मैं मना नहीं करता कि तुम मिसेज सिंह के यहां आमद-रफ्त कम कर दो, या मुतलक जाओ नहीं, लेकिन होशियार रहो, उसकी चिकनी चुपड़ी बातों पर हरगिज यकीन न करना। जिस तरह बाजार में सौदा खरीदकर चले आते हो, वैसा रवैया उस अलकापुरी में भी अख्तियार करो। अब इजाजत दीजिए। फिर किसी दिन हाजिर हो जाऊँगा।"

"आज शाम को रमन काफे में मिलिए -" राणा वीरेन्द्रसिंह ने निमंत्रित किया।

"जरूर।"

दोनो दोस्त बिदा हुए, और रमणीमोहन विचारमग्न हो गए।

२०

लैम्बर्ट उन दोनों के विदा होने ने बाद तुरन्त रमणीमोहन के कमरे में आ गए। उनको कुछ अन्य मनस्क देखकर पूछा—"आपके दोस्त क्या कोई शोक सम्वाद लेकर आए थे ?"

रमणीमोहन ने शिर हिलाते हुए उत्तर दिया—"नही।"

"फिर चेहरा क्यों उतरा है ?"

"ऐसी कोई खास बात नहीं है।"

"कुछ जरूर है।"

"उसका जिक्र फिर करूँगा। आइए, पहले नकशा समझा जाय।"

उन्होंने नकशा निकालकर सामने मेज पर फैलाया। लैम्बर्ट ने देखा कि वह उस विषय पर कोई बात करना नहीं चाहते, इसलिए उनकी बगल में बैठ कर नकशे को देखता हुआ बोला—"इस नकशे का भेद उस वक्त तक नहीं खुलेगा, जब तक यह खौलते पानी में तपाया नहीं जाएगा।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि यह गुप्त स्याही में लिखा गया है।"

"किन्तु लकीरें साफ हैं ?"

"दूसरे नकशों से पृथक करने के लिये ये सांकेतिक चिन्ह हैं।"

"इसके अतिरिक्त क्या दूसरे नक्शे भी होंगे ?"

"एक नहीं सैकड़ों। आक्रामक सेनाओं के संचालकों के पास इनकी प्रतियाँ हेडक्वार्टर से भेजी जाती हैं, और उन्हीं के अनुसार वे आक्रमण की योजनाएँ बनाते हैं।"

"शायद इसलिए कि उनकी कार्रवाई सम्बद्ध हो।"

"हाँ, जब तक सैनिक दबाव समान रूप से नहीं होगा, तब तक विजय में कठिनाइयाँ होती हैं।"

"फिर इसको गरम किया जाय।"

"आपके पास कोई ट्रे, और स्पिरिट लैम्प है ?"

"जी नहीं।"

"तब आप मेरे कमरे में चलिए। वहाँ सब सामान इकट्ठा है।"

"क्या इस तरह का सब सामान आप अपने पास रखते हैं !"

"सब नहीं, किन्तु कुछ जरूरी चीजें रखना पड़ता है। आइए, आपको दिखाऊँ।" रमणीमोहन उत्सुकता से लैम्बर्ट के पीछे-पीछे उसके कमरे में गए। उसने उन्हें बैठाकर एक अलमारी से स्पिरिट लैम्प और एलमोनियम की ट्रे निकाली। उसमें पानी भर, स्पिरिट लैम्प को जलाकर चढ़ा दिया। जब पानी

उबलने लगा, तब उसमें नकशा डुबो दिया । गरम पानी में डालते ही उसके छिपे अक्षर उभरने लगे । उसे मेज पर फैलाकर वह बोला :—"देखिए, अब नकशे की पूरी तस्वीर सामने आई है ।"

"क्या आप इसकी जाँच पहले कर चुके हैं ?"

"हाँ ।"

"तब आप इन बातों में सिद्ध–हस्त हैं ।"

"सिद्ध हस्त नहीं, कुछ प्रारंभिक ज्ञान है । आइए, देखिए । कागज के ठंडे होते ही अक्षर उड़ जाँयगें ।"

"यह गला नहीं ?"

"जी नहीं, यह न पानी में गल सकता है, और न अग्नि में झुलस सकता है ।"

"यह शायद किसी विशेष रीति से बनाया गया है ?"

"हाँ, देखिए, यह तिब्बत, अफगानिस्तान, लद्दाख, कश्मीर और भारत की उत्तरीय सीमा का नकशा है । यह कश्मीर का वह हिस्सा है जो पाकिस्तान के अधिकार में है ।"

"हाँ, यह बैंगनी रंग और अफगानिस्तान हरे रंग में दिखाया हुआ है ।"

"बाकी सारा नकशा जिसमें लद्दाख, काश्मीर, नैपाल, भूटान, नेफा और बिहार-बंगाल है, मोटी पीली रेखा से घिरे हैं ।"

"इसके बाद ये हलकी पीली लकीरें क्या बताती हैं ?"

"इन रेखाओं से यह अनुमान करना पड़ता है कि चीन की दृष्टि भारत के इन प्रान्तों पर है, यानी पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश की ओर उनका अभियान कुछ दिनों बाद होने वाला है ।"

"क्या पीली मोटी रेखाओं से यह मालूम होता है कि अभी तुरन्त इन पर आक्रमण की योजना बनाई गई है ?"

"आपका विचार ठीक है । चीन पहले भारत की उत्तरी सीमा पर अधिकार करने के पश्चात् समूचे उत्तरी भारत को हस्तगत करना चाहता है ।"

"और दक्षिण भारत !"

"शायद वह उसे भारतीयों के लिए छोड़ देना चाहता है। दक्षिण के प्रदेशों-आन्ध्र और केरल में कम्यूनिस्टों का जोर है, इसलिए वह प्रदेश भारतीय कम्यूनिस्टों को सौंप दिया जावेगा, जो उसके अधीन रह कर उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे।"

"और पाकिस्तान !"

"वह भी भारत का एक अंग है, इसलिए वह भी उनके अधिकार में लाया जायगा।"

"किन्तु अभी दोनों में बड़ी गाढ़ी मित्रता है।"

"यह उसी तरह दिखाऊ है, जैसे भारत को चीन ने अपना भाई बना कर संसार को चकित किया था।"

"आपका संकेत 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' के आन्दोलन की ओर है।"

"हाँ, वह भारत को धोखे में डालने की महज एक चाल थी, और उसमें उसे पूर्ण सफलता भी मिली। भारत उसकी दोस्ती में अपनी सुरक्षा नीति को भी भूल गया। उसने तिब्बत पर उसका पूर्ण अधिकार करवा दिया। ब्रिटिश शासकों ने बहुत पहले चीन के मानव बल को ध्यान में रख कर तिब्बत 'बफ़र स्टेट' अर्थात् अवरोधक देश बना कर अपना नियन्त्रण रखा था। तिब्बत पर अधिकार किए बिना चीन दक्षिण की ओर नहीं बढ़ सकता था, और यदि वह आगे बढ़ने का प्रयत्न करता भी तो उसको तिब्बत के पठार में रोका जा सकता था, क्योंकि चीन से लड़ने के लिए तिब्बत के अतिरिक्त कोई दूसरी उपयुक्त जगह नहीं है।"

"आपका विचार ठीक है।"

"आज उसी गलती का परिणाम भारत को भुगतना पड़ रहा है। राष्ट्रों में दोस्ती अपने-अपने स्वार्थों को सामने रख कर की जाती है। जरा भी स्वार्थ-घात होने से वह दोस्ती शीशे की तश्तरी की भाँति टूट कर टुकड़े-टुकड़े हो जाती है।"

"जी हां; कूटनीति इसी को कहते हैं।"

"बेशक, अपनी नीति के अन्तराल में अपनी स्वार्थ भावना छिपाना ही

आजकल कूटनीति है ।"

"जो होना था वह हो गया। अब आगे बताइये ।"

"देखिए, जिस प्रदेश को आकसाई चिन कहते हैं, वहाँ महीन अंकों में लिखा है, १९५४ फिर १९५६, उसके बाद १९५७-५८ और १९५९, १९६०, ९६६१ तथा १९६२ ।"

"जी हाँ, ये अंक वर्षों के द्योतक हैं ।"

"ये अंक स्पष्ट करते हैं चीन की उत्तरोत्तर प्रगति को, अथवा जिन-जिन जगहों पर ये अंक लिखे गये हैं, उनसे प्रकट होता है कि उक्त समय में उन्होंने कहाँ तक जमीन हथिया ली है ।

"जहाँ हलकी पीली रेखाएँ हैं, उसके पास लिखा है १९७०, इसका क्या अर्थ हो सकता है ।"

"सन् १९७० तक वे तमाम उत्तरी भारत को अपने शासनाधीन लाने का प्रयत्न करेंगे ।"

"किन्तु जहाँ बिहार और बंगाल हो सकते हैं, वहाँ १९६६ का अंक लिखा है ।"

"इससे यही समझना चाहिए कि इन प्रदेशों पर अधिकार करने की अन्तिम तिथि लिखी गई है ।"

"तिब्बत के दक्षिणी भाग में अनेक विन्दु क्या जाहिर करते हैं ?"

"मेरा अनुमान है कि ये स्थान हवाई अथवा फौजी अड्डों को सूचित करते हैं और पतली-पतली रेखाएँ उन मार्गों को बता रही हैं, जिन्हें चीन बनवा चुका है, या बनवा रहा है ।

"शायद यह सिक्किम और यह भूटान है, इनके बीच में चुम्बी घाटी है ।"

"हाँ, विदित यही होता है !"

"इस स्थान पर बहुत से चिन्ह बने हैं ।"

"यहाँ पर चीनी सामरिक तैयारी के केन्द्र बनावेंगे । अब इस अणुवीक्षक शीशे से देखिए तो आपको दो स्थान लिखे मिलेंगे ।"

"रमणीमोहन ने उस शीशे से देख कर कहा—"हाँ, 'फारी दजोंग' और

'तिगरी दज़ोंग' लिखा है। ये किसी तिब्बती नगर के नाम मालूम होते हैं।"

"मेरा ख्याल है, ये जेट बम वर्षक वायुयानों के अड्डे हैं।"

"इसके चारों ओर छोटी-छोटी लकीरें खिंची हुई हैं।"

"ये अवश्य छोटे-छोटे मार्ग हैं, जो बड़े मार्गों से अपना सम्बन्ध स्थापित करते हैं।"

"इस बिन्दु के समीप याटूंग, और उसके नीचे 'अटुंग' तथा चुम्बीथांग लिखा है।"

"शायद चीनियों ने इन्हें अपना हेड क्वार्टर बनाया है, क्योंकि अटुंग और चुम्बीथांग केवल ६ मील नथूला दर्रे से दूर हैं। यह नथूला दर्रा भारत में प्रवेश करने का एक मुख्य द्वार है।"

"भूटान के उत्तर में भी कुछ रेखाएँ बनी हैं।"

"और ज़रा आगे देखिए, वहाँ आप 'ग्यांत्से' और 'त्सेतचांग' के आदि नाम देखेंगे।"

"जी हाँ, वे यहाँ पर अंकित हैं।"

"इन सड़कों द्वारा भूटान पर आक्रमण हो सकता है।"

"बंगाल-बिहार के बीच की लाल बाण-रेखा से आप क्या अर्थ लगाते हैं। इस बाण-चिन्ह के समीप १९८० लिखा है।"

"यह चिन्ह चीनियों की महत्वाकांक्षा का अन्तिम चरण है; जो शायद १९८० या उसके आस-पास कार्यान्वित किया जायगा।"

"किन्तु जहाँ यह बाण रेखा समाप्त होती है, वहाँ बंगाल की खाड़ी या समुद्र है।"

"ज़रा ध्यान दीजिए तो वहाँ आपको धन चिन्ह दिखाई देंगे।"

"हाँ, चार पाँच धन चिन्ह यहाँ बने हैं, और शायद चिटागाँग या चटगांव है जहाँ केवल एक धन चिन्ह बना हुआ है।"

"बेशक, यह चिटागांग ही है, पाकिस्तान का बन्दरगाह।"

"धन चिन्हों का क्या मतलब निकाला जाय?"

"ये समुद्री अड्डे हैं, जहाँ चीनी अपना जहाजी-बेड़ा रखेंगे।"

"उनके जहाजी बेड़े यहाँ क्या करेंगे ?"

"वे शायद यहाँ से आगे मलय, इन्डोनेशिया के टापुओं और उसके आगे आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अमेरिका पर धावा बोलेंगे।"

"क्या वे समस्त संसार को अपने अधीन करना चाहते हैं ?"

"योजना तो उनकी यही है। सफलता उन्हें मिलती है या नहीं, यह दूसरी बात है।"

"संसार के लिए चीन उतना ही खतरनाक है, जितना महामारी और दुष्काल।"

"शायद उनसे भी अधिक। उसके तानाशाहों में हिटलर की महत्वाकांक्षा, तैमूर का सैनिक बल, और नैपोलियन की युद्ध-कला का ज्ञान है।"

"तब जिस प्रकार हिटलर के विरुद्ध समस्त संसार उठ खड़ा हुआ था, उसी प्रकार चीन के विरुद्ध भी संसार के राष्ट्रों को एकत्रित होना चाहिए।"

"आपका सुझाव ठीक है, नहीं तो चीनी अजदहा एक-एक कर सबको निगल जायगा।"

"यह बड़ी महत्वपूर्ण वस्तु आपके हाथ लगी ! अब मालूम हुआ कि मिस मिलर क्यों इतना बिगड़ रही थी।"

"वह कोई साधारण औरत नहीं है। बड़ी खौफनाक है। कोई ताज्जुब नहीं कि वह इसको हस्तगत करने के लिए मेरे ऊपर-आक्रमण करें।"

"अजी उसकी इतनी हिम्मत नहीं हो सकती।"

"आपने उसकी भोली सूरत देखी है। उस भोलेपन के परदे के पीछे वह कितनी भयंकर है, आपको नहीं मालूम।"

"आप तो उससे परिचित हैं !"

"हाँ, किसी हद तक ! यह वर्णसंकर है। इसका बाप अमेरिकन था, और माँ चीनी। लड़की होने से इसने अपनी माँ की कुटिलता ही वरासत में पाई है। बाप का एक गुण इसमें नहीं उतरा।"

"इस नकशे को इसने उसी तरह पढ़ा होगा, जैसे हम लोगों ने ?"

"सम्भव है, किन्तु यह छोटे किस्म की गुप्तचर है, जिसका काम ऐसी

चीजों को ठिकाने से पहुँचाना होता है।"

"यह भी पता लगाना चाहिए कि वह इसको कहाँ, किसके पास पहुँ-चाना चाहती थी।"

"यह मुश्किल है। जब तक मार्मिक यन्त्रणा नहीं दी जायगी, तब तक वह कबूलेगी नहीं, और उसका यहाँ कोई प्रबन्ध नहीं है।"

"क्यों अपना कमरा है ?"

"किन्तु यह होटेल है। जरा भी गड़बड़ हुआ कि पुलिस बुलाई जायगी, और फिर सब मसाला उन्हें सौंपना पड़ेगा, जो मैं नहीं चाहता।"

"क्यों ?"

"मैं अमेरिकन हूँ, और यह चीनियों के आगामी अभियान का खुलासा मानचित्र। तुरन्त अन्तर्राष्ट्रीय उलझनें सामने आ जाती हैं।"

"किन्तु अपनी सरकार को इसकी सूचना देना चाहिए।"

"उसके लिए कोई दूसरा उपाय करेंगे। अभी इसकी पुष्टि होना बाक़ी है। बिना पुष्टि किए कोई समाचार देना आतंक फैलाना समझा जायगा। चलिए, लंच का समय हो गया। खाने के कमरे में चलियेगा, या यहीं मँगवा लिया जाय।"

"आइये, मेरे कमरे में। हम वहीं भोजन करेंगे।" नकशा समेट कर सुरक्षित स्थान पर रख दीजिए।

"यहाँ नहीं रखूंगा, इसको आप अपने पास रखिए।"

"अच्छा, मैं खाना खाने के बाद अपने बैंक के लाकर में रख आऊँगा।"

"इसको लेकर हरगिज बाहर न जाइएगा। इसमें खतरा है।"

"क्या ?"

"सम्भव है मिलर अपने साथियों से मदद लेकर आपको गोली का शिकार बनवावे।"

"वही भय यहाँ भी तो है।"

"यहाँ उतना नहीं, जितना बाहर है। यहाँ वह चोरी करने के लिए आ सकती है, किन्तु कोई उपद्रव उठाने का साहस नहीं कर सकती।"

"इस बात पर हम लोग भोजन करते हुए विचार करेंगे। चलिए, मैं नकशा रखकर आता हूँ।"

रमणीमोहन अपने कमरे में चले आए।

२१

राणा वीरेन्द्रसिंह अभी पलंग पर लेटे करवटें बदल रहे थे कि उनके समीप रखे हुए टेलीफोन की घंटी बजने लगी। दो मिनट तक उधर ध्यान नहीं दिया, और करवटें बदस्तूर बदलते रहे। मदिरा की खुमारी से उनके शरीर के अंग-अंग दुख रहे थे। उनमें इतना साहस न था कि हाथ बढ़ाकर रिसीवर उठावें। प्रत्येक बार घन्टी बजने पर वह झल्ला उठते, किन्तु यह सोचकर कि बुलाने वाला निराश होकर स्वयं चुप हो जायगा; रिसीवर नहीं उठाते थे। टेलीफोन की घन्टी की आवाज सुनकर उनका मुंह लगा पुराना नौकर शेरबहादुरसिंह दौड़ता हुआ आया, और झाँककर देखने लगा कि राणा सो या जाग रहे हैं। राणा ने उसे देखकर झल्लाए स्वर में कहा—"तुझसे न-मालूम कितनी बार कहा कि फोन मेरे कमरे में मत रखाकर, लेकिन तू सुनता नहीं।"

शेरबहादुरसिंह ने उत्तर दिया—"सरकार ने ही कल शाम को हिदायत की थी कि फोन की मेज हुजूर के पलंग के पास रखी जाय।"

"अच्छा, क्या मैंने कहा था ?"

"मैं उसे अपने कमरे में रखता था कल हुक्म होने पर मैंने यहाँ मेज लगा दी।"

"ठीक है, ठीक है। देख कौन मनहूस सुबह-सुबह बात करने को उतावला है। अगर कोई जाना पहचाना न हो, तो कुछ बहाना बताकर टाल देना।"

शेरबहादुरसिंह ने रिसीवर उठाकर पूछा—"हलो, आप किससे बात करना चाहते हैं, और आपका नाम तथा काम क्या है ?"

उत्तर मिला—"क्या शेरबहादुर बोल रहा है। मेरी आवाज नहीं पहचानता। मैं मुश्ताक अली हूँ। राणा साहब अभी क्या सो रहे हैं ?"

शेर बहादुर ने रिसीवर को हथेली से ढाँकते हुए राणा से कहा—"हुजूर के दोस्त नवाबजादा मुश्ताक अली हैं। क्या जवाब दूं ?"

"ला ला इधर। देखूं क्या कहते हैं।"

राणा बातें करने लगे—"कहिये किबला, क्या हुआ है ?"

"अभी तक सो रहे हो, वाह ! मैं आपका इन्तिजार करते-करते थक गया, और हजरत अभी तक ख्वाबगाह में हैं। कल शाम को यह तय हुआ था कि आज शिकार पर चला जायगा।"

"अरे, यह मेरे ख्याल से बिल्कुल उतर गया था। कोई मुजायका नहीं, अभी आध घन्टे में हाजिर होता हूँ।"

"अब आप यह तकलीफ न फरमावें। मैं खुद शिकार के सामान से लैस होकर आ रहा हूँ। आप जरूरियात से फारिग हो लेवें तब तक।"

राणा ने रिसीवर रखा, और अँगड़ाई लेकर उठ खड़े हुए, और शेर-बहादुर से कहा—"गुस्लखाने में गरम पानी रख दिया है ?"

"जी हाँ, सरकार ! लेकिन अब शायद ठंडा हो गया हो।"

"मैं जब तक गुस्ल कर आऊँ, तब तक तू शिकार का सामान भूरे किट में सजाकर रख देना। अगर इस बीच नवाबजादा साहब तशरीफ़ ले आवें, तो इनको बड़े कमरे में बैठाना। उनके आने पर मैं कलेवा करूँगा, तैयार रखना।"

राणा शीघ्रता से चले गये, और शेरबहादुर आदेश पालन करने में जुट गया।

अभी वह शिकार का थैला सँभाल रहा था कि बँगले के फाटक के सामने नवाबजादा की मोटर हार्न बजाने लगी। माली ने दौड़कर फाटक खोला। आते ही शेरबहादुर को आवाज दी। वह थैला छोड़कर बाहर भागता हुआ आया, और अभिवादन कर कहा—"सरकार गुस्लखाने तशरीफ़ ले गए हैं, आप बड़े कमरे में तब तक तशरीफ़ रखें।"

मुश्ताक अली ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा—"रात को तेरे सरकार क्या सोये नहीं ?"

"करीब एक बजे रात को वह तशरीफ़ लाए थे, और बिना कुछ खाए-

पिए बिस्तर पर तशरीफ़ ले गए थे।"

"अब तू बहुत 'तशरीफ़-तशरीफ़' कहना सीख गया है।"

'हुजूर लोगों की खिदमत करने में सीखना ही पड़ता है।"

"देश में तेरे बीबी-बच्चे खैरियत से हैं ?"

"बीबी-बच्चे होते तो हुजूर को जानकारी कराता।"

"तू अभी तक एक्का बहादुर है ?"

"हुजूर, नेपाल में मेरे जैसे कितने ही एक्का बहादुर हैं।"

"क्या तुम लोग शादी नहीं करते ?"

"हुजूर, शादी तब हो जब रुपया हो !"

'क्या तुम लोगों को बीवी खरीदनी पड़ती है ?"

"जी हाँ, हुजूर कुछ न कुछ लड़की के बाप को देना पड़ता है।"

"राणा साहब से जिक्र किया था।"

"सरकार खुद वाकिफ हैं।"

"आज ही राणा से कहता हूँ कि वह तेरी शादी का खर्च बरदाश्त करें। उनका तू जाँनिसार नौकर है, तेरी परवरिश करना लाजिमी है।"

"सरकार को खुद ख्याल है। हुजूर से कोई जिक्र न करिएगा। अब हुक्म दीजिए हजूर के लिए नाश्ता हाजिर करूँ।"

कह कर वह शीघ्रता से चला गया। नवाबजादा सोफे पर बैठकर सामने की दीवाल पर लगे एक चित्र को देखने लगे। वह चित्र एक लम्बे रोआबदार दोहरे शरीर वाले व्यक्ति का था, जिस पर पुरानी शाही लिबास बहुत फ़बती थी। उसके चेहरे से बहादुरी टपक रही थी। आखें कुछ छोटी, लेकिन उनसे तेजस् फूट रहा था। नोकीली मूँछें और लम्बी दाढ़ी उसके दृढ़ पुरुषत्व का संकेत कर रही थी। पैरों में चूड़ीदार पैजामा और उस लिबास के मुताबिक सलीमशाही जूते न होकर अंग्रेजी लम्बे बूट थे। टाँगों के बीच नंगी तलवार दोनों हाथों से पकड़े वह सौम्य भाव में खड़ा था। उस चित्र में इतना आकर्षण था कि नवाबजादा बैठे न रह सके और समीप जाकर उसे देखने लगे। अपने जीवन में उन्होंने अनेक बहादुरों, सूरमाओं की तसवीरें देखी थीं, किन्तु

कशिश कभी महसूस नहीं की थी।

अभी वह चित्र देख रहे थे कि शिकारी पोशाक पहने राणा ने प्रवेश किया। उनकी पदचाप से नबाबजादा का ध्यान बँटा, और तुरन्त प्रश्न किया, "राणा, यह किस बहादुर जवांमर्द की तस्वीर है। वाह ! क्या रोबीला चेहरा, कैसी चमकीली आँखें, और कितनी ऊँची पेशानी है। शायद अभी हाल में ह इसे बनवा कर लगाया है। वाकई, बहुत खूबसूरत जवान है।"

राणा आत्माभिमान से मुस्कराते हुए बोले—"किबला, यह मेरे देश के उस महाबीर योद्धा का तैल चित्र है, जिन्होंने कई बार अंग्रेजों से लोहा लिया और उनके छक्के छुड़ाए थे।"

"बहादुरी चेहरे से टपक रही है। इन बुजुर्ग का नाम क्या था ?"

"बलभद्रसिंह थापा ! अगर आप इनकी बहादुरी के किस्से सुनें तो दंग रह जाएँ।"

"मेरे बुजुर्ग भी तलवार के धनी थे, लेकिन हमारे वालिद बुजुर्गवार ने पुश्तनी पेशा सिपाहगरी को छोड़ बनिया बक्काल का पेशा इख्तियार किया। हालाँकि इस पेशे में हमारी यह दूसरी पुश्त चल रही है, लेकिन खून अभी तक जोशीला है। उसकी रवानी में कोई फर्क नहीं आया।"

"जानता हूँ किबला ! जब आपको गुस्सा आता है, तब आप आपे से बाहर नजर आते हैं !"

"हाँ राणा, आप बजा फरमाते हैं। लेकिन आप अपने इन बुजुर्ग का किस्सा सुनाइए।"

"अगर इनकी बहादुरी के सब किस्से लिखे जाँय, तब एक मोटी किताब हो जाएगी।"

"फिर भी मुख्तसर में ही कुछ बयान कीजिए।"

"क्या शिकार का इरादा छोड़ दिया ?"

"अजी हटाओ भी ! परिन्दों का शिकार भी कोई शिकार है ?"

"आप तो सुबह से उसके लिए बेचैन हैं।"

"वक्त गुजारने का वह भी एक शग्ल है, लेकिन अब तबियत बदल गई।

मासूम परिन्दों को हलाक करने के बजाय, आपके बहादुर बुजुर्ग साहब का किस्सा ज्यादा दिलचस्प होगा।"

"पहले कुछ नाश्ता तो कर लिया जाय।"

"मैं तो घर से नाश्ता लेकर चला हूँ, आप कुछ ले लीजिए।"

"किबला, पिछले कई दिनों से आपने यह नया रुख इख्तियार किया है।"

"वह क्या ?"

"आपसे जब कभी अपने साथ नाश्ता लेने का इसरार करता हूँ, तब आप बड़ी बेरुखी से टाल देते हैं।"

"बूढ़ा हो रहा हूँ, इसलिए खाने-पीने में कुछ ज्यादती न हो जाए, इसका ख्याल रखना पड़ता है।"

"वह ख्याल मेरे गरीबखाने पर ज्यादा बढ़ जाता है !"

"वाह ! आप तो नाराज होने लगे। चलिए आपके साथ दुबारा नाश्ता ले लूंगा।"

"चलना कहाँ है, यहीं मँगवाता हूँ।"

"दुरुस्त, यहीं मँगवाइए। इन बुजुर्गों के रूबरू इनकी बहादुरी के किस्से सुनने में लुत्फ़ आएगा।"

राणा ने शेरबहादुर को वहीं कलेवा लाने का आदेश दिया।"

२२

राणा कलेवा करते हुए बोले—"नवाबजादा साहब हमारे इन बुजुर्ग का क़िस्सा जानने के लिए आपको इतिहास के पुराने पन्ने उलटने पड़ेंगे। लार्ड वेलेजली लगभग समग्र उत्तरी भारत को ब्रिटिश शासन के अधीन ले आया था। पंजाब और नैपाल केवल दो प्रदेश थे, जिन पर उनका अधिकार नहीं हुआ था। पंजाब महाराज रणजीतसिंह के आधिपत्य में था, और उन्होंने अपनी सेना का संगठन योरोपीय पद्धति से कर उसे इतना शक्तिशाली बना लिया था कि अंग्रेज खुलकर लड़ने का साहस न कर, मैत्री के इच्छुक थे, परन्तु नैपाल-तराई में पड़ा हुआ नवीन रणनीति से सर्वथा अपरिचित था।

सन् १८१३ में कम्पनी सरकार ने लार्ड मिन्टो को, उसकी शान्त नीति से असन्तुष्ट हो इंगलैण्ड बुला लिया, और उसके स्थान पर युद्ध-विलासी अर्ल आफ़ मोयरा जो भारतीय इतिहास में मार्क्विस आफ हेस्टिग्स के नाम से विख्यात है, गवर्नर जेनरल बनाकर भेजा। वह लार्ड वेलेजली के पदांकों का अनुसरण करता अपनी यौद्धिक योजनाएँ बनाने लगा।

उसका सर्वप्रथम प्रहार नैपाल पर हुआ। नैपाल का कोई सम्बन्ध भारतीय राजनीति से नहीं था, इसलिए उस पर आक्रमण करने के लिए उन्हें कोई बहाना निकालना आवश्यक था; और उन्हें मिल गया। नैपाल के अधिकार में ऐसा भूखण्ड था, जिसकी सीमा ब्रिटिश राज के अन्तर्गत गोरखपुर से मिलती थी। कुछ आरम्भिक बातचीत के बाद लार्ड हेस्टिग्स ने गोरखपुर के जिलाधीश को इस विवादग्रस्त भू खण्ड पर जबरिया अधिकार करने का आदेश दे दिया। यहीं से युद्ध का सूत्रपात होता है।

सन् १८१४ के नवम्बर मास की १४ तारीख को ब्रिटिश सरकार ने विधिवत युद्ध की घोषणा कर आक्रमण कर दिया।

"शायद यह आपको मालूम होगा कि हम नैपाली उदयपुर के राजवंश सिसोदियों की सन्तान हैं, और चौदहवी शताब्दि में इस इलाके को जीतकर बस गये थे। इस प्रकार हमारा खून विशुद्ध क्षत्रिय है। युद्धों के प्रति हमारी आसक्ति परम्परागत प्राकृतिक है। यद्यपि उस समय हमारे पास आधुनिक शस्त्रास्त्र नहीं थे, तथापि ऐसा शौर्य था जो दुश्मनों के छक्के छुड़ाता था। हिमालय ने उन्हें पत्थर का कलेजा, तराई में रहने वाले सिंहों का बल और साहस, तथा हाथियों की अडिगता प्रदान की थी। वे राजपूत थे ही, तलवार और बात के धनी थे; शत्रु के सामने झुकना नहीं उन्हें मारते हुए विजय करना या फिर मर जाना जानते थे।"

"वेशक राणा साहब, नैपाली जवानों की खुखरी की लड़ाई दुनियाँ में बेमिसाल है। आज तक कोई ताक़त उन्हें शिकस्त नहीं दे सकी। आप आगे बयान कीजिये।"

"जी हाँ, सुनिये। अंग्रेजी सेनाओं ने नैपाल को वशीभूत करने के लिए

पांच ओर से हमला बोल दिया, लेकिन नैपाली जवानों ने उन्हें गाजर-मूली की तरह काट गिराया। क़िबला, अगर आपको तबारीख से शौक हो तो मैं आपको कई किताबें अंग्रेजों की लिखी दूंगा, जिनमें उन्होंने मुक्त कंठ से स्वीकार किया है, नैपाली गोरखाओं की चमत्कारिक वीरता, और आज दिन भी वे अपनी फौज में उनको भरती करने के लिए उत्सुक रहते हैं। नैपाली वीरों की एक पलटन बावजूद उनके भारत से चले जाने के, अब भी अंग्रेजी फौज के लिए फ़ख्र का वायस है।

"जी हां, मैं बखूबी वाक़िफ हूं।"

"हमारी यह भारत भूमि जहाँ समस्त प्रकार के खनिज द्रव्यों, फल-फूलों और अन्नों की अक्षय भंडार है वहाँ अद्भुत शौर्य, तथा चमत्कारिक पराक्रम की भी खान है। पंजाब, हरियाना, उत्तर प्रदेश, राजपूताना, महाराष्ट्र कोचीन, केरल, मदरास, बुन्देलखण्ड, आन्ध्र, उड़ीसा, बिहार, बंगाल सभी प्रांतों के निवासी अनुपम वीर साहसी और दुर्घष पराक्रमी इतिहास के आदिकाल से उत्पन्न होते आए हैं, आज दिन हैं, तथा सदैव रहेंगे।"

"इसमें क्या शक ? अगर इनमें आपसी फूट न होती, तो इस मुल्क को कोई नाकत सर नहीं कर सकता। इतने पर भी कोई सलतनत बहुत अरसे तक अपनी हुकूमत कभी कायम नही रख सकी। अकबर से औरंगजेब तक; यानी सन् १५५६ से सन् १७०७ तक खानदान मुग़लिया की हुकूमत जरूर डेढ़ साल तक मुसलसिल कायम रही वरना उसके पहले कोई खानदान इतने अरसे तक राज नहीं कर सका।"

"और नैपाल तो किसी हुकूमत के जेरसाया आया ही नहीं।"

"जी हां, लेकिन अब इन बुजुर्ग का किस्सा बयान कीजिए।"

"नैपाल को कतई जीत लेने के लिए जो योजना बनी थी, उसके अनुसार एक देहरादून के मार्ग से आक्रमण करना भी था। इस आक्रामक सैनिक टुकड़ी में ब्रिटिश फौज के चुने हुए रण विशारद जैसे कर्नल मौबी और मेजर एलिस थे, और उसकी कमान मेजर जेनरल गिलस्पी कर रहा था। इस दिशा से नैपाल का प्रवेश द्वार कुलुंगा नामक एक छोटे गांव से था। कुलुंगा

का अधिपति नाहन के राजा अमर सिंह के भतीजे बलभद्र सिंह अर्थात् यही बुजुर्ग थे। कुलुंगा का किला देहरादून से लगभग चार मील 'नाला पानी' के समीप एक पहाड़ी चोटी पर बना था। वह एक मामूली गढ़ था, और चौकी की भाँति उसका उपयोग होता था। वह बहुत टूटी-फूटी हालत में था। बलभद्र सिंह जी ने उसकी मरम्मत करा कर वहीं अंग्रेजों से मोर्चा लेने की ठान ली।"

अंग्रेजी सेना जेनरल गिलस्पी की कमान में अग्रसर होती गई, और कुलुंगा घेर लिया गया। उस सैनिक टुकड़ी में चुने हुए ३००० ब्रिटिश सैनिक थे, जबकि कुलुंगा में कुल ६०० सिपाही और उनके बीबी बच्चे! विजय गर्व उन्मत्त ब्रिटिश कमाण्डर गिलस्पी ने बलभद्र सिंह के पास आत्म समर्पण करने का सन्देश भेजा। यदि उनके स्थान पर कोई अन्य होता, तो शायद वह अपनी हार निश्चित समझ कर आत्म-समर्पण कर देता, परन्तु इस बहादुर ने उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया। और प्रत्युत्तर दिया कि गोरखे जवान शत्रु को मारते हैं, या उनको मारते हुए मर जाते हैं, लेकिन आत्म-समर्पण हार कबूल करना नहीं जानते।"

"शाबाश, इसे बहादुरी कहते हैं। राणा साहब, आपके यह बुजुर्ग सचमुच बहादुरी थे।" नवाबजादा ने दाद दी।

"ऐसे वीर पुरुष ही देश का इतिहास बनाते हैं। संक्षेप में यह कि जेनरल गिलस्पी की सेना कुलुंगा दुर्ग को भूमिसात करने के लिए तोपों से प्रहार करने लगी। तोपों की गोलाबारी की आड़ में अंग्रेज सैनिक भी गोलियाँ बरसाते आगे बढ़े, परन्तु गोरखा वीरों ने उनकी दाल न गलने दी। उनकी एक गोली भी बेकार न जाती थी। किले के जो रक्षक अंग्रेजी सैनिकों द्वारा मारे जाते, उनके स्थान तुरन्त भर जाते। सिपाहियों को हथियार तथा भोजनादि पहुँचाने का काम उनके परिवार की नारियाँ अविराम गति से कर रही थी।"

नवाबजादा सहसा उछल कर बोल उठे—"माशा अल्लाह! यही हिन्दू औरतों की हकीकत है। तवारीख पुकार-पुकार कह रही है कि जब कभी मुल्क

पर आफत आई, तब तब यहाँ की औरतें अपने खाविंद के कन्धे से कन्धा भिड़ा कर उस मुहिम का सामना किया। मुल्क की आबरू रखने के लिए उन्होंने बड़ी से बड़ी कुर्बानीयाँ करना पसन्द किया, यहाँ तक कि वे जिन्दा चिताओं पर चढ़ कर जल मरी, लेकिन दुश्मन की हुकूमत मन्जूर नहीं की।"

"आप बजा फरमाते हैं किबला। इसी वजह से आज दिन भी हिन्दूस्तानी कौम जिन्दा है। किसी शायर को कहना ही पड़ा—"कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।"

"जहाँ औरतें तक कुर्बान होना जानती हैं, राणा साहब, वह कौम क्या कभी मर सकती है ?"

"जी हाँ, इसी मौजूदा चीनियों के हमले की मिसाल ले लीजिए। हर औरत, अमीर-गरीब, छोटी-बड़ी भारत के लिए अपने तन का जेवर खुशी-खुशी दे रही है, और यकीन रखिए कि अगर वक्त आया खुदा न ख्वास्ता, तो वे तलवार, हसिया, खुरपी, जो भी उन्हें नुकीला धारदार हथियार मिलेगा, उसी से वे दुश्मन से भिड़ जाएँगी। भाग कर जान बचाना उन्हें हरगिज नहीं सूझेगा।"

"बहुत दूर क्यों जाते हैं। मैं अपनी आँखों से आजादी की लड़ाई सन् १९२० से देखता आ रहा हूँ। औरतों ने मैदान नहीं छोड़ा, पुलिस के डण्डे खाती रहीं, लहू-लुहान हो गयीं, और संगीनों-बन्दूकों के मुकाबले में निहत्थी डटी रही। वाकई, जिस कौम में ऐसी बहादुर, जाँ-निसार औरतें जन्म लेती हैं, वह कभी मर नहीं सकती ? हाँ, किस्सा आगे बयान कीजिए।"

"जी हाँ, सुनिए ! जब कई दिनों तक मुहासिरा डाले हुए अंग्रेजी फौज कब्जा न कर सकी, तब उसके सेनापतियों के पैरों के नीचे से जमीन खिसकने लगी। उनकी अजेयता का कलंक लगने लगा। जेनरल गिलस्पी ने स्वयं कमान संभाली और सबसे आगे होकर चढ़ाई कर दी। गोरे चारो दिशाओं से किले की दीवार तक पहुँचने का प्रयत्न करने लगे, लेकिन गोरखा जवानों के अचूक निशाने उन्हें मौत की गोद में सुलाने लगे। अंग्रेजों के पैर उखड़ गये और मेजर जेनरल गिलस्पी और एलिस मारे गए। अब उन्हें विश्वास हो गया कि बिना

किला-तोड़ तोपों के वे कुलुंग का दुर्ग तोड़ नहीं सकेंगे। एक महीने से ज्यादा वे दुर्ग को घेरे, तोपों की आमद का इन्तिजार करते रहे। तोपों के आ जाने पर वे कुछ न कर सके। किले की दीवार का जो हिस्सा टूटता, वह आनन-फानन दुरुस्त कर लिया जाता। जरा ख्याल कीजिए, किबला, तोपों के गोलों की साया में गोरखे सिपाहियों का दीवाल बनाना और उनकी औरतों का मजदूरों की तरह चूना-पत्थर देना।"

"जिनके फौलाद के जिस्म और न डिगने वाली हिम्मत हो, वही ऐसा कर सकते हैं, राणा !"

"अब तक दुर्ग के रक्षकों की संख्या में बहुत भारी कमी हो चुकी थी, बजाय छः सौ के अब केवल अस्सी बाकी बचे। इसका सबसे बड़ा कारण था, पानी की कमी हो जाना। अंग्रेजों ने उस नाले को काट दिया था, जिससे किले में पानी पहुँचता था। उस वक्त भी उन्हें प्यासे मरना कुबूल था, लेकिन हार मन्जूर करना नहीं।"

"वाह राणा साहब, आप तो करबला का किस्सा दोहरा रहे हैं। जिस तरह यजीद के सिपाहियोंने नबी के नातियों और उनके कुनबे को प्यासों तड़पाकर मार डाला था, उसी तरह अंग्रेज सिपाहियों ने उनको मारने की ठान ली। क्या यह बुजुर्ग भी हसन और हुसैन की तरह शहीद हुए ?"

"नहीं, शहीद नहीं हुए, हालांकि कफन सर पर बाँधकर अपने मुट्ठी भर साथियों के साथ बलभद्रसिंह दुश्मनों से लड़ते शहीद होने के इरादे से निकले थे, लेकिन गोरे सिपाही ऐसे ठिठक गए, जैसे पत्थर के बुत हों। उनके लश्कर के बीचो-बीच से बहादुर बलभद्रसिंह मय साथियों के नंगी तलवारें घुमाते निकल गए, और नाले पर पहुँचकर सबने प्यास बुझाई, और सामने के जंगल में अन्तर्धान हो गए।"

"इसके बाद क्या हुआ ?"

"बलभद्रसिंह कुलुंगा से निकलकर जितगढ़ नामक दुर्ग में आश्रय लिया, लेकिन अंग्रेजी फौज फिर उनका पीछा करने की हिम्मत न कर सकी। इसी दरम्यान नैपाल से अंग्रेजों को सन्धि करने के लिए मजबूर होना पड़ा। सन्धि

के बाद बलभद्रसिंह महाराजा रणजीतसिंह की फौज में शामिल हो गए, और अफ़गान युद्ध में शहीद हुए। तबसे ब्रिटिश सरकार गोरखों की मुरीद हुई और आज दिन तक है। अंग्रेजों ने इन बुजुर्ग की यादगार में एक चबूतरा भी कुलुंगा में बनवाया, जो आज दिन भी मौजूद है।"

"वाकई, ऐसे बहादुर मरने के बाद भी जिन्दा रहते हैं। तवारीख उनका ही गुणगान करती है, जो मुल्क और क़ौम के लिए शहीद होते हैं। राणासाहब, आप मेरे लिए इनकी एक तसवीर बनवा देंवे। मैं उसे अपने ख्वाब-गाह में रखूँगा, जिससे सुबह होते ही इनका दीदार नसीब हो।"

"जरूर, मैं मुसव्विर को दूसरी तसवीर बनाने का हुक्म दे दूंगा। अब भी हम लोग शिकार पर चल सकते हैं। क्या इरादा है?"

"लाहौलवलाकूवत ! अब शिकार किया जाय इन चीनियों का, जो हमारे मुल्क पर धावा बोल रहे हैं।"

"वाह किबला, आपने मेरे मुंह के अलफाज निकाल लिए। बस अब यही मेरा इरादा हो रहा है कि अपने बुजुर्गों की तरह मैं भी दो-दो हाथ दिखाऊँ। अभी तक उम्र ऐयाशी में कटी, अब मैदान-ए-जंग में गुजारने की ख्वाहिश हो रही है।"

"मैं तो बूढ़ा हुआ। जंग में कुछ कर नहीं सकता। आप फौजी तालीम ले चुके हैं। बखूबी मुल्क के दुश्मनों के दाँत खट्टे कर सकते हैं।"

"जी हाँ, मैं यूनीवर्सिटी में एन. सी. सी. की ट्रेनिंग ले चुका हूँ।"

"मैं भी अपने लड़कों को इस जंग में शामिल होने की सलाह दूंगा।"

"उनको तो मैदान में उतरना ही चाहिए। घर से एक जवान जरूर इस जंग में शामिल होना चाहिए, क्योंकि यह कौमी जंग है। राजा-महाराजाओं की जंग नहीं बल्कि जनसाधारण की है, क्योंकि मुल्क में हुकूमत हममें से हर एक अदना-आला की है। जम्हूरियत के यही मानी हैं—सब एक साथ मेहनत करे, सब उसके फल भोगे, और सब मिलकर हर एक मुश्किल का सामना करें।"

"बेशक, बेशक। अच्छा राणा, अब इजाजत दीजिए। दोपहर

होने आई।"

"आज यहीं खाना खाकर आराम करिए। तीसरे पहर हम लोग कहीं घूमने चलेंगे।"

"हाँ, उन शरीफजादे की दावत हम दोनों ने मन्जूर कर ली है। तीसरे पहर मैं खुद आकर आपको बुला लूंगा। कुछ जरूरी खतों का जवाब देना है, इसलिए घर जाने की इजाजत दीजिए।"

राणा के आग्रह के बावजूद नवाब साहब रुके नहीं, तीसरे पहर आने का वादा कर चले गए।

२३

मेजर कुलदीपसिंह फ्रन्ट पर जाने के लिए तैयार हो रहे थे। उनकी पत्नी प्रकाश कौर अथवा लूंग मुंह फुलाए एक ओर बैठी थी। मेजर सिंह बार-बार उसे देखते, और जब उन्होंने उसकी आँखों से आँसुओं की धार बहती देखा वह अधीर हो उठे, और उसके समीप बैठते हुए बोले—"प्रकाश, तुम्हें इतना अधीर न होना चाहिए।"

प्रकाश ने कोई उत्तर नहीं दिया, बल्कि उसके आँसू वेग से बहने लगे।

मेजर ने उसकी पीठ सहलाते हुए कहा—"तुम एक सैनिक की पत्नी हो। तुम्हें इस प्रकार दिल खोना शोभा नहीं देता।"

प्रकाश कौर सान्त्वना पाकर फूट पड़ी। वह ज्यों-ज्यों रूमाल से आँसू को पोंछती, त्यों-त्यों वे निकलने में तेजी पकड़ने लगते। जब उसकी रुलाई किसी भाँति न थमी, तब मेजर ने कहा—"अगर तुम्हारी रुलाई इसी भाँति जारी रही, तब मुझे नौकरी छोड़कर इस्तीफ़ा देना पड़ेगा।"

प्रकाश कौर ने अवरुद्ध कंठ से पूछा—"क्या तुम्हारा इस्तीफा मन्जूर हो जायगा।"

"इस्तीफा मन्जूर न होने पर भगोड़ा बनना पड़ेगा।"

"किन्तु उस प्रकार भी तो प्राण नहीं बचेंगे। वारंट निकलेगा, पकड़े

जाने पर कोर्ट मार्शल होगा, और सजा होगी।"

"इसके बाद कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रहूँगा। बुजुर्गों की कमाई पानी में बह जायगी, और खान्दान अहलूवालिया का मैं कलंक का टीका बनूंगा।"

"मैं कब मना करती हूँ, कि तुम लड़ाई पर न जाओ, और रुसवाई उठाओ।"

"मना भी नहीं करती, और इस तरह बेजार भी हो रही हो।"

"क्या करूँ, दिल नहीं मानता, मैं तुमसे अलग होकर जिन्दा नहीं रह सकती।"

"लेकिन तुम साथ चल भी नहीं सकती।"

"यही मुझे मन्जूर नहीं !"

"क्या मतलब ?"

"मैं तुम्हारे साथ चलूंगी।"

"रणक्षेत्र में !"

"रणक्षेत्र में, या जहाँ कहीं तुम जा रहे हो।"

"यह तुम जानती हो कि मैं नेफ़ा जा रहा हूँ, जहाँ दुश्मन हमला कर रहे हैं।"

"मैं भी नेफा चलूंगी। वहाँ से मेरी जन्मभूमि बहुत नजदीक है। तुम्हारे साथ घर भी देख आऊँगी।"

"कैसी बच्चों जैसी बातें करती हो। तुम्हारा अब घर कहाँ बचा होगा? वह अब चीनियों का तबेला या ऐसा ही कुछ बना होगा।"

"पास पड़ोस वाले तो देखने को मिलेंगे।"

"प्रकाश, वाकई, तुम अब बिलकुल पागल हो गई हो। तुम क्या उन किस्सों को भूल गई जिनमें चीनियों के काले कारनामों को बयान करती थी।"

"मैं एक भी नहीं भूली, लेकिन इन्सान को अपना वतन कितना प्यारा होता है, इससे इनकार नहीं कर सकते।"

"अब तुम्हारा वतन चीनियों का हो गया है। अव्वल तो तुम वहाँ

किसी तरह पहुँच नहीं सकती और शायद हथेली पर जान लेकर दुर्गम पहाड़ों को लाँघती, जंगलों में भटकती, लहू-लुहान पहुँच भी जाओ—जो मौजूदा फिजा में बिल्कुल नामुमकिन है, तब लौट नहीं सकती।"

"तुमको छोड़कर अकेले नही जाऊँगी।"

"मेरे साथ चलने का सवाल ही नही उठता। मैं चीनियों से लड़ने जा रहा हूँ कि तुम्हारे मायके।"

प्रकाश कौर पुनः रोने लगी। मेजर ने पूछा—"अब क्यों रोने लगी ?"

"मेरा मायका होता, तो क्या इस तरह ताना देते।"

"मायका नहीं है, लेकिन मायका देखने की जिद व हविस तो है।"

"उफ़ ! मैं जिद कहाँ करती हूँ। निगोड़े आँसू थमते नहीं। मैं क्या करूँ ? मायका, अगर गरीब, उजड़ा भी होता तब वहाँ तुम्हरे बियोग के दिन काट लेती।"

"जब नहीं है, तब उसका रंज करना बे सूद है।"

"लेकिन तुम ही बताओ कि मैं कैसे अपने दिन काटूंगी ?"

"क्यों मिसेज रिपुदमनसिंह यहीं रहेंगी, जब ज्यादा दिलगीरी हो तब वहाँ चली जाना।"

"उस खबीस का नाम न लो।"

"जिसने तुम्हें पाल-पोसकर बड़ा किया, शादी की, दहेज दिया, उसे खबीस कहती हो ?"

"पाला-पोसा जरूर लेकिन सेंत-मेंत में नहीं। मेरा बाप अपनी सारी कमाई उसी को सौंप गया था। और जो दहेज की बात कहते हो, उसने उसका एक फीसदी मुश्किल से दिया है।"

"यह नई बात तुम बता रही हो। इसके पहले कभी जिक्र नहीं किया।"

"जो हाथ से निकल गया, और जिसका पाना नामुमकिन है, उसका गिला फिजूल है। उसने जो तकलीफें मुझे मासूम, और यतीम जानकर दी हैं, उन्हें मेरा दिल ही जानता है। दिल में इतने फफोले उभरे हैं कि जरा छू जाने से वे कसकने लगते हैं।"

"अजीब हैरानी है, अजीब मुसीबत का सामना है।"

"हैरानी, मुसीबत की जड़ मैं हूँ। मुझे जहर पिला दो, सब झगड़ा पाक हो जाय।"

"अब यह रट पकड़ा ?"

"गोया मैं झूठ-मूठ रो रही हूँ। मेरा दिल चाक कर देखो, वहाँ किसकी मूरत छिपी है।"

"उफ! मैं तो तुमसे हार गया।"

"हारने-जीतने का सवाल नहीं है, मैं तुम्हारे बिना यहाँ अकेले हरगिज नहीं रहूँगी।"

"लेकिन मैं कहीं सैर-सपाटे के लिए नहीं, लड़ने के लिए जा रहा हूँ।"

"मैं भी चीनियों से लड़ूँगी। अपने बाप का बदला चुकाऊँगी।"

"कहा तो तुम आज अपने आपे में नहीं हो।"

"अपने आपे में कैसे रह सकती हूँ, मेरे सुहाग का सवाल है।"

"यहाँ रहने से सुहाग चला जायगा, और साथ में चलने से बचा रहेगा?"

"वह भगवान के हाथ में है। खुदा न ख्वास्ता कोई नागहानी हो गई, तो साथ रहकर कुछ मदद करूँगी।"

"बन्दूकों और तोपों के मुकाबले तुम क्या मदद कर सकती हो ? मेरे लिए एक बोझ जरूर बन जाओगी।"

"कहती हूँ कि जहर खिलाकर उस बोझ को दूर कर दो।"

"फिर वही बात।"

"चाहे जो हो, मैं हरगिज तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूँगी। छाया की तरह तुम्हारे पीछे लगी रहूँगी।"

"या चुड़ैल की तरह।" कहते-कहते मेजर को हँसी आ गई।

"चुड़ैल कहो, प्रेतनी कहो, जो चाहो कहो, लेकिन मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती।"

मेजर हार कर चुप हो गये। प्रकाश कौर फफकती रही।

थोड़ी देर बाद मेजर ने उठते हुए कहा—"मान जाओ मेरी जान,

रुखसत के वक्त बद शगूनी मत करो । खुशी-खुशी बिदा दो ।"

"तुम मुझे साथ क्यों नहीं ले चलते । अंग्रेज फौजी अफसर अपनी मेमों को कब अकेले छोड़ते थे ?"

"लड़ाई के मैदान में उन्हें हरगिज नहीं ले जाते थे । यह गलत खबर किसने दी ?"

"मैं क्या इतना भी नहीं जानती ? अच्छा, मेरे दिमाग ने एक तरकीब ढूंढ निकाली है ।"

"वह क्या ?"

"यह कि मैं तुम्हारे साथ नहीं, तुमसे अलग रहकर तुम्हारी गाड़ी में मुसाफिर की तरह सफर करूंगी ।"

"अरे वह स्पेशल ट्रेन है । उसमें फौजियों के अलावा कोई दूसरा नहीं जा सकता ।"

"क्या गार्ड से कहकर उसके डिब्बे में नहीं बैठा सकते ?"

"जिसमें वह बेचारा भी जान से हाथ धोये ।"

"क्या यह सड़ा-सा काम इतने जान-जोखिम का है ?"

"बेचारे पर फरारी इन्सान का मुकद्दमा कायम हो जायगा ।"

"तुम शहादत दे देना कि उसका कोई लगाव इन्सान फरारी से नहीं है, और मैं भी कह दूंगी कि मैं अपनी मरजी से जा रही हूँ । हम दोनों की शहादत से उस पर कोई आँच नहीं आ सकती ।"

"लोग सच कहते हैं कि खुदगर्जी इन्सान को हैवान बना देती है ।"

"अच्छा मैं हैवान ही सही ।"

"लेकिन ज़िद न छोड़ोगी ।"

"अच्छा, सुनो एक दूसरी तरकीब भी है ।"

"वह क्या ?"

"अगर उस गाड़ी में जिसमें तुम जा रहे हो, बैठाकर नहीं ले जा सकते, तब किसी दूसरी सवारी गाड़ी से वहाँ आजाऊँ, तब कैसा रहेगा ? वहाँ से तुम्हारी फौज के पीछे या साथ चलूंगी ।"

"तब तुम तेजपुर तक पहुँच जाओगी, लेकिन आगे क्या करोगी ? हाड़ों और जंगलों को कैसे अकेले पार करोगी ?"

"मैं पहाड़ों और जंगलों में पली हूँ। तिब्बती भाषा बखूबी जानती हूँ, गौर वहाँ के लोगों से पूछती पता लगाती तुम्हारे कैम्प में पहुँच जाऊँगी।"

"कहना बहुत आसान है, करना टेढ़ी खीर है, बल्कि नामुमकिन।"

"तुम मेरा भी हौसला देखो। न-पहुँचकर दिखा दूँ, तब कहना।"

"मान लो किसी तरह भटकती, ठोकरें खाती पहुँच भी गई, तो क्या हासिल होगा ?"

"अपने खाविंद के साथ लड़ाई की सेज भी फूलों की सेज है।"

"लाडो, मैं तुमसे हार गया, जो चाहो करो, सिर्फ मुझे रुसवा न करना।"

"देखना वहाँ मैं तुम्हारी वह खिदमत करूँगी, जो कोई नहीं कर सकता।"

"तुम मन के लड्डू खाना खूब जानती हो। अगर तुमने कहीं कुछ कर उठाया, तब तुमसे फिर मुलाकात नहीं होगी। या तुम मरोगी, या हम दोनों।"

"ऐसी बद-शगुनी की बात मुँह से न निकालो। न तुम्हें कुछ होगा, और न मेरी जान पर कोई आजाब आयेगा। तुम इजाजत भर दे दो, फिर मैं सब संभाल लूंगी।"

मेजर ने अनुभव किया कि बहुत सस्ते छूट रहे हैं, और केवल स्वीकृति दे देने से यह बला टल जायगी, मुस्कराते हुए कहा—"अच्छा इजाजत है।"

"झूठ न समझना, मैं वहाँ आ जाऊँगी।"

"लेकिन मेरा पीछा न पकड़ना।"

"नहीं, तुम्हारे साथ न चलूंगी, तुम्हारे जाने के बाद मैं यहाँ से चलूंगी, और ढूंढ़ते-ढूंढ़ते तुम्हारे कदमों में हाजिर हो जाऊँगी।"

"बेशक, अगर आ सको तो आ जाना, लेकिन एक बात का वादा भी करो।"

"वह क्या ?"

"यह कि अगर रास्ते में एक काँटा भी चुभ गया तो तुम उसी जगह से वापस लौट पड़ोगी।"

"मन्जूर है।"

"क्यों नादानी करती हो? अकेले तुम्हारा पहुँचना ना-मुमकिन है। रास्ते में मर जाओगी।"

"अपने प्रियतम के चरणों में यह जान सदके हो तो फिर कौन सी हविस बाकी रह जाती है।"

"लेकिन मेरे लिए यह सबसे बड़ा क़हर होगा।"

"जो इस वक्त तुम्हारी सबसे बड़ी मुसीबत है, उससे नजात मिल जायगी।"

"देखो प्रकाश, दिल चाक मत करो। तुम नहीं जानती कि मेरे दिल पर क्या गुजर रही है।"

"जानती हूँ, तभी तो तुम्हारा दामन छोड़ना नहीं चाहती। जितनी मुहब्बत आपके दिल में है, उससे कहीं ज्यादा मेरे दिल में है। तुमतो मुझे अकेली, बेसहारे छोड़ कर जा भी सकते हो, मगर मैं तुम्हारे बिना एक पल भी गुजार नहीं सकती।"

"अच्छा जो दिल चाहे, वह करना। मैं जरा कर्नल साहब से मिलने जा रहा हूँ, कुछ जरूरी मशविरा करना है। घण्टे दो घन्टे में आ जाऊँगा।"

"शौक से जाइए, अब मुझे कोई शिकायत नहीं है। मैं भी अब सफर का सामान बाँधती हूँ।"

मेजर साहब बिना कुछ उत्तर दिए उदास चले गये।

प्रकाश ने सबसे पहले सदर दरवाजा बन्द किया, फिर बैठक में आई, और टेलीफोन में मिसेज रिपुदमनसिंह का नम्बर मिलाने लगी। उधर घण्टी बजने की आवाज आने लगी। थोड़ी देर बाद दूसरी ओर से आवाज आई, "हलो कौन है?"

"कौन मिनचू? मैडम कहाँ है?"

"यहीं है, मैं उनको रिसीवर दे रही हूँ।"

"मैडम का कण्ठ-स्वर सुनाई दिया—"कौन, लूंग है ?"

"मैडम, मैं लूंग बोल रही हूँ। आपको यह बताना चाहती हूँ कि मैं भी मेजर के साथ जा रही हूँ।"

"तुम कहती थी कि वह किसी तरह राजी नहीं होता।"

"आज भी हीले हवाले करता था; लेकिन मिर्चों के सफूफ बार-बार आंखों से लगाती रही जिससे आँसुओं की झड़ी बँध गई। उससे वह बहुत बेज़ार हुआ, और मैं यही चाहती थी।"

"बहुत ठीक ! तुम्हारे आंसुओं के सामने उसे घुटने टेकने पड़े ?"

"हाँ, मैडम बड़ा मजा रहा। अगर उस वक्त मेरी कला देखती, तो हँसते-हँसते लोटन कबूतर हो जातीं। मेरी और उसकी बहुत चोंचें लड़ी, अन्त में हार कर उसे कहना पड़ा कि तुम अगर वहाँ आ सको तो आ जाना, मेरी इजाज़त है।"

"साथ चलने की इजाजत नहीं मिली ?"

"उससे क्या फर्क पड़ता है। मैं तेजपुर पहुँचकर अपने साथियों को ढूंढूंगी फिर उनके साथ उसके कैम्प में पहुँच जाऊँगी।"

"हाँ, तेजपुर के आगे तो हमारा इलाका है, वहाँ तुम्हें कोई दिक्कत न होगी। वहाँ चारो ओर हमारे एजेन्ट घूम रहे हैं। कुछ हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट भी आस-पास के क्षेत्रों में पहुँच गए हैं, मौका आने पर उनसे भी मदद ले सकती हो।"

"मेरा सुझाव है कि कलकत्ता और कलिपोंग सूचना भेज देवें ताकि वहाँ सब प्रबन्ध हो जाय।"

"तुम बेफिक्र रहो। मैं सब मुनासिब इन्तिजाम कर दूंगी। लूंग यह तुम्हारी सबसे बड़ी फतेह के लिए मेरी बधाई स्वीकार करो।"

"मैडम आपका आशीर्वाद चाहिए !" अपने साथ ले जाने के लिए कुछ मुख्तसर सा सामान बांधने जा रही हूँ।"

"जाओ और कामयाब हो। चीनी अजदहा तुम्हारी कारगुजारी देखने के लिए उत्सुक है। क्या तुम एक बार यहाँ आओगी।"

"जरूर, मेजर को विदा करके आपके पास आऊँगी।"

"बहुत ठीक! मैं तुमसे बहुत खुश हूँ।" मिसेज रिपुदमनसिंह ने टेलीफोन का सम्बन्ध काट दिया।

उधर प्रकाश कौर प्रसन्नता से फिरकी की भाँति नाचने लगी।

२४

'अलका' में उस दिन सन्नाटा छाया था। सर्वत्र मरघट की शान्ति थी। नौकर-चाकर सब सहमे हुए एक दूसरे से आँख चुराते घूम रहे थे। वस्तुतः वे गूंगे बहिरे नहीं थे, परन्तु इतने कठोर अनुशासन में बँधे थे कि वे दूसरों की निगाहों में गूंगे बहिरे प्रतीत होते थे। मिसेज रिपुदमनसिंह की सहज गम्भीरता में आशंका का रंग चढ़ा हुआ था, और उनकी आवाज कुछ अधिक धीमी थी। मिनचू भी अपने कमरे में गुमसुम बैठी थी। उसके समीप मिस मिलर भय-विह्वल, एक अंग्रेजी मासिक पत्र पढ़कर अपनी वर्तमान आशंका दूर करने के प्रयत्न में थी, परन्तु उसका हृदय पीपल के पत्ते की भाँति काँप रहा था। उस दिन सहसा चीन के गुप्तचर विभाग के सर्वोच्च अधिकारी काउ-चो दिल्ली अपने कर्मचारियों की कारगुजारी का निरीक्षण करने और आगामी योजना बनाने के लिए चीनी दूतावास आया था। उसने फोन द्वारा अपने आगमन की सूचना मिसेज रिपुदमनसिंह को दे रखी थी, और वह किसी समय 'अलका' में आ सकता था। अपने कागज-पत्रों को मेज पर सिलसिलेवार लगाए वह बड़ी उद्विग्नता से उसके आगमन की प्रतीक्षा कर रही थी।

सहसा टेलीफोन की घंटी बजने लगी। रिसीवर उठाकर कहा—"हलो, आप किसको चाहते हैं। आपका शुभ नाम?"

"मैं नैयर बोल रहा हूँ। आप मिसेज सिंह को बुला दीजिए।"

"मैं बोल रही हूँ, नैयर साहब? कहिए।"

"अरे आपकी आवाज बदली हुई क्यों है, क्या जुकाम हो गया है।"

"नहीं, जुकाम नहीं, गले में खराश पड़ गए हैं। कहिए, क्या समाचार है?"

"तभी आपकी आवाज भारी हो रही है। कोई खास बात नहीं है। क्या शाम को कोई 'शग़ल' रहेगा ? आज शनिवार की रात्रि है—जिसे दुनियाँ सुनहली रात कहती है।"

"आज मेरी तबियत खराब है, इसलिए मजबूरी है। अगले शनिवार को बहुत दिलचस्प प्रोग्राम का इन्तिजाम करूँगी।

"मैं जानता था कि आजकल आप बेरुखी अख्तियार किए हैं। कुछ पल्ले नहीं पड़ेगा, लेकिन सन्तोष भाई की जिद पर फोन करना पड़ा।"

"वाह, चोर उल्टा कोतवाल को डाँटे। न-मालूम कितने दिनों से आप साहबान के दर्शन नहीं हुए। फोन कई बार मिलाया, लेकिन मिला नहीं। मैं भी इधर बीमार थी, इसलिए खुद हाजिर होने से महरूम रही।"

"इधर काम ज्यादा था। चीनियों ने नाकों दम कर रखा है।"

"ये मरे, न खुद आराम से बैठते हैं, न दूसरों को बैठने देते हैं।"

"अब आयन्दा अगर सर उठायेंगे, तब मुंह की खाएँगे।"

"क्या कोई नई बात हुई ? हमारी तरफ से भी तो तैयारी हो रही है।"

"अब मुलाकात होगी, तब खुलासा हाल बताऊँगा।"

"आज इन्तिजाम तो हो जाता, लेकिन लड़कियाँ सब बाहर चली गई हैं। मौसम बदलने से उनकी तबियत भी खराब हो गई है। अच्छा, कल यदि कोई माकूल इन्तिजाम हो गया, तब फोन करूँगी।"

"कल रविवार है। कुछ दोस्तों के साथ ओखला पिकनिक पर जा रहा हूँ।"

"सोमवार को सही।"

"उस दिन शाम को कैबिनेट की मीटिंग है। जरूरी कागजात लिए हाजिर रहना पड़ेगा।"

"उसके अगले दिन।"

"वह भी इंगेज्ड है—एक मिनट की भी फुरसत नहीं मिलेगी।"

"तब फिर कैसे सहायता कर सकती हूँ ?"

"खाली दिन तो सिर्फ आज ही है। हम दोनों ने दूसरे सब इंगेजमेन्ट्स

रद्द कर दिए थे, लेकिन मायूस होकर अब किसी दूसरी जगह रात बिताना पड़ेगा।"

इसी समय काउ-चो ने प्रवेश किया। मिसेज सिंह ने उसे देखते ही फोन का सम्बन्ध काट दिया, और उसके स्वागत के लिए उठ खड़ी हुई। उधर नैयर सहसा आलाप रुक जाने से सन्तोष की ओर देखकर हँसने लगे।

काउ-चो ने कमरे का निरीक्षण उड़ती दृष्टि से किया, और मौन बैठकर उसे घूरने लगा। मिसेज रिपुदमनसिंह का आमालनामा बहुत साफ-सुथरा था, और अभी तक उसकी कारगुजारी की प्रशंसा ही हुई थी; फिर भी वह काउ-चो से दृष्टि नहीं मिला सकी। उसका हृदय कांप रहा था, और उसकी चितवन भया विह्वल थी।

थोड़ी देर मौन रहकर काउ–चो ने गम्भीर स्वर में पूछा—"किससे बात कर रही थी ?"

"भारतीय प्रतिरक्षा विभाग के एक अफसर से।"

"उसका नाम ?"

"नैयर नाम से वह विख्यात है।"

"जानता हूँ। इससे बहुत महत्वपूर्ण गोपनीय भेद मिलते होंगे।"

"हाँ। जो कुछ मालूम होता था, उसे मैं बराबर हेड क्वार्टर को सूचित करती थी।"

"हाँ मालूम है। ताजी रिपोर्ट क्या है ?"

"हमारे इस प्रारम्भिक परीक्षण से भारतीय सजग हो गए हैं। लद्दाख और नेफा क्षेत्रों में कुमुक भेजी जा रही है।"

"उनकी संख्या कितनी है ? दो–तीन डिवीजन सेना भेजी गई होगी ?"

"अभी समाचार इकट्ठा कर रही हूँ। लेकिन अभी तक जितना मालूम हुआ है, उससे काफी तैयारी मालूम पड़ती है।"

"बस इससे ज्यादा नहीं हो सकती, क्योंकि भारतीय फौज का सबसे बड़ा हिस्सा पाकिस्तान की सीमा पर लगा हुआ है।"

"तुम इसी बूते पर गुप्तचरी करती हो। पाकिस्तानी सीमा पर लगी

फौज का एक बड़ा हिस्सा हटा लिया गया है।"

"अभी यह समाचार नहीं मिला।

"अब देखता हूँ कि तुम अपना काम करने में असमर्थ हो रही हो। ऐयाशी के खेलों में फँस गई हो।"

"आप हरगिज ऐसा न सोचें। मुझे अभी तक यही मालूम हुआ है कि दक्षिण और राजपूताना की सेनायें बुलाई गई हैं। आज नैयर से शायद कुछ ज्यादा हाल मिलता, लेकिन उसे आने से मनाकर दिया।"

"इतने जरूरी आदमी को बुलाने से क्यों इन्कार कर दिया?"

"आप मुआयने के लिए आए हैं, इसलिए सब प्रोग्राम रद्द कर दिए हैं।"

"यह तुम्हारी सबसे बड़ी बेवकूफी है। ऐसा बेश कीमत मौका हाथ से निकाल दिया। जानती हो, काम पहले है, और आवभगत बाद में। मैं भी जरा तुम्हारी लड़कियों की कारगुजारी नजदीक से देखता।"

"आपकी नाराजी के ख्याल से हिम्मत नहीं हुई।"

"इसी काम के लिए तुम भेजी गई हो। तुम्हारा लाखों रुपयों का खर्च इतने मुश्किल दिनों में भी चीन बरदाश्त कर रहा है, और तुम गाफिल हो।" मिसेज मौन रही।

"उसको जल्द से जल्द बुलाओ। मैं यही सब जानने के लिए आया हूँ। अभी जो फौजी कार्रवाई हमने की है, वह केवल परीक्षात्मक थी। हमला बाकायदा अब इसी मास को १४–१५ तारीख को होने जा रहा है। उसके पहले हमें सही आंकड़े मिलने चाहिए।"

"कोशिश करूँगी, नैयर मंगल तक खाली नहीं है।"

"और जब वह आने के लिए आग्रह कर रहा था, तब तुमने उसे इंकार कर दिया। क्या भूल गई कि गुप्तचरी में समय बहुमूल्य है? यदि मैं तुम्हारे स्थान पर होता तब ऐसा सुनहला मौका हाथ से हरगिज न जाने देता। अब अगर उसका मन इन तीन-चार दिनों में बदल गया, तब तुम क्या करोगी?"

"मिसेज सिंह निरुत्तर बैठी रही ।"

"जानती हो, चीनी अजदहा कभी किसी को माफ नहीं करता । जब मेरे सामने ऐसी-ऐसी भूलें हो रही हैं, तब परोक्ष में क्या होता होगा, उसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है ?"

"अब तो गलती हो गई । मैं इतनी दूर तक सोच नहीं सकी थी ।"

"इसी बुद्धि पर तुम फूलती थी । ताई-ची कहाँ है ?"

"यहीं मौजूद है, मिनचू के कमरे में होगी । बुलाऊँ ?"

"हाँ, उसकी रिपोर्ट सुनूं ।"

मिसेज सिंह उठकर जाने लगी । काऊ-चो ने आदेश दिया—"तुम यहीं बैठो, क्या नौकरों को भी हटा दिया है ?"

"जी नहीं, सब मौजूद हैं ।"

"किसी के जरिये ताई-ची को हाजिर करो ।"

मिसेज सिंह ने घन्टी बजाई । एक नौकर के आने पर मिस मिलर को बुलाने का आदेश दिया । वे दोनों चुपचाप उसकी प्रतीक्षा करने लगे ।

ताई-ची अर्थात् मिस मिलर धड़कते कलेजे से आकर सामने खड़ी हो गई । काउ-चो ने उसे सिर से पैर तक वक्र दृष्टि से देखकर पूछा—"वह नकशा कहाँ है, जो तुम कालिम्पोंग से लाई थी ।"

नकशे के सम्बन्ध में पहला प्रश्न होगा, इसका उसे गुमान नहीं था । हजार कोशिश करने पर भी वह थर-थर कांपने लगी । यद्यपि उसने उसके सम्बन्ध में कई बहाने सोच रखे थे, तथापि इस समय उसे एक भी याद नहीं आ रहा था । वह भौचक्की, मूर्ति के समान मौन खड़ी रही ।"

काउ-चो ने मिसेज सिंह से पूछा—"क्या यह बहरी हो गई ?"

मिसेज सिंह को कोई उत्तर नहीं सूझा ।

"मिस मिलर ने कांपती वाणी में उत्तर दिया—"मेरे पास है ।"

"अब तक उसे दूतावास क्यों नहीं पहुँचाया ?"

"गिर पड़ने से पैर में चोट आई थी, इसलिए नहीं आ सकी ।"

"किन्तु आज तुम स्वस्थ हो ।"

मिस मिलर पुनः निरुत्तर हो गई ।

"तुम झूठ बोलकर क्या मुझे भुलावे में रख सकती हो ? बोलो, नकशा कहाँ है ?"

"मेरे पास होटेल में......।"

"अब भी झूठ बोलती हो । तुम दोग़ली हो, इसलिए हर जगह तुम्हारा दोग़लापन जाहिर होता है ।"

काउ-चो की गर्जना से उसकी रही–सही हिम्मत गुम हो गई । काउ-चो उठकर खड़ा हो गया उसके खड़े होते ही मिस मिलर उसके चरणों पर गिर पड़ी । काउ-चो ने कसकर ठोकर मारी और रौद्र स्वर में पूछा—"नकशा कहाँ है ?"

"मैं अपराधिनी हूँ, इस बार मुझे क्षमा करो ।"

काउ-चो ने दूसरी ठोकर मारते हुए पूछा—"बताओ नकशा कहाँ है ?"

"मुझसे खो गया है ।"

"झूठ ।"

फिर मिसेज सिंह से पूछा—"तुमने अजदहे को स्थापित कर लिया ?"

"जी हाँ, नीचे तहखाने में ?"

"अभी तक किसी की बलि चढ़ाकर परीक्षण किया ?"

"नहीं, ऐसा कोई मौका नहीं आया ।"

"परीक्षण भी नहीं किया ।"

"नहीं ।"

"आज मैं स्वयं उसकी परीक्षा करूँगा । बुलाओ, किसी को ।"

मिस मिलर चिल्लाई—"मुझे गोली मार दो, लेकिन . . . . ।"

"चुप ।"

मिसेज सिंह ने घन्टी बजाई । एक सेवक के आने पर कहा –"तू-सिन को भेज दे ।"

काउ–चो ने पूछा—"तू–सिन क्या करेगा ?"

"अजदहे का भार उसी पर है, क्योंकि हेड क्वार्टर से उसी की नियुक्ति हुई है ।"

"यहाँ की सर्वोच्च अधिकारिणी होने से मुझे प्रत्येक काम का ज्ञान होना चाहिए।"

"इसका ज्ञान है। चीन में मैंने बहुतों को बलि चढ़ते देखा है?"

"आज यहाँ भी देख लो। तू-मिन अभी तक नहीं आया?"

"वह तहखाने में है, आता होगा।"

"वहाँ घंटी नहीं लगवाई।"

मिसेज सिंह चुप रही।

काउ-चो होंठ चबाते हुए बोला—"कुइलीन, मेरी अयोग्यता का प्रमाण पग-पग पर मिल रहा है।"

मिसेज सिंह चीनी गुप्तचर विभाग में 'कुइलीन' के नाम से प्रसिद्ध थी। वह भी काँपने लगी।

"अपने निजी डायनोमो से बिजली पैदा करती हो?"

"जी हाँ?" इसी समय तू-मिन आकर खड़ा हो गया?"

उसे देखकर काउ-चो ने प्रश्न किया—"अजदहा ठीक काम कर रहा है।'

"जी हाँ।"

"अभी तक तुमने किसी की बलि नहीं चढ़ाई, फिर कैसे जानते हो कि वह ठीक-ठीक काम कर रहा है?"

"उसकी परीक्षा सप्ताह में एक बार कर लेता हूँ।"

"ठीक, इस ताइ-ची को उठाकर ले चलो। मैं स्वयं उसकी परीक्षा करूँगा।"

ताइ-ची इस समय अचेत थी। तू-मिन उसको बच्चे की भांति उठाकर ले चला। मिसेज सिंह और काउ-चो उसका अनुसरण करने लगे। उसे उठाए हुए वे शीशमहल में आये। मिसेज सिंह ने उसकी दक्षिणी दीवार में जड़े हुए लाल शीशे को दबाया। दबाने के साथ फर्श का एक बड़ा शीशा अपनी सतह से ऊपर उठकर एक ओर सरक गया, और उसके पीछे चार फुट का गलियारा दिखाई दिया। आगे लकड़ी की दीवाल थी।"

काउ-चो बड़ी बारीकी से देख रहा था। उसने पूछा—"यहाँ शीशा क्यों

लगाया, किसी वक्त भी टूट सकता है ?"

"यह 'बुलेट-प्रूफ' है। बन्दूक की गोली इसे तोड़ नहीं सकती।"

"ठीक, ताइ-ची को लेकर नीचे उतारो।"

मिसेज सिंह ने लकड़ी की दीवाल में एक बटन दबाया, और नीचे की सीढ़ियाँ दिखाई दी।

तू सिन ने ताइ-ची को पुनः उठाया, और वह उतरने लगा। नीचे उन्होंने अपने को एक लम्बे गलियारे में पाया।

मिसेज सिंह ने बटन दबाकर विद्युत-प्रकाश करते हुए कहा—"यहाँ से अब हमारा डायनोमो काम करेगा।"

'हूँ', कहकर काउ-चो आगे बढ़ा। कुछ दूर चलने के पश्चात् तू-सिन ने विद्युत बटन दबाकर दूसरी सुरंग का द्वार खोला। नीचे उतरने के लिए पुनः सीढ़ियाँ दिखाई दी। उतरकर वे एक सुरंग में पहुँचे, जिसका मार्ग घूमकर ऊपर की सुरंग के नीचे पुनः शीशमहल की दिशा में मुड़ा हुआ था। इस मार्ग में कई कोठरीयाँ दिखाई दी, जिनके द्वार में ताला बंद थे।"

काउ-चो ने पूछा—"ये कोठरियाँ क्यों बनाई गई हैं ?"

"इनमें बारूद भरवा दिया है ?"

"क्यों ?"

"किसी प्रकार की आफत आने पर पूरे मकान को उड़ा देने के लिए।"

काउ-चो सन्तुष्ट होकर बोला—"तुम लोगों में इतनी बुद्धि हैं।"

"दूसरी कोठरियों में क्या सामान है ?"

"बम और हथियार, जिन्हें हमारी पंचमांगी सेना उचित समय पर उपयोग करेगी।"

"हथगोले कितने हैं ?"

"दस हजार।"

"स्वचालित बन्दूकें ?"

"बीस हजार।"

"टाइम बम ?"

"दो हजार।"

"डायनामाइट और अग्नि-प्रज्वलित करने वाले बम ?"

"डायनामाइट की छड़ियाँ एक सौ पचास, और अग्नि-प्रदाहक बम दो हजार।"

काउ-चो कुछ बोला नहीं, किन्तु उसके चेहरे से मालूम होता था कि वह सन्तुष्ट है।

मिसेज सिंह ने उसे प्रसन्न देखकर कहा—"छोटे-मोटे हथियार जैसे तलवार, खंजर भाले आदि आगे की कोठरी में बन्द हैं। हमारे पास इतना सामान है कि हम दिल्ली को कुछ ही क्षणों में भूमिसात् कर सकते हैं।"

"इनको वितरण करने की योजना तैयार है ?"

"जी हाँ। जो-जो अस्त्र जिसको देना है। उनके नामों की तालिका यहाँ मौजूद है। आज्ञा हो, तो दिखाऊँ।"

"अभी समय नहीं है। इसकी एक प्रतिलिपि मुझे दे देना। प्रत्येक का पूरा पता और हुलिया भी दर्ज किया जाय, जिससे अजदहे के सेवकों को ढूँढने तथा पहचानने में कोई कठिनाई न हो।"

"जी हाँ, इस सूची में सब सूचनाएँ दर्ज हैं।"

"ठीक, अजदहा कहाँ है ?"

"अब हम उसका द्वार खोलते हैं।"

"मिसेज सिंह ने आगे बढ़कर पुनः एक बटन दबाया। सामने का तख्ता सरक कर एक ओर चला गया, और भीतर जाने का मार्ग स्पष्ट हुआ। उसने भीतर जाकर विद्युत आलोक से उसे प्रकाशित किया।

कमरे के बीचो-बीच एक भयंकर अजदहे की प्रतिमा ऊँचे चबूतरे पर स्थित थी। चबूतरा लगभग पांच फुट ऊँचा था। उसके चारों ओर चौड़ी गहरी नाली बनी थी। अजदहा लाल रंग से रँगा था। उसका सिर चबूतरे के बाहर था, और पूँछ ऊपर उठी थी। उसके पिछले पैरों के मध्य एक बड़ा छिद्र था। उसका चेहरा इतना विकराल था, कि जिसके देखने मात्र से रोंगटे खड़े होते थे। उसका मुख आधा खुला था, और उसके फुट-फुट लम्बे, मोटे दाँत

जीवटों के भी हृदय में भी कम्पन पैदा करते थे। उसके अगले दोनों पैरों के नख सिंह के नखों से बड़े और पंजों की चौड़ाई लगभग सवा फुट थी।

मिस मिलर अभी अचेत थी। उसको जमीन पर सुला कर तू-सिन ने चबूतरे में लगे एक बटन को दबाया। दबाते ही यन्त्र चलने लगा, और अजदहे ने अपना विकराल मुख खोल दिया। मुख खुलने के साथ उसकी गरदन इस प्रकार आगे बढ़ी जैसे वह किसी को दबोचने का प्रयत्न करता हो। उसके दांतों में हरकत पैदा हो गई, और जिह्वा और गलफरों में लगे पैने चाकू चक्राकार घूमने लगे। दोनों गलफरों में लगे छुरे भी तेजी से घूम रहे थे। जिसकी आंखों से लाल प्रकाश निकल रहा था। थोड़ी देर में उसके अगले पैर इस प्रकार उठ कर आगे की ओर बढ़े, मानो वे किसी को दबोचने का प्रयत्न करते हों।

मिसेज सिंह ने कहा—"यदि अपराधी को अधिक यन्त्रणा देकर प्राणान्त करना अभीष्ट हो, तब उसे उलटा खड़ा कर देते हैं, और जब अजदहा उसके पैर खा लेता है, तब उसके अगले पैर आगे बढ़ कर उसकी कमर पकड़ लेते हैं। धीरे-धीरे अजदहा उसको खाता हुआ उदरस्थ करता जाता है। रक्त और मांस निकलने के लिए उसकी पिछली टांगों के बीच यह छिद्र बना हुआ है, जिससे बह कर नालियों में आ जाता है, फिर उसे धो-पोंछ कर साफ कर देते हैं। क्या पेट के अन्दर के कल पुर्जे आप देखना चाहेंगे ?"

काउ-चो ने सिर हिला कर नकारात्मक उत्तर दिया।

यान्त्रिक अजदहे के कल-पुर्जों की घड़घड़ाहट से मिस मिलर की बेहोशी दूर हो गई थी। वह भयभीत होकर उठ बैठी। अजदहे की ओर उसकी दृष्टि टँग गई। उसका मन बार-बार कहने लगा कि 'तू अजदहे की बलि होने के लिए यहां लाई गई है।"

काउ-चो ने अजदहे के यन्त्र बन्द करने का संकेत किया। तू-सिन ने बटन दबाया, और विद्युत-प्रवाह बन्द होने पर अजदहा पहली स्थिति में आ गया।

मिस मिलर को होश में देख कर उसने पूछा—"बोल, नकशा कहाँ है ?"

सामने भयंकर मृत्यु देख कर उसकी सिट्टी गुम हो गई। उसके मुख से बोल न फूटा।

काउ-चो ने तू-सिन को संकेत किया। वह उसे उठा कर खड़ा करने लगा। मिस मिलर एक झटके से अपने को छुड़ा कर काउ-चो के चरणों पर गिर पड़ी, और बोली—"नकशा मेरे पास से चुरा लिया गया है।"

"क्यों झूठ बोलती है, यह क्यों नहीं कहती कि उसे भारत सरकार को बेच दिया है।"

"नहीं, मैंने बेचा नहीं। लैम्बर्ट ने मेरे पास से चुरा लिया।"

"कौन लैम्बर्ट ?"

"एक अमेरिकन सैलानी, जिसे मैं गुप्तचर होने का सन्देह करती थी।"

"कैसे ?"

"उसका भेद लेने के लिए, मैं उससे दोस्ती बढ़ा रही थी। उसको मैंने पहले कलिम्पोंग फिर कलकत्ता में देखा। मैं उसका कोई भेद नहीं जान सकी। उसे सैलानी ही समझती रही। जिस दिन मिनचू का जुलूस निकला, उससे चाँदनी चौक में अचानक मुठभेड़ हो गई। आकाश होटल में वह ठहरा था, उसके बगल के कमरे में वह व्यवसायी नवयुवक भी जिसने मिनचू के ताज की बोली लगाई थी, ठहरा था। यह बात मैंने मैडम को बता दी थी। उनका हुक्म हुआ कि उस अमीरजादे को अपने संघ का सदस्य बनाया जाय, ताकि उसका उपयोग चीन के हित में हो सके। चूंकि लैम्बर्ट और उसमें घनिष्ठता थी, इसलिए मैंने लैम्बर्ट से मेल-मिलाप बढ़ाना उचित समझा। जिस दिन वह नकशा मुझे मिला, मैं अपने कपड़ों में छिपाए आकाश होटल चली गई। वहाँ उन दोनों ने मुझे गहरी शराब पिला दी, और बेहोश हो जाने पर वह नकशा लैम्बर्ट ने चुरा लिया।"

"हूँ, फिर तूने उसकी सूचना कुइलीन को दी ?"

"मैं उसे प्राप्त करने के प्रयत्न में बराबर लगी रही।"

"तुझे वह नकशा नहीं मिला।"

"अभी तक नहीं। आज जैसे होगा, उसे प्राप्त करूँगी। मुझे एक

मौका देने की कृपा करें।"

"यदि प्राप्त नहीं कर सकी, तब !"

"स्वयमेव अजदहे पर अपनी बलि चढ़ा दूंगी।"

"अच्छा, एक दिन का समय देता हूँ। चाहे जिस तरह से हो नकशे को प्राप्त करना है। उसमें चीन की समस्त योजना अंकित है। शत्रु के हाथ में पड़ जाने से चीन की क्षति होगी।"

"मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि उसको कल प्रातःकाल आपको लाकर दूंगी।"

"यदि उसने उसे भारत सरकार को पहुँचा दिया हो ?"

"मैं बराबर उस पर नज़र रख रही हूँ। अभी वह उसके या पड़ोस वाले नवयुवक रमणीमोहन के पास है।"

काउ-चो ने मिसेजसिंह को अलग ले जाकर परामर्श किया। किसी भाँति नकशे को पुनः हस्तगत करने का निश्चय हुआ, और काउ-चो ने मिस मिलर को छोड़ देने का संकेत किया।

मिसेज सिंह उस बीभत्स दृश्य के टल जाने से मन ही मन सन्तुष्ट हुई।

२५

जब मिसेज रिपुदमनसिंह ने टेलीफोन का सम्बन्ध काट कर आलाप बन्द कर दिया, तब सन्तोष बाबू और नैयर दोनों हँसने लगे।

"नैयर ने कहा—"मामला कुछ समझ में नहीं आता।"

"उसने कन्ने से काट दिया !

'कोई गम्भीर बात है, नहीं तो वह हमारे स्वागत के लिए हमेशा लालायित रहती थी।"

"पता लगाना चाहिए कि आखिर राज़ क्या है ?"

"उस खूसट का भेद जानना कठिन है।"

"फिर भी चलो उसकी अलका के इर्द-गिर्द चक्कर लगावें, शायद कुछ पल्ले पड़ जाय।"

"क्या इसी शक्ल में ?"

"जरूरत समझो तो पोशाक में कुछ तबदीली कर ली जाय।"

"अरे भाई, हम लोग कोई जासूस नहीं है। हजार पोशाक तबदील करो, लेकिन असलियत प्रकट हो जायेगी।"

नजदीक आने पर परदाफाश हो सकता है, लेकिन दूर से और अंधेरे में कोई गुमान नहीं कर सकता।"

"तुम्हारी क्या यही राय है ?"

"जरूर, पता लगाने की कोशिश करना चाहिए।"

इसी समय राणा वीरेन्द्रसिंह ने प्रवेश किया। उनको देखते ही दोनों उछल पड़े।

नैयर ने उठ कर उनका स्वागत करते हुए कहा—"आज किधर भूल पड़े राणा साहब ! आजकल आप गूलर के फूल हो रहे हैं।"

सन्तोष—"गूलर के फूल की मिसाल ठीक नहीं नैयर, क्योंकि वह कभी दिखाई नहीं पड़ता। राणा साहब पहले हमेशा मिलते रहते थे, आज मुश्किल से मिले हैं।"

नैयर—"अच्छा तुम ही अदा करो।"

सन्तोष—"मैं कहूँगा, ईद के चाँद !"

राणा—"ठीक, मैं आप लोगों की राय में गूलर का फूल या ईद का चाँद हूँ। अगर मैं कहूँ कि आप दोनों विष्णु और ब्रह्मा की जोड़ी की भाँति अदृश्य रहते हैं, तब कैसा रहेगा।"

नैयर—"हम लोग आपके सेवक हैं, जो चाहे कह लीजिए। इधर आप रहे कहाँ ?"

राणा—"दिल्ली में। लेकिन बहुत शीघ्र दिल्ली छोड़ रहा हूँ।"

नैयर—"क्या नैपाल की सैर करने का इरादा है ? इन दिनों वहाँ जाना मुनासिब नहीं है।"

राणा—"क्यों ?"

नैयर—"एक तो सर्दी के दिन अनकरीब हैं, दूसरे चीनियों का हमला

उधर होने वाला है।"

"सन्तोष—"नैपाल के साथ चीन का सीमा-समझौता हो गया है, इसलिए कोई खतरा नहीं है।"

राणा—"आप शायद नैपाल और चीन में कोई अलहदगी समझते हैं।"

सन्तोष—"राजनीतिक दृष्टि से वह एक स्वतन्त्र राष्ट्र है।"

राणा—"लेकिन खून से ?"

सन्तोष—"हमारे कुनवे-कबीले का !"

राणा—"तब कौन रिश्ता ज्यादा सही है ?"

नैयर—"दोनों।"

राणा—"राजनीतिक स्थिति सांसारिक है, और कौटुम्बिक घरेलू तथा असली।"

सन्तोष—"हां, आपका कथन सही है। मैं आपका संकेत नहीं समझा।"

राणा—"बात यह है कि मैंने अपना नाम युद्ध-सेवा के लिए दे दिया है।"

सन्तोष—"क्या आप फ्रन्ट पर जा रहे हैं ?"

राणा—"हां, इसी विचार से मैंने नाम दिया है ?"

सन्तोष और नैयर एक दूसरे का मुंह ताकने लगे।

राणा—"एक-दूसरे के चेहरों पर क्या लिखा है, जो पढ़ने का प्रयत्न कर रहे हो ?"

नैयर—"आप रईस और कानूनन ग़ैर मुल्की हैं। आप क्यों जान-बूझ कर ओखली में शिर दे रहे हैं ?"

राणा—"लेकिन मेरा जिस्म भारत की मिट्टी से बना और भारत की जलवायु से पला है। नमक अदा करने का मेरा भी कर्त्तव्य है। इसके अलावा हमारे पूर्वज सीसोदिया वंशज और चित्तौड़ से उठे हुए हैं।"

नैयर—"तब तो पूरे भारतीय हैं।"

राणा—"बेशक। शतप्रतिशत भारतीय और क्षत्रिय-राजपूत हूँ। जमाने हाल में हम लोग जरूर दूर जा पड़े हैं, लेकिन नैपाल भारत का शीर्ष

है। भारत की कसक, नैपाल की कसक है। अपने और पराये की पहिचान मुश्किल वक्त में होती है।"

सन्तोष—"दुरस्त।"

नैयर—"राणा साहब, आप देवता हैं!"

राणा—"देवता नहीं इनसान। देवता अकर्मण्य और इन्सान कर्मठ होते हैं।"

नैयर—"देवता प्रेरणा देते हैं, और मनुष्य उसको साकार करते हैं!"

राणा—"यों ही सही। बहरहाल मैं युद्ध-क्षेत्र में जा रहा हूँ। वहाँ जाने की प्रेरणा मुझे एक नैपाली वीर पुरुष से मिली है, जिसने १८३९ में अंग्रेजों के दाँत खट्टे किये थे।"

नैयर—"उस वीर पुरुष का नाम?"

राणा—"बलभद्रसिंह थापा, जिसने कुलुंग जो एक छोटा दुर्ग था देहरादून के करीब, अंग्रेजों के अधीन नहीं होने दिया।"

नैयर—"हमारी जन्मभूमि वीरों की खान है। इसीसे इसका नाम वीर-प्रसू है।"

सन्तोष—"आप अकेले जा रहे है, या और कोई अपनी पार्टी का है?"

राणा—"अपनी पार्टी में अभी मैं अकेले जा रहा हूँ, किन्तु आशा है एक दूसरे के भी चलने की।"

सन्तोष—"कौन?"

राणा—"नवाबजादा मुश्ताक अली के छोटे साहबजादे।"

सन्तोष—"मकबूल मियाँ भी चलेंगे?"

राणा—"हाँ, नवाबजादा उसके पीछे पड़े हैं।"

सन्तोष—"वह पाकिस्तानी है?"

राणा—"पहले भी हिन्दुस्तानी थे, अब भी हिन्दुस्तानी हैं। बटवारे के बाद उनके दो बेटे पाकिस्तान में रहने लगे, और दो यहाँ। जब यहाँ का नमक खाते हैं, तब उसे हलाल करेंगे ही। बटवारे के बाद मुसलिम जमात में बड़ा इनक़िलाब आया है।"

नैयर—"वह क्या ?"

राणा—"चन्द कठमुल्लाओं के सिवाय, बाक़ी सब हमारी ही तर हदेश-भक्त हैं। उन्होंने यह महसूस कर लिया है कि वे अब हिन्दुस्तान के साथ जिये-मरेंगे। हमको इन पर एतबार करना चाहिए। अंग्रेजों ने जो दीवाल हम दोनों के बीच खड़ी की थी, वह पाकिस्तान बनने के साथ ढह गई है।"

नैयर—"लेकिन पाकिस्तान तो अब भी दुश्मनी बरत रहा है।"

राणा—"वह भी चन्दरोजा है। खून पानी से ज्यादा गाढ़ा है। एक न एक दिन उसको भी समझ आएगी।"

सन्तोष—"अगर चीनियों से हम दोनों भिड़ जायें, तो उसकी लड़ाई का शौक हमेशा के लिए मिट जाय।"

राणा—"चीनियों को सबक़ पढ़ाने के लिए हम अकेले काफी हैं—सिर्फ वह चुप होकर तमाशा देखें।"

सन्तोष—"किन्तु चीन और पाकिस्तान में साँठ-गाँठ हो गई है।"

राणा—"महज हमको चिढ़ाने के लिए।"

सन्तोष—"चिढ़ाने का मौक़ा मुनासिब नहीं है।"

राणा—"हाँ, यह सही है, लेकिन वह समझता है कि शायद इसी तरह उसे काश्मीर मिल जाय।"

सन्तोष—"काश्मीर मिलने के लिए वह चीन से गुप्त सन्धि कर सकता है।"

राणा—"यह मुमकिन है, किन्तु वह यह भी जानता है कि हिन्दुस्तान उसका हक़ीक़त में दोस्त और रक्षक है। पाकिस्तान हमारा खून-माँस ही तो है। छोटा भाई भले ही उसकी मदद को न आवे, लेकिन बड़ा भाई अपना मन्सबी फर्ज हर हालत में अदा करेगा। इसी तरह वह चाहे जितना बहके, अन्त में उसे भाई की मदद के लिए आना ही पड़ेगा।"

सन्तोष—"किन्तु चीन से सन्धि होने पर ?"

राणा—"चीन अपनी सन्धियों की कितनी परवा करता है या उनको कितना महत्व देता है ? यह स्पष्ट हो गया है कि हिन्दुस्तान के साथ जो व्यव-

हार उसने किया है, उससे संसार सावधान हुआ है। उसके कम्यूनिस्ट साथी ही अब उसका विश्वास नहीं करते।"

नैयर—"पाकिस्तान की फौजी ताक़त हमसे कहीं ज्यादा है।"

राणा—"यह महज ख्याल है।"

नैयर—"पिछले सालों में उसने पचास अरब से ज्यादा कीमत के हथियार दूसरे मुल्कों से हासिल किए हैं।"

राणा—"हथियार नहीं लड़ते, दिल लड़ते हैं। वे सब कम्यूनिस्टों से लड़ने के लिए दिए गए हैं, और उनका नियन्त्रण उनके हाथ है, जिन्होंने दिए हैं।"

नैयर—"उनके नौजवानों को फौजी तालीम भी दी गई, और दी जा रही है।"

राणा—"बेशक देना चाहिए। छोड़िये, इन सियासी बातों को। शगूल की बातें करिए।"

नैयर—"क्या बतावें, मिसेज सिंह ने आज ब्लैक आउट कर दिया है।"

राणा—"क्या मतलब ?"

नैयर—"यही कि आज वह कोई जलसा नहीं कर रही है।"

राणा—"क्यों ? कोई ग़मी हो गई है क्या ?"

नैयर—"वह सही-सलामत तन्दुरुस्त है। अभी टेलीफोन से बात हो चुकी है।"

राणा—"आज शनिवार की सुनहली रात अन्धेरी जायगी ?"

नैयर—"मालूम ऐसा ही होता है। हम लोग पता लगाने के लिए जा रहे थे कि आप आ गए।"

राणा—"तब चलिए, मैं कोई बेगाना नहीं हूँ।"

सन्तोष और नैयर उठकर खड़े हो गए। राणा ने कहा—"हम लोग साथ-साथ चलेंगे, या अकेले ?"

नैयर—"मेरी राय है कि सब एक साथ चलें।"

राणा—"नहीं; अलग-अलग चलने में सुभीता रहेगा। उसके दोनों दर-

वाजों पर पहरा रखना पड़ेगा।"

नैयर—"ऐसी क्या जरूरत है ? हम तीनों सदर दरवाजे से धड़धड़ाते घुस जायें। रोजाना जाने आने वालों में हैं, कोई टोक नहीं सकता।"

राणा—"अब समझ में आया कि यह ब्लैक-आउट सिर्फ हमारे लिए है।"

नैयर—"क्यों ?"

राणा—"वह शैतान की खाला एक नई सुनहली चिड़िया फँसा रही है।"

नैयर—"कौन।"

राणा—"नहीं जानते ? अरे वही, जिसने उसकी छोकरी कला के मुकुट की ग्यारह लाख की बोली लगाई थी।"

नैयर—"वह गुजराती नौजवान, जिसका भला-सा नाम है।"

राणा—"रमणीमोहन ! कला को मोहित करने की उसकी एक चाल थी।"

नैयर—"लेकिन रकम गई सुरक्षाकोष में।"

राणा—"यही तो उसकी चाल थी। सुरक्षाकोष में इतनी बड़ी रकम एक मुश्त देकर उसने अपना रोब ग़ालिब कर दिया। अब वह खूसट उसके पीछे पीछे घूमती है।"

नैयर—"एक दिन उसकी तकरीब में खास-जलसा हुआ था, और आप उसमें शरीक थे।"

राणा—"हाँ, नवाबजादा भी हमारे साथ थे।"

नैयर—"और कौन था ?"

राणा—"एक फौजी मेजर कुलदीप सिंह, जिन्होंने उसकी एक पाली-पोसी लड़की से रीझकर शादी कर ली है।"

नैयर—"वह तो फ्रन्ट पर जा रहा है। उसके जाने का हुक्म निकल चुका है।"

सन्तोष—"उस दिन क्या शग़ल रहा ?"

राणा—"वही खाना-पीना ।"

सन्तोष—"और सैर-ए-फ़लक नहीं हुई ?"

राणा—"उसे अपनी धाक जमाना था, इसलिए जलसा नरीफाना था ।"

नैयर—"कला हसीन है ।"

राणा—"क्या तुम भी उस पर लट्टू हो ।"

सन्तोष—"उसकी चिपटी नाक ने उसकी सारी खूबसूरती पर झाड़ू फेर दी है ।"

राणा—"फिर उसे मिस इन्डिया कैसे बना दिया ?"

सन्तोष—"नैयर भाई ने बहुत जोर लगाया था ।"

राणा—"मुझे शक़ होता है कि वह चीनी है, क्योंकि उनकी ही नाक चिपटी होती है ।"

नैयर—"मेरा ख्याल है कि मिसेज सिंह भी चीनी नायका है ।"

राणा—"कुछ मेरा भी ऐसा ही ख्याल हो रहा है ।"

सन्तोष—"यक़ीनन वे सब चीनी हैं ।"

राणा—"तब तो वे सब चीनी जासूस हैं ।"

नैयर—"मैं आपके इस ख्याल की ताईद करता हूँ ।"

राणा—"अभी तक इतनी बारीकी से हमने सोचा नहीं था ।"

नैयर—"हम लोग भी उसे कुटनी समझते थे ।"

राणा—"यह तब्दीली क्यों हुई ?"

सन्तोष—"चन्द वजूहात इसी क़िस्म के नजर आए ।"

राणा—"वे क्या ?"

सन्तोष—"अब चलिए, मुफस्सल से किसी दूसरे वक्त बयान करूँगा ।"

राणा—"कोई खुफिया राज है ?"

सन्तोष—"आपसे क्या छिपाना है ! वह बहाने-बहाने सरकारी खबरें जानने की कोशिश करती थी ।"

नैयर—"यह क्यों नहीं कहते कि झूठ-मूठ खबरें देकर हम रकम पैदा करते थे ।"

राणा—"कोई बेवकूफ़ी तो नहीं कर बैठे ?"

नैयर—"नहीं। सच कम, और वह भी मामूली, लेकिन झूठ ज्यादा बोले।"

राणा—"लेकिन यह भी गद्दारी की परिभाषा में आयेगा।"

नैयर—"बेशक। लेकिन अब इसका परदा फाश कर प्रायश्चित करना चाहते हैं।"

राणा—"अगर प्रायश्चित करना है, तब अपनी सरकार को इसकी पूरी सूचना देना वाजिब है।"

नैयर—"जरा जांच करलें तब सूचना देंगे। अभी सिर्फ शक ही शक है।"

राणा—"तब हमें चलना चाहिए। शायद कोई बात मालूम हो जाय।"

नैवर—"उसने मनाही की है, किसी खास मतलब से।"

राणा—जरूर ! उसकी कोई चाल मतलब से खाली नहीं रहती।"

सन्तोष—"मैं भी यही सोचता हूँ।"

राणा—"हमको एक-साथ धावा बोलना चाहिये। बाहर ठहरकर पहरे देना मुनासिब नहीं हैं। दूसरे शक कर सकते हैं।"

सन्तोष—'ठीक, हम तीनों इकट्ठे एक ही गाड़ी पर चलेंगे।"

राणा—"अपने-अपने पिस्तौलें भी साथ ले लो। शायद कोई नागहानी वाक़ै हो जाय। अगर यह जमाव दर-असल चीनियों का है, तब हमें हरबों से लैस होना चाहिए। मेरी पिस्तौल मेरे पास है, आप लोग ले लेंवे।"

नैयर—"मेरे पास दो अच्छे किस्म के रिवाल्वर हैं। एक सन्तोष ले लेंगे और एक मैं।

नैयर अपनी तिजोरी से रिवाल्वर निकालने चले गए।

राणा—"नवाबजादा को साथ ले लेंवे, क्या ख्याल है ?"

"जरूर", सन्तोष और नैयर ने एक साथ कहा।

तीनों नवाबजादा मुश्ताक अली के बँगले की ओर रवाना हुए।

२६

मिस मिलर की प्रार्थना स्वीकृत हुई, और उसे नक्शा प्राप्त करने का अवनर दे दिया गया। उसकी सहायता के लिए काउ-चो ने तू-सिन को साथ कर दिया; जिसका वास्तविक कार्य था उसकी निगरानी करना तथा आँखों से ओझल या आत्महत्या न करने देना। एक बार जिसे अजदहे पर बलि चढ़ाने का आदेश दे दिया जाता, उसे हाराकारी या आत्महत्या करने का अवकाश नहीं दिया जाता था। वे दोनों पिछले दरवाजे से निकल गये। काउ-चो मिसेज सिंह के साथ शीशमहल में बैठकर आगामी कार्यक्रम बनाने लगा।

काउ—चो ने शीशमहल की प्रशंसा की और कहा—"तुम्हारी इस कारीगरी से मैं सन्तुष्ट हूँ। अजदहे के मन्दिर का शिखर इसी प्रकार होना चाहिए। कोई सन्देह नहीं कर सकता कि इसके नीचे मृत्यु का अद्‌भुत यन्त्र छिपा हुआ है।"

"जी हां, और मृत व्यक्ति का कोई चिन्ह भी नही रहता। वह हवा मिट्‌टी में अदृश्य हो जाता है। बिना लाश बरामद हुए कोई जुर्म नही बनता।"

"मिनचू के विषय में क्या प्रगति हो रही है?"

"उसमें काफी सफलता मिल चुकी है-विवाह होने में कुछ ही दिनों की देर है। मिनचू ने अपना पार्ट बड़ी सफलता से अदा किया है। मैंने सब आँखों देखा और कानों सुना है।"

"क्या प्रेम—प्रसंग तुम्हारी मौजूदगी में चलता था?"

"नहीं; किन्तु इन शीशों के पीछे एक गुप्त स्थान है, जहाँ से यहाँ की सब कार्रवाई देखी-सुनी जा सकती है।"

"देखूँ।"

"उसको देखने के लिये आपको दूसरे कमरे में चलना पड़ेगा।"

"फिर देख लूंगा। क्या इस कमरे की दीवालें पोली है?"

'जी हाँ, चारो दीवालें पोली हैं। ये दो फूल आप देख रहे हैं, भीतर से हटाये जा सकते हैं। उनके हट जाने पर सब कुछ बखूबी देखा-सुना जा सकता है!"

"उसके प्रेमी का क्या नाम है ?"

"रमणीमोहन है। इसके सम्बन्ध में मैंने विस्तृत रिपोर्ट भेज दी है।"

"मालूम है। तुमने लिखा था कि उसका व्यापारिक सम्बन्ध दक्षिण एशिया और आस्ट्रेलिया तक है।"

"जी हाँ, करोड़ों-अरबों का मालिक है।"

"क्या वह अपने माता-पिता की अनुमति से विवाह करेगा ?"

"विवाह से मेरा मतलब कानूनी विवाह से नहीं है। वह रखैल की भाँति रह सकती है, और मौजूदा वक्त में यही ठीक भी है।"

"हमारा उद्देश्य तो यह है कि मंचू उसके ऊपर अपना आधिपत्य स्थापित कर उसे हमारा अनुयायी बनावे।"

"उसी ओर उसका प्रयत्न है।"

"यह बहुत जरूरी है, क्योंकि हमारा इरादा दक्षिण-पूर्वीय एशिया पर अधिकार करने के बाद उस दिशा में प्रगति करने का है। हमें जो प्राप्त करना है, उसकी योजनाएँ वर्षों पहले बनाई जाती हैं।"

"जी हाँ, भारत के सम्बन्ध में हमने यही किया है।"

"अभी भारत में हमारी योजना का दशमांश भी प्रगट नहीं हुआ है। बहुत शीघ्र हमारा भरपूर आक्रमण होने वाला है।] हिमालय लाँघकर हम उसे चेतावनी देंगे कि जिसकी दृढ़ता पर भारत को नाज है, वह हमारी प्रगति रोकने में असमर्थ है। इस हमले में नेफ़ा और लद्दाख पर अधिकार कर हम अपना द्वार खोल लेंगे। एक तो भारत हमारा कड़ा मुक़ाबला करने में असमर्थ है, क्योंकि यहाँ फूट का वातावरण है, दूसरे हम उसे भुलावा दिए हैं कि हमारा विवाद केवल सीमा-सम्बन्धी है।

"किन्तु इसके आसार मुझे नजर नहीं आ रहे। इसी परीक्षण में चारो ओर हलकम्प मच गया है। भारत जबरदस्त तैयारी कर रहा है।"

"इसकी तैयारी से हमें कोई चिन्ता नहीं। हमारा सैनिक बल बहुत अधिक है। दोनों दिशाओं में हम सात डिवीजन सेना लगाएँगे। बहुत होगा चार-पांच डिवीजन सेना मारी जायगी, परन्तु जब हम सैनिकों के बाद सैनिक

समुद्र के ज्वार की भाँति झोंकते जायंगे, तब हम निश्चय विजयी होंगे ।"

"लेकिन पश्चिमीय राष्ट्रों की सहायता यदि उसे मिल जाती है तब ?"

"उस ओर से निश्चिन्त रहो । गोवा और कश्मीर के आक्रमण से वे असन्तुष्ट हैं । अपने मित्र पाकिस्तान के विरुद्ध वे कभी भारत की सहायता नहीं कर सकते ।"

"किन्तु यह युद्ध पाकिस्तान से नहीं होगा ।"

"ठीक है, परन्तु सैनिक सहायता से सन्तुलन बिगड़ जायगा । इसके अतिरिक्त जब तक सोच-विचार होगा, तब तक हम उसके प्रदेश हड़प जायंगे ।"

"और रूस ?"

"वह हमारे विरुद्ध कभी आचरण नहीं कर सकता । अधिक से अधिक वह तटस्थ रहेगा और भारत को हमारे साथ समझौता करने के लिए परामर्श देगा । यद्यपि यह ठीक है कि हमारे साथ उसके सम्बन्ध कुछ बिगड़ गए हैं, परन्तु वह चीन के विरुद्ध कोई काररवाई खुल कर नहीं करेगा । आखिर वह भी कम्युनिस्ट देश है ।"

"तब भारत अकेला है, उसकी सैनिक तैयारी नहीं के बराबर है ।"

"वह अपना शान्ति राग अलापने में मस्त है, इसीलिए हमारे लिए स्वर्ण अवसर है ।"

"किन्तु बांडुंग कान्फ्रेन्स के अफ्रीकी-एशियाई देश तो हो-हल्ला मचा सकते हैं, क्योंकि भारत उनका नेतृत्व कर रहा है ।"

"उसके नेतृत्व की जड़ हमने खोखली कर दी है । भारत के परास्त होने पर चीन के हाथ स्वयमेव नेतृत्व आ जायगा ।"

"किन्तु एक बार तो वह हल्ला मचायेंगे ही ।"

"हमारा प्रचार इतना प्रबल और भ्रमोत्पादक होगा कि उन्हें असलियत मालूम नहीं पड़ेगी, और जब प्रकट होगी, तब उनके सामने सिवाय हमारी बात मानने के कोई दूसरा उपाय नहीं रहेगा । संसार हमेशा चमत्कार को नमस्कार करता है । यदि समस्त अफ्रीकी एशियाई राष्ट्र एक हो जाँय, जो असम्भव है, तब भी चीन के सामने उन्हें झख मारना पड़ेगा । हम सब पहलुओं

पर विचार कर अपनी योजनायें कार्यान्वित करते हैं ।"

"फिर भी चक्षु लज्जा के लिए उनको साथ रखना पड़ेगा ।"

"प्रथम वैसी स्थिति आने न पाएगी, और यदि कदाचित् कुछ हो-हल्ला मचा भी; तब अधिक से अधिक वे एक सम्मेलन कर कुछ सुझाव रखेंगे, जिन्हें मानना या न मानना हमारे अधिकार में होगा। यहाँ यह भी गौर तलब है कि अफ्रीकी-एशियाई राष्ट्र भी भारत से असन्तुष्ट हैं, क्योंकि बेलग्रेड कान्फ्रेन्स में उसने विरोधी रुख अपनाया था ।"

"जी हाँ, बेलग्रेड कान्फ्रेन्स का यही प्रभाव पड़ा है। भारत अपनी तटस्थ नीति और अभिमान से इस समय बिल्कुल अकेला है। हमने उसे बरमा, नैपाल और पाकिस्तान से पृथक कर दिया है। पाकिस्तान को काश्मीर चाहिए, इसी-लिए वह पश्चिमींय गुट में शामिल हुआ था। यदि हम उसे कश्मीर पर अधिकार करा दें तो वह तुरन्त उनके गुट से अलग होकर हमारा साथी बन जायेगा। पाकिस्तान के सैनिक शासन की छत्र-छाया में कम्यूनिस्ट बराबर पनप रहे हैं ।"

"वहाँ के कम्यूनिस्टों में चीन के प्रति अधिक अनुराग है ?"

"बेशक, वे अभी तक वहाँ विप्लव खड़ा कर देते, किन्तु हम उनको रोके हुए हैं, क्योंकि इससे पश्चिमीय शक्तियों के पाँव गहरे जम जाएंगे। पहले भारत को विजय कर लें, तब हम उधर काररवाई शुरू कर देंगे ।"

"किन्तु सैनिक शासन एकतंत्री है ।"

"वही हमारे लिए अनुकूल है, क्योंकि वहाँ के कम्यूनिस्टों को विद्रोह करने में सुगमता रहती है ।"

"हमारी युद्ध-नीति अब आगे क्या रुख पकड़ेगी, इस पर कुछ प्रकाश डालिए, ताकि हम उसके अनुसार अपना कार्यक्रम बनावें ।"

"अभी तुम्हें कुछ नहीं करना, केवल फौजी गुप्त भेदों को संग्रह करती रहो ।"

"वह हमारा मन्सबी फर्ज है, किन्तु थोड़ा आभास मिल जाने से हमें सुगमता रहेगी ।"

"वस्तुतः हमारी नई नीति नहीं है। आज ढाई हजार पूर्व हमारे पूर्वज जो नीति बना गए हैं, हम उसी पर चल रहे हैं।"

"किन्तु इतने जमाने के बाद क्या वह काम लायक है ?"

"यह तुमको मालूम होना चाहिए कि प्रकृति ने हम चीनियों को संसार में सर्वश्रेष्ठ बनाया है। ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल, राजनीति और रण-नीति के हम विधाता हैं। यदि कनफ्यूशियस ने संसार को ज्ञान दिया, तो उसी के समकालीन सुनत्जू ने हमें युद्ध विधान और रण-नीति दी है। उसकी पुस्तक 'युद्ध कला' आज भी उतनी उपयोगी तथा सत्य है, जितनी उस समय थी।"

"बड़े आश्चर्य की बात है।"

"नहीं, हमारी सांस्कृतिक उत्कृष्टता का यह अकाट्य प्रमाण है।"

"अवश्य ! मैं उसको पढ़ना चाहती हूँ।"

"उसकी एक प्रति भेज दूंगा। अभी उसकी कुछ मुख्य बातें बताता हूँ—

(१) पहला नियम यह है कि यदि तुम्हारी विजय हुई है, तब अपने सम्मुख के पहाड़ों पर आधिपत्य जमाने में अपनी शक्ति मत क्षीण करो। यदि शत्रु अति त्वरा के साथ पलायन कर रहा है, तब उसका अनुसरण मत करो। वह तुमको अपने फन्दे में फांसने का प्रयत्न कर रहा है।

(२) यदि शत्रु तुमसे अधिक शक्तिशाली है, तब आमने सामने युद्ध मत करो। दर गुजर करो, सम्भव है कि वह तुम्हें आक्रमण के लिए प्रलोभन दे रहा हो।

(३) यदि शत्रु से घिर जाओ तब अवश्य उससे लोहा लो। किन्तु यदि शत्रु के पैर उखड़ गए हैं, तब उसको भागने दो—किन्तु बहुत दूर तक पीछा न करो, क्योंकि दबसट में पड़ जाने से वह पूर्ण बल विक्रम के साथ युद्ध करेगा। यदि तुम शत्रु को परास्त करते हुए ऐसे प्रदेश में जा पड़ो, जिसकी वास्तविक स्थिति का ज्ञान तुमको नहीं है, तब तुम विजयी होते हुए भी वहाँ न रुको, और न पड़ाव डालो।

(४) यह बखूबी जान लो कि युद्ध में विजय शत्रु-पक्षियों के हनन से

नहीं होती, बल्कि चातुर्य से होती है। उससे उसी भाँति लड़ो, जैसे शतरंज के खेल में अपनी स्थिति सुधारते हुए प्रतिपक्षी पर आक्रमण किया जाता है। कभी अपना विवेक और मस्तिष्क का सन्तुलन न खोओ, क्योंकि बाजी वही हारते हैं जो जल्दबाजी करते हैं।

(५) विजय का मूल मन्त्र है कि तुम पहले ही प्रहार में अपनी शक्ति की सत्ता शत्रु पर स्थापित कर दो। इसमें सफल होने पर तुम्हारी सफलता निश्चित है, और बिना रण रंग किए तुम उसे प्राप्त कर लोगे; जिसकी तुम्हारी आकांक्षा है।

(६) शत्रु को यह कभी भान मत होने दो कि तुम्हारा वास्तविक ध्येय क्या है, अपनी चालों से उसे सदैव भरमाए रहो।

(७) प्रहार तुम्हारे भले ही छोटे पैमाने पर हों, परन्तु निरन्तर हों, और वे कभी एक दिशा में नहीं। तुम प्रहार के जितने द्वार खोलोगे, उतनी ही सुगमता से उसे परास्त कर सकोगे।"

मिसेज़ सिंह चकित दृष्टि से काउ-चो की ओर देख रही थी। उसने गम्भीरता से कहा—"अद्भुत है, अनुपमेय है। आप अवश्य वह पुस्तक भेजिएगा, क्योंकि मुझे यहाँ का युद्ध संचालन करना है।"

काउ-चो उत्तर देने जा रहा था कि कमरे की घण्टी बजने लगी। मिसेज सिंह हड़बड़ा कर उठ खड़ी हुई। काउ-चो ने पूछा—"क्या बात है, घंटी क्यों बज रही है?" मिसेज सिंह शीघ्रता से प्रस्थान करती हुई बोली—'आप यहीं बैठिए, मैं अभी वापस आती हूँ। कोई दुर्घटना हुई है, या होने वाली है।"

किन्तु काउ-चो निष्क्रिय होकर बैठ न सका। वह भी उसके पीछे रवाना हुआ।

मिसेज़ सिंह ने बाहरी कमरे में आकर देखा कि उसके दोस्त नैयर, सन्तोष, राणा और नवाबजादा अलका के एक रक्षक को पकड़े हैं, और वह जी जान से अपने को छुड़ाने का प्रयत्न करते घण्टी बजा रहा है। मिसेज़ सिंह को देखने के साथ वह शान्त हो गया।

मिसेज सिंह मधुर मुस्कान से प्लावित होकर बोली—"जहे किस्मत,

आप साहबान की मेहरबानी हो ही गई। आइये, तशरीफ लाइये। मैं इस कमीने को माक़ूल सजा दूँगी, जो दोस्तों के साथ ऐसी गुस्ताखाना हरकत करता है।"

नवाबजादा बरसने वाले थे कि राणा ने उनके जूते को दबाकर चुप रहने का संकेत कर स्वयं उत्तर दिया—"कोई बात नहीं, नौकरों से भूल-चूक हो जाती है। यदि उनको शुऊर होता तो फिर चौकीदारी करते? आज तो आपने बहुत कड़ा पहरा लगा रखा है। कोई खास बात है?"

हालाँकि काउ-चो उल्टे पैर लौट गया था, परन्तु उन सबों ने उसको बखूबी देख लिया था। सन्तोष उसको देखते ही चिहुँके, और उन्हें प्रतीत हुआ कि यह चेहरा कहीं देखा हुआ है, परन्तु कहाँ, इसका निर्णय वे न कर सके। नैयर ने भी उसे देखा, किन्तु वह भी पहचान न सके। राणा और नवाबजादा के लिए वह बिलकुल नया और अनजान था। उन दोनों को अब भी आशा थी कि रमणीमोहन से उनकी भेंट होगी।

इसी विचार से नवाबजादा ने पूछा—"मिस्टर रमणीमोहन क्या अंदर हैं? उनको तलाश करते जब हम और राणा साहब थक गए, तब आखीर में यह ख्याल आया कि वह शायद आपके दरबार में आए हों। रास्ते में नैयर साहब से मुलाकात हो गई, जो सन्तोष साहब के साथ कटी पतंग की तरह कनाट सरकस में इधर से उधर डोल रहे थे। उनको भी हम लोग पकड़ लाए। हमारे आने से कोई आपको सदमा तो नहीं पहुँचा।"

मिसेज सिंह ने अपनत्व के साथ उनका हाथ पकड़ते हुए कहा—"आज आप दूसरी जबान बोल रहे हैं! हुजूर की खफ़गी का क्या सबब है? अगर मुझ हकीर से कोई गल्ती हुई हो तो माफ़ी की ख्वास्तगार हूँ।"

मिसेज सिंह सबको साथ लिए बाहरी बैठक में आईं, और बड़े नाज-अन्दाज से बोलीं—"मैंने कई दिनों से मिस्टर रमणीमोहन को नहीं देखा। उस दिन से वह तशरीफ़ नहीं लाए, जब आप साहबान की मौजूदगी में उनसे नियाज हासिल करने का मौका मुयस्सर हुआ था।"

राणा ने मुस्कराते हुए कहा—"आज तो आप बड़ी लच्छेदार भाषा

प्रयोग कर रही हैं।"

"भलेमानुसों की जबान में बात कर रही हैं, और क्या तू-तुकार से बातें करें।" नवाबजादा ने फिकरा कसा।

नैयर ने मिसेज सिंह की चीनी बिल्ली को दुलराते हुए कहा—"आज ब्लैकआउट है, आप साहबान को पहले ही आगाह कर चुका हूँ। अँधेरे में सर टकराने से फायदा ?"

"आप तो जरूर नाखुश होंगे, क्योंकि टेलीफोन पर अपनी तबियत की नासाजी से आपको तशरीफ लाने के लिए मना कर चुकी थी। मैंने कोई बहाना नहीं किया। देख लीजिए आज कोई लड़की मौजूद नहीं है। किसी की तबियत खराब है, और कोई सिनेमा देखने गई है।"

"नाच-रंग न सही, लेकिन शैम्पेन तो कहीं नहीं गई, जुए का फड़ तो नहीं बीमार हो गया है। पिछली दफे राणा साहब ने मेरी जेब से करीबन एक हजार निकाल लिए थे, जब तक वह रकम वापस मेरी जेब में नहीं आती, तब तक चैन नहीं।" नवाबजादा के कहकहे से कमरा गूंजने लगा।

"अगर हुजूर को इतना मलाल है, तो लीजिए आपकी रकम हाजिर है।" राणा जेब से बटुआ निकालने लगे।

"वह तो फड़ पर ही ली जाएगी, क्यों मिसेज सिंह !"

"बेशक, दस्तूर तो यही है। आइए, शौक से जमिए। मैं कुछ पीने-पिलाने का इन्तिजाम करती हूँ।"

यह कहकर वह शीघ्रता से चली गई। चारो मित्र इशारों से बातें करने लगे।

मिसेज सिंह वहाँ से सीधे शीशमहल आई। काउ-चो अभी तक वहीं बैठा था। उसने उन्हें देखते ही कहा—"नैयर और सन्तोष को मैं पहचानता हूँ। इम्बैसी में उनको कई बार देखा है, लेकिन उन दोनों को नहीं जानता।"

"एक नैपाली हैं, दूसरे पाकिस्तानी।"

"बहुत ठीक—इनको भी कब्जे में करो।"

"दोनों पक्के मुरीद हैं।"

"ठीक, अब तुम उसके पास जाओ। मैं पिछले द्वार से जा रहा हूँ। मिलर पर नजर रखना जरूरी है। उसने हमारी तजवीजों का नक़शा खो दिया है, जिसको हर कीमत पर प्राप्त करना है।"

"तू–सिन अपने उद्देश्य में कभी विफल नहीं होता। वह नकशा लेकर आएगा। लैम्बर्ट अजदहे का बलि बनेगा, किन्तु रमणीमोहन के साथ क्या सलूक किया जाय?"

"यदि नकशे का भेद उसे प्रकट हो गया है, तब उसे बलि चढ़ाना होगा।"

"किन्तु यदि वह हमारे दल का सक्रिय सदस्य बन जाता है, जैसे आसार प्रकट हो रहे हैं, तब?"

"उसकी सत्यता परखने का भार तुम्हारे ऊपर है।"

"मिनचू के प्रेम-जाल में वह कण्ठ तक आबद्ध है।"

"कहीं मिनचू उसे प्यार तो नहीं करने लगी?"

"यह प्रश्न ही नहीं उठता।"

"तुम उसके लिए उत्तरदायी रहोगी।"

"बेशक, कुइलीन कोई कच्चा खेल नहीं खेलती। मेरा विचार है कि उसे आज ही मिनचू के साथ दिल्ली से हटाकर कलकत्ता भेज दूं।"

"क्या वह तुम्हारी बात मान लेगा?"

"मिनचू के साथ वह भागने को तैयार है। उन दोनों ने आपस में यहाँ से भागने की भी योजना बना ली है।"

"यदि तुम उचित समझती हो, तो ठीक है। कलकत्ते में उससे क्या काम लिया जाएगा?"

"रमणीमोहन डाक्टर भी है। मिनचू उसे नेफा की ओर ले जायगी। सैनिक अस्पतालों में भी तो हमारे गुप्तचरों का रहना आवश्यक है।"

"बेशक, सर्वत्र हमारे आदमी होने चाहिए।"

"लैम्बर्ट तो आज समाप्त कर दिया जायगा। कोई दुर्घटना होने के पहले ही यदि रमणीमोहन और मिनचू यहाँ से हटा दिए जाते हैं तब नकशे का

भेद मालूम होने पर भी वह हमारे अधीन रहेगा। यदि विश्वासघात का कोई लक्षण दिखाई दिया, तब मिनचू विष-प्रयोग करेगी।"

"ठीक ! लूंग का क्या हाल है ?"

"उसका शिकार मेजर कुलदीपसिंह युद्ध-क्षेत्र में चला गया है। लूंग उसका पीछा करेगी। वह शायद आज कलकत्ता के लिए रवाना होगी, फिर वहाँ से नेफा में मेजर के कैम्प पहुँच जाएगी।"

"नेफा में लूंग क्या करेगी ?"

"वह मेजर के साथ रहकर भारतीय सेना के गुप्त भेदों की सूचना भेजेगी।"

"तुम्हारी योजनाएँ दूरगामी और उपयुक्त हैं। मैं इनका अनुमोदन करता हूँ। अब तुम जाओ। देर होने पर तुम्हारे मित्रों को सन्देह हो सकता है। रात्रि को दो बजे टेलीफोन से समाचार देना।"

काउ-चो विदा होकर शीघ्रता से चला गया। मिसेज सिंह शैम्पेन की दो बोतलें लेकर पुनः बाहरी बैठक में आ गई।

२७

लैम्बर्ट ने रमणीमोहन के कमरे में आकर पूछा—"बैठे-बैठे मन ऊब रहा है। चलिए, कहीं घूम आवें।"

"मन मेरा भी कई घरेलू कारणों से उद्विग्न है। कहीं जाने की इच्छा नहीं होती।"

"क्यों ? बाहर फिरने-घूमने से मन की उद्विग्नता दूर होगी।"

"नहीं, बल्कि बढ़ेगी। कई घरेलू समस्यायें सामने आ गई हैं।"

"यदि मेरी सहायता से कोई हल निकलता हो तो मैं सहर्ष तैयार हूँ।"

"बिल्कुल घरेलू है।"

"तब फिर मैं अकेले जा रहा हूँ।"

"पिस्तौल ले लिया है ?"

"वह एक सदैव साथ रहता है और जबसे मिलर से दुश्मनी हुई, तबसे

दो-दो रखने लगा हूँ ।"

"वह नकशा कहाँ है ?"

"एक सुरक्षित स्थान में छिपा दिया है ।"

"मुझे तो बताओ ।"

"मैं तुम्हें खतरे में नहीं डालना चाहता । मुझे ही मिलर से निपटने दो ।"

"यह बताइए कि मिलर का मिसेज सिंह से कोई सम्बन्ध हो सकता है ?"

प्रश्न इतना अचानक था कि लैम्बर्ट क्षण भर के लिए स्तब्ध रह गए । फिर सोचते हुए बोले—"मैं समझता हूँ कि साधारण जान-पहचान है । गुप्तचरों की गति सर्वत्र होती है । बड़े-बड़े लोगों में वह जरूर घुस-पैठ करते हैं, क्योंकि मेल-मिलाप से उनका काम बनता है ।"

"मिसेज सिंह का कोई सम्बन्ध चीनी गुप्तचरों से नहीं है ?"

"मैं इस विषय में कुछ नहीं कह सकता, क्योंकि मैंने आज तक उसे नहीं देखा ।"

"मिलर तुम्हारे लिए भी निमन्त्रण-पत्र लाई थी, किन्तु तुम अपने किसी आवश्यक कार्य से अन्यत्र चले गये थे ।"

"वहाँ जाने का कोई उत्साह नहीं था, इसके अतिरिक्त जरूरी काम था ।"

"मेरा भी यही अनुमान है कि मिसेज सिंह से उसकी कोई घनिष्ठता नहीं है ।"

"कैसे अनुमान किया ?"

"मैंने उसको न वहाँ देखा और न कभी उसका नाम सुना ।"

"यही मेरा ख्याल है । जहाँ तक मैंने सुना और समझा है शायद मिसेज सिंह 'सोसाइटी गर्ल' और यारबाश हैं । चीनियों के साथ उनका कोई सम्पर्क नहीं सुना गया ।"

रमणीमोहन ने आश्वस्तता के साथ साँस ली ।

लैम्बर्ट ने कुछ देर उनको गौर से देखने के बाद पूछा—"किन्तु आपके मन में सहसा क्यों यह विचार उठा ?"

"यों ही पूछा। कोई खास बात नहीं है।"

"मैं यह मान नहीं सकता।"

"यही, कि मेरा वहाँ आना-जाना हुआ करता है, कहीं मैं भी चीनियों के कुचक्र का शिकार न बनूँ।"

"आप निश्चिन्त रहिए। शौक से मिस इन्डिया के साथ प्रेम-लीला कीजिए। कोई भय नहीं है।"

रमणीमोहन ने बातों का रुख बदलते हुए कहा—"लैम्बर्ट, मैं बहुत शीघ्र दिल्ली छोड़ने का विचार कर रहा हूँ, क्योंकि पिताजी ने लौटने की सख्त ताकीद की है। शायद उन्हें कोई सन्देह हुआ है।"

"क्यों, क्या बात है ?"

"पिताजी ने वापस लौटने की सख्त ताकीद की है।"

"क्यों ?"

"क्या जानूं ? शायद उन्हें कोई सन्देह हुआ है।"

"ग्यारह लाख रुपये जो आपने खर्च कर दिये ?"

"अनुमान यही होता है, अखबारों ने बहुत शोर मचाया। कई पत्रों में मेरा चित्र भी छप गया है।"

"छपेगा ही, चित्र छपना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। किन्तु उसके साथ मेरे और मिलर के चित्र भी छपे होंगे, क्योंकि आपने उस दिन एक सम्वाद-दाता को चित्र लेने का अवसर दिया था।"

"यह ग़जब उसी भूल से हुआ है। पिताजी ने उस चित्र को देखकर न मालूम क्या अनुमान लगाया हो।"

"क्या आपके पिताजी रूढ़िवादी हैं ?"

"घोर रूढ़िवादी। माता-पिता दोनों कट्टर हिन्दू हैं, और माता तो आचार-विचार की घोर पक्षपातिनी। हम वैष्णव हैं। जो कुछ मैं यहाँ खा-पी रहा हूँ, वह यदि उन्हें मालूम हो जाय तो प्रायश्चित के अतिरिक्त मेरी माँ मेरा

मुंह देखना भी पातक समझें ।"

"इतने कठोर हैं, वे लोग ?"

"हाँ, वैसे मैं जो चाहूं खर्च कर डालूं, कभी विरोध में एक शब्द भी न कहेंगे, किन्तु धर्म और आचार के विरुद्ध मेरा तुच्छ से तुच्छ आचरण उन्हें सह्य नहीं है। यहाँ तक कि मैं सिगरेट भी उनके परोक्ष पीता हूँ, घर में तो कदापि नहीं ।"

"आप मेडिकल ग्रेजुएट हैं, पश्चिमीय सोसाइटी में घूमते हैं, फिर आप यह कैसे सहते हैं ?"

"इसलिए मैं प्रायः घर से दूर रहता हूँ। अब घर जाते ही विवाह का प्रश्न फिर उठेगा ।"

"वस्तुतः आप अभी तक अविवाहित हैं ?"

"हाँ ।"

"विवाह क्यों नहीं करते ? हिन्दुओं में बहुत दिनों तक कुंआरा रहने की प्रथा नहीं है ।"

"अपने विरोध के कारण अभी तक बचा हूँ ।"

"आपको क्या कोई लड़की पसन्द नहीं आई ?"

"हमारे यहाँ लड़की माता-पिता पसन्द करते हैं ।"

"अभी तक यह प्रथा बन्द नहीं हुई ?"

"अधिकांशतः नहीं ।"

"शायद आपको उनकी मन चाही लड़की पसन्द नहीं है ?"

"हाँ, इसीलिए तो भागा-भागा फिरता हूँ। बात यह है कि मेरी माँ ने अपनी एक सहेली को वचन दे रखा है कि उसकी कन्या से मेरा विवाह करेगी, और वह सम्बन्ध मुझे कतई स्वीकार नहीं है ?"

"क्यों, क्या वह शिक्षित और सुन्दरी नहीं है ?"

"इन दोनों गुणों से वह सम्पन्न है, किन्तु वह है मेरी माँ की भाँति दकियानूसी । माँ का बल पाकर वह मेरे ऊपर शासन करेगी, जिसे मैं बरदाश्त नहीं कर सकता ।"

"मिस इन्डिया आपके मनोनुकूल हैं ?"

"हाँ, वह मन बहलाने का अद्भुत साधन है।"

"उससे विवाह कर लीजिए।"

"मेरा परिवार उसे ग्रहण नहीं करेगा।"

"आप परिवार त्याग दीजिये; जैसे इंगलैण्ड के सम्राट एडवर्ड अष्टम ने अपनी प्रेयसी मिसेज सिमसन के लिए सिंहासन त्याग दिया था।" कह कर लैम्बर्ट मुस्कराने लगा।

"उतना नैतिक बल मुझ में नहीं है। मैं किसी प्रकार अपने माता-पिता को यह मर्मान्तिक पीड़ा नहीं दे सकता। कदाचित् ऐसा कोई काम कर उठाऊँ तो उसका परिणाम उनके लिए घातक होगा। संभव है कि उनका प्राणान्त हो जाय। मैं अपनी इच्छाओं की पूर्ति में पितृ या मातृघाती नहीं बनना चाहता।"

"फिर इस प्रकार कब तक चलेगा ?"

"जब तक प्रभू की इच्छा होगी।"

"क्या मिस इन्डिया से दूर भागने के लिए दिल्ली छोड़ रहे हैं ?"

"यही तो कठिनाई है।"

"कैसी कठिनाई ?"

"मैं उसे छोड़ नहीं सकता और इधर घर जाना जरूरी है। यदि वे लोग यहाँ आ गये तो सब गुड़ गोबर हो जायगा।"

"क्या कहीं अन्यत्र भागने का इरादा है।"

"कुछ स्थिर करने में असमर्थ हो रहा हूँ।"

"यदि पैसे की कमी हो तो मैं यथा शक्ति सहायता देने को तैयार हूँ।"

"धन्यवाद ! अभी कोई कमी महसूस नहीं करता। जहाँ से समाचार भेजूंगा, यथेष्ट पैसा आ जायगा।"

"मैंने अभी फिलहाल की बात कही थी।"

"अभी मेरे पास चार-पांच लाख रुपये हैं। पिताजी कभी पैसे की कमी नहीं होने देते।"

"और आपकी माता ?"

"उनका स्नेह भी अपार है, किन्तु धर्माचरण की कट्टर है। वह प्यार भी करना जानती हैं, और दण्ड देना भी।"

"बड़े धर्म संकट में हैं आप।"

"इसी से तो कहीं आने जाने की इच्छा नहीं हो रही है।"

"मेरी राय में आप यहाँ से मिसेज सिंह के घर चले जाइए। वहाँ शायद आपको शान्ति मिले।"

"वहाँ अशान्त होने की सम्भावना अधिक है।"

"तब आइये चिन्ता दूर करने के लिए एक-दो पेग पिये जाय।"

"हाँ, यह सुझाव ठीक है। किन्तु आप तो कहीं बाहर जा रहे थे।"

"मुझे एक मित्र से मिलने के लिए 'नाइट-स्टार' रेस्ट्राँ जाना था। वह कुछ देर तक मेरी प्रतीक्षा करेगा।"

"तब आइए, दो घूंट पीकर यह बेचैनी दूर की जाय।"

रमणीमोहन ने आलमारी से ह्विस्की की बोतल निकाली, और दोनों मित्र बैठकर पीने लगे।

पेग पीने के बाद लैम्बर्ट उठ खड़ा हुआ, और घड़ी देखता हुआ बोला—"शाम के सात बज रहे हैं। आप पीजिये, अब मैं जाऊँगा। देर होने से मेरे साथी चिन्तित होंगे।"

रमणीमोहन के मन की उदासी बहुत कुछ दूर हो चुकी थी। उसे सहर्ष विदा देकर वह पुनः विचारमग्न हो गये।

२८

जहाँ बुद्धि और विवेक हैं, वहाँ उनकी सहचरी चिन्ता है। जहाँ चिन्ता है वहाँ अशान्ति है। चिन्ता का रूप व्यावर्तन की भाँति कुंडली मारे सर्पाकार है, इसलिए उसका आदि-अन्त नहीं है। उसका उद्गम विचार है, और वह मस्तिष्क की प्रत्येक ज्ञान-तन्तु को अहर्निश आन्दोलित करती है। निद्रा के साथ जब मानव की सब वृत्तियाँ निश्चेष्ट हो जाती हैं, तब भी चिन्ता सजग रहती है। चिन्तित मनुष्य को कुछ नहीं सुहाता। यह भ्रान्त धारणा है कि मादक द्रव्यों से

चिन्ता का परिहार होता है। कभी-कभी वह और अधिक उग्र हो जाती है, और कभी-कभी वह उससे किञ्चित प्रभावित नहीं होती।

रमणीमोहन अपनी चिन्ताओं से मुक्ति पाने के लिए ह्विस्की पी रहे थे, किन्तु उनकी चिन्तायें सिमटने के बजाय उत्तरोत्तर बढ़ती जाती थीं। कला के प्रति उनकी आसक्ति उत्तरोत्तर बढ़ती हुई उस बिन्दु पर पहुँच गई थी, जहाँ से लौटना दुष्कर होता है। नारी और सुन्दरी नारी का आत्म-समर्पण ठुकराना किसी मानवोत्तर अर्जुन जैसे विवेकी पुरुष के लिए ही सम्भव था, ब्रह्मर्षि विश्वामित्र जैसे योगियों को भी पराजित होना पड़ा। नारी की विजय उसके आत्म-समर्पण में है। वह आत्म-समर्पण चाहे सत्य हो, और चाहे छलमय। यौवन अन्धा होता है। वह सत्य और प्रवंचना में विश्लेषण करने की शक्ति से रहित है। इन्द्रियों का उद्दाम वेग उसे परिचालित करता है, और इन्द्रियाँ विवेक शक्ति को आच्छन्न कर लेती है।

रमणीमोहन की मानसिक अवस्था कुछ इसी प्रकार की थी। एक ओर कला का आकर्षण और दूसरी ओर पारिवारिक कलह का भय। अजीब कशमकश में वह उस संध्या को थे। यद्यपि पहले पहल वह कला की ओर कुछ अधिक आकर्षित नहीं हुए थे, तथापि ज्यों-ज्यों उसके प्रेम–प्रदर्शन के रूप बढ़ते गए, त्यों-त्यों वह उसके रेशमी जाल में फँसते गए। अब वह उस स्थिति में पहुँच गए थे, जहाँ उसका सत्संग उनके जीवन की गति बन चुकी थी।

लैम्बर्ट के जाने के पश्चात् लगभग एक घन्टा बीत गया। वह कोई निर्णय लेने में असमर्थ रहे। आकाश होटल में शनिवार की रात्रि होने से विशेष हलचल थी, किसी फ्रांसीसी नृत्य मण्डली का प्रदर्शन आयोजित था, और पश्चिमी सभ्यता के अन्ध भक्तों का जमघट लगा था। रमणीमोहन ने भी उसका एक टिकट मँगाने के लिए टेलीफोन उठाया ही था कि द्वार पर एक ठिठकी छाया-मूर्ति दिखाई दी। उन्हें सन्देह हुआ कि वह शायद मिस मिलर है। अपना रिवाल्वर निकालने के लिए वह मेज की दराज खोलते हुए बाहर उस छाया की गति-विधि निरखने लगे। छाया जब अविचल देख पड़ी, तब उन्होंने पूछा—"कौन है ?"

छाया ने कोई उत्तर नहीं दिया। उन्होंने फिर पूछा—"कौन है, बोलो ?"

मन्द स्वर में, चिक उठाती हुई छाया ने उत्तर दिया—"मैं हूँ।"

रमणीमोहन स्वर पहचानकर भी विश्वास न कर सके। वह बोले—"तुम कौन हो ?"

छाया अब स्पष्ट हो गई। वह सशरीर कमरे के भीतर आ गई। उसने अपने मुख का आवरण दूर हटाया, और दौड़कर उनके पैरों से लिपट गई। रमणीमोहन विस्मय-विमुग्ध रह गए। उसे पहचानकर अंक में भरते हुए कहा—"कला, तुम यहाँ ?"

उसने अपना मुख उनके विशाल उरस्थल में छिपाते हुए कहा—"अपने प्रियतम के चरणों में स्थान पाने के लिए सभी हिन्दू नारियाँ लालायित रहती हैं।"

"तुमने क्यों यहाँ आने का कष्ट किया ? टेलीफोन से बात कर लेती।"

"उससे कानों की प्यास बुझ सकती है, लेकिन इन आकुल नयनों की नहीं।"

"अरे अभी हमको बिलग हुए पूरे चौबीस घन्टे भी नहीं बीते हैं।"

"आप घण्टों की बात कहते हैं, यहाँ पल-पल भारी है।"

"यहाँ आने से तुम्हारी मर्यादा पर लांछन लग सकता है।"

"मर्यादा, किसकी ? मेरी या तुम्हारी।"

"दोनों की ?"

"पति के चरणों में आश्रय लेने से नारी की मर्यादा घटती नहीं, बढ़ती है; किन्तु कलंकिनी नारी से पुरुष की मर्यादा पर लाञ्छन लग सकता है, परन्तु पत्नी से नहीं। वह उससे अभिन्न है।"

"लौकिक रीति से अभी हम लोग पति-पत्नी नहीं बने हैं।"

"किन्तु ईश्वर के सामने हम कभी के बन चुके हैं। मैंने जब आपको वरण कर लिया, तब आप मन, वचन, कर्म से मेरे स्वामी और मैं आपकी दासी हो चुकी। हाँ, भूल अवश्य हुई।"

"वह क्या ? मुझे विश्वास है कि तुम कोई भूल नहीं कर सकती।"

"उसे भूल नहीं, अब अपराध कहना उपयुक्त होगा।"

"अपराध ?"

"हाँ, वस्तुतः वह अपराध ही है।"

उस अपराध की व्याख्या करो। "वह क्या ?"

यह कहा जा सकता है कि मैंने वामन होकर चाँद पकड़ने की चेष्टा की है। अथवा रंकिनी रागवश राजमहिषी का आसन ग्रहण करने का उद्योग करे; तब वह अपराध ही माना जायगा।"

"अरे तुम कहाँ से कहाँ पहुँच गईं।"

"सत्य कह रही हूँ। मैं तुम्हारी दासी योग्य भी नहीं हूँ। यह तो आप की कृपा है कि आप मुझसे बोलते हैं, नहीं तो बोलने योग्य भी नहीं हूँ।"

"आप और तुम की खिचड़ी खूब पकाना सीख गई हो।"

रमणीमोहन हँसने लगे। कला लज्जा से अवगुंठित हो गई।

फिर सिसकती हुई बोली—"अब संसार को तिलाञ्जलि देकर इन चरणों में आश्रय लेने आई हूँ।"

"क्या मतलब ?" रमणीमोहन के स्वर से उद्विग्नता झांकने लगी।

"यही कि, मैं घर से भाग आई हूँ।"

"यहाँ आना घर से भागना नहीं है।"

"अब पुनः वापस नहीं जाऊँगी।"

"यह क्यों ?"

"मैं इस प्रश्न का क्या जवाब दूं। अपने मन से इसका उत्तर पूछो।"

रमणीमोहन विचारमग्न हो गये।

कला गोद से उतर कर कुर्सी पर बैठ गई, और साड़ी के छोर में बँधी हुई गांठ खोलती हुई सिसकने लगी। रमणीमोहन उसे कनखियों से देखने लगे। जब गाँठ खुल गई, तब उन्होंने उसका हाथ पकड़ कर पूछा—"यह क्या है ?"

कला फफकने लगी, और उसने मजबूती से गाँठ अपनी मुट्ठी में कस ली।

रमणीमोहन ने उसे छीनने की चेष्टा करते हुए कहा—"छोड़ो, देखूं क्या है। छीना-झपटी में चोट न लग जाए।"

"यह मेरी अपनी चीज है और तुम्हारे देखने लायक नहीं है।"

"मैं कब कहता हूँ कि यह मेरी है।"

"तब फिर रहने दीजिए।"

"क्यों रहने दूं। मैं देखना चाहता हूँ कि तुम्हारी मुट्ठी में क्या है?"

"वही, जिसकी इस अवसर पर आवश्यकता है।"

"अर्थात्।"

अर्थात्, कुछ नहीं।"

"जब कुछ नहीं है, तब मुट्ठी खोलने दो।"

"तुम्हारे देखने लायक नहीं है।"

"मेरे देखने लायक नहीं है? तुम्हारा मुझसे कुछ छिपा है?"

"नहीं।" और उसकी सिसकियां बढ़ने लगी!

"फिर क्यों नहीं देखने देती?"

कला की सिसकियाँ बढ़ने लगीं, और उसके साथ रमणीमोहन की अधीरता। वह उसे फुसलाते हुए उसकी मुट्ठी खोलने का प्रयत्न करने लगे।

"यह मेरे खाने की वस्तु है।" कहती-कहती कला फूट पड़ी।

"अगर तुम्हारे खाने की वस्तु है, तो मैं खा सकता हूँ। पहले मुझे चख कर उसका स्वाद लेने दो।"

"नहीं, वह तुम्हारे लिए नहीं, मेरे लिए है।"

"पहले मुझे चख कर देख लेने दो, फिर तुम खा लेना, मैं मना नहीं करूँगा?"

"तुम क्यों चखो? युग-युग जिओ, और···!" कहते-कहते वह बिलख पड़ी।

"क्या यह विष है?"

"विष नहीं, मेरी निष्कृति का अमोघ साधन।"

"पागल हुई हो?"

अभी नहीं, किन्तु यदि जीवित रही तो हो जाऊँगी। पागल होकर मरने से अभी सजगता से मरना कहीं सुखद है।"

"तुम मुट्ठी खोलती हो, या फिर बल प्रयोग करूँ ?"

"मैं तुम्हारे अधीन हूँ, बल प्रयोग करने की जरूरत नहीं है।"

"यह अधीनता मौखिक है। तुम मुट्ठी खोलो, मैं इस वस्तु की परीक्षा करूँगा !"

"मैं तुम्हारे पैर पड़ती हूँ, मुझे मर जाने दो। इन चरणों को हृदय से लगाए मरने में जो आनन्द अनुभव करूँगी, उसमें मरने की व्यथा डूब जायगी।"

"क्या बक रही हो तुम ? तुम अपने होश में नहीं हो।"

"तुम्हारे सामने मैं सचमुच अपना होश खो देती हूँ। तुम्हारे अतिरिक्त मुझे कुछ नहीं दिखाई देता।"

"तब फिर यह त्रिया-चरित्र क्यों फैला रही हो ?"

"उफ ! इतना अविश्वास। मैं तुम्हें ठगने आई हूँ ?"

"मैं कहता हूँ, मुट्ठी खोलो।"

"ठगनी की मुट्ठी खुला कर क्या करोगे ? अब तो मैं तुम्हें मुंह दिखाने योग्य भी नहीं रही। मेरा दुर्भाग्य।" वह पुनः रोने लगी।

"कला, तुम सीधे नहीं मानोगी। अर्थ का अनर्थ लगा, मुझे तुम कितनी पीड़ा पहुँचा रही हो ? नहीं जानती। मेरा मस्तिष्क चकरा रहा है।"

"अब तुम्हारी सब चिन्ताओं और पीड़ाओं का अन्त होने वाला है।"

"फिर वही फटी-फटी बातें ! क्या तुम्हें मेरे प्रेम की गहराई नहीं मालूम ?"

कला चुपचाप आँसू पोंछती रही। रमणीमोहन उसको उठाकर अपनी गोद में बिठाते हुए बोले—"कला तुम केवल मार्मिक कष्ट देना जानती हो, प्यार करना नहीं।"

"यह मिथ्या आरोप है। अपने प्यार की गहराई केवल मर कर ही प्रमाणित कर सकती हूँ। वही करने जा रही हूँ।"

"तुम्हें क्या सूझा है ?"

"जिसमें तुम्हारी रुसवाई न हो। कोई उँगली उठा कर न कह सके कि यह व्यक्ति कलंकित है, इन्होंने एक आवारा, अनाथ और अज्ञात कुल की कलंकिनी लड़की को आश्रय दिया है। यह जाति और धर्मच्युत है।"

"क्या अनाप-शनाप बक रही हो ?"

"मैं तुम्हें अपने साथ डुबोना नहीं चाहती। जब स्वर्ग से तुम्हें सुखी देखूंगी तब उस वियोगावस्था में अनिर्वचनीय शान्ति अनुभव करूंगी।"

"अगर तुम मरने-मारने पर तुली हो तो आओ दोनों ही साथ-साथ मरें। तुम विष प्रयोग करो, और मैं पिस्तौल।"

यह कह कर वह अपनी मेज का दराज पुनः खोलने लगे।

कला की मुट्ठी खुल गई, और उसने अपने दोनों हाथों से उनको इस प्रकार जकड़ लिया जैसे डूबता हुआ मनुष्य पकड़ता है। एक छोटी शीशी उसकी मुट्ठी से छूटकर रमणीमोहन के हाथ में आ गई। उसे देखते हुए कहा—"क्या यह पोटेशियम साइनाइड है ? रंग तो वैसा ही सफेद है, और उसके कई छोटे-छोटे टुकड़े हैं। यह सब इतना हजारों व्यक्तियों को समाप्त करने के लिए पर्याप्त है। हम-तुम दोनों इसे खा सकते हैं।" यह कह, वह कांच की डाट खोलने लगे। कला ने उन्हें छोड़कर उनका हाथ पकड़ लिया।

वह बिलखती हुई बोली—"यह क्या गजब कर रहे हो ? यह तुम्हारे लिए नहीं, मेरे लिए है। मुझे अपने चरणों में मर जाने दो।"

"जब तुम मरने पर आमादा हो, तब मैं ही जीवित रहकर क्या करूंगा। तुम्हारे बिना मेरा जीवन-व्यर्थ है।"

"नहीं, नहीं, मेरे जीवित रहने में संसार का क्या भला है ?"

"और मेरे ?"

"तुम्हें कौन दुख है ? तुम राज राजेश्वर हो, तुम्हारे माता-पिता परिवार है, तुम्हारी इज्जत-आबरू है, तुम्हें सब, सर-आँखों पर बैठाते हैं, तुम संसार-पूज्य हो, तुम देवता हो, मेरे आराध्य हो। मैं तुम्हें कैसे आत्महत्या करने दूंगी।"

"मेरी महानता बताई अब अपनी तुच्छता बताओ।"

"सत्य ही मैं अधमाधम हूँ। तुम्हारी परेशानी का कारण बनी हूँ। क्या मैं नहीं जानती कि तुम रात-दिन किस सोच में डबे रहते हो? यदि मैं तुम्हें प्यार न करती, तब धर्म-संकट में क्यों पड़ते?"

"कैसा धर्म-संकट? तुम सचमुच पागल हो गई हो।"

"मुझसे कुछ छिपाना व्यर्थ है। मैं तुमसे इतना घुल-मिल गई हूँ कि तुम्हारी चिन्ताएँ मेरी बन गई हैं। जो सोचते हो, उसकी प्रतिच्छाया तत्क्षण मेरे मानस-पटल पर अंकित हो जाती है। तुम सोचते हो कि मैं कैसी जन्जीर होकर तुम्हारी गति अवरुद्ध कर रही हूँ, तुम्हारे माता-पिता की आकांक्षाओं में रोड़ा बन रही हूँ।"

"तुम अपनी असत् कल्पनाओं से दुखित रहती हो, यह मुझे आज मालूम हुआ।"

"असत्य कल्पना नहीं, सत्य विचार हैं। क्या तुम मेरे सर पर हाथ रख कर कह सकती हो कि जो कुछ मैं कह रही हूँ, वह झूठ है।"

रमणीमोहन ने कोई उत्तर नहीं दिया।

उनके मौन से बल पाकर वह फिर बोली—"सत्य कहना, कि क्या मैं तुम्हारे मार्ग का रोड़ा ही नहीं प्राचीर बनी खड़ी हूँ।"

रमणीमोहन पुनः मौन रहे।

कला ने हँसते हुए कहा—"यह सूर्य की तरह स्पष्ट है। इसीलिए तो मैं मरना चाहती हूँ, कि जिसमें मैं अपने प्रियतम की सब चिन्ताएँ-बाधाएँ लेकर चली जाऊँ, और तुम्हारा मार्ग निष्कंटक कर जाऊँ।"

रमणीमोहन ने गंभीर होकर कहा—"कला, मैं इनकार नहीं करता कि तुम्हारे कथन में बहुत कुछ सत्यता है, और वस्तुतः मैं इसी तरह की चिन्ताओं का शिकार हूँ, किन्तु····।"

"किन्तु परन्तु कुछ नहीं। जब मैं तुम्हारे दुख का कारण बनी हूँ, तब मेरा प्राणान्त श्रेयस्कर है।"

"उफ़, ठहरो, तो। मुझे भी कुछ अपनी बात कहने का अवसर दो।"

"क्या अवसर दूं, जो स्पष्ट है उसकी टीका टिप्पणी क्या?"

"नहीं, उतना ही सब सत्य नहीं है, यह तुम्हारा विचार है, अब मेरी भी बात सुनो।"

कला उनको बाहु-पाश में बद्ध करती और उत्सुक नयनों से देखती हुई उनका कथन सुनने को आतुर हो गई।

"कला, धैर्य रखकर मेरी बात सुनो। यह सत्य है कि मेरा परिवार हमारे-तुम्हारे विधिवत विवाह में बाधक है, और परिवार का मुझे मोह है, यह भी सत्य है। मैं अपने माता-पिता की इच्छानुसार अपना विवाह न करूँ, इससे उनको पीड़ा तो होगी, किन्तु मर्मान्तक नहीं। हाँ, यदि उनकी इच्छा का अपमान कर तुमसे विवाह कर लूँ, तब मुझे विश्वास है कि दोनों की मृत्यु का मैं कारण बनूँगा।"

कला बीच में बोल उठी—"सामने आई न वही बात! मेरी कल्पना ग़लत नहीं है, और न मैंने कोई भूल तुम्हारी कठिनाइयों के समझने में की है।"

"उफ़! चुप तो रहो कुछ देर। मुझे अपनी स्थिति स्पष्ट कर लेने दो।"

"अच्छा, मैं न बोलूंगी। मेरी धारणा कितनी सच है!"

"यहाँ तक तुम्हारी धारणा सत्य है, मैं इनकार नहीं करता, किन्तु इसका अंत यह नहीं है।"

"वह क्या?"

"किन्तु इसके साथ यह भी अनुभव करता हूँ कि तुम्हारे बिना मेरा जीवन नीरस रहेगा। मेरी जीवन-मूल को जिस रस-धार से सींच रही हो, यदि वह रस मुझे भविष्य में नहीं मिलता, तब वह सूख जायगी। इसलिए मैं तुमसे बिलग नहीं रह सकता।"

"बड़ी कठिन समस्या है!" हृदयविदारक आह के साथ कला बोली।

"साथ रहने का केवल उपाय हैं?"

"उपाय।"

"हां, वह तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है।"

"तुम्हारे चरणों में रहने के लिए सब कुछ करने को कटिबद्ध हूँ।" घर छोड़ आई हूँ ममी से सम्बन्ध तोड़ आई हूँ। वहाँ जाने का रास्ता बन्द हो चुका

है। अब केवल तुम्हारा सहारा है अथवा यमुना या विष का।"

"न तुम्हें यमुना में डूबना और न विष खाना है। तुम्हें मेरे साथ रहना है। बता चुका हूँ कि तुम्हारे बिना मैं जीवित नहीं रह सकता, परन्तु····।"

"परन्तु क्या? अपनी ओर से सब कुछ करने को तैयार हूँ।"

"यदि विवाह की रस्म अदा करने की ज़िद न करो तब ···।"

"कब कहती हूँ कि विवाह की भाँवरें पड़े, अग्नि की साक्षी दिलाई जाए। इन सामाजिक रीतियों अथवा कुरीतियों के पूर्ण होने के लिए लालायित नही हूँ। इनके प्रति मेरी लालसा, या आस्था नहीं है। प्रगतिवादी युग में विवाह संस्कार की कोई आवश्यकता भी नहीं रही। मन-मिलन ही मुख्य, शेष सब गौण है।"

रमणीमोहन ने उसे कस कर दबाते हुए कहा—"तब सब ठीक है। तुम्हें कोई मुझसे दूर नहीं कर सकता। उसका अब प्रश्न ही नहीं उठता। तुम मेरी हो, और मैं तुम्हारा।"

कला कुछ न बोली। उसने अपनी सहमति उनसे बद्ध होकर दी।

रमणीमोहन भावावेश से बोले—"कला, अब मुझे निश्चय हो गया कि तुम्हारा प्रेम पवित्र, अगाध, असीम, निस्वार्थ और शुद्ध है।"

"क्या अभी तक कुछ सन्देह था?"

"सन्देह नहीं, इतना स्पष्ट नहीं था।"

"घर छोड़ आई हूँ, तब भी विश्वास नहीं हुआ? क्या तुम्हारे मन में सन्देह था कि मैं तुम्हारे ऐश्वर्य का भागीदार बनने के लिए प्रेमलीलाएँ करती हूँ?"

"नही नहीं, यह विचार कभी नहीं आया। लेकिन तुम घर क्यों छोड़ आईं? क्या तुम्हारी माता को ऐसा सम्बन्ध स्वीकार नहीं?"

"ममी की वही जिद है जिससे माता-पिता स्वभावतः अभिभूत रहते हैं।"

"अर्थात्!"

"यही कि विवाह की रस्म अदा किए बिना दो प्रेमियों का सम्बंध अवैध है। नारी का कोई अधिकार स्वामी पर नहीं होता।"

"फिर तुमने उसकी इच्छा के विपरीत कार्य किया है ?"

"क्या करूँ, मजबूरी थी। मैं जानती थी कि ऐसी ही कुछ अड़चनें तुम्हारे सामने है। अज्ञात कुलशील लड़की को कौन पुत्र-वधू बनायेगा। परन्तु मैंने जबसे तुम्हें जाना, अपना सब इन चरणों में निछावर कर चुकी हूँ। विवाह की रीतियों की मैं गुलामी नहीं कर सकती। इस नवयुग में उनकी कोई आवश्यकता नहीं है। इसी से घर छोड़कर चली आई; जहाँ मेरा जीवन है। मेरा रास्ता, मेरा कर्त्तव्य स्पष्ट है। जब तक तुम्हारा प्यार पाऊँगी, तब तक जिऊँगी, और जब उसमें ह्रास देखूगी, अथवा तुम्हारे पथ का कांटा बनूँगी, तब साइनाइड मेरे लिए सुरक्षित है।" कहती हुई वह पुनः भावावेश से उनमें सिमट गई।

"ऐसी कोई आशंका न करो। तुम सदैव मेरे साथ रहोगी। अब हमें भविष्य का कार्यक्रम बनाना चाहिए।"

"जो कार्यक्रम चाहो, बनाओ, मैं तन-मन से तुम्हारी अनुगामिनी हूँ।"

"तुम्हारी जैसी समस्या मेरे सामने भी है। आज ही पिता जी का पत्र आया है, जिसमें उन्होंने बम्बई वापस आने की सख्त ताकीद की है। माँ ने भी नीचे दो पंक्तियाँ धमकी की लिखी है कि यदि तुरन्त नहीं आते, तो मुझे आना पड़ेगा। इसी सोच-विचार में डूबा हुआ था कि कैसे इस उलझन से छुटकारा मिले।"

"वे लोग आ जायेंगे तब क्या होगा ?"

"इसीलिए मैं भी तुम्हारा अनुकरण करूँगा। तुम घर छोड़ आई हो, और हम दोनों को तुरन्त दिल्ली छोड़ देना है।"

"किधर चलोगे ?"

"अभी कुछ निश्चय नहीं कर सका हूँ।"

"रुपये-पैसे की कमी नहीं है। मेरे पास इस समय गहने-नकदी मिलाकर लगभग सवा लाख हैं।"

"ठीक है, किन्तु रुपये मेरे पास यथेष्ट हैं, और जब जितना चाहूँगा, मँगवा सकता हूँ।"

"फिर क्या चिन्ता है ? यदि मेरा सुझाव मानो तो एक बात कहूँ ?"

"अवश्य ! अब हमें एक दूसरे के परामर्श से काम करना पड़ेगा ?"

"हम लोग यदि आज रात को ही कलकत्ता चल दें तो ?"

"हाँ, सुझाव ठीक है। मैं भी यही सोच रहा था।"

"तब फिर तैयारी करो। शुभस्य शीघ्रं।"

"मेरी तैयारी में कितनी देर लगेगी ? लेकिन कल चलें तो कैसा रहेगा ? इतनी जल्दी क्या है ? आज रात को ही मेरे माता पिता नहीं आ जायेंगे ?"

"वे नहीं आवेंगे, किन्तु ममी तो आ सकती हैं। मैं तो उनसे छिपकर आई हूँ। विलम्ब होने पर आ सकती हैं, और फिर मुझे उनके बंधन में रहना पड़ेगा। तुम होटेल का बिल चुका आओ, तब तक मैं तुम्हारा सामान बाँधती हूँ।"

"पहले यह बताओ कि रुपया-गहना तुम चुराकर लाई होगी ?"

"चुराकर नहीं, यह मेरा है। देखिये बैंक की पासबुक, और लाकर की चाभी तथा उसकी लिखा-पढ़ी। यह रुपया मेरा है, जो पिता जी मुझे माँ से अलग दे गए थे। ममी से इसका कोई तअल्लुक नहीं है। आपकी कला, चाहे अज्ञात कुल-शील की हो सकती है, और वस्तुत. है भी, किन्तु चोर कदापि नहीं। क्या मैं नहीं जानती कि चोर बनकर तुम्हारे प्रेम की अधिकारिणी नहीं हो सकती। इतना नीच मुझे न समझो।"

रमणीमोहन कुछ खिसिया-से गए। वह लज्जित कंठ से बोले—"तुम हमेशा तिल का ताड़ बना लेती हो ? मेरा मतलब था कि यदि यह रकम छिपा-कर लाई हो, तब उसे वापस कर देना चाहिए, ताकि कोई कानूनी काररवाई न हो सके।"

"उस ओर से निश्चिन्त रहो। ममी ऐसा कुछ न करेगी, मुझे पूर्ण विश्वास है।"

"तब ठीक, चलो हम लोग कलकत्ता चलें। अभी समय है, कोई न कोई गाड़ी मिल जायगी। मैं जाता हूँ होटल का बिल चुकाने, और तुम बिखरा सामान बाँधलो।"

रमणीमोहन चले गए और कला हँसती हुई चीजें बटोरने लगी।

२६

लैम्बर्ट आकाश होटेल से बाहर निकल कर सूक्ष्म दृष्टि से चारों ओर देखने लगा। यह उसका स्वभाव था। जहाँ तक होटेल तथा मार्ग-प्रकाश से देखा जा सकता, वहाँ तक उसे कोई सन्देहजनक व्यक्ति या वस्तु नहीं दिखाई पड़ी। वह सीटी बजाता और तीखी दृष्टि से चतुर्दिक देखता हुआ जाने लगा। मार्ग आलोकित था। कोई संशय का कारण भी सामने न था, किन्तु फिर भी उसका माथा ठनक रहा था। एक अजीब तरह की सिहरन से उसका शरीर रोमाञ्चित हो रहा था। शीत का कोई प्रश्न ही नहीं उठता था। नवम्बर मास की संध्या सुहावनी होती है; न उसमें शीत होता है और न उष्णता। वह गरम कपड़े पहने था, और ह्विस्की की मादकता भी उस सुहावने वातावरण को मनमोहक बना रही थी, परन्तु फिर भी उसकी रोमावलि रह-रह कर खड़ी हो जाती थी। उसे यह भान नहीं हो रहा था कि पुलक हर्ष, मादकता अथवा किसी आगामी आशंका के कारण है।

अभी वह कुछ ही दूर गया होगा कि उसके पास से झपटता हुआ एक युवक अंग्रेजी वेष-भूषा में निकला; और कहता गया—"सावधान, वह घेरा डाल रही है। टैक्सी पकड़ो, और 'ब्लूबर्ड' पहुँचो। जेम्स, मार्टिन और स्मिथ वहीं मिलेंगे।" लैम्बर्ट चौकन्ना होकर अपने चारों ओर देखने लगा। सड़क के दोनों तरफ नए-नए मकानात बन रहे थे। मलबे के ढेर लगे थे, ईंटों के चट्टे खड़े थे, जो छिप कर वार करने की सुविधा प्रदान करते थे। इस समय मार्ग लगभग शून्य था। इक्का-दुक्का मोटरें निकल रही थीं। उनमें से एक को टैक्सी समझ कर ईंटों के चट्टे के पास खड़े होकर लैम्बर्ट ने आवाज देकर बुलाया, किन्तु वह बिना ध्यान दिए चली गई। उसने अनुमान किया कि वह खाली नहीं है, और शायद वह टैक्सी भी नहीं थी, किंतु उसके पीले हुड की चमक साफ बता रही थी कि वह टैक्सी के अतिरिक्त कुछ नहीं थी। वह मलबे के ढेर से आगे बढ़ा। उसने अपने रिवाल्वरों के 'सेफ्टी क्लच' हटा दिए थे।

प्रतिक्षण वह आक्रमण की प्रतीक्षा करता हुआ धीरे-धीरे बढ़ रहा था। कुछ दूर पर उसे खड़खड़ाहट सुनाई दी, और तत्क्षण जमीन पर घुटनों के बल बैठ गया। उसका बैठना था कि अंधकार में अग्नि की एक छोटी लौ प्रकट हुई और मामूली आवाज के साथ पिस्तौल की गोली राखी के ढेर में घुस गई। लैम्बर्ट बाल-बाल बच गया। उसके पश्चात् सड़क के दूसरी ओर के मलबे से एक छोटे कद का मनुष्य सहसा प्रकट हो गया, और वह उसके सामने साँप की गति से तिरछा टेढ़ा आता दिखाई दिया। लैम्बर्ट राखी के ढेर के पीछे खिसक चुका था, और आक्रामक के पास पहुँचने की कोशिश कर रहा था। इसी समय दो मोटरें प्रतिकूल दिशाओं से तीव्र प्रकाश छोड़ती हुई आती दिखाई दी। क्षण भर के लिए वह स्थान आलोकित हो गया। लैम्बर्ट ने देखा कि उसका आक्रामक पीछे लौट गया है। उसने अवसर से लाभ उठाया, और तेजी से आकाश होटल की ओर ईंटों के चट्टों की आड़ में भागने लगा। दोनों मोटरें वहीं ईंटों के पास आकर खड़ी हो गईं। चालकों में कुछ बातें हुईं, और वे दोनों अपने-अपने हार्न एक विशेष विधि से बजाने लगे। उनकी आवाज सुन कर दौड़ता हुआ लैम्बर्ट ठहर गया, और उन मोटर गाड़ियों की ओर पुन: लौटा। लैम्बर्ट के प्रकट होते ही एक गाड़ी का दरवाजा खुल गया, और दूसरी, उसके बगल में आकर खड़ी हो गई, इस प्रकार कि कोई उस पर आक्रमण न कर सके। लैम्बर्ट दौड़ कर एक मोटर में बैठ गया। उसके बैठते ही दोनों ही पुन: प्रतिकूल दिशाओं में चली गईं। वह शून्य स्थान पुन: शून्य हो गया।

लैम्बर्ट के जाते ही आकाश होटल की ओर से एक मोटर आती दिखाई पड़ी। इसकी एक बत्ती प्रकाश फेंक रही थी, और वह भी क्षण-क्षण जलती-बुझती थी। ईंटों के पास पहुँचकर उसकी गति इतनी धीमी हो गई कि जैसे वह रेंग रही हो। मार्ग के दूसरी ओर से नाटे क़द का व्यक्ति दौड़ता हुआ आया, और दौड़ते-दौड़ते दरवाजा खोलकर बैठ गया। उसने बैठते हुए कहा—"वार खाली गया। वह निकल भागा, उसका पीछा करो। काली मोटर है, चौराहे से दाहिनी ओर गई है।"

पूरी तेजी से उस दिशा में पहली मोटर का पीछा करने के लिए वह

भागने लगी ।

लैम्बर्ट को लेकर उसकी मोटर 'ब्लूबर्ड' नामक रेस्ट्राँ के सामने खड़ी हो गई । द्वार पर तीन व्यक्ति खड़े उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे । लैम्बर्ट उनके साथ उसके बड़े हाल के सबसे पीछे कोने में जाकर बैठ गया ।

लैम्बर्ट के चेहरे पर किसी घबड़ाहट के चिन्ह नहीं थे । उसने शान्त स्वर में कहा—"विलसन की चेतावनी से मैं उनकी गोली का शिकार होते बाल-बाल बच गया । यद्यपि होटल से निकलकर मैंने चारों ओर देख लिया था, किन्तु सन्देह का कोई कारण नहीं दिखाई दिया। उस समय कोई टैक्सी भी नहीं दिखाई दी । चौराहे से एक को जाते देखकर उसे बुलाया, और उसके साथ ही सड़क के दूसरी ओर से शत्रु ने हमला कर दिया । मैं होशियार था, और ज्यों ही कुछ खड़खड़ाहट हुई, त्यों ही मैं बैठ गया । शत्रु की गोली मलबे के ढेर में घुस गई । मैं आकाश होटेल की ओर लौट रहा था कि जानसन और एन्ड्रूज की मोटरें घटना स्थल पर पहुँच गईं । तब जान बची ।"

उन तीन व्यक्तियों में से, जिसका नाम मार्टिन था, बोला—"आपको लेने के लिए विलसन को भेजा था, किन्तु उसकी गाड़ी में कुछ खराबी आ जाने से उसे रास्ते में रुकना पड़ा । एक बँगले से हमें टेलीफोन से सूचना देकर दूसरी गाड़ी मँगवाई । हमने सुरक्षा के ख्याल से दो गाड़ियों में जानसन और एन्ड्रूज को भेज दिया ।"

लैम्बर्ट—"तुम्हारी दूरदर्शिता से मैं बच सका । सड़क पार कर आक्रमक मेरी ओर आ रहा था, शायद मेरे शव को राखी के ढेर में छिपाने के लिए, किन्तु इसी बीच तुम्हारी भेजी मोटरें पहुँच गईं, और अपने-अपने हार्नों से अपनी उपस्थिति सूचित करने लगी । मैं पीछे लौट पड़ा, और जानसन की गाड़ी में बैठकर आ गया ।"

मार्टिन—"उस दोगली ने अपने दल-बल के साथ आक्रमण करने की योजना बनाई है ।

लैम्बर्ट—"जेम्स; तुम अपनी रिपोर्ट दो ।"

जेम्स—"स्मिथ के साथ मैं रिट्ज होटेल के सामने तथा पिछवाड़े के

दरवाजों पर निगरानी कर रहा था। दोपहर को वह बहुत घबड़ाई, होटल से निकली, और एक टैक्सी में रवाना हुई। मैं भी एक दूसरी टैक्सी पकड़ कर उसका पीछा करने लगा। कैनाट सरकस पर वह एक चीनी भोजनालय में प्रविष्ट हुई, और थोड़ी देर बाद उसके पिछले द्वार से निकलकर उसने दूसरी टैक्सी पकड़ी। मैंने अनुमान कर लिया था कि वह पिछले दरवाजे से निकलेगी, इसीलिए मैं उससे कुछ दूर एक टैक्सी में उसके निकलने की प्रतीक्षा कर रहा था। मैं एक दैनिक समाचारपत्र के पीछे अपना मुंह छिपाए बैठा था। होटेल से निकलकर वह मेरी टैक्सी के पास आई, परन्तु मुझे बैठा देखकर आगे बढ़ गई। चौराहे पर पहुँचकर उसने एक टैक्सी बुलाई, और पुरानी दिल्ली का रास्ता पकड़ा। मैं भी उसका पीछा करता हुआ लालकिले तक पहुँचा। वहाँ ट्रैफिक रुका था। वह बिल चुका कर पैदल चाँदनी चौक की ओर चलने लगीं। मैं भी टैक्सी का भाड़ा और एक रुपया इनाम का देकर उसका अनुसरण करने लगा। फौव्वारे के पास पहुँचकर उसने दूसरी टैक्सी पकड़ी, और पुन, नईदिल्ली की ओर रवाना हुई। मैंने भी एक टैक्सी बुलाई, और उसके पीछे-पीछे राजेन्द्र-नगर गया। सड़क के मोड़ पर उसने टैक्सी छोड़ दी और पैदल पुनः चलने लगी। टैक्सी का भाड़ा देने के बाद मैं भी उसके पीछे लगा। इधर-उधर भटकती हुई, अन्त में वह एक दोमंजिले मकान में चली गई, जिसकी तख्ती में 'अलका' और मिसेज रिपुदमनसिंह का नाम लिखा था।"

लैम्बर्ट—"अच्छा वह मिसेज रिपुदमनसिंह के घर पहुँच गई। उसके बारे में कुछ पता लगाया कि उसकी हक़ीकत क्या है?"

जेम्स—"भला यह कैसे भूलता। पास-पड़ोस में पूछने पर मालूम हुआ कि वह एक रहस्यमयी विधवा है, जो मुहल्ले वालों से कोई सम्पर्क नहीं रखती। उसके यहाँ शाम को बड़े-बड़े लोग आते हैं, नाच-रंग की मजलिस जमती है। दिन भर फाटक बन्द रहता है, लेकिन शाम को खुलता है, और दो जवान, दो बड़े-बड़े बुलडागों के साथ पहरा देते हैं। वे जवान शायद गूंगे-बहरे हैं, क्योंकि वे किसी के प्रश्नों का उत्तर नहीं देते, और जिनको पहचानते हैं, उन लोगों को ही जाने देते हैं। एक विचित्र बात यह भी सुनने में आई कि वह पुराने अव—

काश प्राप्त तथा नौकर फौजियों के घर तोहफे भिजवाया करती है, किन्तु उनकी आमद-रफ्त नहीं होती। उस घर में कितने आदमी रहते हैं, यह कोई नहीं बता सका। उसके एक खूबसूरत लड़की है, जो हाल में 'मिस इन्डिया' चुनी गई थी। कभी-कभी अनेक सुन्दर नवयुवतियां भी वहां आती-जाती देखी जाती हैं। उस घर के पीछे भी एक द्वार है, जहां पहरा रहता है। मिसेज रिपुदमनसिंह हमेशा बन्द गाड़ी में निकलती है। जिस दिन 'मिस इन्डिया' उसकी लड़की घोषित हुई थी, उसी दिन मुहल्ले वालों ने उसका घर और उसकी लड़की तथा उसे देखा था।"

लैम्बर्ट—"हूं, मिस मिलर का इतने चक्कर से वहां जाना अवश्य ही गंभीर बात है। संभव है, वह भी चीनियों का कोई अड्डा हो।"

जेम्स—"संभव नहीं, बिल्कुल चीन के गुप्तचरों का अड्डा है, क्योंकि मैंने एक चीनी अधिकारी को, जो कल ही चीनी दूतावास में आया है, उसमें प्रवेश करते देखा है।"

लैम्बर्ट—"कौन ? काउ-चू वहां गया था ? वही कल आया है।"

जेम्स—"जी हां, वह काउ-चू ही था। उसको वहां देखकर मैंने अपनी सहायता के लिए विल्सन और एन्ड्रूज को भी टेलीफोन से बुला लिया, और हम उसके दोनों दरवाजों पर नजर रखने लगे।"

लैम्बर्ट—"मिलर वहां से कब निकली ?"

जेम्स—"लगभग तीन घंटे बाद, और वह भी पिछले दरवाजे से। इस बार उसके साथ एक मोटा तगड़ा चीनी था, जिसका फोटो हमने ले लिया है।"

लैम्बर्ट—"शाबाश ! फोटो कैसे लिया ?"

जेम्स—"उसे सिगरेट की लत है। वहां से निकलकर वह एक दूकान में सिगरेट खरीदने के लिए ठहरा। एन्ड्रूज को अवसर मिला, और उसने उसका स्नैप ले लिया।"

लैम्बर्ट—"प्रिन्ट तैयार हो गया ?"

जेम्स—"जी हां। देखिए यह उसका फोटो है।"

लैम्बर्ट उसे देखने लगा। फिर कहा—"लगभग इसी हुलिया का वह

व्यक्ति था, जिसने मुझ पर गोली चलाई थी।"

जेम्स—"जी हाँ, वही था। मिलर उसके साथ कनाट सरकस आई, और उसी चीनी भोजनालय में उसके साथ गई। इसके बाद वह कब और किधर से निकल गई, हम लोग नहीं जान सके।"

लैम्बर्ट—"ये लोग वहाँ कब तक ठहरे ?"

जेम्स—"शाम तक। एन्ड्रूज वहाँ चाय पीने के बहाने अंदर भी गया किन्तु उन दोनों को किसी जगह नहीं देखा।"

लैम्बर्ट—"संभव है कि वहाँ कोई तहखाना हो, और वहाँ कोई योजना बना रहे हों।"

जेम्स—"हो सकता है। उस भोजनालय के आस-पास कई चीनियों की दूकानें हैं। शायद किसी गुप्त द्वार से उनमें आने-जाने की व्यवस्था हो, जैसी चूहों के बिलों में होती है।"

लैम्बर्ट—"सन्देह होने पर तुम्हें हर दूकान पर पहरा लगा देना था।"

जेम्स—"मैं उस घर की निगरानी कर रहा था, और इन दोनों का उधर ध्यान नहीं गया।"

लैम्बर्ट—"मलय में तुम इन चीनियों की कार्रवाई देख चुके हो।"

जेम्स—"वहाँ चीनियों की आबादी ज्यादा थी, और····।"

लैम्बर्ट—"ठीक है, जब ये अपनी घनी आबादी में कर सकते हैं, तब थोड़ी संख्या में परस्पर गुप्त सम्बन्ध रखना अति आवश्यक है।"

जेम्स—"यही समझने में भूल हुई।"

लैम्बर्ट—"उसके परिणामस्वरूप मेरे ऊपर हमला हुआ।"

जेम्स—"हाँ, यह भूल तो हो गई।"

लैम्बर्ट—"अब क्या विचार है ?"

जेम्स—"हम लोगों को एक बहु-मूल्य वस्तु प्राप्त हो गई, अब यहाँ ठहरना व्यर्थ है।"

लैम्बर्ट—"यही मेरा भी मत है। यहाँ रहने से खून-खराबा होने की आशंका है, और हमें सामने आना पड़ेगा, जो किसी भी हालत में मुनासिब

नहीं है ।"

जेम्स—"आज रात को ही हमें चल देना चाहिए ।"

लैम्बर्ट—"हाँ, तुम लोग जाओ। मुझे आकाश होटल जाकर एक जरूरी काम करना है । उस बेचारे को आगाह कर दूं, नहीं तो उसकी जान मुफ्त में जायगी ।"

जेम्स—"कौन है वह ?"

लैम्बर्ट—"मेरे कमरे का पड़ोसी एक भारतीय कोट्याधीश, जो मिसेज रिपुदमनसिंह की लड़की के प्रेम में मजनू हो रहा है । उसने आज मुझसे उसके सम्बन्ध में पूँछा भी था। मुझे ये सब हालात, जो तुमने बताए है, मालूम नहीं थे । मैंने उसे विश्वास दिलाया कि मिसेज रिपुदमनसिंह का कोई सम्बन्ध चीनियों से नहीं है । वह मेरे ऊपर भरोसा करता है । उसको सब बातें बता देना मेरा अब कर्त्तव्य है ।"

जेम्स—"क्या यह वही है, जिसने मिस इन्डिया का ताज खरीदा था।"

लैम्बर्ट—"तुम्हारा अनुमान ठीक है । वह बहुत सीधा सरल युवक है । बेचारा चीनी गुप्तचरों के फन्दे में फँस गया है । मुझे उस पर तरस आता है ।"

जेम्स—"कोशिश कीजिए । मेरा विश्वास है कि वह प्रेमान्ध है । किसी के समझाने बुझाने का कोई अर्थ नहीं निकलेगा । देखिए शायद ही कोई नतीजा निकले ।"

लैम्बर्ट—"देखा जायगा । कुछ खाने-पीने को मँगाओ ।"

जेम्स ने होटेल के वेटर को भोजन लाने का आदेश दिया ।

३०

जेम्स, एन्ड्रूज और लैम्बर्ट तीनों बन्द गाड़ी में आकाश होटेल वापस आए, उस समय रात्रि के ग्यारह बजे थे, और नृत्य-प्रदर्शन समाप्त हुआ था । उसका प्रशस्त प्रांगण मोटरों से खचाखच भरा था। निकलती हुई भीड़ में गुजरना कठिन था । लैम्बर्ट को टैक्सी दूर खड़ा करना पड़ा । जेम्स और एन्ड्रूज लिफ्ट द्वार पर पहुँचे । लिफ्ट को नीचे लाने के लिए लैम्बर्ट ने घन्टी

बजाई, और उसके नीचे आने की प्रतीक्षा करने लगा। इसी समय वह वेटर जो उसके और रमणीमोहन के कमरे के लिए नियुक्त था, वहाँ आया, और सलाम कर बोला—"आपके बगल वाले कमरे के साहब चले गए, और यह पत्र आपको देने के लिए दे गए हैं।"

यह कहकर उसने अपनी जेब से एक बन्द लिफाफा निकालकर उनको दिया।

लैम्बर्ट ने उसे जेब में रखते हुए पूछा—"उनको होटल छोड़े कितनी देर हुई है ?"

"लगभग चार घन्टे।"

"अकेले गए हैं ?"

"जी नहीं, उनके साथ एक 'मैडम' भी थी।"

"वह कैसी थी ?"

"बिल्कुल नौजवान, और बड़ी खूबसूरत। मालूम होता था कि पीले और लाल गुलाब के समिश्रण से वह बनी हैं।"

"कहाँ गए हैं, कुछ मालूम हुआ ?"

"पालम हवाई अड्डे के लिए उन्होंने टैक्सी मँगवाई थी।"

"उस वक्त कोई वायुयान नहीं जाता ?"

"मालूम नहीं। सम्भव है कि पालम जाने का इरादा बदल दिया हो, और रेलवे स्टेशन चले गए हों।"

अब तक लिफ्ट नीचे आ चुका था। लैम्बर्ट ने अपने साथियों सहित उसके पिंजड़े में प्रवेश किया, और वेटर को साथ आने का संकेत किया। उनके प्रवेश करते ही लिफ्ट ऊपर उठा।

ऊपर अपने कमरे के पास आकर देखा कि रमणीमोहन के कमरे में होटल का ताला लटक रहा है। वेटर से पूछा—"शायद अभी तक यह कमरा किसी यात्री को उठाया नहीं गया ?"

"जी हाँ, इतनी जल्दी कैसे उठ सकता है ? सुबह तक का किराया ले लिया गया है। यदि किसी कारणवश साहब को लौटना पड़े, तो उनको कोई

तकलीफ न हो, इसलिए सुबह तक खाली रहेगा।"

"मैनेजर को सूचित कर दो कि यह कमरा भी मैं आजकी रात के लिए किराये पर लेता हूँ। इसमें मेरे दोनों मित्र ठहरेंगे।"

"शौक से ठहराइयेगा। आज रात को यह मेरे कब्जे में है। सफाई नहीं हो सकी, बाकायदा सफाई कल प्रातःकाल होगी।"

"सफाई की कोई जरूरत नहीं है। मामूली तौर पर झाड़कर साफ करवा दो।"

"जी हाँ, अभी फर्राश बुलाता हूँ।"

"फर्राश की जरूरत नहीं है। तुम साफ करो या हम लोग साफ कर लेंगे। इसको खोलो!"

वेटर ने जेब से चाबियों का गुच्छा निकालकर ताला खोल दिया। वे भीतर प्रविष्ट हुए, और घूम-घूमकर उसके अन्तर्कक्ष देखने लगे। कमरा बिल्कुल साफ-सुथरा था। केवल राख की तश्तरी सिगरेट के टुकड़ों से भरी थी।

लैम्बर्ट उसे उठाने वाले थे कि वेटर ने उठा लिया, और कहा—"हुजूर यह काम मेरा है।"

लैम्बर्ट हँसने लगा। फिर जेम्स से कहा—"मैं समझता हूँ कि तुम दोनों को कोई असुविधा नहीं होगी।"

जेम्स ने उत्तर दिया—"नहीं। हम लोग मजे से रात गुजार लेंगे।"

लैम्बर्ट ने एक कागज पर अपने साथियों के नाम लिखकर देते हुए कहा—"मैनेजर को इसकी सूचना दे दो।"

वेटर ने उसे लेते हुए कहा—"इसकी कोई जरूरत नहीं हुजूर। आपके मित्र हैं, बस इतना काफी है।"

लैम्बर्ट ने मन्द मुस्कान के साथ कहा—"क़ायदा कायदा है। उसका पालन होना चाहिए। यह लो अपना इनाम।"

यह कहकर उसने अपनी जेब से एक रुपये का नोट निकालकर दिया। सलाम कर वह चला गया।

उसके जाने के पश्चात् लैम्बर्ट अपने साथियों के साथ अपने कमरे में ाया, और बैठते हुए कहा—"मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मिलर नकशा ाप्त करने के लिए अपने दल-बल के साथ यहाँ आक्रमण करेगी ?"

जेम्स—"आप क्यों सोचते हैं ? 'ब्लूबर्ड' तक वे लोग नहीं पहुँच सके, ससे स्पष्ट है कि उन्हें हमारी गतिविधि का कोई ज्ञान नहीं है।"

लैम्बर्ट—"किन्तु उसको मालूम है कि मैं आकाश होटेल में रहता हूँ, ौर नकशा यहीं कहीं छिपाया गया होगा।"

जेम्स—"यह उसको हमेशा मालूम था, किन्तु अभी तक उसने कोई ायत्न यहाँ नहीं किया। इतने बड़े होटेल में, जहाँ सुरक्षा का इतना अच्छा :न्तिजाम है, वह और उसके चीनी गुप्तचर आक्रमण करने का साहस नहीं कर ाकते।"

लैम्बर्ट—"आज तुम्हारे बयान से मालूम हुआ कि काउ-चो आया हुआ ्है, और वह गुप्तचर विभाग का प्रमुख संचालक है। संभवतः नकशे की चोरी की बात उसे मालूम हुई है, तभी उसने अपने एक व्यक्ति को मिलर की सहा-यता के लिए दिया, वे मुझे मारकर इस कमरे की चाभी से यहाँ तलाशी लेते, परन्तु मेरे बच जाने से, उसकी योजना असफल हो गई। अब वे यहाँ धावा बोलेंगे।"

जेम्स—"यदि यह बात है तब हमें उनके स्वागत के लिए तैयार रहना चाहिए।"

लैम्बर्ट—"इसी विचार से मैं तुम दोनों को अपने साथ लाया हूँ। दैवयोग से रमणीमोहन का कमरा भी खाली मिल गया। यदि हम रमणीमोहन के कमरे में सोयें और बारी-बारी जागकर उनकी गति-विधि देखें, तो कैसा ?"

जेम्स—"इससे लाभ ?"

लैम्बर्ट—"मैं नहीं चाहता कि यहाँ कोई हंगामा हो, और हम लोगों को प्रकट होना पड़े।"

जेम्स—"हम ऐसी सावधानी शुरू से बरत रहे हैं।"

लैम्बर्ट—"यदि मिलर और उसके साथी को चोरी और नक़बजनी के

अपराध में फँसा दें, तब हमको प्रकाश में आने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ेगी। होटेल के कर्मचारी शहादत देंगे, और पुलिस उनका चालान करेगी।"

जेम्स—"युक्ति तो ऐसी है जिसमें साँप भी मरे और लाठी भी न टूटे।"

लैम्बर्ट—"जब वे दोनों यहाँ आवें, हम होटल के अधिकारियों को फोन से सूचना देंगे कि चोर अमुक कमरे में ताला तोड़कर घुसे हैं। उनके आने तक हमें यह देखना है कि वे भाग न जायें। आगे की काररवाई होटल का 'वाच एन्ड वार्ड' विभाग करेगा।"

जेम्स—"ठीक है। पराये हाथों आहुति हो जायगी।"

लैम्बर्ट—"न-मालूम रमणीमोहन कहाँ चला गया? वह मिसेज रिपुदमन सिंह की लड़की पर आसक्त है। आज शाम को उसके पिता का पत्र उसको बुलाने के लिए आया था। मालूम होता है, उसी से डरकर अपनी प्रेयसी के साथ कहीं भाग गया है।"

जेम्स—"कहीं वह औरत मिलर न हो, जो उसके साथ गई है।"

लैम्बर्ट—"वेटर ने उसे अनुपम सुन्दरी बताया है। वह मिलर कदापि नहीं हो सकती।"

जेम्स—"एक बात अपनी कहानी के सिलसिले में बतानी रह गयी थी, जब मैं मिसेज रिपुदमन सिंह के घर की निगरानी कर रहा था।"

लैम्बर्ट—"वह क्या ?"

जेम्स—"काउ-चो के आने के बाद ही वहाँ पहरा बैठ गया। शाम तक कोई खास बात नहीं हुई। चारों ओर सन्नाटा छाया रहा। कुछ देर बाद एक मोटर घड़घड़ाती हुई उसके घर के फाटक में प्रविष्ट हुई। दोनों पहरेदारों ने उसे रोका, और उनमें धर-पकड़ होने लगी। लड़ते-झगड़ते वे अन्दर चले गये। मैं भी भेद लेने के लिए फाटक पर पहुँच गया, और वहाँ से देखने लगा। एक पहरे वाला उनका रास्ता रोके था, और दूसरा घण्टी बजा रहा था। क्षण भर बाद एक हिन्दुस्तानी महिला, बाहर आकर उस पहरेदार को डाँटने लगी, तथा बड़ी आवभगत से उनको भीतर ले गई।"

लैम्बर्ट—"वे कितने आदमी थे, और उनमें से किसी को पहचानती हो।"

जेम्स—"एक बूढ़ा और तीन जवान थे। उनमें से एक राणा और दूसरा नवाबजादा नाम से पुकारे जाते थे। दूसरे दो पूर्णतया नये थे। उनका किसी ने नाम नहीं लिया, इसलिए वे कौन थे, नहीं जानता।"

लैम्बर्ट—"मैं समझ गया। राणा और नवाबजादा दोनों इसी रमणी-मोहन के मित्र हैं। कुछ दिनों पहले वे उससे मिलने यहाँ आए थे।"

जेम्स—"उनसे कोई मतलब नहीं था, इसलिए मैंने कोई दिलचस्पी नहीं ली।"

लैम्बर्ट—"काउ-चो कब गया ?"

जेम्स—"यह मुझे नहीं मालूम। इन आदमियों के आने के बाद मैं चला आया। सम्भव है ये लोग काउ-चो से मन्त्रणा करने के लिए आए हों। यहाँ के कितने ही आदमी चीनियों से मिले हैं।"

लैम्बर्ट—"यहाँ उनकी पंचमांगी सेना तैयार है। न-मालूम इस देश पर क्या बीतने वाला है। यदि भारत पर चीन का आधिपत्य हो गया, तब उसको परास्त करना कठिन हो जायेगा। दोनों देशों की आबादी मिला कर संसार की आधी आबादी से ज्यादा है। भारत की सैनिक शक्ति चीनियों के मुकाबले कमजोर है।"

जेम्स—"एक बजने वाला है, अब हमें अपनी योजना के अनुसार दूसरे कमरे में चलना चाहिए।"

लैम्बर्ट—"हाँ, इसे चोरों के लिए खाली छोड़ दें।"

लैम्बर्ट ने चलते हुए दो-तीन वस्तुएं अलमारी से निकाल कर अपने साथियों को देते हुए कहा—"ये सब वैज्ञानिक उपकरण हैं, जिनका यहाँ रहना ठीक नहीं है। इनको अपने साथ ले चलो।"

जेम्स—"बिस्तर पर तकिए रख कर रजाई डाल दीजिए, जिसमें किसी के सोने का भ्रम हो।"

लैम्बर्ट—"नहीं, यह ठीक न होगा। इससे मिलर को शक हो सकता है कि हम उसको धोखा देने का प्रयास कर रहे हैं। वह तो कमरे को सूना

जान कर आएगी।"

लैम्बर्ट दरवाजा उढ़का कर रमणीमोहन के कमरे में चला आया।

३१

तू-सिन और मिलर अलका के पिछले द्वार से निकल कर कैनाट सरकस के उस भोजनालय में आए, जिसका जिक्र जेम्स ने अपने बयान में किया है। वह चीनी भोजनालय, अन्तर्देशीय चीनी गुप्तचरों का केन्द्र था। उसके दोनों तरफ कई चीनियों की दूकानें थीं, जिनमें अनेक व्यवसाय चलते अथवा विभिन्न वस्तुओं का विक्रय होता था। वे सब दूकानें एक दूसरे से गुप्त चोर दरवाजों से जुड़ी थीं। किसी एक में प्रवेश कर किसी दूकान से निकलने की सुविधा थी। यद्यपि तू-सिन और मिलर निश्चिन्त थे कि कोई उनकी गति-विधि निरख नहीं रहा है, तथापि स्वाभाविक चातुर्य से वे दोनों दूसरी ही दूकान के दरवाजे से निकल गए।

भोजनालय का स्वामी गुप्तचरों का प्रमुख अधिकारी था। उसको एकान्त में ले जाकर मिलर ने सब स्थिति समझाई, और उसने सहायता के लिए एक मोटर और चालक का प्रबन्ध कर दिया। मिलर ने अन्य सहायता लेने की कोई आवश्यकता न समझी। उनमें यह निर्णय हुआ कि लैम्बर्ट की किसी प्रकार हत्या कर उसके कमरे की चाभी हस्तगत की जाय, और मिलर वह नकशा उसके कमरे की तलाशी लेकर प्राप्त करे। उन्हें लैम्बर्ट के गिरोह का कोई ज्ञान नहीं था, और न उसकी वास्तविकता का। मिलर उसे एकाकी समझती रही थी, और उसे विश्वास था कि नकशा उसके कमरे में छिपा है।

सबसे पहले वे बन्द गाड़ी में आकाश होटल गए। वह तू-सिन को बाहर छोड़ कर होटेल में प्रविष्ट हुई। उसने ऊपर पहुँच कर देखा कि लैम्बर्ट रमणीमोहन के कमरे में बैठा बातें कर रहा है। वह तुरन्त लौट आई, और तू-सिन को उसकी हत्या करने का परामर्श दिया। तू-सिन घात लगा कर बैठ गया, और मिलर मोटर में बैठ उसकी सहायता के लिए कुछ दूर लैम्बर्ट की गतिविधि देखने के लिए एक स्थान में ठहर गई। उसने तू-सिन को बताया कि

जब वह उसकी मोटर को तेजी से एक निश्चित दिशा में भागती देखे, तभी वह उस पर वार करे। उसने यह भी बताया कि यदि लैम्बर्ट किसी टैक्सी में बैठ कर जायेगा तब वह उसका पीछा करेगी, और अवसर मिलने पर वह स्वयं उसे मार डालेगी।

लैम्बर्ट जब रमणीमोहन से विदा होकर होटेल के बाहर आया वह अपनी गाड़ी तलाश करता रहा। इस बीच मिलर ने तू-सिन को पहचनवा दिया, और दोनों अपनी घात में लग गए। लैम्बर्ट को जब अपनी गाड़ी न मिली, तब वह पैदल चलने लगा। उसे आशा थी कि वह उसे रास्ते में पकड़ लेगा। इसी बीच उसे विलसन ने सतर्क किया। इसके बाद जो घटित हुआ, वह अन्यत्र लिखा जा चुका है।

मिलर ने जब देखा कि लैम्बर्ट निकल भागा, तब वह पहले तू-सिन को लेने के लिए आई। मिलर ने उसे बैठाने के बाद लैम्बर्ट को पकड़ने का बहुत यत्न किया, परन्तु वह कृत्कार्य नहीं हुई।

वे दोनों निराश होकर पुनः चीनी भोजनालय लौट आए। वहाँ की मन्त्रणा में यह तय हुआ कि इस बार सीधे आकाश होटल में लैम्बर्ट को उसी कमरे में पकड़ा जाय। यदि द्वार भीतर से बन्द होगा तब मिलर उसे खुलवायेगी, और खुलते ही तू-सिन जबरिया भीतर प्रवेश कर उसको अवश कर देगा। पीछे मिलर भीतर आकर दरवाजा बन्द कर लेगी। इसके बाद उसे यंत्रणा देकर नकशा किसी न किसी प्रकार प्राप्त किया जायगा।

अतएव इस योजना को पूर्ण करने के लिए तू-सिन और मिस मिलर लगभग एक बजे रात्रि को आकाश होटल पहुँचे। इस समय होटेल बन्द हो चुका था। चारो ओर सन्नाटा था। होटेल के 'वाच एन्ड वार्ड' विभाग के कर्मचारी सतर्कता से पहरा दे रहे थे। मिस मिलर और तू-सिन को होटेल में प्रवेश करते देख एक सन्तरी ने रोका और जानना चाहा कि वे इस समय किसके पास जा रहे हैं। मिस मिलर ने उत्तर दिया कि वे मिस्टर लैम्बर्ट के मित्र हैं, और उसी के कमरे में जा रहे हैं। उसने उसके कमरे का नम्बर बताया। इसी समय का नायक भी वहाँ आ गया। वह मिस मिलर को

पहचानता था, क्योंकि वह कई वार लैम्बर्ट के साथ आई गई थी। उसने उसे जाने की अनुमति दे दी।

लिफ्ट का कर्मचारी उसे पहचानता था। उसने सहास्य उसका स्वागत किया, और बताया कि अमेरिकन साहब कुछ देर पहले आ गए हैं। उसने अपनी मुस्कान से उत्तर दिया। ऊपर पहुँचने पर वह सतर्कता से लैम्बर्ट के कमरे की ओर बढ़ी। तू-सिन उसके पीछे चारों ओर दृष्टिपात करता चल रहा था। लैम्बर्ट के कमरे के पास पहुँच कर मिलर ने दरवाजे खुलवाने के लिए उस पर दस्तक दी। दस्तक देने के साथ दरवाजा खुल गया। मिलर हर्ष से उसमें प्रविष्ट हुई। तू-सिन को भी उसने आने का संकेत किया, और भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया।

एन्ड्रूज पहरे पर था। रमणीमोहन के कमरे से वह द्वार की दरार से मिस मिलर और तू-सिन का आगमन देख रहा था। तू-सिन को देखते ही वह पहचान गया कि वह वही व्यक्ति है जिसका उसने फोटो लिया था। उसने लैम्बर्ट और जेम्स को सतर्क किया, और उनके आने तथा कमरे में प्रवेश करने की सूचना दी। लैम्बर्ट ने खतरे की घण्टी बजाई, और फोन द्वारा सूचित किया कि चोर उसके बगल वाले कमरे में घुसे है। तुरन्त ही वाच एन्ड वार्ड के कर्मचारी सतर्क किए गए, और दस सशस्त्र सन्तरियों ने उनको पकड़ने के लिए चढ़ाई कर दी।

मिस मिलर कमरे को खुला पाकर बड़ी प्रसन्न हुई। पहले टार्च से उसने कमरे का निरीक्षण किया, और उसमें किसी को न देख कर उसने बत्ती खोल दी, फिर तू-सिन से कहा—"पहले इस कमरे की तलाशी ले लें। दैवयोग से हमें कोई जोर-जबरदस्ती नहीं करना पड़ा। लैम्बर्ट शायद पड़ोस के कमरे में सो गया है।"

तू-सिन—"पड़ोस के कमरे में कौन ठहरा है ?"

मिलर—"मिन-चू का प्रेमी रमणीमोहन, जिसे मैडम अपना अनुयायी बनाना चाहती हैं।"

तू-सिन—"तबतो वह अपना ही आदमी है।"

मिलर—"हाँ, इस समय कोई भय नहीं है, क्योंकि वे दोनों मदिरा पीकर बेखबर सो रहे होंगे। आओ, पहले हम इस अलमारी की तलाशी लें।"

तू-सिन—"नहीं, पहले उसका सूट-केस देखो। वह नकशे को अलमारी में नहीं रखेगा।"

मिलर ने स्वीकार किया, और तू-सिन अनेक प्रकार की चाभियों का गुच्छा निकालकर उसे खोलने का प्रयत्न करने लगा। मिस मिलर आलमारी की तलाशी लेने लगी। तू-सिन सूटकेस खोलने में सफल हो गया। वह भी उसकी वस्तुएँ बाहर निकालकर रखने लगा।

इसी दर्म्यान होटल के सन्तरी वहाँ आ गए, और उनके नायक ने दरवाजे पर हल्की दस्तक दी। उसका शब्द सुनकर दोनों सतर्क हुए, और तू-सिन अपना रिवाल्वर निकालकर आक्रमण के लिए सन्नद्ध हो गया। मिलर ने धैर्य से काम लेने का विचार किया।

उसने आवाज बदलकर इस प्रकार, मानो वह जागकर बोल रही हो, पूछा—कौन है ?"

नायक ने धीमे स्वर में कहा—"दरवाजा खोलिए। एक आवश्यक काम है।"

मिलर ने उत्तर दिया—"आपको सोते हुए व्यक्ति को जगाने का अधिकार नहीं है। सुबह आइयेगा।"

नायक ने कुछ उच्च स्वर से कहा—"मुझे अपने कधिकार तथा कर्त्तव्य का ज्ञान है। आप कृपया दरवाजा खोलिए।"

मिलर ने उत्तर दिया—"दरवाजा नहीं खुलेगा। आपकी रिपोर्ट की जायगी।"

"यदि आप दरवाजा नहीं खोलते, तब बल–प्रयोग किया जायगा।" फिर अपने सन्तरियों से कहा—"दरवाजा तोड़ डालो।"

तू-सिन ने लपक कर बिजली का प्रकाश बन्द कर दिया। मिलर फुसफुसाई—"तुम बाथरूम में चले जाओ, दरवाजा खोलकर उन्हें देख लेने दो। यदि शोर-गुल हुआ, तब बगल के कमरे में सोया हुआ लैम्बर्ट जाग जायगा,

और स्थिति गम्भीर हो जायगी।" यह कहकर उसने बिजली जला दी, और उसको बाथरूम में ढकेल दिया।

फिर उसने कहा—"तुम लोग जोर-जबरदस्ती करने पर उतारू हुए हो, यह नियमों के सर्वथा विपरीत है।" आपत्ति प्रकट करते हुए उसने दरवाजा खोल दिया। नायक अपने दल-बल से कमरे में प्रविष्ट हुआ। सामने लैम्बर्ट का सूट-केस खुला पड़ा था। मिलर को देखते हुए वह बोला—"आप इस कमरे में नहीं ठहरी। यह मिस्टर लैम्बर्ट, अमरीकन टूरिस्ट का कमरा है। आप यहाँ कैसे आईं ? आप कुछ देर पहले एक व्यक्ति के साथ आई थी। वह व्यक्ति कहाँ हैं, और मिस्टर लैम्बर्ट कहाँ हैं ?"

"मिस्टर लैम्बर्ट की मैं अतिथि हूँ। वह बग़ल के कमरे में सोये हुए हैं। मेरे नारी होने से वह इस कमरे में नहीं सो सकते थे, इसलिए अलग कमरा मुझे देकर बग़ल के कमरे में सो गये हैं।"

"लेकिन बग़ल का कमरा संध्या के नौ बजे खाली हो चुका है। मिस्टर रमणीमोहन चले गए हैं।"

"यह मुझे नहीं मालूम, किन्तु मिस्टर लैम्बर्ट बग़ल के कमरे में सो रहे हैं। वे मुझे अपना कमरा देकर चले गए।"

"आप बेवक्त उनका सूट केस क्यों खोल रही थीं ?"

"मैंने नहीं खोला। वह इसी प्रकार खुला पड़ा था।"

जब नायक मिस मिलर से बात कर रहा था, उसके साथी कमरे का निरीक्षण कर रहे थे। उनमें से एक ने बाथरूम का दरवाजा खोलकर देखने का प्रयत्न किया। दरवाजा भीतर से बन्द था।"

उसने नायक से कहा—"बाथरूम का दरवाजा भीतर से बन्द है। इसका साथी इसी में छिपा है।"

नायक ने पूछा—"क्यों मिस, बाथरूम में कौन है ?"

मिलर का साहस टूट रहा था, उसने काँपते स्वर में कहा—"मैं नहीं जानती कि दरवाजा क्यों बन्द है। मैंने उसे इस्तेमाल नहीं किया, इससे नहीं जानती कि वह बन्द या खुला है।"

नायक ने अपने साथी से कहा—"संभव है कि मिस्टर लैम्बर्ट इसमें बंद हों। तुम दरवाजा खुलवाओ, और अगर वह न खुले, तब बल प्रयोग करो।"

इसी समय सहसा दरवाजा खुल गया, और तू–सिन ने रियाल्वर का प्रयोग पहले उस सन्तरी पर किया। उसके गिरते ही उसने ताक कर मिस मिलर पर प्रहार किया, और कहा—"पहले तू मर। तेरे जीवित रहने से भंडा–फोड़ हो सकता है।"

उसके सहसा प्रहार से सभी स्तब्ध रह गए। एक सन्तरी उसको पकड़ने के लिए लपका। तू–सिन ने उस पर भी प्रहार किया। वह लड़खड़ा कर गिर पड़ा। नायक इस बीच सजग हो चुका था। उसने अपने डंडे से ऐसा प्रहार किया कि रिवाल्वर तू–सिन के हाथ से गिर पड़ा। दूसरे सन्तरियों ने उसको पकड़कर अवश कर दिया। वह इतना शक्तिशाली था कि सिपाही उसको पकड़े हुए उसके साथ साथ झूल रहे थे। नायक ने उसी का रिवाल्वर उठाकर उसकी जाँघ में निशाना साधा। तू-सिन लड़खड़ा कर गिर पड़ा। गिरते-गिरते उसने अपने कोट की जेब से छुरा निकाला, और उनके पकड़ने के पहले ही उसने उसे अपने पेट में भोंक लिया। पृथ्वी पर वह तड़पने लगा, और रक्त की धार निकलकर फर्श को भिगोने लगी।"

मिस मिलर भी रक्त रंजित पड़ी थी। तू–सिन की गोली ने उसके हृदय को बेध दिया था। उसके प्राण तत्क्षण विसर्जित हो गए थे।

रिवाल्वर यद्यपि 'साइलेन्सर' से युक्त था, तथापि उसके शब्द और धर-पकड़ की आवाज से पास-पड़ोस के कमरे के सभी अतिथि जाग गए। लैम्बर्ट केवल अपने साथियों के साथ चुप-चाप बैठा रहा। वह उठकर बाहर नहीं आया।

नायक ने अपने साथियों को उन दोनों शवों को हटाने का आदेश दिया। बाहर दर्शकों ने पूछा कि यह गड़बड़ कैसे हुई। नायक उन्हें अपने-अपने कमरे में जाने का अनुरोध कर पुलिस स्टेशन को सूचना देने के लिए शीघ्रता से चल गया।

दुर्घटना का समाचार क्षण-मात्र में होटल में फैल गया, और उसके

कर्मचारी दौड़-भाग करने लगे । किन्तु इतना सब हो जाने पर भी लैम्बर्ट और उसके साथी कमरे से बाहर न निकले और अपनी विजय पर हँसने लगे ।

३२

रात्रि का चौथा प्रहर बीत रहा था । पूर्वीय आकाश में रुपहले प्रकाश की क्षीण रेखा नक़ीब की तरह उषा सुन्दरी के आगमन की सूचना दे रही थी । अरुण शिखाओं के चीत्कार से वायुमंडल गूंज रहा था, किन्तु दिल्ली की फैशन परस्त जनता पर उसका कोई प्रभाव नही पड़ रहा था । अधिकांश मदिरा के खुमार से अचेत थे, केवल निम्न वर्ग के कुछ श्रमजीवी दैनिक चर्या के लिए तैयार हो रहे थे । मिसेज़ रिपुदमनसिंह चिन्ताओं से उत्पीड़ित होने के कारण उस रात्रि को बिल्कुल सो न सकी थी । दो बजे उसने काउ-चो को मिन-चू के जाने की सूचना दी, और यह बताया कि वह रमणीमोहन के साथ कलकत्ता जा रही है । रास्ते में लूंग से भेंट हो गई, और वह भी उनके साथ है । ताई-ची अर्थात् मिस मिलर की गतिविधि की कोई सूचना प्राप्त नही है । काउ-चो सुनकर मौन रहा, उसने अपना कोई अभिमत प्रकट नहीं किया । उसके मौन से मिसेज रिपुदमनसिंह सन्तुष्ट न होकर कुछ चिन्तित अवश्य हुई। जमीन–आसमान के कुलाबे मिलाती हुई वह अपनी शय्या पर करवटें बदलती रही । इसी समय उसके पास रखे हुए टेलीफोन की घन्टी बजने लगी । उसने अनुमान किया कि शायद मिस मिलर नक़शा प्राप्त करने में सफल हो गई, इसीलिए वही सूचना दे रही है । उसने व्यग्रता से रिसीवर उठाकर पूछा—"कौन, ताई–ची ?"

उत्तर मिला—"ताई-ची, अब कभी सूचना नहीं दे सकती, मैं काउ-चो बोल रहा हूँ ।"

"कहिए, कोई नया समाचार है । नक़शा मिल गया है ?"

"उसको प्राप्त करने के लिए अब हमें उद्योग करना पड़ेगा ।"

"क्यों, ताई-ची और तू-सिन तो इसी उद्देश्य से गए हैं ?"

"ताई-ची और तू-सिन दोनों मर गए या मारे गए हैं ?"

"यह आप क्या कह रहे हैं ?"

"मैं ठीक कह रहा हूँ। चीनी भोजनालय के स्वामी काइंग-पो ने अभी अभी सूचित किया है कि आकाश होटेल में दोनों मारे गए।"

"यह कैसे ?"

"कैसे मारे गए, यह मैं नहीं बता सकता। उसका विवरण समाचार पत्रों में प्रकाशित होगा। केवल इतना अभी तक जाना गया है कि वे आकाश होटेल के कर्मचारियों द्वारा पकड़े गए, और उनकी लाशें पुलिस थाने में पहुँचाई गई हैं।"

"काइंग-पो को यह समाचार कैसे मालूम हुआ ?"

"उसकी दी हुई मोटर में वे दोनों गए थे। होटल से दूर उसका चालक उनके आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था। कई घन्टे तक वह खड़ा रहा। जब पुलिस आई, तब उसको शंका हुई, और वह खोज-खबर के लिए होटेल पहुँचा। वहाँ पहुँचने पर पूछ तांछ की तो मालूम हुआ कि दो डकैत पकड़े गए हैं। उसका माथा ठनका, और वह एक ओर उनको देखने लिए ठहर गया। थोड़ी देर में लिफ्ट से ताई-ची और तू-सिन के शव पुलिस की गाड़ी में रखे गए। मोटर चालक काइंग-पो को सूचना देने के लिए वापस लौट आया।"

"संभव है कि वे मरे न हों, केवल घायल हुए हों।"

"घायल, शव ढोने वाली काली गाड़ी में नहीं भेजे जाते।"

"बड़ी दुखद घटना हो गई।"

"ताई-ची के मरने का मुझे कोई दुख नहीं है। तू-सिन एक सुयोग्य कर्मचारी था। मेरा विश्वास है कि ताई-ची की कोई साज़िश देखकर उसी ने उसको यमलोक पहुँचा दिया है, और फिर भेद प्रकट न हो इसलिए आत्मघात कर लिया। तू-सिन ऐसे ही पानी का व्यक्ति था।"

"हाँ, वह चीनी अज़दहे का अनन्य सेवक था। अब अज़दहे की सेवा के लिए किसको नियुक्त किया जावे ?"

"इस प्रश्न पर फिर विचार करूँगा। अभी दूसरी समस्याएँ उठ खड़ी हुई हैं।"

"क्या किसी अन्य दुर्घटना का समाचार मिला है ?"

"यही कौन कम है। अभी तक हम लोग भारत में काम कर रहे थे, किसी को कानों-कान खबर नहीं हुई, अब प्रकट होने के आसार दिखाई पड़ते हैं।"

"कैसे ?"

"क्या तुम बिल्कुल मूर्ख हो गई हो। ताई-ची को पहचाना नहीं जायगा ?"

"हाँ, पुलिस जाँच करेगी।"

"उससे क्या यह प्रकट नहीं हो सकता कि वह तुम्हारे यहाँ आती-जाती थी ?"

"कठिन है, क्योंकि उसका आवागमन अत्यन्त सतर्कता से होता था।"

"किन्तु उसका प्रेमी लैम्बर्ट अमेरिकन, खुफिया तौर पर सुराग दे सकता है।"

"हाँ, किन्तु उसे कैसे मालूम होगा ?"

"मूर्ख, तेरी मिनचू का प्रेमी लैम्बर्ट के बगल वाले कमरे में रहता था। वह तो उसे बता सकता है।"

"किन्तु वह अब दिल्ली में नहीं है। मिन-चू उसे भगा ले गई है।"

"ताई-ची के द्वारा ही तुमने उसे बुलाया था।"

"हाँ, ताई-ची के द्वारा उसे निमन्त्रित किया था।"

"ताई-ची से तुम्हारा सम्बन्ध है, यह बात उसे मालूम थी।"

"हाँ, किन्तु वह इस समय यहाँ नहीं है।"

"मैं जानता हूँ, वह इस समय नहीं है। कल तक तो वह था।"

"जी हाँ।"

"क्या उसने लैम्बर्ट को न बताया होगा कि ताई-ची तुम्हारे यहाँ आती जाती है ?"

"मैं ठीक नहीं बता सकती। सम्भव है कि उसने न बताया हो।"

"यह भी सम्भव है कि उसने बात-चीत के सिलसिले में बता दिया हो, और बताने की सम्भावना निन्यानबे प्रतिशत है। नवयुवक और नवयुवतियाँ

अपनी प्रणय-कथाओं के कहने, सुनाने में रस लेते हैं।''

"किन्तु उनमें कोई घनिष्ठता नहीं थी। उनका आलाप होटेल में रहते हुआ था, जैसे पड़ोसियों में प्रायः हो जाता है।''

''अपने कथन की पुष्टि में क्या तुम्हारे पास कोई प्रमाण है ?''

"प्रमाण नहीं दे सकती, किन्तु मैंने मिन-चू को सिखाया था कि वह रमणीमोहन के मन में अमेरिकनों और विशेषकर लैम्बर्ट की ओर घृणा उत्पन्न कराने की चेष्टा करे। उसने प्रयत्न किया था, यह मैंने आँखों-देखा और कानों सुना है।"

"मिनचू ने तुम्हारी सिखावट के अनुसार किया, किन्तु इसका परिणाम क्या निकला ?''

''प्रमाण प्रत्यक्ष नहीं है, किन्तु उसने उसके बाद लैम्बर्ट की चर्चा नहीं की ।''

''मैं इतना यथेष्ट नहीं मानता। लैम्बर्ट कोई साधारण टूरिस्ट नहीं है। वह हमारा भयंकर शत्रु है।"

''अमेरिका चीन का शत्रु है, इसलिए वह भी हमारा शत्रु है।''

''मूर्ख, वह शायद किसी देश का गुप्तचर है। भारत में सभी देशों के गुप्तचर अपनी-अपनी काररवाई कर रहे हैं। ताई-ची से नकशा लेना, और उसे गायब कर देना, फिर ताई-ची और तू-सिन को कौशल से पकड़वा देना अवश्य उसे ऊँचे दर्जे का गुप्तचर प्रमाणित करते हैं।"

''जी हाँ, आपका सन्देह ठीक है; किन्तु लैम्बर्ट उस नक्शे से क्या हासिल कर सकता है।''

''वह बहुत कुछ कर सकता है। कुछ ही दिनों में चीन भारी पैमाने पर आक्रमण करने जा रहा है। नकशे का भेद प्रकट हो जाने से चीन के शत्रु देश सतर्क हो जायँगे, और वे भारत की सहायता के लिए बौखलाकर दौड़ पड़ेंगे। आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों से उसकी सहायता कर हमारे अभियान में बाधा डालेंगे। अभी तक चीन की श्रेष्ठता इसलिए है कि उसके पास नवीनतम शस्त्रास्त्र हैं,

जो भारत के पास नहीं है, और जिनके बल पर हम उसे पराजित करने की योजना बना रहे हैं, नहीं तो भारत की सैनिक शक्ति को विध्वंस करना चीन के लिए असंभव है। उसके जवान अपनी शूरता और रणकुशलता में अद्वितीय हैं। उनमें दानवों का बल, पहाड़ की अडिगता, और निश्चल सहिष्णुता है।"

"जी हां, ये सब गुण उनमें स्पष्ट हैं।"

"हमारे भूखे सैनिक केवल शस्त्रास्त्रों की उत्तमता से उन्हें पराजित कर सकते हैं। उसके सैनिक बल को क्षीण करने के उद्देश्य से ही हमने अपने गुप्तचरों का जाल बिछाया, उसके पंचशील को सबसे पहले स्वीकार किया, भाईचारे का नाता स्थापित किया, शिष्टमंडलों का आदान-प्रदान किया, और मित्रता दिखाकर तिब्बत सेंत-मेंत प्राप्त कर लिया। दलाई लामा के निकल भागने से हमारे अभियान की गाड़ी का धुरा निकल गया, जिससे हमारी तात्कालिक योजनाएँ विफल हो गईं।"

"तिब्बत को हमने अपनी सामरिक शक्ति का अड्डा बना लिया है, विफलता हमें कहां मिली?"

"मूर्ख, इतनी स्पष्ट बात भी नहीं समझ सकती। यदि दलाईलामा न भागता, तब हम उसे तुरुप का पत्ता बना, बौद्ध धर्म के संरक्षक बन, भारत का विभाजन उसी प्रकार करवा लेते, जैसे पाकिस्तान के अधिकारियों ने करवाया है। भूटान, सिक्किम, नेफ़ा प्रदेश और बिहार प्रान्तों को बौद्ध तीर्थों की भूमि बताकर उसको बिना युद्ध-प्रयास के हस्तगत कर लेते। हमें संसार और भारत के बौद्धों का बल प्राप्त होता, और हमारी इस मांग की भारत अवहेलना नहीं कर सकता था, क्योंकि धर्म के नाम पर उसका पहले ही विभाजन हो चुका था।"

"मुझे इस योजना का पता नहीं था।"

"ठीक है, हमने उसे कभी प्रकाशित नहीं होने दिया, क्योंकि तिब्बत पर अधिकार करने के पूर्व ही दलाईलामा हमारे हाथ से निकल गया था।"

"किन्तु पंछेिणलामा तो था।"

"उस दिशा में हमने कुछ प्रयत्न किया था, किन्तु उसका प्रभाव बौद्ध

संसार पर 'नहीं' के बराबर है।"

"उसके विफल हो जाने से हमारी अधिक हानि नहीं हुई।"

"हानि क्यों नहीं हुई, दरअसल अत्यधिक हानि हुई। जिसको प्राप्त करने के लिए हमें अपनी गाँठ से कुछ खर्च न करना पड़ता, अब हमें सैनिक बल प्रदर्शन करना पड़ेगा। जो पहले गुड़ खिलाने से मर जाता, अब विष की घूँट पिलाना पड़ेगा। जिस युक्ति से हमने तिब्बत प्राप्त कर लिया था, उसी प्रकार हम इस प्रदेश को भी बिना युद्ध किए केवल मैत्री प्रदर्शन के कौशल से अपने अधिकार में ले लेते।"

"बेशक यह हानि तो हुई है।"

"इससे जो योजना कुछ ही वर्षों में सफल होती, अब उसमें कई वर्ष लग जाँयगे। अब हमारी नई संस्कृत योजना को पूर्ण होने में सन् १९८० तक का समय लगेगा। उस समय तक संसार में कई उथल-पुथल हो जायेंगे।"

"अर्थात !"

"अर्थात् यह, कि अब शायद हमको अकेले इस महान कार्य को करना पड़ेगा। रूस से हमारे सम्बन्ध शिथिल हो रहे हैं, और उसके साथ दूसरे कम्यूनिस्ट देशों से भी होने की सम्भावना है। अभी तक कम्यूनिस्ट देशों का नेतृत्व रूस के हाथ में है, अब जब तक चीन के हाथ में नेतृत्व नहीं आता, तब तक हमारी संसार-विजय की योजना असफल रहेगी।"

"तब क्या नेतृत्व का झगड़ा भी चलेगा। रूस हमसे अधिक शक्ति सम्पन्न है।"

"उसकी शक्ति शस्त्रास्त्रों तक सीमित है। जन बल उसका हमसे चतुर्थांश है। इसके अतिरिक्त हिटलर ने उसकी कमर तोड़ दी है। वह अब शान्ति का राग अलापने लगा है, जो कम्यूनी सिद्धान्तों के विपरीत है। वह अब पूर्व की ओर नहीं, पश्चिमीय शक्तियों का अनुयायी बनने की चेष्टा कर रहा है। अकेले चीन को इस संघर्ष में उतरना पड़ेगा। बिना इसके निस्तार नहीं है।"

"किन्तु इस फूट से दोनों निर्बल हो जाँयगें।"

"चीन निर्बल नहीं होगा। वह अफ्रीका-एशिया के देशों का नेतृत्व प्राप्त करेगा। आगामी युद्ध कालों और पीतांगों की संगठित शक्ति में श्वेतांगों के साथ होगा। रूस और अन्य योरोपीय कम्यूनिस्ट राष्ट्र श्वेतांग है। उनका रक्त एक है, उनकी भावनाओं विचारों में सादृश्य है। पीतांगों और कृष्णांगों से उनकी सभ्यता, संस्कृति बिल्कुल भिन्न है। वे अन्ततोगत्वा पाश्चमीय है, अत-एव पश्चिम से उनका गठबन्धन होना कोई आश्चर्य का विषय नहीं होगा।"

"तब सारी परिस्थिति बदल जाती है।"

"हाँ, पहले जो काम शीघ्र होता उसमें अब कुछ बिलम्ब होगा। रूस में जब तक स्टैलिन था, तब तक हम उसके अनुयायी थे, और वस्तुतः चीन की शक्ति संगठित नहीं हुई थी, इसीलिए हम उसे अपना बड़ा भाई बनाए थे। उसकी सहायता से हमारी शक्ति संगठित हुई, हमें नव-नवीन शस्त्रास्त्र मिले, हमारे उद्योग विकसित हुए, केवल हमें अणु तथा हाइड्रोजन बमों के बनाने की विधि नहीं मिली, जिसे हम स्वयं प्राप्त करेंगे। यदि हमने अणु बम बना लिए, तब रूस सहित समस्त पाश्चमीय शक्तियों को हम चुटकी बजाते धूल-धूसरित कर देंगे। कृष्णांग तो पिट्ठी है, उनकी निष्कृति तो हमारे साथ रहने में है, और श्वेतांगों के शताब्दियों के अत्याचार से वे पीड़ित हैं, अपना प्रतिशोध लेने के लिए वे आकुल है, यदि उनका कोई उग्र हिमायती हो।"

"और चीन उनकी हिमायत करेगा।"

"कूटनीति यही कहती है। इस प्रसंग को बन्द करो। टेलीफोन पर हमें ये सब बातें नहीं करना था। किन्तु यह ऐसा समय है, जब दिल्ली निद्रामग्न है, और हमारी बातचीत सुनी नहीं जा सकती। तुम कुछ दिनों के लिए प्रातःकाल ही कलकत्ता केन्द्र चली जाओ, और यहाँ का कारबार काइंग-पो सन्चालित करेगा, क्योंकि उस पर किसी का सन्देह नहीं है। रेल से यात्रा करना। मैं भी कलकत्ता पहुँच रहा हूँ, वहाँ भविष्य की योजना पर विचार होगा।"

काउ-चो ने टेलीफोन बन्द कर दिया। मिसेज रिपुदमनसिंह अपने प्रयाण की तैयारी करने लगी।

३३

नवाबजादा मुश्ताक अली ने अपने घरमें राणा वीरेन्द्रसिंह और अपने छोटे पुत्र मक़बूल अहमद की विदाई में एक समारोह किया। राणा के साथ अपने पुत्र को नेफा भेजते हुए वह अनुपम गौरव अनुभव कर रहे थे। भारत के प्रति अपना और अपने धर्मावलम्बियों को वफादारी प्रकट करने का सर्वोत्तम अवसर उन्हें प्रतीत हुआ। समारोह में दिल्ली के सभ्य समाज के स्तम्भ आमन्त्रित थे, जिनमें उनके मित्र नैयर और सन्तोष भी थे।

समारोह की अध्यक्षता सामरिक विभाग के एक विशिष्ट अधिकारी कर रहे थे। जहाँ अन्य ललित खाद्य पदार्थ मेजों पर सजे थे, वहां विलायती मदिरापान का प्रबन्ध भी था। राणा और मक़बूल मियाँ को प्रायः सभी आमन्त्रितों ने मालाएँ पहिनाई जिनसे उनके कण्ठ ठुड्डियों तक भर गए।

सबसे पहले नवाबजादा ने चीन के इस आकस्मिक आक्रमण का विस्तार से वर्णन किया, फिर देश की एकता का जिक्र किया, और सबसे अन्त में अपने समाज की वफादारी बताई, तथा उदाहरण में अपनी वैयक्तिक भावनाएँ सबके सम्मुख रखीं। उन्होंने यह भी जाहिर किया कि उनके पुत्र ने यूनीवर्सिटी में सैनिक शिक्षा ले ली है, और आशा व्यक्त की कि सरकार उसे देश सेवा का अवसर प्रदान करेगी। राणा का परिचय देते हुए उन्होंने उनकी वीर वंशावली का सविस्तार वर्णन कर विशेष रूप से बलभद्र सिंह थापा की वीरता का गुण-गान किया। उनके प्रयाण से उनकी वैयक्तिक क्षति होगी, उस पर भी चन्द आँसू बहाए, और साथ ही हर्ष भी प्रकट किया, कि वे अपनी वंश की परम्परा का अनुसरण कर उसकी मर्यादा में चार-चाँद लगाने जा रहे हैं।

अन्य मित्रों, सहयोगियों ने भी अपने-अपने भव्य उद्गार प्रकट किए, और अपनी शुभ कामनाएँ समर्पित कीं।

सबसे अन्त में अध्यक्ष ने भारत के नव जागरण पर सन्तोष प्रकट किया, तथा भारतीय युवकों को अधिक से अधिक संख्या में समर-यज्ञ में भाग लेने के लिए आह्वान किया। तत्पश्चात् उन्होंने विश्वास दिलाया कि वह इन

दोनों को कोई कमीशन दिलाने की भरपूर चेष्टा करेंगे, और सम्भवतः वह उसमें अवश्य सफल होंगे। उपस्थित जनता ने उनके आश्वासन का करतल ध्वनि के साथ स्वागत किया, और राणा तथा मक़बूल मियाँ प्रसन्न तथा सन्तुष्ट हुए।

अध्यक्ष को धन्यवाद देने के पश्चात् सभा विसर्जित हुई, और राणा तथा मक़बूल मियाँ को बधाई देते हुए प्रायः सभी आमंत्रित व्यक्ति विदा हुए। जब सन्तोष और नैयर जाने लगे, तब नवाबजादा ने उन्हें अनुमति नहीं दी, और कहा—"वाह, आप भी कोई बुलाए हुए मेहमान हैं, जो सबके साथ चल दिए। अभी तो तलखियों में गपशप और दो-दो पेग पीने का मौका आया है।"

नैयर ने मुस्कराते हुए कहा—"आपकी नवाजिश है, हम लोग काफी पी चुके हैं।"

"देखिए राणा साहब, नैयर साहब की दलील पर जरा गौर फरमाइए। दोस्ती का अच्छा हक अदा कर रहे हैं।"

राणा ने अपनी मालाओं में एक-एक नैयर, सन्तोष और नवाबजादा को पहनाते हुए कहा—"पहले यह बोझ हलका कीजिए। लोगों ने मुझे भगवान की प्रतिमा समझ लिया जो कभी इन्कार नहीं करती, चाहे जितनी मालाएँ पहनाते जाओ।"

नवाबजादा—"अजी, आज के जश्न के तो आप ही दूल्हा हैं। आज भी अगर जी भर न पीएंगे, तब कब पीएंगे? आइए हम लोग दूसरे कमरे में चलें, जहाँ खासतौर पर इन्तजाम है।"

नैयर—"हुजूर अब बख्शिए। कुछ जरूरी काम है।"

नवाबजादा—"कल सनीचर का दिन निहायत मनहूस साबित हुआ। आज इतवार है, छुट्टी का दिन। जरूरी काम उठा कर ताक पर रखिए, और बहुत मनावना न कराइए। आइए।"

नवाबजादा किसी तरह न माने और उन्हें घसीट कर एकान्त कमरे में ले गए। करीने से कुर्सियाँ पड़ी थीं, बीच में मेज पर आला किस्म

की शराब, सोडा की बोतलें तथा अनेक प्रकार के स्वादिष्ट भोजन रकाबियों में रखे थे।

सन्तोष ने इतनी तैयारी देख कर कहा—"नवाब साहब, आप ने तो यहाँ खाने का अम्बार लगा रखा है।"

राणा ने चुटकी ली—"अजी जनाब, सब आपके लिए ही नहीं है। हम लोगों का भी हिस्सा है।"

नैयर—"नवाव साहब ने पहली शै में मात दे दी। देख कर जब दिल आसूदा हो गया, तब डकारने का सवाल नहीं उठता।"

नवाबजादा—"मैं समझ गया कि आपका इशारा किस तरफ है। अजी जनाब मीठा गोश्त भी है, जो आपको बहुत पसन्द है। कराची का हलुआ भी चाँदी के वर्कों से ढका रखा है। कल ही मेरे बड़े साहबजादे तशरीफ़ लाए हैं, और मेरी फरमायश के मुताबिक हलुआ भी लेते आए।"

सबके बैठने पर पहला जाम राणा की तन्दुरुस्ती के लिए पिया गया। फिर मक़बूल मियाँ की अनुपस्थिति में उनकी सेहत का दूसरा जाम खाली किया जाने लगा।

नैयर—"कल रात की दुर्घटना का क्या कोई रहस्य खुला ?"

नवाबजादा—"समझ में नहीं आता, यह सब कैसे हो गया ? सुना है कि किसी अमेरिकन टूरिस्ट के कमरे में चोर घुसे थे, और पकड़े जाने के डर से दोनों ने एक दूसरे को खत्म कर दिया।"

सन्तोष—"मुझे यह जासूसों की काररवाई मालूम होती है क्योंकि अपना भेद छिपाने के लिये वे ऐसी ऊट-पटांग हरकतें कर गुजरते हैं।"

राणा—"नवाब साहब, शायद यह वही अमेरिकन टूरिस्ट हैं, जिनसे उस वक्त मुलाकात हुई थी, जब हम लोग रमणीमोहन से मिलने गए थे।"

नवाबजादा—"एक मजे की बात और हुई है।"

तीनों ने एक स्वर से पूछा—"वह क्या ?"

नवाबजादा—"आज सुबह जब मैं इस जलसे में शरीक होने को दावत देने मिसेज रिपुदमन सिंह के मकान पर गया, तो वहाँ ताला लटकता देखा।

पहरे पर सिर्फ दो जवान तैनात मिले।"

राणा—"वही होंगे जिनसे कल मुठभेड़ हुई थी ?"

नवाबजादा—"नहीं, वे सूरत-शकल से सिख लगते थे। पूछने पर मालूम हुआ कि घर की मालकिन किसी जरूरी काम से कश्मीर अपनी बेटी के साथ तशरीफ ले गई हैं। जब मैंने दरयाफ्त किया कि वे कब नौकर हुए, तो बतलाया कि आज सुबह से ही उनकी तैनाती हुई है, और नौकरी दिलाने वाली एजेन्सी ने उन्हें यहाँ पहरा देने के लिए भेजा है। उन्हें दो-दो सौ रुपए माहवार तनख्वाह मिलेगी, जिसकी आधी रकम उनको पेशगी दे दी गई है। उन्होंने न घर की मालकिन को देखा है और न उनकी लड़की को। हर किसी को यही जवाब देने की ताकीद एजन्सी के बड़े साहब ने की है। इसके अलावा उन्हें कुछ नहीं मालूम।"

नैयर—"क्यों सन्तोष, दिल्ली में किसी ऐसी काम दिलाऊ एजेन्सी की बात नहीं सुनी गई ?"

सन्तोष—"कई साल पहले बहुत थीं, लेकिन अब सरकार ने यह काम ले लिया है।"

नवाबजादा—"अजी, यह उसी खूसट की चाल है। मुझे तो वह चीनी जासूस मालूम होती है। कल की वारदात से उसकी लगावट जरूर है, तभी वह सर पर पैर रख कर भाग गई। मुमकिन है वह कश्मीर से पाकिस्तान की सरहद में दाखिल हो जाय।"

राणा—"मुझे भी यही सन्देह है कि उसने पाकिस्तान का रास्ता नापा है।"

नवाबजादा—"कल जिस चीनी की झलक मिली थी, उसका पता चला ?"

नैयर—"जी हाँ; उसका नाम काऊ-चो है, और वह चीनी दूतावास में ठहरा है। यह भी सुना है कि वह चीनी दूतावास का चार्ज लेने आया है।"

राणा—"इन दूतावासों को बन्द कर देना चाहिए। इनसे फायदा कम नुकसान ज्यादा होता है। दर हकीकत ये जासूसी अड्डे हमेशा साबित होते हैं।"

नवाबजादा—"इसमें दो राएं नहीं हो सकती। कत्ल की खबर कल छपेगी, तब कुछ वाकयात मालूम होंगे।"

राणा—"हम लोग अगर आकाश होटेल चलें तो कुछ भेद मालूम हो सकता है।"

नवाबजादा—"मुझसे एक बड़ी गल्ती हुई है कि मैं इस तकरीब में मिस्टर रमणी मोहन को दावत देना भूल गया। अब भी वक्त है गल्ती सुधारने का। मैं उन्हें फोन से अभी बुलाता हूं। उनसे कुछ हाल मालूम होगा।"

इतना कह आकाश होटेल का नम्बर मिलाकर कहा "मेहरबानी कर मिस्टर रमणी मोहन के कमरे से मिला दीजिए। उनके कमरे का नम्बर········।"

उत्तर मिला—"जी हाँ, मैं उन्हें बखूबी जानता हूं। वह कल शाम को चले गए। उनका कमरा खाली है।"

"कुछ मालूम है कि कहाँ गए हैं ?"

"जी नहीं। यह सब जानने का हमारा काम नहीं है।" और उसने रिसीवर रख कर सम्बन्ध बिच्छेद कर दिया।

नवाबजादा ने रिसीवर रखते हुए कहा—"कुदरत खुदा की देखिए कि टूटी कहाँ कमन्द।"

राणा—"खैरियत है किबला। क्या वह भी इस लपेटे में आ गया ?"

नवाबजादा—"खुदा जाने, कौन-कौन इस लपेटे में हैं। हजरत फरार हैं कल शाम से ही, जब हम उन्हें ढूढ़ते हुए मिसेज रिपुदमन सिंह के यहाँ बैठे थे।"

राणा—"वह तो मिसेज के दरे-दौलत पर घुसने का बहाना था। हम हकीकत में उसे कहाँ ढूंढ़ रहे थे। अगर वाकई हम उसे ढूंढते तो वह होटेल में मिल जाता, और फिर शायद मिसेज का दाँव खाली जाता।"

नैयर—"क्या मतलब ?"

राणा—"तब लैला की माँ अपनी लैला और मजनू को लेकर भाग न

पाती ।" कमबख्त मजनू को लैला कभी नहीं मिली, लेकिन इस किस्से के मजनू को लैला के साथ उसकी माँ भी मिल गई ।"

नैयर—"माजरा क्या है, साफ-साफ बताइए ।"

राणा—यह सब नवाबसाहब से पूछिए । किबला रमणी मोहन के सर परस्त बनाए गए हैं ।"

सन्तोष—"वाह नवाब साहब, यह भेद छिपाए है ?"

नवाबजादा—अजी कुछ नहीं, राणा तो तिल का ताड़ बनाया करते हैं ।"

सन्तोष—"अच्छा, आप राणा के ताड़ को डालिए भाड़ में, अपना तिल ही बयान कीजिए ।"

नवाबजादा—"राणा का इशारा उस खत की तरफ है, जो मिस्टर रमणीमोहन के वालिद ने मुझे लिखा था । मेरे व्यापाराना तअल्लुकात उनके वालिद से है । जब मालूम हुआ कि हजरत ने मिस इण्डिया के ताज पर ग्यारह लाख की बोली लगाकर उसे हासिल किया है, तब उन्हें उसकी चाल-चलन में शक हुआ । असलियत जानने के लिए उन्होंने मुझे एक खत लिखा, क्योंकि वाकया दिल्ली का था । मिसेज रिपुदमनसिंह की एक तकरीब में उनसे नियाज भी हासिल हुआ था । थोड़ा हाल तो मालूम था, और कुछ ज्यादा थाह लेने के लिए राणा के हमराह आकाश होटल जाकर बरखुरदार से मुलाकात की । बातों ही बातों में उसे मिसेज रिपुदमनसिंह की हक़ीकत बताकर आगाह किया कि बाहरी रौनक, टीम-टाम में वह न फँसे; क्योंकि दरअसल उसका घर चकलाखाना है, और उसका पेशा नायका का है । अगर तफरीहन वह वहां जाना चाहें, तो कोई मुजायका नहीं । अमीरजादों की दिलबस्तगी का यह भी एक रास्ता है । मगर दोस्तो मेरी कोई सिखावट काम न आई । कल हम रमणीमोहन को ढूंढने के बहाने उस खूसट के घर गए, और उसके बारे में दरयाफ्त किया, तब शायद उसे शक हो गया कि अगर उससे हमारी ज्यादा रफ्त जफ्त हो गई, तो उसका परदाफाश हो जायगा, और शायद सोने की चिड़िया हाथ से निकल जाये । इसीलिए अपनी लड़की को हमारे बैठे

रहते भेजकर उसे भगवा दिया और] फिर हम लोगों से फुरसत मिलने के बाद वह भी नौ-दो-ग्यारह हो गई।"

सन्तोष—"आपका क़यास ठीक है, नवाब साहिब।

नवाबजादा—"अजी बला टली। हाँ अब सैर-ए फलक नहीं हो सकेगी।"

सन्तोष—"राणा के जाने से सब रंग फीका रहेगा। ईश्वर बचाये इन खूसटों से। कहीं वह चीनी जासूस निकली तब तो लेने के देने पड़ेंगे।"

नैयर—"हम लोग अपनी रिपोर्ट पहले ही क्यों न भेज दें।

नबाबजादा—"इस सवाल पर फिर ग़ौर करेंगे। अभी राणा की जुदाई के सदमे से कुछ नहीं सूझता। जी चाहता है कि हम सब मैदाने जंग में अपनी मजलिस जमावें। साथ मरने में भी लुत्फ है। क्यों राणा ?"

राणा—'देखिये किवला, आपकी सब बातें सर आँखों पर हैं, लेकिन यह अशुभ बात न कहिये। मैं जाता हूँ, और दुश्मन पर फतहयाबी हासिल कर बहुत जल्द लौटता हूँ। आप लोग मकबूल मियां और मेरे इस्तकबाल की तैयारियाँ कीजिये। थापाओं ने आज तक कभी शिकस्त नहीं खाई है।"

नवाबजादा—"शिकस्त दुश्मन खाते हैं, भारत के सपूत नहीं। जय हिन्द, जय भारत।"

सन्तोष और नैयर ने भी उनके साथ भारत विजय का नारा लगाया।

आकाश मंडल में व्याप्त वायु तरंगें उनके जय घोष को समस्त भूखण्ड में विकीर्ण करती चीन को संत्रस्त करने के लिए आगे बढ़ने लगी।"

उत्तरार्ध

१

भारत का पूर्वीय कोण भी वैसा ही पहाड़ी है जैसा पश्चिमीय । अन्तर केवल इतना है कि जहां पश्चिमीय कोण कठोर, पथरीला, सूखा, बंजर है, वहां उसकी अपेक्षा पूर्वीय भाग हरे–भरे जंगलों से पूर्ण ऊँची नीची घाटियों से आच्छादित, विभिन्न जातियों के पशु–पक्षियों के कलरवों से गुंजारित है । वर्षा का अभाव जितना पश्चिमीय भाग में है उतना पूर्वीय में नहीं । जांगल प्रदेश दोनों हैं, और वहाँ के निवासियों में भी काफी समानता है । शारीरिक पुष्टता और दृढ़ता में समान रूप से कठोर होते हुये भी उनके कदों में विभिन्नता है । पश्चिमीय कुछ अधिक लम्बे हैं, और पूर्वीय कुछ ठिगने, किन्तु पहाड़ी जीवन की छाप दोनों पर है । स्वच्छन्दता से विहार करने की प्रवृत्ति दोनों में है, परन्तु फिर भी दोनों की जीवनधाराओं में इतनी भिन्नता है जितनी एक लकीर के दोनों सिरों में होती है । पश्चिमीय भाग आक्रामकों का सिंहद्वार आदि–काल से रहा है, किन्तु पूर्वीय क्षेत्र उनसे सदैव अपरिचित रहा । पश्चिमीय जन जीवन में कई उतार चढ़ाव हुए, परन्तु पूर्वीय उनसे मुक्त रहा । किसी ने उनके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं किया । धर्मों में भी अन्तर रहा । जहाँ पश्चिमीय प्रदेश प्राय: मुस्लिम है, वहां पूर्वीय बौद्ध, जो तिब्बत के लामा-धर्म से प्रभावित है । यहाँ की संस्कृति में तिब्बत का अधिक योगदान है, परन्तु उससे बिल्कुल पृथक् और स्वतन्त्र । दोनो भारत की संस्कृतियों से प्रभावित रहे । किन्तु जहां मुस्लिमों के साहचर्य से पश्चिमीय सीमा प्रदेश ने उनके सिद्धांतों को अपनाया वहाँ तिब्बतियों और भूटानियों के संसर्ग से पूर्व ने अपना मिश्रित रूप गढ़ा ।

नेफा प्रदेश उत्तर पूर्वीय सीमा एजेन्सी का संक्षिप्त नाम अंग्रेजी भाषा के आदि अक्षरों से बना है । यह असम राज्य के उत्तर में अवस्थित है, और पांच

सीमान्त क्षेत्रों से मिलकर बना है। सुदूर पूर्व में लोहित डिवीजन है, बर्मा और नागा प्रदेश को छूता हुआ उसके दक्षिण में तिरुप डिवीजन है, मध्य में सियांग, भूटान से मिला हुआ सुबनसिरी डिवीज़न, और पश्चिम में कामेंग डिवीजन है। इसके सभी क्षेत्र पहाड़ी हैं। सर्वत्र टेढ़ी-मेढ़ी पर्वतों की पंक्तियां, ऊँचे-नीचे गहरे अति संकुचित पगडन्डियाँ, ढलुआ उतार चढ़ाव, और कहीं-कहीं समतल पठार हैं। यहाँ ऐसी खड़ी चोटियां हैं, जिन पर चढ़ना, जान पर खेलना है, और उनमें कितनी ही मानवों को चुनौती देती हुई अलग खड़ी हैं। उसमें ऐसी घाटियां भी हैं, जहां थोड़े परिश्रम तथा फेर बदल से छोटे वायु-यानों के उतरने-उड़ने के अड्डे बनाए जा सकते हैं—कहीं कहीं हवाई पट्टियां भी बन सकती हैं।

नेफा वस्तुत: जांगल प्रदेश है। वर्षा कम नहीं होती, परन्तु दूर तक फैले हुए जंगल इतने घने तथा दुर्गम हैं, जहाँ मानव-निवास लगभग असम्भव है। उनमें केवल वही व्यक्ति छिपने जाते हैं, जो समाज-अपराधी होते हैं, अथवा जिनको समाज से च्युत किया जाता है। देवदारु प्राय: पांच हजार से बारह हजार फुटों की ऊँचाई तक उत्पन्न होते हैं, अतएव इस प्रदेश में इन्हीं की बहुतायत है। इनसे निकलती हुई भीनी सुगन्ध से यह प्रदेश गमका करता है, और प्रकृति उनके द्वारा निवासियों को स्वस्थता प्रदान करती है।

नेफा की घाटियों में जितनी जन-जातियाँ बसी हैं, उतनी ही वे भिन्न-भिन्न हैं। उनके रीत रिवाजों आचार-विचारों में बहुत अन्तर है। मुख्यत: लोहित डिवीजन में 'मिशमी' सियांग में 'अबोर' अथवा 'आदी' सुबनसिरी में 'आपातानी' और 'दफला' तथा कामेंग में 'मोम्पा' 'शेरद्रक पेन' नामक जातियाँ बसी हुई है। इनमें 'मिशमी' जाति के लोग सुन्दर, हँसमुख, कद में ठिगने और नाक-नकशे में बहुत कुछ मंगोल जाति से मिलते-जुलते हैं। मानव-विज्ञान-वेत्ताओं का मत है कि ये जातियाँ बर्मा के उत्तरी भाग से आकर यहाँ बस गई हैं। किन्तु सिक्किम के समीप होने से उसमें बसने वाली जाति 'लेपचाओ' के बहुत रस्म-रिवाज उनमें भी प्रचलित हो गये हैं। इनमें संयुक्त परिवार की प्रथा है, और विभिन्न भाइयों से उत्पन्न परिवार एक ही बड़े घर में रहते है।

बर्मावासियों की भाँति ये लोग सुपारी चबाने के व्यसनी हैं, और उनके समस्त समारोहों में उसका प्रमुख स्थान रहता है। अतिथि सत्कार में भी सुपारी की महत्ता मानी जाती है। बेंत की कोमल टहनियों से ये लोग विविध प्रकार की दर्शनीय वस्तुएँ बनाते हैं जैसे कश्मीर में विलो वृक्षों की कमचियों से बनाए जाते हैं।

सियांग की अबोर या आदी नामक जाति के व्यक्ति अपनी स्वतन्त्र प्रकृति के लिए प्रसिद्ध हैं। वे पराधीन होकर नहीं रहते। वे भी हँसमुख, मन-मौजी, और मस्त प्रकृति के होते हैं। स्वाधीनता प्रेमी होने के कारण वे पृथक जीवन नहीं व्यतीत करते, बल्कि मिलनसार होने से विदेशियों से घृणा भी नहीं करते। उनसे मिलकर उनके गुणों को ग्रहण करने की उनमें प्रवृत्ति होती है। 'आदि' जाति कई अन्य जातियों में विभक्त है—सम्भवत: अपने-अपने पूर्व पुरुषों के नाम पर वे बनी हैं। इनके कुछ प्रसिद्ध नाम है—मियोंग, पासी, शिमोनी, बोरी बोकर, गालोंग, पेलीबो आदि आदि। इनमें गुलाम रखने की प्रथा है, लगभग वैसी ही; जैसी तिब्बत में प्रचलित थी। गुलाम सम्मिलित परि-वार के सदस्य-से माने जाते हैं, अन्तर केवल इतना है कि खेती-बारी तथा गृहस्थी का काम उन्हें करना पड़ता है। नृत्य के प्रति उनकी विशेष आसक्ति है। चांदनी रात में युवकों और युवतियों के नृत्य बड़ी धूम-धाम से होते हैं। इनके जीवन की विशेषता यह है कि लड़कियों और लड़कों के शयन घर होते हैं और उनमें वे स्वतन्त्रता के साथ बिहार करते हैं। कभी-कभी लड़कियों के गर्भधारण करने के बाद विवाह उन युवकों से होता है, जिनसे गर्भ स्थापित होता है। 'आदि' नारियां उच्चकोटि की बुनकर होती है। इनके बिने कपड़ों में रंग-बिरंगे फूल आदि बड़ी कलात्मक रीति से बनाये जाते हैं।

सियांग का उत्तरी प्रदेश घने जंगलों और पहाड़ियों का क्षेत्र है, जहाँ आवागमन की सुविधा न होने से वहां के निवासी अपने आप में मस्त रहने वाले हैं। 'खम्बा' और 'मोम्बा' नामक बौद्ध जातियों से यह आबाद है। ये शान्तिप्रिय और धार्मिक वृत्ति के होते हैं। छोटी-छोटी घाटियों में इनके गाँव बसे हुये हैं, और भेड़, सुरागायों को पालते हैं। ऊन और चवँर आदि का व्यापार भी करते हैं।

कामेंग डिवीजन में बसने वाले 'मोम्पा' कहलाते हैं। ये लोग भी शान्तिप्रिय और धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं। इनमें तिब्बत के लामा धर्म का चलन है, तथा इनमें भी लामा होते हैं।

तिरुप डिवीजन नागा प्रदेश से सम्बन्धित होने से उनके अनेक रीति रिवाज इनके निवासियों में पाये जाते हैं। यह प्रदेश जादूगरी, टोना आदि के लिए प्रसिद्ध है। ये लोग अधिक बर्बर प्रकृति के साहसी वीर हैं। नागा वीरों की भांति नर मुन्डों की मालाएं बनाकर घर के द्वार पर टांगने की रीति इनमें भी प्रचलित है। यहां की भूमि घने घने जंगलों से आवृत्त है, और मार्ग अति दुर्गम हैं। इस प्रदेश में वांचू तरिसा, नाक्टे, तथा सिंगफो नामक जन जातियां रहती हैं। मानव-विज्ञान-वेत्ताओं का मत है कि इस क्षेत्र के कबायली, लोहित डिवीजन के निवासियों की भांति बर्मा के कबायली जातियों से आकर बसे हैं। दोनों की चारित्रिक विशेषताओं में बहुत साम्य है, जैसे नरबलि, पक्षियों के रंग विरंगे परों के साथ वेश-विन्यास, हाथी दांत तथा अरने भैंसों के सींगों के प्रति आकर्षण, लकड़ी पर दस्तकारी की दक्षता आदि-आदि। अरने भैंसों को मार कर उसके सींगों से घरों को सजाना, उनकी शूरता का प्रमाण माना जाता है, और जो व्यक्ति जितने सींगों का स्वामी होता है, उतना ही वह वंदनीय है, तथा उसकी बधू बनने के लिए वहां की कुमारियां व्यग्र रहती हैं। नागाओं से भी उनके अनेक रीति–रिवाज मिलते हैं।

नेफा क्षेत्र की अधिक जन संख्या छोटे-छोटे गावों तथा खेड़ों में बसी है। नगर के नाम पर केवल तवांग है, जो समुद्र के स्तर से दस हजार फुट ऊंचे पठार पर बसाया गया है। इस नगर का प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त मनोहर तथा नयनाभिराम है। काशमीर का यदि इसे संक्षिप्त अथवा 'जेबी' संस्करण कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। उसी की भांति यह चारों ओर पहाड़ों से घिरा है, और बीच में हरा-भरा लगभग समतल क्षेत्र है। मालूम होता है कि प्रकृति ने जहां पश्चिम में काश्मीर प्रदेश की स्थापना की, वहां उसी के मुकाबले में कलात्मक दृष्टिकोंण से तवांग क्षेत्र बना दिया।

इसका महत्व इसलिए भी है कि इस भूमि में छठवें दलाई लामा का जन्म हुआ था। इसके बौद्ध मन्दिर में जहां भगवान बुद्ध की अभयदाता मूर्ति है, वहां गुरु 'रिमपोंचे' की मूर्ति के साथ छठवें दलाई लामा की मूर्ति भी स्थापित है, जो उसकी महत्ता में चार चांद लगाती है। इसके मठ में अत्यन्त प्राचीन धर्म ग्रन्थ रेशमी कपड़ों में लपेटे रखे हुए हैं, जिनकी उसी भांति पूजा होती है, जैसी मूर्तियों की। एक विशेषता यह है कि कुछ पवित्र ग्रन्थों की सूक्तियों अथवा उनका संक्षेप स्वर्ण पत्रों में खुदे हैं, जो मूल्यवान होने के साथ ऐतिहासिक महत्व भी रखते हैं। इसके कोष में लकड़ी के टुकड़ों पर धार्मिक ग्रन्थों में उल्लिखित पशुओं, पक्षियों, देवताओं, राक्षसों के चित्र और नाना प्रकार के नृत्य-वस्त्र सुरक्षित हैं। छापने के ठप्पे विभिन्न आकारों के मौजूद हैं। जिनसे वस्त्रों को अधिक से अधिक सुन्दर बनाने की निपुणता प्रकट होती है।

यहां का लामा-बिहार तवांग क्षेत्र के निवासी मोम्पाओं के जीवन और संस्कृति का केन्द्र है। इनका विशेष सम्बन्ध भोटियों से है, और ऐसा प्रतीत होता है कि उनके धर्म और संस्कृति के स्रोत भूटान और तिब्बत हैं। ये लोग वस्तुतः शान्तिप्रिय, धार्मिक, अतिथि सत्कार में रुचि रखने वाले प्रकृति-प्रेमी, सौन्दर्योपासक, कलाविद, और सुन्दर वस्तुओं के संग्रहक होते हैं। इनके मकान पक्के दो मंजिले साफ सुथरे हैं, और वे स्वयं विनोदप्रिय, हंसने-हंसाने वाले, गायन और नृत्य के अनन्योपासक हैं।

अभी तक यह प्रान्त विदेशियों के आक्रमण से अछूता था। पारिवारिक अथवा जाति कलह के अतिरिक्त किसी अन्य प्रकार का उपद्रव नहीं हुआ। अपने हाल में मस्त रहने वाले, कुटिलता से परे, सत्यजीवन बिताने वालों पर चीन के आक्रमण से जो हलकम्प उत्पन्न हुआ है, उससे यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि अब उनमें आधुनिक सभ्यता, छल-प्रपंच का संचार होगा, और पुराने जीवन की कहानी एक ऐतिहासिक तथ्य बन कर रहेगी।

परिवर्तन प्रकृति का अटूट नियम है, वह अच्छा है या बुरा, इसका निरूपण आगामी इतिहास करेगा।

२

मेजर कुलदीपसिंह जब अपनी कमान के सैनिकों के साथ दिल्ली छोड़ कर नेफा प्रदेश के लिए रवाना हुए, तब उनका दिल डूबा हुआ और मन बुझा-बुझा था। वह गुम-सुम एक कोने में बैठे थे, और वह मन ही मन अपनी नौकरी पर खीझ रहे थे, और सोचते थे कि फौज में नौकरी कर उन्होंने अपने जीवन की सबसे बड़ी गलती की है। इस समय रेल-सीमा के पार हरे-भरे खेतों में काम करने वाले किसान और मजदूर उनकी दृष्टि में उनकी अपेक्षा अधिक सुखी, सन्तुष्ट और प्रसन्न थे। उनका मन कह रहा था कि वे स्वतन्त्र हैं, अपने मन के राजा हैं, अपनी इच्छा के वशवर्त्ती हैं। वे अपने परिवार के साथ मोटा-झोटा खाकर सानन्द रहते हैं। उनको या उनकी पत्नियों को वियोगाग्नि से जलना नहीं पड़ता। कहीं किसी कुएँ के समीप कबूतरों के जोड़ों को गटर-गूं करते देख कर उनका मन विचलित होने लगता, और उनके मुंह से सर्द आह निकल जाती।

वह स्वाभवतः विनोदप्रिय और हँस-मुख थे। हृदय भी निष्कपट तथा उदार था, जैसा प्रायः फौजियों का हुआ करता है। वह न किसी की बुराई करते और न सुनते थे। जहां किसी के विरुद्ध चर्चा होने लगती, वहाँ वह कहते कि 'हमको यारी से काम है न कि उसके आमालों से।' बिना किसी भेद-भाव के, छोटे-बड़े का विचार किए वह सबकी यथाशक्ति सहायता करते। उदारता उनमें इतनी थी कि वह अपने मित्रों के आर्थिक कष्टों को दूर करने में सदैव तत्पर रहते। घर के वह सम्पन्न थे। पूर्वजों की अपार सम्पत्ति उन्हें मिली थी, और उसके भोगने वाले वह अकेले थे। खाने-पीने, और खिलाने-पिलाने के शौकीन थे। सबके साथ उनका शिष्ट तथा मिष्ट व्यवहार था। वह यथाशक्ति सबकी सहायता में तत्पर रहते, इसलिए सर्व-प्रिय तथा हर-दिल अजीज थे। उन्होंने कभी बुरे दिन नहीं देखे थे, और किसी को कष्ट में देखना भी नहीं चाहते थे। यद्यपि यह सत्य है कि उनके कई मित्र उनकी संवेदनशीलता से अनुचित लाभ उठाते थे, तथापि उसकी वास्तविकता प्रकट हो जाने पर न उन्हें कोई रोष होता और न मलाल। वह बहुधा कहते थे कि

ठगाना अच्छा है, ठगना नहीं। उनमें बालकों की सरलता थी, किन्तु अन्याय के प्रति उतनी ही दृढ़ता भी।

वह शरीर से लम्बे, चेहरे से प्रभावशाली तथा बलिष्ट थे। नित्य व्यायाम के अभ्यासी और नियमित जीवन व्यतीत करने वाले थे। उनके शिर तथा दाढ़ी के केश काले, घुंघराले और चमकीले थे। उनकी मांसपेशियां दृढ़ तथा बलिष्ठ थी। उनका वर्ण गौर और आँखें काली तथा तेजोमय थी। गुरु गोविन्द सिंह पर उनकी भक्तिपूर्ण आस्था थी, और उनके द्वारा निर्देशित नियमों का पालन कठोरता से करते थे। वह सिखों को हिन्दुओं से पृथक नहीं मानते थे, और न किसी अन्य धर्मावलम्बी के प्रति घृणा रखते थे।

रेल यात्रा में इस प्रकार उनके गुमसुम बैठने से प्राय: सभी को आश्चर्य था। उनके मित्र हरजेन्दर सिंह ने उनके पास आकर पूछा—"मेजर, क्या बात है, बड़े गमगीन देख पड़ते हो? लाडो को पीछे छोड़ आने का क्या रंज है?"

मेजर ने कोई उत्तर नहीं दिया, केवल म्लान मुस्कान से शिर हिला दिया।

हरजेन्दर सिंह ने पंजाबी ढंग से उनकी पीठ पर धौल मार कर कहा—"सरदार, तुम जनाने कबसे हुए? एक औरत के लिए परेशान हो?"

कुलदीप सिंह ने मुरझाई हँसी के साथ कहा—"और तुम बड़े खुश हो?

"अगर खुश नहीं, तो तुम्हारी तरह मुँह लटकाए भी नहीं हूँ। हमारी जिन्दगी हमेशा उतार-चढ़ाव की है। जब जो बात सामने आई, उसका डट कर मुकाबला उसी तरह किया, जैसे दुश्मन से किया जाता है।"

"मैं ही कब हार मानता हूँ। किन्तु आखिर दिल ही तो है; न संग ओ खिश्त, दर्द से भर न आए क्यों?"

"शायरों की बात छोड़ो, वे रोने में माहिर होते हैं, लेकिन हम लोग फौजी हैं, सब विद्या पढ़ते हैं, रोने की नहीं।"

"ठीक है, भाईजान।"

"फिर क्यों मुहर्रमी सूरत बनाए हो। आज तुम्हारे कहकहे नहीं सुनाई पड़ते ?"

"मौके पर सुन लोगे।"

"मौके का बहाना किसी अन्य दिन नहीं सुना गया।"

"ऐसी ऊल-जलूल बातें न किया करो। कुछ अच्छा नहीं लगता ?"

"अब इतनी देर में कबूले ! आखिर क्यों नहीं अच्छा लगता ?"

"तुम्हें घर छोड़ना क्या अच्छा लगा है ?"

"जब तक घर की चौखट के बाहर कदम नहीं निकाला तब तक उसका डर था, लेकिन चौखट लाँघने के बाद सब पीछे पड़ गया।"

"भाई, तुम्हारे पीछे तुम्हारे परिवार को देखने-भालने वाले हैं।"

"माना कि तुम्हारी लाडो अकेली है और माँ के साथ रह सकती है। वह नए फैशन की समझदार हैं। उनकी माँ दिल्ली समाज की स्तम्भ हैं। वह उनके साथ रहेगी।"

"अगर यही बात होती तो चिन्ता की कोई बात नहीं थी।"

"क्या आपस में मनमुटाव है ?"

'नहीं, किन्तु वह बिना मेरे न रहेगी।"

"फिर कहाँ रहेगी ?"

"वह कहती थी कि वह मुझसे आकर यहाँ नेफा में मिलेगी।"

"अजी, क्या लगो बात कहते हो।"

"नहीं सच, उसने वहां आने की इजाजत ले ली है।"

"तुम्हारा मन बहला दिया है। कुजा दिल्ली और कुजा नेफा ?"

"शायद तुम नहीं जानते कि उसका जन्म तिब्बत में हुआ था।"

"शकल-सूरत से वह पहाड़िन जरूर लगती हैं, लेकिन तिब्बतिन है, यह नहीं जानता था। हिन्दुस्तानी तो फर्राटे से बोलती हैं ?"

"उसकी शिक्षा-दीक्षा दार्जीलिंग के मिश्नरी स्कूल में हुई इसलिए हिन्दुस्तानी बोलने का अभ्यास है। उसके माता-पिता तिब्बत के आक्रमण में मारे गए थे, और उनकी भू-सम्पत्ति चीनियों ने अपहरण कर ली थी। उन्हीं

दिनों मिसेज रिपुदमनसिंह दार्जीलिंग में थी और जब एक दिन वह स्कूल के निरीक्षण के लिए गई थी, वहाँ की मिस्ट्रेस ने उसकी करुण कहानी सुनाई। सुनकर उनका हृदय पसीज गया, और उन्होंने उसे गोद ले लिया। न मालूम क्यों प्रकाश को भी मिसेज रिपुदमन सिंह से आत्मीयता उत्पन्न हो गई, और उनका प्यार पाकर वह अपने माता-पिता को भी भूल गई।"

"यह आपकी लाडो की जन्म कहानी है। फिर यह तुम्हारे गले कैसे मढ़ी गई ?"

"एक जलसे में मिसेज रपुदमनसिंह से परिचय हुआ। साथ में प्रकाश भी थी। उसको देखकर मैं आकर्षित हुआ। उन्होंने चाय पीने का निमन्त्रण दिया। मैं यही चाहता था। दूसरे दिन जब उनके घर गया तब उन्होंने प्रकाश का जीवन-वृत्तान्त बताया और उसके लिए कोई बर ढूंढ़ने का अनुरोध किया। चलते समय एक-दो मिनट का मौका उससे एकान्त में बात करने का मिला। उसने अश्रु-पूरित नयनों से दूसरे दिन भी आने का निमन्त्रण दिया। मै गया और फिर रोजाना जाने-आने लगा। घनिष्टता बढ़ती गई। एक दिन मैंने उसे गुरु का अमृत पीने को कहा, वह तुरन्त तैयार हो गई। मिसेज रिपु-दमनसिंह को कोई आपत्ति नहीं थी, बल्कि उन्होंने उसे प्रोत्साहित किया। अमृत पीने के बाद हमारे विवाह में कोई रुकावट नहीं रही। मुझे किसी से पूछना था नहीं, अपने परिवार में बिलकुल तनहा हूँ, यह तुमको भी मालूम है। जब प्रकाश ने सिख धर्म स्वीकार कर लिया, तब मिसेज रिपुदमनसिंह ने उसका विवाह मेरे साथ कर दिया।"

"दायज भी अच्छा दिया था। लेकिन तुमने उसका प्रबन्ध किया होगा ?"

"सब उनका ही दिया हुआ था। वह प्रकाश को अपनी औरस पुत्री कला से किसी प्रकार कम नहीं चाहती। वह दर असल ऐसी ही हैं कि जो उनके सम्पर्क में आता है वही भक्त हो जाता हैं। हरजेन्दर, ऐसी प्यार भरी पत्नी मिलने से मैं कृत्कृत्य हो गया। तुम जानते हो, बचपन से मैं प्यार का भूखा था, उस सब की कमी उसने पूरी की है।"

"तब, तुम बड़े भाग्यवान हो ।"

"मैं जो हँसता-हँसाता हूँ, उसका कारण प्रकाश का एकान्त प्रेम है। उसने मेरे रेगिस्तानी जीवन में रस घोल दिया है। एक पल भर भी वह मुझसे जुदा नहीं होना चाहती।"

"फिर कैसे आने की इजाजत मिली ?"

"वह मेरे साथ-साथ चलने की जिद उस दिन से कर रही थी, जबसे हुक्म नेफा जाने को मिला। उसके रोने का तार नहीं टूटता था। मैं हजार समझाता, किन्तु वह किसी तरह न मानती थी। जब नेफा आने की इजाजत ले ली तब उसका रोना बन्द हुआ।"

"वह बकती थी, वह भला कैसे आ सकती है ?"

"मुझे यकीन है कि चाहे जितनी उसे मुसीबतें झेलना पड़े, वह हमारे कैम्प में पहुँचे बिना दम नहीं लेगी।"

"और तुमने पागलपने में उसे आज्ञा दे दी ?"

"क्या करता, इसके सिवाय कोई चारा न था।"

"न मालूम हमारा कैम्प कहां लगे, और कैसी-कैसी मुसीबतों का सामना करना पड़े, हमारा ही कोई मुस्तकिल ठौर ठिकाना नहीं है। फुटबाल की तरह इधर-उधर लुढ़कते फिरेंगे। घने जंगलों, ऊँची नीची पहाड़ियों की चोटियों पर हमें रहना होगा। सर्दी के दिन हैं। बरफ की वर्षा होगी, भला वह इन्हीं जंगलों में भटक-भटक मर न जायेगी ? न मालूम तुम कितने बड़े मूर्ख हो।"

"मैंने बहुत समझाया, ठीक उसी तरह जैसे श्री रामचन्द्र जी ने वन जाने के समय सीता को समझाया था। जैसे सीता किसी प्रकार नहीं मानी, उसी तरह वह भी नहीं मानती थी। किसी तरह मेरा दामन नहीं छोड़ती थी।"

"अरे बेवकूफ, सीता यदि बन गई थी तो वह अपने पति के और देवर के साथ, अकेली नहीं। वह यहां कभी नहीं आ सकती।"

'जब नही मानी तब मैंने अपना पिंड छुड़ाने के लिए उसकी हां में हां मिला दी। उसको इस प्रदेश का कुछ ज्ञान है। सिलीगुड़ी तक वह आसानी

से पहुँच जाएगी ।"

"अरे मैं कहता हूँ कि वह तेजपुर तक पहुँच जायगी, किन्तु आगे क्या होगा ?"

"होगा क्या, यहां से लौट जायगी ?"

"अजी उसने तुम्हें बेवकूफ बनाया है। मुझे तो वह बहुत चालाक किस्म की लड़की मालूम होती है।"

"नहीं हरजेन्दर तुम्हारा ख्याल गलत है। उसने भावावेश में यह सब कहा है, और मैंने भी उसी रूप में उसे इजाजत दे दी। उसके प्यार की थाह मुझे अभी तक नहीं मिली।"

"अच्छा है कि तुम अपनी इस बनाई हुई दुनिया में मस्त रहो।"

"क्या मतलब !"

"यही कि तुमने जो उसके प्यार की कल्पना अपने मन में बना रखी है, वह सही उतरे।"

"तुम क्या उसकी वफादारी में सन्देह करते हो ?"

"वफादारी में नहीं, उसके यहां तक पहुंचने में सन्देह अवश्य करता हूँ।"

"यही मेरा ख्याल है।"

"जब तुमको अपनी बीबी का इतना प्यार मिला है, तब गमगीन क्यों हो ?"

"जुदाई का अभी ताजा घाव है, इसलिए दर्द ज्यादा है।"

"अगर जुदाई का इतना गम है, तब तुम्हें इस्तीफा दे देना था।"

"अवधि की समाप्ति पर मैंने कई बार इस्तीफा देने का निर्णय किया, किन्तु उसकी जिद थी कि मैं नौकरी न छोड़ूँ। वह फौजी मामलों में बहुत दिलचस्पी लेती है।"

"यह बड़े तआज्जुब की बात है कि औरत होकर लड़ाई में दिलचस्पी लेती है।

"बड़ी दिलेर है। उसका निशाना बहुत सच्चा है—उतना मेरा भी

नहीं है।"

"क्या तुमने उसे फौजी तालीम दी है ?"

"मैंने नही, वह शादी से पहले ही तालीम ले चुकी थी।"

"उसको किसने तालीम दी थी ?"

"मिसेज रिपुदमन सिंह ने।"

"क्यों, इस तालीम की क्या जरूरत पेश आई ?"

"चीनियों से उसे सख्त नफरत है। वह अपने वाल्दैन की मौत का बदला लेने के लिए व्याकुल है।"

"इतना तो ठीक है, लेकिन फौजी तालीम की बात समझ में नहीं आती।"

"मैं भी तुम्हारी तरह यह बात समझ न सका था, लेकिन मिसेज रिनुदमन सिंह ने मेरा शक रफा कर दिया।"

"किस तरह ?"

" दार्जीलिंग से आने के बाद उसका रोना किसी तरह बन्द न होता था। उसके ग़म को दूर करने की ग़रज से वह उसके दिल में चीनियों से बदला लेने की भावना भरने लगी। इस दवा का असर तुरन्त हुआ वह बदला लेने के ध्यान में रोना धोना भूल गई, और जब उसे फौजी तालीम दी जाने लगी तब उसके घाव भरने लगे । नए खिलौने पाकर जैसे लड़के रोना भूल जाते हैं, और उनसे खेलने लगते हैं, उसी तरह वह भी नए–नए हथियारों के अभ्यास में पुरानी बातें भूल गई। चूंकि उसके मन में बदला लेने की धुन थी इस लिए वह इस फन में वहुत जल्द माहिर हो गई। इसी वास्ते मिसेज रिपुदमनसिंह उसका बिवाह किसी फौजी अफसर से करना चाहती थी।

" अच्छा यह बात है। तुम मियाँ बीबी दोनों फौजी हो तब उसे फौज में क्यों नहीं भरती करवा दिया ?"

"अजी उसको फौजी तालिम महज उसका गम गलत करने की गरज से दी गई थी, शादी के बाद वह ख्याल जाता रहा । इसके अलावा

हिन्दुस्तान में नारियों की सेना नहीं है। रूस होता तो बात दूसरी थी।''

''ऐसा मत कहो, भारतीय नारियां भी हवाबाज हो रही हैं। आगरे में एक महिला ने पैराशूट से उतरने का जो प्रदर्शन किया था, क्या उसका हाल अखबारों में नहीं पढ़ा ?''

''हां, ऐसी एक घटना सुनने में आई थी।''

''तुम्हारी लाडो की दूसरी घटना होती। दोस्त, उसके साथ तुम्हारा नाम हो जाता।''

''क्यों मजाक करते हो ?''

''तुम मजाक समझते हो ? अगर मुझे ऐसी बीबी मिली होती, तब मैं उसे जरूर अपने साथ फ्रन्ट पर ले चलता, इसके लिए, चाहे जितनी मुझे परेशानी होती या फौजी कायदों को तोड़ना पड़ता।''

''अब लगे मुझे बेवकूफ बनाने।''

''अच्छा यह बताओ कि वह किस तरह तुम्हारे पास आने का कोन उपाय या तरीका बता रही थी।''

''अब कुछ न बताऊँगा। तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो।''

''नहीं दोस्त, मजाक नहीं करता, मैं उस दिलेर औरत की तहे दिल से तारीफ करता हूँ। लेकिन उसने वहाँ तक पहुँचने का कोई उपाय बताया होगा ?''

''वह कहती थी कि उसे इस मुल्क की कई भाषाओं का ज्ञान है। वह तोवाँग तक कई बार अपने बाल्दैन के साथ आ चुकी है, इससे उसे कुछ कुछ यहाँ के रस्मो–रिवाज और देश से वकफियत है।''

''तब वह जरूर आ जाएंगी, लेकिन हमसे वह मिल सकेगी या नहीं, इसमें सन्देह है। फौजी विभाग को इत्तिला देकर उसकी मदद करना चाहिए।'' यह कह हरजेन्दर हँसने लगा।''

''कुलदीप झेंप गया। उसने कुछ क्रुद्ध स्वर में कहा—''लगे न तुम मेरा मजाक उड़ाने।''

''इसी समय वह फौजियों की स्पेशल गाड़ी एक स्टेशन पर आकर

रुकी ।

कुलदीप ने उठते हुये कहा—"यहाँ इंजिन बदला जायगा । आओ बाहर चलकर चाय पी आवें ।"

हरजेन्दर खुशी-खुशी कुलदीप के साथ हँसता हुआ चल दिया ।

३

रमणी मोहन और कला अथवा मिनचू आकाश होटेल से निकल कर पालम हवाई अड्डे न जाकर सीधे रेलवे स्टेशन गए, और कलकत्ता का टिकट कटाया । सौभाग्य से उन्हें दो व्यक्तियों के बैठने का डिब्बा मिल गया था, इसलिए उनकी आजादी में कोई अन्तर नहीं आया । प्रातः काल उन्हें कानपुर में हुआ, और जब गाड़ी इलाहाबाद पहुंची, तब प्लेट फार्म पर घूमती हुई लूंग पर उनकी दृष्टि पड़ी । लूंग को देखते ही मिनचू ने रमणी मोहन को दिखाते हुए कहा—"शायद वह प्रकाश कौर है । यहाँ कैसे घूम रही है ?"

रमणी मोहन ने उसे पहचान कर उत्तर दिया—"मालूम वही होती है ।"

मिनचू ने डिब्बे का दरवाजा खोलते हुए कहा—"उसको बुला कर अभी आती हूं ।" यह कहती हुई वह प्लेटफार्म पर उतर गई ।

शीघ्रता से उसके पास पहुँच कर कहा—"लूंग, तू आखिर मिल गई । मैं रास्ते भर परेशान रही कि शायद तू नहीं आ सकी ।"

"वाह, आती कैसे नहीं । मैडम का हुक्म कहीं टलता है ?"

"काउ-चो भी आया है । बड़ा जालिम है । ताई-ची को अजदहे पर बलि चढ़ाने का आदेश दे चुका है ।"

"इसका हाल मुझे नहीं मालूम ? क्या अपराध उससे हुआ ?"

"उसने कोई नक्शा खो दिया है ।"

"कैसा नक्शा ?"

"मुझे सिर्फ इतना मालूम है कि उस नक्शे में हमारी आगामी योजनाओं का सविस्तार वर्णन था ।"

"तब तो सचमुच उसे खो देना एक भयंकर अपराध है।"

"मैडम को भी उसके गुम हो जाने की सूचना नहीं थी।"

"ताई–चीं की यह बहुत बड़ी गलती थी। यदि वह मैडम को बता देती, तब कोई उसके बचाने का उपाय अवश्य करती।"

"अवश्य ! मैडम बड़ी दयालु हैं। ऊपर से जितनी कठोर हैं, अन्दर से उतनी ही मुलायम हैं।"

"और वह स्वयं दण्ड देती हैं, दूसरों को नहीं देने देती।"

"इसी से हम उनको प्यार करती हैं, जहां दूसरों से डरती और घृणा करती हैं।"

"बेशक, हमारे दिलों में उनके लिए बड़ी इज्जत है।"

"तुमको मैडम ने बताया होगा कि मैं रमणी मोहन के साथ कलकत्ता जा रही हूं।"

"हां, तुम्हारे जाने के बाद उनका फोन मिला था। यह रमणी मोहन कैसा है। मेरे कुलदीप की तरह या उससे ज्यादा बुद्धू है।"

"मेरा ख्याल है कि दोनों समान साबित होंगे। मैडम को आदमियों की जबरदस्त पहचान है।"

"इस फन में वह माहिर हैं। कुलदीप को एक ही नजर में ताड़ लिया कि उससे हमारा काम बखूबी निकलेगा, इसलिए उसको फांस कर मुझे उसके गले मढ़ दिया।"

"उसी तरह रमणी मोहन को मेरे गले मढ़ा गया। अभी तक तो सब योजना ठीक-ठीक चल रही है। बुद्धू मियां मेरे ऊपर बेतरह रीझे हुए हैं। तुम्हें सीख बन कर विवाह का ढोंग रचना पड़ा,और मैं बिना कोई झंझट किए उसकी मालकिन बन गई। अब उसकी नकेल मेरे हाथ में है। जिधर चाहूं, उधर फिराऊं।"

"तुम सबसे अच्छी रही।"

"उसने कहा कि मैं विवाह नहीं कर सकता क्योंकि उसके परिवार वाले इजाजत नहीं देंगे। मैंने कहा कि मैं बिना विवाह के तुम्हारे साथ रहूंगी।

उसके इन्कार करने के सब रास्ते मैंने बन्द कर दिए। मूर्ख, समझता होगा कि वह ज्यादा होशियार है, उसने मुझे एक वेश्या की भांति रख लिया है, और मैं समझती हूं कि मैंने शिकार दबोच लिया है। वह मेरे चंगुल से निकल नहीं सकता।"

"दोनों अपनी-अपनी घात में हैं। मैडम ने क्यों इसे फांसा है।"

"बहुत बड़ा व्यापारी और उद्योगपति है। दक्षिण पूर्व के देशों में इसका व्यापारिक सम्बन्ध है। जब हमारी योजना उधर बढ़ेगी, तब उससे सहायता ली जाएगी।"

"किन्तु उसके लिए अभी बहुत समय है।"

"मैडम दूरदृष्टा हैं। पानी बरसने के बहुत पहले वह मेंड बांधती हैं।"

"इसमें तुम्हारा अभिनय क्या होगा।"

"बस इतना कि उसको अपने प्रेम-पाश में बांधे रखूं, और उसको मैडम की इच्छानुसार नचाऊं।"

"देखने में सीधा है"

"बिल्कुल गऊ। और अन्धा भी है।"

"मेरा कुलदीप भी ऐसा ही है। मैडम का हुक्म है कि मैं उसके कैम्प तक पीछा करूं और सैनिक मोर्चों की खबरें सीधे नोलिंग भेजूं।"

"तुम्हारा काम कठिन है। उसके कैम्प का पता कैसे लगाओगी?"

"तमाम नेफा में हमारे आदमी फैले हुए हैं। उन्हें हर एक मोर्चे की खबर है। उनकी सहायता से बड़े आराम से पहुंच जाऊंगी।"

"किन्तु कुलदीप के साथी क्या कहेंगे?"

"कोई कानो-कान नहीं जानेगा।"

"यह कैसे, साथ रहोगी, और कोई जानेगा नहीं?"

"मैं पुरुष भेष में रहूंगी। मिशमी जाति के लड़के के रूप में मैं अपने को छिपा सकती हूं। यदि कुलदीप ने उस वेष में पहचान लिया, तब तो अपना अतिशय प्रेम प्रकट करूंगी, और यदि उसने नहीं पहचाना तब नौकर के रूप में

अपना काम करूंगी ।"

"यह मुमकिन नहीं कि मेजर तुम्हें न पहचाने ।"

"अगर पहचान लिया तब कोई हर्ज नहीं । उसके पास पहुंचने की इजाजत मैंने ले ली है ।"

"यह कैसे ?"

"उसका किस्सा सुनोगी ?"

"जरूर ! मैं उससे सबक लूंगी ।"

"मैं उसके पीछे पड़ गई कि उसके बिना दिल्ली में किसी तरह नहीं रह सकती । उसके सामने हमेशा मिरचों का सफूफ आंखों में डाल कर आँसू निकालने लगी । इससे बहुत बेजार हुआ । उसने कई तरह से समझाया, किन्तु मैंने हठ नहीं छोड़ा । मैंने कहा कि मैं किसी न किसी तरह जरूर उसके पास पहुंचूंगी, मैंने वहाँ आने की इजाजत मांगी । उसने बहुत हीले हवाले किए, अन्त में उसे झुकना पड़ा और इजाजत देकर अपना पिंड छुड़ाया । बस मेरी समस्या हल हो गई ।"

"तुमने अपनी भूमि पहले से तैयार कर ली है ।"

"हाँ, मैडम का ऐसा ही आदेश था ।"

"अब यदि तुम्हारा कुलदीप तुम्हें पहचान भी गया, तब उसे शिकायत नहीं बल्कि खुशी होगी ।"

"उसे खुश करना कोई मुश्किल काम नहीं है । प्रकृति ने पुरुष को औरत का गुलाम बनाया है । एक बार गिरफ्त में आ भर जाय फिर उसे जितना पानी पिलाओ, उतना पियेगा ।"

"बिल्कुल सही है । रमणी मोहन को मैं भगा लाई, अब वह मेरे हाथ का खिलौना है ।"

"तुम्हारी क्या योजना है ?"

"रमणी मोहन डाक्टर है । मैडम की इच्छा है कि मैं इसे किसी सैनिक अस्पताल में भरती करवा दूं, जिससे वहाँ की सूचनाएं मिलती रहें ।"

"वह अमीर आदमी है, नौकरी क्यों करेगा ?"

"वह नौकरी स्वयं नहीं, किन्तु मेरे करवाने से करेगा।"

"कैसे ?"

"उसके दिल में देश प्रेम की भावना को चैतन्य करूंगी, और मैं स्वयं नर्स बनने की जिद करूंगी। आगे रास्ता साफ है। वह मुझे छोड़ कर भाग नहीं सकता, और मेरे साथ उसे अपनी सेवाएं अवैतनिक रूप में भारतीय सरकार को देना पड़ेगी।"

"किन्तु उसके परिवार वाले क्या इसे स्वीकार करेंगे ?"

"परिवार वालों के कोप से बचने का मैं यही उपाय बताऊंगी। वह मेरे साथ कुछ दिनों तक गुलछर्रें उड़ाने के लिए परिवार से दूर रहना चाहता है। मैं भी यही जाहती हूं, जिसमें वह पूरी तरह मेरी मुट्ठी में आ जाय।"

"मैं समझ गई। तुम कहोगी कि यदि फौजी सिपाहियों की सेवा के लिए अपने को समर्पित करोगे, तब परिवार वाले उसे ले जाने में असमर्थ रहेंगे।"

"जब देश सेवा का ढोंग रच कर नर्स बनूंगी, तब उसे मेरे दामन से चिपकना ही पड़ेगा। वह डाक्टर और मैं नर्स। जोड़ी ठीक रहेगी, क्यों ?

"बिल्कुल ठीक। नर्स का सारटीफिकेट बनवा लिया है ?"

"न मालूम कितने जाली सारटीफिकेट मैडम के पास हैं। उनमें से एक ले लूंगी। और काम से हम लोग वाकिफ हैं ही।"

"फिर यदि कोई कठिनाई सामने आयेगी, तो उसे हमारे साथी दूर करेंगे। कलकत्ता हमारा प्रधान केन्द्र है।"

"तुम्हें आए बहुत देर हो गई तुम्हारा भंवरा घबड़ाता होगा।"

"वहीं तुम भी चलो। उसके भयानक प्रेम-प्रदर्शन से मैं घबड़ा गई हूं।"

"घबड़ा गई एक ही रात में ! यह हमारा मन्सबी काम है।"

"जिसे सचमुच प्यार करो, वहां सुख मिलता है, लेकिन जबरदस्ती लादे गए आदमी से घबराहट और वितृष्णा होती है।"

"हमारी इच्छा का प्रश्न हमारे सामने नहीं है। यदि हमारे प्रभुओं,

का काम किसी कोढ़ी अथवा छूत की बीमारी से ग्रस्त व्यक्ति से निक-
लता हो, तो वे हमें उनके पास भेजने में कोई संकोच या सोच-विचार नहीं
करेंगे। हम भी उसकी गुलाजत पी जाने के लिए मजबूर होंगी। चीन पर
निछावर होने के लिए हमारी रचना हुई है।"

"कठोर शासन में हम बंधी हैं। जो कुछ हमारे नेता कहेंगे, हमें करना पड़ेगा।"

इसी समय गाड़ी ने स्टेशन छोड़ने की सूचना दी। दोनों अपने-अपने डिब्बों की ओर तेजी से दौड़ने लगीं।

४

मिनचू के अपने डिब्बे के पास पहुंचने के पहले गाड़ी चल दी। खिड़की का द्वार खोले रमणी मोहन उसका हाथ पकड़ने को तैयार खड़े थे। उन्होंने उसे तेज दौड़ने को उत्साहित करते हुए कहा—"जल्द अपना हाथ दो।"

"मैं चढ़ आऊंगी, आप घबड़ाइए नहीं।"

रमणी मोहन ने उसका हाथ पकड़ कर घसीटा। वह जान बूझ कर उनके हाथ में लटक गई। यदि वह लोहे का डंडा मजबूती से पकड़े न होते, तब शायद वह भी नीचे प्लेटफार्म पर आ जाते, परन्तु उन्होंने अपनी पूरी शक्ति से उसे अपने हाथ पर टांग, झटके से अन्दर खींच लिया। गाड़ी की गति तेज हो गई। रमणी मोहन ने हाँफते हुए कहा—"तुम्हारी बेवकूफी से अभी दुर्घटना हो जाती।"

मिनचू हाँफ रही थी। उसने कोई उत्तर नहीं दिया, और सीट पर पड़ी सिसकने लगी।

रमणी मोहन ने उसके समीप बैठते हुए कहा — "अब क्यों रो रही हो ?"

मिनचू फूलती रही, उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

उसके सिर को अपनी गोद में लेकर सहलाते हुए पूछा—"क्या कहीं चोट लग गई ?"

"मैं फिसल कर गिर पड़ती और कट जाती, तो बहुत अच्छा होता।"

"यह सब क्या बक रही हो ?"

"मैं मर जाती तो तुम्हारा यह बन्धन टूट जाता, और तुम मुक्त हो जाते।"

"कल से तुम्हें यही धुन सवार है।"

"जब तुम्हारी बात सामने आती है, तब मेरा दिल यही कहता है कि नाहक तू एक महापुरुष का जीवन नष्ट कर रही है। इससे बेहतर तेरा मर जाना है। पर कम्बख्त मौत भी वक्त पर दगा करती है।"

"तुम इन बातों के अतिरिक्त क्या कुछ और नहीं सोच सकती ?"

"मैं जब जब सरीहन देखती हूं कि मुझ कल-मुंही के कारण तुम अपने परिवार से दूर हो रहे हो, तब बताओ मैं कैसे न सोचूं ? यदि अपना मतलब गांठना होता तब ऐसा कुछ न सोचती, किन्तु तुम्हें जो दर्द होता है, उसकी तड़-पन मुझको होती है, इसलिए ऐसे विचार आते हैं। आखिर तुम मेरे ही लिए बनवासी हुए हो।"

"कलकत्ता में रहना बनवास है ? मेरे दिल में ऐसे विचार नहीं उठते। तुम व्यर्थ की बातें न सोचो और न दुखी हो। भगवान को जो मन्जूर है, वही हो रहा है। संभव है कि मेरी जिद देख कर मेरा परिवार तुम्हें मेरे साथ रहने की इजाजत दे दे।"

"रखैल रखने की रीति क्या तुम्हारे समाज में प्रचलित है ?"

"धनी समाज सब बातों में स्वतन्त्र है। जिसके पास पैसा है वह एक नारी से सन्तुष्ट नहीं होता। वह अनेक नारियों को रखता है।"

"और जी ऊब जाने पर फटी जूती की तरह निकाल कर फेंक देता है ? क्यों ?"

"सब ऐसा नहीं करते।"

"रोटी-कपड़ा और रहने को मकान देते होंगे, परन्तु वह स्थान जो नारी को परम प्रिय है, वह न रहता होगा। नारी पुरुष के हृदय पर सदा छाई रहना चाहती है, और यदि वह अधिकार छिन जाता है, तब उसके लिए संसार

में रहने के सब आकर्षण मिट जाते हैं ?"

"मैं तुम्हें किस प्रकार विश्वास दिलाऊं, मैं कसम .... ।"

"नहीं–नहीं कसम मत खाओ। अगर ऐसा मौका कभी आया, तो मैं अपना कर्त्तव्य जानती हूं।"

"वह क्या, जरा मैं भी सुनूं।"

"अभी उसके कहने की जरूरत नहीं है। वक्त पर दिखा दूंगी।"

"क्या दिखाओगी। बताओ।"

"अभी कहने से तुम न मालूम क्या अर्थ निकालो। वक्त की मांग वक्त पर पूरी की जाती है।"

"जब वैसा मुश्किल वक्त ही न आवेगा, तब ?"

"तब क्या करना है ? जैसे अभी तुम्हें परेशान करती हूं वैसे करती रहूंगी।"

"बस, इसके अलावा तुम कुछ न करना। यह बताओ प्रकाश कौर कहाँ जा रही है ?"

"वह जा रही है अपने प्रियतम के पास ?"

"मेजर के पास ?"

हमारे कुल में स्वामी के अतिरिक्त कोई दूसरा प्रियतम नारी का नहीं होता। ममी को देख लीजिए। मेरे पिता के मरने के बाद उन्हें संसार से विराग हो गया है। वह केवल मेरे लिए जीवित रहीं, नहीं तो कब घुल–घुल कर मर जाती।"

"लेकिन उनके ठाट बाठ से कुछ लोग अन्य शंकाएं करते हैं।"

"यह दुनिया दुरंगी है। हर चीज उल्टी देखी जाती है। जहां किसी को खाते पीते देखा दूसरों की आँखें जलने लगी, और बेचारी नारी की इज्जत तो कच्चे धागे में बंधी है। पुरुष नारी को लांछित करने में अपना शौर्य समझता है। सच्चरित्र से सच्चरित्र रहने वाली नारी की इज्जत सदैव खतरे में रहती है।"

"मैंने कभी उनकी बातों पर विश्वास नहीं किया।"

"इसका मतलब यह है कि कुछ लोगों ने उनकी बुराई आपसे की है। जरा उनके नाम सुनूं।"

"मैं इन पचड़ों में नहीं पड़ता।"

"आप नहीं पड़ते, किन्तु मुझे पड़ना होगा, क्योंकि यह मेरी इज्जत का सवाल है।"

"तुम्हारी इज्जत का सवाल क्यों है ?"

"क्यों नहीं ? आखिर मैं उसी लता का फूल हूं, जो जहरीली बताई जाती है।"

"तुम फिर तिल का ताड़ बनाने लगीं।"

"वाह, कोई मेरी माँ को बदनाम करे, और मैं कुछ बोलूं भी नहीं। प्रकारान्तर से वह लाँछन मेरे ऊपर भी आता है।"

"कमल कीचड़ से उत्पन्न होता है, परन्तु उसकी सुरभि, उसका रूप, कीचड़ के रूप गुणों से भिन्न होता है।"

"आपकी मिसाल से ममी कीचड़ हुई।"

"मेरा यह तात्पर्य नहीं, मैंने केवल साधारण उपमा दी है।"

"परन्तु व्यंजना पर ध्यान दीजिए।"

"तुम्हें शायद तिल को ताड़ बनाने की आदत पड़ गई है।"

"अच्छा इतना बता दो कि मेरी माँ के खिलाफ किसने कान भरे हैं।"

"मैंने यों ही कह दिया। किसी ने कोई बुराई नहीं की।"

"मैं जानती हूं उस कमीने को। वह आपके कमरे का पड़ोसी अमेरिकन होगा।"

"लैम्बर्ट ?"

"मैं उसका नाम नहीं जानती, यदि उसका नाम लैम्बर्ट है तो वह लैम्बर्ट ही होगा।"

"उस बेचारे ने तो कुछ नहीं कहा।"

"आप अपने मित्र को बचाने की कोशिश कर रहे हैं। अमेरिकन हमेशा दूसरों की बुराई करते हैं, वह अपने सामने दुनियाँ को हेच समझते हैं। उन्हें

अपनी आँखों का टेंटर दिखाई नहीं पड़ता, और दूसरों का तिल देखते हैं। सूप बोले तो बोले, छलनी क्या बोले जिसमें नौ सौ छेद।"

"अब तुम बेगुनाह अमेरिकन जाति पर बरस पड़ी।"

"उनकी वजह से मेरी मां को कितनी-कितनी मुसीबतों का सामना करना पड़ा, वह सब आप नहीं मैं जानती हूँ।"

"ठीकहै, मैंने माना कि तुम्हारी मां को कुछ अमेरिकनों ने कष्ट दिया, परन्तु वे केवल अमेरिका नहीं बनाते। किसी भी देश में अच्छे-बुरे लोग होते हैं, परन्तु बुरे लोगों से देश को लांछित करना अन्याय है। अमेरिका ही एक देश है, जिसने फ्रान्सीसी राज्य क्रान्ति के पश्चात् सर्वत्र संसार में उसके तीनों सिद्धांतों, स्वतन्त्रता, समानता, और बन्धुता के दीपक आज तक जलाये रखे हैं। जहां योरोपीय देश साम्राज्यवादी बने, वहां अमेरिका प्रजातन्त्र का गढ़ बना।"

"सत्य इसके विपरीत है। अमेरिका का साम्राज्यवाद सुनहला है। वह सोना देकर देशों को गुलाम बनाता है।"

"किसी की सहायक वृत्ति से यही अर्थ निकाला जा सकता है।"

"क्या मतलब ?"

"यही कि सहायक की आर्थिक स्थिति सहायता ग्रहण करने वाले से अच्छी होती है, और उसकी हीनता का ज्ञान उसे उसका विरोधी बनाता है।" यह भाव ईर्ष्या और द्वेष से उत्पन्न होता है, अतएव वह सत्य नहीं है।"

"मैं इस तर्क में नहीं पड़ना चाहती, किन्तु इतना जानती हूँ कि कोई बिना स्वार्थ के अपना पैसा नहीं लुटाता।"

"स्वार्थ-भावनाओं से जो प्रेरित रहते हैं, वही ऐसा सोचते हैं। यदि तुम्हारे तर्क में सत्यता है, तब फिर धर्मशालाएँ बनाने वाले, सदावर्त चलाने वाले, तथा अनेक परोपकारी संस्थाओं को जन्म देने वाले, स्वार्थ-भावना से पूरित माने जायेंगे।"

"वे सब अपने यश की कामना से ऐसा करते हैं।"

"स्वार्थ से परे कौन है ? किन्तु उसमें भी भेद है। जैसे एक भाई

दूसरे भाई की सहायता करता है उसी प्रकार अमेरिका भी दूसरे अविकसित राष्ट्रों को सहायता देकर उन्हें अपने समकक्ष लाना चाहता है। बस इतना ही उसका स्वार्थ है।"

"वह उन देशों की सहायता करता हैं जो उसके गुट में शामिल होते हैं।"

"नहीं सबकी, जो सहायता चाहते हैं। अमेरिका कितने ही कम्यूनी देशों की भी सहायता करता है। भारत किसी गुट में शामिल नहीं है, किन्तु अमेरिका उसकी सहायता के लिये तत्पर रहता है।"

"इस लिये वह भारत की सहायता करता है, जिसमें भारत दूसरे गुट में शामिल न हो जाय।"

"दूसरे गुट में शामिल होने का प्रश्न ही न उठता, जब वह निरपेक्ष है।"

"आप तो राजनीतिक दलदल में घसीट लाये। लैम्बर्ट के अतिरिक्त मेरी मां की बुराई कोई नहीं कर सकता। दिल्ली में वह कई वर्षों से रहती हैं, बड़े–बड़े आदमियों से सम्पर्क है, परन्तु किसी ने आज तक उनकी बुराई नहीं की।"

"मैं जानता हूँ, किन्तु बताओ, प्रकाश कौर को यहाँ क्यों नहीं ले आई ?"

"उससे कहा था, किन्तु उसने आना स्वीकार नहीं किया।"

"क्यों ?"

"कहती थी कि वह 'कूपे' में नहीं आ सकती। दरअसल वह यहां हम दोनों के बीच आने से संकोच करती है।"

"किन्तु तुम भागकर आई हो, प्रकाश कौर कहीं तुम्हारी मां को सूचित कर विपत्ति न खड़ी करे।"

"क्या ?"

"यही कि वह तुम्हारी मां को सूचित कर दे।"

"वह सूचित करे या न करे, किन्तु मैं स्वयं अगले स्टेशन से ममी को

तार से सूचित करने जा रही हूँ, कि हम लोग कलकत्ता जा रहे हैं, और मेट्रोपालीटन होटल में ठहरेंगे।"

"ठीक है, उन्हें अवश्य सूचित करो।"

"मम्मी कभी मेरी इच्छा में कोई बाधा नहीं उपस्थित करती। उन्हें वह सब सहर्ष मन्जूर होता है, जो मैं करती हूँ।"

"वह तुम्हारे भागने से अप्रसन्न नहीं होगी ?"

"तभी तक जब तक मेरा तार नहीं मिलता। देख लेना तार का जवाब उनके हार्दिक आशीर्वाद से आयेगा।"

"फिर तुम उनसे कह कर क्यों नहीं आई ?"

"केवल तुम्हारे लिये। तुम्हारे माता-पिता आने वाले थे, इसलिये मुझे भी दिल्ली छोड़ना आवश्यक हो गया।"

"आकाश होटल में आने के पहले यह बात तुम्हें मालूम नहीं थी ?"

"क्यों मालूम नहीं थी। तुम्हारे मन में जो विचार उठते हैं, उनकी प्रतिच्छाया मेरे मन में तुरन्त अंकित होती है। हम एक जान दो कालिब हैं।"

"सचमुच मैं यही महसूस करता हूँ। अब हमें कलकत्ते का कार्यक्रम बनाना चाहिए।"

"वहाँ पहुँच कर किसी होटल में ठहर कर आगे का कार्यक्रम निश्चित करेंगे।"

"प्रकाश कौर का भला कैसे अपने मेजर के पास पहुँचना सम्भव है ? उसका प्रयास निष्फल जायेगा।"

"असम्भव या सम्भव वह जाने। उसकी कोई योजना होगी।"

"यदि हम लोग उसे अपने साथ ठहरा लें, तो कैसा रहेगा ?"

"वह हमारे साथ नहीं रहेगी। वह दूसरे मिजाज की है। मेरा उससे अधिक मेल नही खाता।"

"किन्तु तुम दोनों साथ-साथ रही हो। तुम्हारी माँ ने उसका पालन पोषण किया है।"

"इससे क्या हुआ ? उस समय भी हमारी कभी नहीं लगी। और

जबसे उसका विवाह मेजर से हो गया है, तबसे वह जमीन पर पांव नहीं रखती।''

''क्यों ?''

''हम लोगों का सब अहसान भूल गई। हमेशा अपने मेजर के प्यार-दुलार की डींगे मारा करती है। देखिए उसको कैसी अनहोनी धुन सवार हुई कि वह फ्रन्ट पर जाकर अपने मेजर की सेवा-चाकरी करेगी। मैं उसकी बातों से ऊब गई। बड़ी बद-दिमाग लड़की है।''

इसी समय मिर्जापुर स्टेशन पर गाड़ी रुकी। मिनचू ने तेजी से उठकर कहा—''ममी को टेलीग्राम दे आऊँ। वह इस समय बहुत परेशान होंगी।''

बिना किसी उत्तर की प्रतीक्षा किए वह खिड़की खोलकर प्लेटफार्म पर कूद पड़ी, और तार घर को तलाश करने लगी।

५

राणा वीरेन्द्रसिंह और मकबूल मियाँ को गोरखों की एक कम्पनी में जगह मिल गई। राणा कैप्टेन और मकबूल मियाँ, उनके सहकारी नियुक्त हुए।। दोनों हम उम्र थे, इसलिए राणा की मकबूल मियाँ के साथ नवाबजादा से ज्यादा पटरी बैठ गई। बेतकुल्लुफी से बातचीत होती, और आपस में दुराव नहीं रखते थे।

राणा को पहाड़ी जमीन से बखूबी वकफियत थी, लेकिन मकबूल मियाँ ने अपनी उम्र में किसी भारी पहाड़ को देखा तक नहीं था। वह दिल्ली से कभी बाहर नहीं गए थे। बहादुरी और हिम्मत के धनी थे, और यूनीवर्सिटी के प्रसिद्ध छात्र थे। सब प्रकार के खेलों में अग्रणी रहने वाले और घूसे बाजी के चैम्पियन थे। स्वभाव से मिलनसार, मिष्टभाषी, और निराभिमानी थे। शरीर से लम्बे, दोहरे और दृढ़ थे। रंग उनका गौर और मुखाकृति प्रभावशाली थी। उनके चरित्र की अद्‌भुत बात यह थी कि वह कालेज की लड़कियों से दूर भागते थे, और अक्सर उन्हें चिढ़ाया करते थे। वे भी इनसे दूर-दूर रहती थीं। जिस साल वह यूनिवर्सिटी में दाखिल हुए थे, उसी साल राणा ने

उसे छोड़ा था। परन्तु उनकी चर्चा लड़कों में अक्सर होती थी। उनके सम्बन्ध की कहानियाँ किसी उपयुक्त अवसर पर जरूर दोहराई जाती थीं। मकबूल मियाँ भी सुन कर बहुत प्रभावित हुए, परन्तु उनको न देख सके न पहचान सके। यद्यपि राणा प्रायः नवाबजादा के घर आते जाते थे, तथापि उनमें परिचय कभी नहीं हुआ। नवाबजादा की बैठकें और महफिलें उस छोटे बंगले पुरफिजां महल में होती थी, जो उनकी खास कोठी से लगभग ५० गज दूर बना था। वहाँ के नौकर-चाकर सब अलाहिदा थे। केवल कभी-कभी शयन के लिए वह खास कोठी में जाते, वरना उनका सारा काम काज, उसी छोटे बंगले में होता था। उनके लड़के भी वहाँ नहीं जाते थे, और न उनके किसी दोस्त से जान-पहचान थी। इसी वजह से मकबूल मियाँ यह न जान सके कि बहुप्रशंसित राणा उनके पिता के अन्तरंग मित्र हैं।

बिदाई के अवसर पर दोनों ने एक दूसरे को देखा, और वे आपस में प्रभावित भी हुए। जब वे लद्दाख के लिए रवाना हुए, तब उन्हें एकान्त में एक दूसरे को जानने का अवसर मिला। यूनीवर्सिटी के सम्बन्ध में आलाप करते हुए जब मकबूल ने पूछा—"राणा साहब, क्या आपका तआल्लुक नैपाल के राणा खान्दान से है, या यह कोई मौरूसी लकब है।"

राणा ने मुस्कराते हुए कहा—मौरूसी लकब है, और नैपाल का जागीरदार हूँ। मेरा कोई सम्बन्ध उस राणा खान्दान से नहीं है, जो नैपाल के महामन्त्री थे। यह प्रश्न आपने क्यों पूछा ?"

"बात यह है कि मैंने जिस साल यूनीवर्सिटी में दाखिला लिया, उसी साल एक राणा साहब उसे छोड़ कर गए थे। उनके बारे में मैंने इतने किस्से सुने कि उनसे नियाज हासिल करने की उमंग दिल में उठी लेकिन वह हविस पूरी नहीं हुई।"

"उनका नाम नहीं मालूम हुआ ?"

"वह अपने को बी० सिह कहते थे, लेकिन राणा नाम से ही वे मशहूर थे।"

"आप उनसे क्यों मिलना चाहते थे ?"

"वह अपनी बहादुरी के लिए मशहूर थे, और तमाम खेलों में वह अपना सानी नहीं रखते थे। दरियादिल भी वह थे।"

"उनका कभी आपने फोटो नहीं देखा ?"

"देखा है।"

"फिर भी आप उस कम्बख्त को पहचान नहीं सके।"

"इतने आला इन्सान को आप कम्बख्त कह रहे हैं, और वह भी उस की गैर मौजूदगी में !"

"मैं पीठ पीछे गालियाँ किसी को नहीं देता।"

"वह बेचारे इस वक्त मौजूद नहीं है।"

"आँखें खोल कर देखिए, वह बेवकूफ आपके सामने है।"

मकबूल मियाँ डिब्बे में बैठे दूसरे सैनिक अफसरों और जवानों को देखने लगे। जब किसी को अपने विचारों के अनुसार न पाया, तब हैरानी से कहा—"मुझे इनमें कोई राणा साहब की शक्ल से मिलता जुलता नहीं दिखाई देता।"

"अरे वाह साहब, आप क्या अपने सामने बैठे हुए को भी नहीं देख सकते।"

"देख तो रहा हूं, लेकिन उनकी हुलिया का कोई शख्स नहीं देख पड़ता।"

"मैं भी नहीं ?"

"क्या वह आप ही हैं ?"

"उनका फोटो जो आपके दिमाग़ में है, उससे मिलान कीजिए।"

"वल्लाह, वह तो आप ही निकले।"

"अच्छी तरह गौर कीजिए, कहीं आप धोखा तो नहीं खा रहे हैं।"

"अब गौर से क्या देखूं ? अभी तक नहीं पहचान सका था, भला बताइए, मुझसे ज्यादा बेवकूफ आप को दुनियाँ में कहीं मिलेगा ?"

"एक नहीं हजार।"

"वाकई, यह मेरी सबसे बड़ी खुश किस्मती है कि आपके साथ काम

करने और रहने का मौका हासिल हुआ। मेरे दिल में यह आरजू थी कि कब आपसे नियाज हासिल हो। खुदा ने वह मुराद पूरी की, हजार–हजार शुक्र है उसका।"

"वाह, आप तो मुझे मामूली इन्सान से कोई बहुत बड़ा आदमी बना रहे हैं। मैं तो आपके वालिद का बहुत पुराना दोस्त हूं।"

"इसका मुझे कोई इल्म नहीं था। आप 'पुरफिजां महल' में आते-जाते होंगे, और वहां हम लोगों के जाने की इजाजत नहीं थी। वालिद माजिद वहां हमारी मदाखलत बेजा समझते थे।"

' क्यों ?"

"शायद वह नहीं चाहते कि उनके दोस्तों से हमारे मरासिम बढ़ें। हमारे दोस्तों से जैसे उन्हें कोई सरोकार नहीं रहता, वैसे ही उनकी मन्शा होगी कि हम लोग भी उनके दोस्तों से दूर रहें।"

"आपकी कोठी का नाम है 'रैन–बसेरा' है, फिर 'पुरफिजां महल' कहाँ है।"

"वह छोटा बँगला जो लान के दूसरे सिरे पर बना है, उसी का नाम उन्होंने 'पुरफिजां महल' रखा है।"

"उसकी सजावट तो वैसी है, वैसा उसका नाम है। मौसमी फूलों से वह हमेशा सजा रहता है, और पतझड़ में भी वहाँ बहार रहती है।"

"जी हां, वालिद को बागबानी से शौक है।"

"वह शौक उन्होंने मुझमें भी पैदा कर दिया है।"

"सुनने में आया है कि यह इलाका जहां हम लोग जा रहे हैं, तरह-तरह के फूलों के लिए मशहूर है।"

"चल ही रहे हो, खुद देख लोगे। हमारा हिन्दुस्तान ही एक दुनिया का चमन है।" रंग-बिरंगे फूलों का घर है।"

"जी हां, तभी दुनिया की आँखें इस पर लगी रहती हैं। बैठे-बिठाये चीन को भी इसे हड़पने की सूझ गई। एशिया और योरोप के हर मुल्क ने इस पर धावे बोले हैं।"

"डाकुओं की तरह वे आये और लूट-खसोट कर चले गए ।"

"लेकिन मुगल नहीं गये ।"

"अगर वे नहीं गए, तो इसी के होकर रहे । जब उन्होंने इसको अपनी जन्मभूमि मान ली, तब वे गैर नहीं रहे ।"

"बेशक, देखिये हम लोग पठान हैं । तीन सौ साल पहले हमारे बुजुर्ग गजनी से आकर यहाँ आबाद हुए थे । तब से हम लोग यहाँ रहते हैं, और कहने भर को हम पठान हैं । अब हर मानी में हम हिन्दुस्तानी हैं, और आज उसके लिये अपनी जान की बाजी लगाने जा रहे हैं ।"

"दुनिया का एक यही मुल्क है, कि जो यहां आया, वह फिर वापस नहीं गया ।"

"और अगर गया तो ठोकरें खाईं । हमारी कौम के चन्द लोग पाकिस्तान गये, मेरे दो भाई साहबान भी उन्हीं में हैं, लेकिन वे अब पछताते हैं । उनके लिये वालिद परेशान रहते हैं ।"

"अभी तुम्हारा एक भाई आया है ।"

"जी हाँ, मगर वह लौटकर जाना नहीं चाहता । वह कहता है कि जिन्दगी का जो बहार यहां है, वह वहाँ मयस्सर नहीं ।"

"इसी तरह जो चीनी यहाँ आकर बस गये हैं, वे भी यहाँ के हो गये हैं ।"

"जी हां, कलकत्ता, बम्बई में और दिल्ली में उनकी काफी तादाद है ।"

"लेकिन उनमें कितने ही आजकल जासूसी कर रहे हैं, यह भी आपको मालूम होना चाहिए । जब से चीनियों को हमने भाई बनाया, तब से जो चीनी यहाँ आये हैं । उनमें अधिकांश चीन के जासूस भी हैं ।"

"हिन्दुस्तान की हर चीज खुली है, फिर वे जासूसी किस बात की करते हैं ।"

"आज कल लड़ाई सिर्फ मैदाने-जंग में नहीं लड़ी जाती । वह तो उसकी सबसे आखिरी और खुली शकल है । पहला वार जासूसों के जरिये होता है । उन के कई विभाग हैं । एक विभाग जहाँ फौजी राज़ लेने की कोशिश

करता है, वहाँ दूसरा तोड़-फोड़ की कार्रवाई के लिये लोगों को तैयार करता है, तीसरा अवाम को गुमराह करने की तरफ तवज्जह देता है, चौथा अपने मुल्क की खूबसूरत औरतों के जरिए पंचमांगी सेना बनाता है, पांचवा यहाँ की सरकार का तख्ता उलटने की भीतरी साजिश करता है, गर्ज कि सभी तरह के काम जो खिलाफ वर्जी सरकार से तआल्लुक रखते हैं, करते हैं।"

"और ये सब काम गुप–चुप होते हैं?"

"बेशक, ये आस्तीन के सांप बनकर रहते हैं, सिर्फ वक्त आने पर वे अपने जहरीले दांत गड़ाते हैं।"

"मालूम होता है कि चीनियों का जासूसी हमला कामयाब हो गया है, तभी उन्होंने बड़े पैमाने पर जंग छेड़ी है।"

"जरूर कुछ ऐसी बात है।"

"क्या हिन्दुस्तान के अवाम अपनी हुकूमत की मुखालफत करेंगे?"

"क्यों नहीं। चीन के जासूसों ने कुछ लोगों को रिश्वत देकर चीन का ह्रामी और तरफदार बना लिया है। वे चीन को अपना रहनुमा मानने लगे हैं, और इस हमले को वह हमला नहीं कहते, बल्कि किसान मजदूरों की गुलामी मिटाने का जरिया समझते हैं।"

"ऐसे कौन बददिमाग हैं?"

"जिनके पास अपने गाँठ की अक्ल नहीं है, जिनको अपने मुल्क से प्यार नहीं है, जो अपने को मजदूरों के मसीहा कार्ल मार्क्स के शागिर्द बनने का दावा करते हैं, जो दुनिया को महज मजदूरों की दुनिया समझते हैं, जिनका दिमाग बन्द है, जो न खुद आजाद हैं, और दूसरों को भी अपनी तरह गुलाम, या कुएँ का मेढक बनाना चाहते हैं।"

"इनकी तादाद क्या ज्यादा है?"

"तादाद ज्यादा नहीं है, लेकिन फितनेसाजी में ये लोग यकतां हैं। गरीबों की गुरबत से वह फायदा उठाते हैं, अपने स्वार्थ के लिए उनको गुमराह कर लड़ाई-झगड़े पैदा करवाते हैं। न खुद अमन चैन से बैठते हैं, और न किसी को बैठने देते हैं।"

"लेकिन भाई साहब, आखीर में इनका पर्दा फाश होगा ही।"

"काठ की हांडी दूसरी बार नहीं चढ़ती। अब हमारे मुल्क की आँखें खुली हैं। दोस्ती का नशा अब उतरा है। लोगों को मालूम होने लगा है कि कम्यूनी सिद्धान्तों की आड़ में चीन हमारे मुल्क पर कब्जा करना चाहता है। उसका कम्यूनिज्म महज धोखे की टट्टी है। खैरयत यह रही कि उसकी असलियत बहुत जल्द जाहिर हो गई।"

"भाई साहब, ये भुखमरे चीनी क्या खाकर हमारा मुकाबला करेंगे। छल-छद्म से जो नुकसान इन्होंने कर दिया, वह कर दिया, लेकिन अब एक-एक चप्पे के लिए हमारे जवान अपनी जान की बाजी लगा देंगे।"

"उसी लिए हम लोग जा रहे हैं, इनकी बहादुरी का इम्तिहान लेंगे।"

"भाई साहब, दिल्ली के होटेल में जो दो खून हो गए थे, उनका कोई सुराग लगा।"

"कुछ समझ में नहीं; आता सिर्फ इतना मालूम हुआ कि हलाक एक मर्द और एक औरत हुए थे और वह मर्द शक्ल सूरत से चीनी मालूम पड़ता था।"

"वह चीनी था!"

"कुछ ऐसी ही अफवाह सुना था।"

"मुमकिन है वह हादिसा किसी चीनी साजिश से तआल्लुक रखता हो।"

"मेरा भी यही ख्याल है। दिल्ली चीनी जासूसों से उतरा रही है।"

"अब अखबारों में उसका हाल पढ़ने को मिलेगा।"

"मेरा अनुमान है कि उस खबर को शाया नहीं किया जायगा।"

"क्यों?"

"इस लिए कि अगर वह दुश्मनों की काररवाई है, तब खबर शाया होने से उसके दूसरे साथी होशियार हो जाएँगे। यह एक अहम मामला है, बड़ी सर-गर्मी से इसकी तफतीश होगी।"

इसी समय गाड़ी जालन्धर स्टेशन पर आकर रुकी। राणा ने उठते

हुए कहा—"आओ चलें, पैरों की थकावट दूर कर आवें। बैठे-बैठे पैर अकड़-से गए हैं।"

"आइए, चाय पी जाय।"

"अगर अच्छी चाय मिले तो जरूर पी जाय।"

दोनों प्लेटफार्म पर उतर गए।

६

तू-सिन और मिस मिलर के हत्याकांड की खबर कई कारणों से गुप्त रखी गई। लैम्बर्ट ने अपने बयान में लिखाया कि मिस मिलर को वह जानता है। वह कभी-कभी उससे मिलने आती थी, किन्तु उसकी वास्तविकता के सम्बन्ध में उसे जानकारी नहीं है। उसने उसको 'इन्टरटेनमेंन्ट गर्ल' (मनो-रंजन करने वाली सेविका) के रूप में जाना, और उसके साथ उसका वैसा ही व्यवहार था। वह चोर है या नहीं, इसकी जानकारी नहीं है, और न मालूम किस इरादे से वह मेरे कमरे में दाखिल हुई, जब मैं अपने दो दोस्तों के साथ एक खाली कमरे में, जिसे मैंने रमणी मोहन के जाने के बाद ले लिया था, सो रहा था। पिस्तौल की आवाज से उसकी नींद खुली थी, और जब वह अपने कमरे के बाहर निकला, तब उसके कमरे क सामने भीड़ जमा थी। उसने अपनी सब चीजें देख ली हैं, कोई चोरी नहीं गई। उसके सूटकेस में रखी हुई चीजें बदस्तूर रखी हैं, रुपया-पैसा सब मौजूद है। उसे मिस मिलर से कोई शिकायत नहीं है। जिस व्यक्ति ने मिस मिलर का खून किया, उससे भी परिचित नहीं है और न उसने कभी उसे मिस मिलर के साथ देखा है। मिलर कहती थी कि वह रिट्ज होटल में ठहरी है, इसके अतिरिक्त उसे कुछ नहीं मालूम।

लैम्बर्ट के अतिरिक्त कोई दूसरा गवाह न था। पुलिस ने जब रिट्ज होटल में मिस मिलर के कमरे की तलाशी ली, तब उसमें कुछ चीनी पत्र-पत्रि-काओं और उसके कपड़ों के अतिरिक्त कुछ नहीं मिला। उनसे केवल इतना

प्रकट हुआ कि उसका कुछ न कुछ सम्बन्ध चीनियों की साजिश से अवश्य है। तू-सिन शक्ल सूरत में बिल्कुल चीनी था, अतएव पुलिस ने घटना का रिश्ता चीनियों की जासूसी हरकतों से जोड़ा और तफतीश जब आगे न बढ़ी तब दखिल दफ्तर कर दी गई।

इतना अवश्य हुआ कि पुलिस सरगर्मी से चीनी जासूसों की तलाश करने लगी, और घेरा धीरे-धीरे सिमटने लगा।

लैम्बर्ट को अब दिल्ली में रहना उचित नहीं प्रतीत हुआ। पग–पग पर उसकी जान खतरा था। उसे चीनियों की ऐयारी का व्यापक ज्ञान था, और उनसे बचने का एक मात्र उपाय था, दिल्ली को परित्याग करना। पुलिस हेड क्वार्टर में अपना कलकत्ते का पता देकर वह भी कलकत्ते जाने का कार्य-क्रम बनाने लगा। जब पुलिस मुकदमा नहीं चला रही थी, तब उसके ठहराने की कोई आवश्यकता भी नहीं समझी गई। दिल्ली में उसका काम समाप्त हो चुका था। चीनियों की साजिश का पूरा पता उसको मिल गया था। अब उनके मन्सूबों को मिट्टी में मिलाने का कार्यक्रम उसके सामने था।

रमणी मोहन के प्रति उसके मन में मित्रता की भावना उत्पन्न हो गई थी। अब उसे विश्वास हो गया कि वह चीनियों के कुचक्र में बुरी तरह फंस गए हैं। हत्याकांड के कुछ घंटे पहले रमणी मोहन का जो पत्र उसे होटल के बेटर द्वारा मिला था, वह उसे अपनी जेब में रख कर बिल्कुल भूल गया था। घटनाओं के चक्र में वह इतना फँस गया था कि उसे वे सब बातें विस्मरण हो गई थी। किन्तु दुर्घटना के एक दिन बाद जब उसने अपना कोट बदला, तब पुराने कोट की जेबें खाली करते हुए वह पत्र अनायास मिल गया। बड़ी उत्सुकता से वह उसे पढ़ने लगा।

दिल्ली, ९–११–६२

प्रिय लैम्बर्ट,

मैं तुमको संक्षेप में अपनी विषम परिस्थिति का हाल बता चुका हूं। मिसेज रिपुदमन सिंह की लड़की कला से मैं प्रेम करता हूं, और यह महसूस करता हूँ कि वह मेरे जीवन का एक अंग बन गई है। यह भी निश्चित है कि

उसे मेरा परिवार कभी स्वीकार नहीं करेगा, और यदि माता-पिता दोनों, अथवा उनमें से कोई एक दिल्ली आ गया, तब मुझे उनके साथ जाना होगा। मैं उन्हें भी इन्कार नहीं कर सकता, इसलिये अब मेरे लिये एक ही रास्ता खुला है, और वह है पलायन का। कला मेरे साथ जाने को तैयार होकर आई, और वह भी विवाह के बन्धन में बँधना नहीं चाहती। हम दोनों साथ रहेंगे, किन्तु एक दूसरे के अधीन बन कर नहीं रहेंगे। हम दोनों बिल्कुल एक दूसरे से स्वतन्त्र रहेंगे। मैं बहुत दिनों से सोच रहा था कि दो हृदयों के मिलन में विवाह नितान्त अर्थहीन है और कहीं वह बाधक भी है, जैसे मेरे सम्बन्ध में। विवाह की औपचारिकता निभाए बिना पति–पत्नी की तरह रहा जा सकता है, और उसमें व्यक्तित्व का जितना विकास सम्भव है, वह रूढ़ि–ग्रस्त विवाह बन्धन में बंधकर नहीं। अन्ततोगत्वा विवाह एक बन्धन ही है। वह मजबूरी पैदा करता है। प्रेम स्वच्छन्द है, उसे जब मजबूरियों से बांधा जायगा, तब उसका निर्मल आधिपत्य कहां रहेगा ? पश्चिम में इस प्रकार के परीक्षण हो रहे हैं। कम्यूनिस्टों में तो इसका बोलबाला है। अन्यत्र भी विवाह–बन्धन के विरुद्ध आन्दोलन चल रहे हैं। मैं भी उस आन्दोलन का श्री गणेश स्वयं से करता हूँ। आशा है कि इस पुनीत कार्य में तुम्हारी शुभ कामनाएँ प्राप्त होंगी।

तुम्हारे जाने के कुछ देर बाद, कला अकस्मात आ गई। वह अपनी माँ की इच्छा के विरुद्ध आई थी यह कहने के लिए कि यदि मैं उसे अपने साथ रखने से इनकार कर दूँ, तब वह आत्म हत्या कर लेगी। मैंने पोटेशियम साइनाइड भी उसके पास देखा। मुझे उसकी बातों में सच्चाई जान पड़ी। वह सत्य ही इतनी परेशान दीख पड़ी कि यदि मैं उसको सहारा नहीं दूँगा तब वह जरूर कुछ न कुछ कर गुजरेगी। तुम ही बताओ कि ऐसी परिस्थिति में तुम क्या करते ? सांप मरे और लाठी न टूटे, कुछ ऐसी ही चाल चलने की सोचने लगा। मेरे पलायन से दोनों कार्य सिद्ध होते दिखाई दिए। पिता जी को मैं जहाँ जाऊँगा, वहां से सूचना भेज दूंगा, तब वह मेरा पीछा नहीं करेंगे। जहाँ तक मैंने समझा है, वह मुझसे दिल्ली छुड़वाना चाहते हैं। दिल्ली छोड़ने

से उनका सन्देह दूर हो जाएगा, और इधर मैं कला के साथ निर्विघ्न रह सकूंगा।

मैं इस समय कहां जाऊंगा, कुछ निश्चित नहीं है। कला मुझसे कलकत्ता चलने का आग्रह कर रही है। मेरे मन में भी यही विचार बैठ रहा है। जहाँ हम लोग जाएँगे, वहाँ से मैं तुम्हें सूचित करूँगा। मेरा अनुमान है कि तुम भी शायद बहुत दिनों तक दिल्ली नहीं ठहरोगे। होटेल के अधिकारियों को तुम अपने अगले मुकाम का पता दे जाना, वे तुम्हारी डाक वहाँ पुन: भेज देंगे। इस प्रकार मेरा और तुम्हारा सम्बन्ध बना रहेगा।

यदि अवकाश मिले तो मिसेज रिपुदमन सिंह की प्रतिक्रिया, जो कला के पलायन से हो, जानने का प्रयत्न करना। कहीं पुलीसी कारवाई न कर उठावें, हालाँकि कला बालिग हो चुकी है, और कोई जुर्म फरारी इन्सान का नहीं बनता, लेकिन परेशानी तो पैदा हो सकती है। कला कहती है कि वह कुछ काररवाई नहीं करेंगी, क्योंकि इससे उनकी मर्यादा पर आँच आती है। परन्तु फिर भी एतिहातन खोज, खबर ले लेना।

विदेशी और अपरिचित होते हुए भी जो स्नेह और सहायता तुमसे मिली है, उसके लिए मैं जीवन भर आभार मानूंगा। तुम्हारे जैसे निस्वार्थ व्यक्ति संसार में कितने मिलेंगे? मेरी दृष्टि में तुम्हारी दोस्ती का बहुत मूल्य है, और यदि तुम मुझे अपनी सेवा का अवसर दोगे, तो मैं इसे अपना सौभाग्य मानूंगा।

दिल्ली के एक प्रमुख व्यापारी हैं नवाबजादा मुश्ताक अली। मेरे पिता के साथ उनके व्यापारिक सम्बन्ध हैं। वह एक बार मुझसे मिलने होटेल आए थे। शायद उनसे आपकी भेंट हुई थी। यदि वह मेरे सम्बन्ध में कुछ मालूम करने आवें, आप उनसे कोई भेद न खोलिएगा, इतना अनुरोध अवश्य है।

आप पूर्ण रूप से सतर्क रहिएगा। मिस मिलर को आप जानते हैं कि वह कितनी खतरनाक है, और आप स्वयं प्रबुद्ध हैं।

आपका मित्र

रमणी मोहन

पत्र पढ़ कर लैम्बर्ट इस निश्चय पर पहुंच गए कि रमणी मोहन अवश्य चीनी गुप्तचरों के जाल में फंस गए हैं। वह सोचने लगे कि उनका उद्धार किस प्रकार किया जाय ? सबने पहले मिसेज रिपुदमनसिंह की वास्तविकता जानने का निश्चय किया। अपने सहकारियों की रिपोर्ट से मालम हो चुका था कि मिस मिलर के साथ तू-सिन उसी के घर से निकला था, अतएव उसका गहरा सम्बन्ध चीनियों से है, बल्कि वह भी चीनी गुप्तचरों का एक अड्डा ही है। उसने जेम्स और एन्ड्रूज को उसका भेद जानने की आज्ञा दी। रमणी मोहन के पत्र से ज्ञात हो गया कि कला उन्हें चीनियों के गढ़ कलकत्ता घसीट ले गई है, अतएव कलकत्ता जाने का विचार करने लगा।

नवाबजादा मुश्ताक अली से मिलना उसे उचित प्रतीत नहीं हुआ। वह उन्हें जानता भी न था, और उनसे कोई रहस्य–उद्घाटन होगा, इसका भी उसे विश्वास न था। उसने वायुयान से कलकत्ता जाने का निश्चय किया और अपने लिए एक सीट सुरक्षित करवा ली।

शाम को जेम्स और एन्ड्रूज की रिपोर्ट से उसे ज्ञात हुआ कि मिसेज रिपुदमनसिंह भी अदृश्य हो गई है, और घर पर सिखों का पहरा है। उसने अनुमान किया कि वह भी कलकत्ता गई है। कश्मीर जाने का एक बहाना मात्र है। फिर भी उसने अपने दोनों सहकारियों को उसके मकान पर दृष्टि रखने का आदेश दिया। यह भी हिदायत की कि जब वह वापस लौटे, अथवा कोई घटना वहां उसकी अनुपस्थिति में घटित हो, वे उसकी सूचना तुरन्त कलकत्ता भेजें।

उसके रहते फिर कोई वारदात नहीं हुई। चीनी गुप्तचरों की हरकतें बिल्कुल बन्द हो गईं, और हत्याकांड से सम्बन्धित सभी व्यक्ति यत्र-तत्र फरार हो गए। चीनी भोजनालय का संचालन दूसरे नए चीनी गुप्तचरों के हाथ में आ गया।

लैम्बर्ट दूसरे दिन प्रातःकाल वायुयान से कलकत्ता के लिए रवाना हो गया।

७

काउ–चो और उसके गुप्तचर बड़ी सतर्कता से दिल्ली पुलीस की प्रतिक्रिया निरीक्षण कर रहे थे, जो मिस मिलर और तू-सिन के हत्याकांड से उत्पन्न हुई थी। चीनी दूतावास उसके लिए सर्वथा सुरक्षित स्थान था, क्योंकि वह पुलिस के अधिकार क्षेत्र से बाहर था। मिसेज रिपुदमन सिंह को कलकत्ता जाने का आदेश देकर वह चीनियों के गुप्त जाल को समेटने लगा। कनाट सर्कस में स्थित चीनियों की दूकानों के कर्मचारी बदल गए। उनमें नई-नई सूरतें दिखाई देने लगी। मिसेज सिंह के घर पर उसने चार सिखों की गारद तैनात करवा दी। तू-सिन का शव पुलिस के मुर्दाघर में रखा गया, उसके कई चित्र लिए गए, और पुलिस चीनियों को उसके चित्र दिखा कर उसका पता लगाने लगी। किन्तु दिल्ली के किसी चीनी निवासी ने उसे नहीं पहचाना। उसी भांति मिस मिलर की वास्तविकता भी छिपी रही। सुरक्षा की दृष्टि से यह हत्याकांड गुप्त रखा गया, और यत्र-तत्र-सर्वत्र पहुंचने वाले समाचार पत्रों के सम्वाददाताओं को भी कोई सूचना नहीं दी गई।

रात्रि के दो बजे थे। रंगीन दिल्ली निद्रा में निमग्न थी, किन्तु काउ–चो, दिन की अपेक्षा रात्रि में अधिक सजग रहता था। उसी दिन उसके दो सहकारी लद्दाख और नेफा क्षेत्र से आए थे। वह उनके साथ आगामी कार्यक्रम के विषय में परामर्श कर रहा था।

काउ-चो ने मदिरा पीते हुए कहा "लियांग, तुम्हारे विचार से लद्दाख की स्थिति ठीक है। हमारी सैनिक तैयारियां पूरी हो गई हैं?"

लियाँग ने अपने दूसरे साथी लाइ-चो की ओर देखते हुए कहा—"जी हाँ, अभी चार डिवीजन सेना आ गई है, और दो डिवीजन आने वाली है।"

"मैंने वहाँ की पहाड़ी भूमि पर लड़ने के लिए उत्तरीय क्षेत्रों की वे सेनाएँ मगवाई थीं, जिनको बर्फीले मुल्क में सर्दी के दिनों में लड़ने का अभ्यास है।"

"जी हाँ। आपके आदेश का यथावत पालन हुआ है; ये मन्चूरियाँ की सीमान्त सेनाएं आई हैं, जिन्हें भयानक शीत–अंधड़ और बर्फीले तूफान में लड़ने की शक्ति है।"

"और उत्तरी कोरिया में लड़ने वाला डिवीजन भी आया है?"

"जी नहीं, उन्हें बुलाया गया है, तीन चार दिनों में आ जाएगा।"

"हमें इस बार भारत की शान बर्फीले मैदानों में हमेशा के लिए मिटा देना है।"

"भारतीय जवान हमसे एक्कीस जरूर हैं, लेकिन शीत और पहाड़ों पर वे चीं बोल जायेंगे।"

"इसीलिए सीमान्त में हमने यह युद्ध छेड़ा है। जिस प्रकार कोरिया के युद्ध में हमने राष्ट्र संघ की सेनाओं को नीचा दिखाया था, उसी प्रकार हम भारतीयों की हेकड़ी मिटा देना चाहते हैं।"

"जो आप चाहते हैं, वही होगा। हमारे जवानों की हिम्मत बढ़ी–चढ़ी है। हौसले बुलन्द हैं, वे भी भारतीय सिपाहियों की अजेयता का भ्रम मिटाने के लिए आकुल हो रहे हैं।"

"लाइ-चो, तुम्हारी क्या रिपोर्ट है?"

"पूर्वीय नेफा क्षेत्र में हमारे ६ डिवीजन चार सौ मील तक पंखे की भांति फैले हुए हैं। बोमीडिला, सेला और लांगजू पर भारतीय सेनाओं ने अपने मोरचे बनाए हैं।"

"उन मोरचों के सम्बन्ध में हम फिर बात करेंगे। अभी यह बताओ कि तुम्हारे गुप्तचर नेफा की रियाया को भारत विरोधी बनाने में सफल हुए हैं?"

"जी हाँ, बहुत सी जंगली जातियां, जिनमें मुख्य-मुख्य हैं लोहित डिवीजन की 'मिशमी' जाति, सियांग की 'अबोर' और 'आदी' जाति सुबनसरी की 'आपातानी' तथा 'दिफला' जाति के लोगों ने हमारा साथ देना स्वीकार कर लिया है। इन क्षेत्रों में हमारे गुप्तचर बराबर काम कर रहे हैं।"

"जंगल के गुप्त मार्गों का ज्ञान हो गया है?"

"जी हां, वे उसकी चप्पा–चप्पा भूमि से वाकिफ हैं। उन्हें ऐसे-ऐसे मार्ग मालूम हैं, जिनसे हमारी सेनाएं पीछे आकर शत्रु के भागने के रास्ते बंद कर सकती हैं।"

"शाबाश, ऐसा ही होना चाहिए। शत्रु जितना आगे बढ़ता है, उसे बढ़ने दो। पीछे से उसकी रसद पहुंचने के मार्ग बन्द कर दो, और फिर चूहों की तरह उसे मार डालो।"

"आप विश्वास रखिए, हमारे सैनिक ऐसी ही काररवाई करेंगे। उन की रसद अभी वायुयानों से जाती है, इसलिए उसका रोकना हमारे लिए संभव नहीं है। सड़कें न होने से वे हेलीकाप्टर इस्तेमाल करते हैं।"

"लेकिन जब वे रसद हेलीकाप्टर से गिराते हैं, तब जंगली जातियों के वेष में हमारे गुप्तचर क्यों नहीं लूट लेते ?"

"कई बार भारतीय सेना की रसद हमारे यहाँ पहुंच गई है।"

"बहुत ठीक। गुप्तचरों का नारी विभाग वहां सक्रिय है ?"

"उन्हें अपूर्व सफलता मिली है। जंगली जातियों से वे इतना घुल-मिल गई हैं कि उनका पहचानना हमारे लिए भी कठिन है। शक्ल सूरत रहन-सहन बोल-चाल, में वे बिल्कुल जंगली जातियों के तद्रूप हो गई हैं।"

"उन्होंने भारतीय सैनिकों से अपने सम्बन्ध स्थापित कर लिये हैं ?"

"जी हां, बखूबी। उनमें से कितनी उनको जंगल के फल-फूल बेच आती हैं, कितनी उनके कैम्पों में सेविकाओं के रूप में काम करती हैं, कितनी बालकों के वेष में उनकी नौकरी बजाती हैं।"

"बहुत ठीक ! मोरचों की जानकारी कर वे बराबर सूचनाएँ भेजा करती हैं ?"

"जी हाँ, भारतीय सेना का हाल जितना हमें मालूम है, उतना उनके अफसरों को भी ज्ञात न होगा।"

"हमारे पहले हमले की क्या प्रतिक्रिया उन पर हुई है ?"

"उनकी हिम्मत पस्त नहीं हुई। वे अब भी हम से लोहा लेने की सोच रहे हैं।"

"तब फिर नारी गुप्तचरों ने क्या किया ?"

"जब अफसर हमारे कब्जे में रहेंगे, तब फिर बेचारे सिपाही क्या करेंगे ?"

"तुम्हारा अनुमान गलत है। हमारे आक्रमणों की जो प्रतिक्रिया भारत में हुई, उसका आभास मुझे मिला है, और यही सब देखने के लिए मैं स्वयं आया। हमारी पंचमांगी सेना से जो रिपोर्ट मिली है, उससे ज्ञात होता है कि भारत की गरीब जनता पर हमारे परीक्षण की प्रतिक्रिया बहुत जबरदस्त हुई है। वह अपना सब कुछ युद्ध सहायता में देने को उत्सुक हैं। केवल उद्योगपति और पूंजीपति कोई ज्यादा दिलचस्पी नहीं दिखा रहे हैं।"

"जी हां, पूंजीपतियों का यही सनातन रवैया सब काल सर्वत्र रहा है। इसी प्रकार चीन में भी उनका बोल बाला था, जब वह अमरीका के पिछलग्गू च्यांग काई शेक के शासन में था। गरीब जनता को वे पीस रहे थे, और मुक्ति हमने उनको दिलाई।"

"हां, यही हाल जर्मनी में भी था। पहले विश्व युद्ध में कैसर की हार का मुख्य कारण वहाँ के यहूदी पूंजीपति थे। इसलिए जब हिटलर के शासन में जर्मनी आया, तब सबसे पहले उसने उसकी काया पलट की और यहूदियों का नाम निशान मिटा दिया। तब जर्मनी इतना सशक्त हुआ कि उसने विश्व विजय का बीड़ा उठा लिया। यदि वह हमारे कम्यूनी देश रूस पर आक्रमण न करता, तब उसका विनाश न होता। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कम्यूनिस्टों की पूर्ण विजय होगी।"

"जी हां, रूस और चीन की सम्मिलित शक्ति पूंजीवादियों की सम्मिलित शक्ति को नीचा दिखाएगी।"

"रूस और चीन की सम्मिलित शक्ति अजेय अवश्य है, परन्तु इस समय रूस का रुख कुछ बदल रहा है। वह विश्वशान्ति के राग अलापने लगा है; जो कम्यूनिस्ट सिद्धान्तों के प्रतिकूल है। किन्तु हम उससे घबड़ाते नहीं। अकेला चीन ही बेड़ा पार करेगा। इसीलिये हम भारत को अपना अनुयायी बनाने के उद्देश्य से उस पर आक्रमण कर रहे हैं।"

"किन्तु इससे भारतीयों की प्रतिक्रिया चीनियों के विरुद्ध हो सकती है।"

"हमने उस दिशा में विचार कर लिया है। इस आगामी आक्रमण में हम भारत को परास्त कर उसको दिखा देंगे कि उसकी हेकड़ी में कोई दम नहीं है। परास्त भारत हमारा अनुयायी बनेगा। जब राष्ट्र परास्त हो जाता है, तब उसका पानी उतर जाता है, और परिस्थितियाँ उसे विजयी राष्ट्र का अनुगामी बनने के लिए मजबूर करतं। हैं। हमने इसी लक्ष्य से भारत से युद्ध छेड़ा है।"

"आपका विचार और दूरदृष्टि सराहनीय है।"

"विजयी राष्ट्र के प्रति रोष कुछ ही दिन रहता है, और इस बीच में हमारी पंचमांगी सेना अपना कार्यं करेगी। वह जनता का मनोबल शनैः शनैः नष्ट करेगी। जहाँ मनोबल नष्ट हुआ वहाँ वह उस दिशा को अपनाएगी, जिधर पंचमांगी संकेत करेंगे। चूंकि पंचमांगी उसी राष्ट्र के निवासी होते हैं, इसलिए अन्य व्यक्तियों की विरोधी भावना भी समाप्त हो जाती है। इस आक्रमण से भारत में ऐसी उथल-पुथल मचाने में समर्थ होंगे, जिससे शक्ति पंचमांगियों के हाथ में आ जायगी। मनुष्य शक्ति का पुजारी सदैव से रहा है। वह उसी को नमस्कार करता है, जिसमें चमत्कार होता है।"

"सत्य, बिल्कुल सत्य है। इसी प्रकार रूस की सहायता से हमने अपने चीन में विजय पाई थी।"

"ठीक। वस्तुतः च्याँग काई शेक के जमाने में हम लोग रूस के पंच-मांगी सैनिक थे, और चीन–जापान युद्ध में हम सक्रिय हुए। रूस की शक्ति से हम सशक्त हुए, और चीन की गरीब जनता का पक्ष लेकर हमने राष्ट्र को दो शिविरों में विभक्त कर दिया, और वावजूद विदेशी सहायता के, च्याँग हमें परास्त नहीं कर सका, बल्कि हम उसको अपने देश से निकालने में सफल हुए।"

"क्या उसी नीति का अनुसरण भारत के पंचमांगी करेंगे ?"

"इसी उद्देश्य से उनकी रचना हमने की है। सिद्धान्तों की ओट में

हमने उन्हें सब प्रकार की सहायता पहुँचाई है। अभी उनकी शक्ति गुप्त है, अवसर आने पर प्रकट होगी।"

"किन्तु इस बीच में परिस्थितियां बदल सकती हैं।"

"परिस्थितियों से अन्तर नहीं पड़ेगा। वे इतने छिपे और गुह्य हैं जिन की वास्तविकता कभी प्रकट नहीं हो सकती। उन देशों में जहां कम्यूनिस्ट संस्थाएं अवैध हैं, वहां भी हमारे पंचमांगी सैनिक संगठन हैं और भारत में तो वे बहुत शक्तिशाली हैं। प्रजातन्त्र में सौ-सौ फूल फूलते हैं और वे भी न्यारे-न्यारे रूप तथा सुरभि में। यहां की कम्यूनिस्ट पार्टी एक सशक्त पार्टी है, और देश में उनकी एक आवाज है।"

"आपका अनुमान सत्य है। यहां के एक प्रदेश में कम्यूनिस्ट शासन भी रह चुका है।"

"लगभग आधा देश कम्यूनिस्ट है। एशिया की भांति भारत भी दो भागों में विभक्त है। उत्तर-पश्चिमीय भाग पूंजीवादी सिद्धान्तों का अनुयायी है, और दक्षिण-पूर्वीय कम्यूनिस्ट है। हमें इसी भाग से मतलब है, क्योंकि हमारी दूरगामी योजनाओं के लिए इसी भाग की आवश्यकता भी है।"

"क्या भारत का विभाजन इस भांति हो सकेगा ?"

"हमारा प्रयत्न इसी दिशा में होगा। इस आगामी आक्रमण से भारत विश्रृंखलित हो जाएगा, और उससे हमें लाभ ही होगा।"

"आप कहते हैं कि हमारे पहले आक्रमण से भारतीय जनता में अपूर्व जोश आया है, और वह एकत्व में बंध गई है।"

"इस क्षणिक जोश को दूध के उफान की भाँति समझना चाहिए। पहली मार मनुष्य को संगठित होने की प्रेरणा देती है, फिर शान्ति का वातावरण पाकर वह संगठन शिथिल होने लगता है। हम इस आगामी आक्रमण में उन्हें परास्त कर, अपनी सेनाएं स्वयमेव हटा लेंगे, इसलिए कि जिसमें शान्ति का वातावरण बन सके। उसको पैदा करने के लिए हम कई प्रकार के उपाय भी करेंगे। एशिया के दूसरे राष्ट्रों को हम शान्ति स्थापित करने तथा वार्तालाप कराने के लिए संकेत करेंगे। भारत को शान्तिवादी होने के कारण उनके

प्रस्तावों को मानना पड़ेगा, और हम अपने भारी सैनिक संगठन उसकी सीमाओं पर रख कर उसे भयभीत बनाते रहेंगे। इस प्रकार जो देशभक्ति का उफान जनता में आवेगा, वह शान्त हो जायगा। इसके अतिरिक्त पूंजीपति जन-साधारण की जागृति के साथ गठबन्धन नहीं रख सकेंगे, और यही भावना गरीब जनता और उनके बीच में मोटी दीवार बन कर खड़ी होगी। जन साधारण संख्या में अधिक हैं, और उन्हें उत्तेजित कर हम पूंजीपतियों को परास्त करने तथा कम्यूनिस्ट शासन जमाने में सफलता प्राप्त करेंगे।"

"यह योजना तो अभूतपूर्व है, चमत्कारिक है।"

"यह प्रपंच इसलिए कर रहे हैं, जिसमें भारत को चीन का अनुयायी बना हम उसकी सहायता से पूंजीवादी देशों का नाश कर सकें। मैंने अभी कहा है कि बीसवीं सदी का उत्तरार्ध कम्युनिस्टों के उत्कर्ष का है।"

"यदि घटनाएँ इसी प्रकार घटती रहीं तब तो आपके कथनानुसार सब होगा, परन्तु.....।"

"हमारी योजनाएं कभी विफल नहीं होती, क्योंकि हम उनकी रचना मानव स्वभाव के अनुसार करते हैं।"

इसी समय टेलीफोन की घंटी बजने लगी। काउ-चो ने रिसीवर उठाते हुए पूछा—"हलो, आप कौन हैं, और कहां से बोल रहे हैं ?"

उत्तर मिला—टेलीफोन एक्सचेंज बोल रहा है। कलकत्ता से ट्रन्क काल है। आपकी इम्बैसी में कोई मिस्टर काउ-चो हैं। कोई मिसेज कुईलीन उनसे बात करना चाहती हैं।"

काउ-चो की भृकुटियां चढ़ गईं। उसने एक्सचेंज से कहा—"मैं काउ-चो बोल रहा हूं। आप कनेक्शन दीजिए।"

स्पष्ट स्वर में कुईलीन अर्थात् मिसेज रिपुदमन सिंह ने पूछा—"क्या नम्बर एक हैं।"

काउ-चो ने उत्तर दिया—"हाँ मैं काउ-चो हूँ। पहले यह बताओ कि तुमने क्यों ट्रंककाल किया। साधारध नियमों की भी तुम्हें परवाह नहीं है।"

"क्षमा कीजिए, एक अत्यन्त आवश्यकता से मैंने ट्रंक काल किया है।"

"किन्तु दूसरे साधन भी तो समाचार देने के लिए थे।"

"वे अब नहीं रहे, इसी से ट्रंक काल करना पड़ा।"

"क्यों, उनका क्या हुआ ?"

"यहां की पुलिस ने च्यांग–चिन को गिरफ्तार कर कार्यालय पर कब्जा कर लिया है।"

"क्यों ?"

"कोई कारण अभी विदित नहीं हुआ। मैंने आपको इसकी सूचना देना आवश्यक समझ कर ट्रंक काल किया है। कहीं आप धोखे से च्यांग को टेली–फोन न करें, इसलिए••••।"

"मैं समझ गया। तुम इस समय कहाँ हो ?"

"मैं वायुयान से आज दोपहर को यहां पहुँची। ठहरी मैं च्यांग के कार्यालय में। शाम को पूर्वीय क्षेत्र का पता लगाने के किए बाहर दोस्तों के पास गई थी, और जब वहाँ से लौटी तो देखा कि पुलिस मकान को घेरे है। मैंने वहां ठहरना मुनासिब नहीं समझा, और वापस सूंग की दूकान गई। वहाँ मालूम हुआ कि चीनियों की गिरफ्तारी हो रही है। वह भी दूकान बन्द कर किसी गुप्त स्थान को जा रहा था। तब होटल मेट्रापालीटन में मिसेज रिपुदमन सिंह के नाम से रजिस्ट्री करा कर ठहर गई। मैं इसी होटल से बोल रही हूं। अब हमें क्या करना चाहिए ?"

"स्थिति गम्भीर हो गई है। भारतीय सरकार इतनी शीघ्रता से काम करेगी, यह आशा नहीं थी। तुम्हें वहीं रहना और इसी नाम का उपयोग करना चाहिए। भावी कार्यक्रम सोच कर बताऊंगा। अब टेलीफोन का उपयोग न करना। बहुत शीघ्र मैं वहाँ आऊंगा। साधारण डाक द्वारा सूचना भेजना, यदि उसके भेजने की जरूरत महसूस हो। वह अधिक सुरक्षित है। पता किसी भारतीय का हो, यह ध्यान रखना। इससे अधिक कुछ नहीं।"

यह कह उसने सम्बन्ध तोड़ दिया। उसके चेहरे का रंग उड़ गया था।

८

भारत के दोनों कोण—पूर्वीय तथा पश्चिमीय, सैनिक हलचलों से प्रकम्पित होने लगे। लद्दाख में चीनी बढ़ते आ रहे थे। जिस प्रकार उन्होंने भारतीय भूमि को धीरे-धीरे मित्रता की ओट में हड़पा, उसकी कहानी भारतीयों के लिए नहीं वरन विश्व के लिए उपदेशप्रद है। यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो गया कि राष्ट्रों के सम्बन्धों में शक्ति का सन्तुलन रहता है, और उनमें मैत्री तभी तक रहती है जब तक वे सशक्त जागरूक और सावधान हैं। मित्रता का अर्थ असावधानता नहीं है और न आत्म-सन्तुष्टि। वह केवल आचरण का एक शान्त रूप है। राष्ट्रों में मित्रता स्वार्थ पर आधारित है। और महत्वाकांक्षी की मित्रता तो केवल धोखे की टट्टी है। वैयक्तिक मैत्री में त्याग की महत्ता है, किन्तु राष्ट्रों की मैत्री में वह निर्बलता मानी जाती है। वैयक्तिक सम्बन्धों में स्वार्थ त्यागा जा सकता है; परन्तु राष्ट्रों के सम्बन्धों में उसका ध्यान सदैव रखना अनिवार्य है, क्योंकि राष्ट्र कभी व्यक्ति विशेष नहीं हो सकता। संसार में वही व्यक्ति नीतिनिष्णात राजनीतिज्ञ माने गए हैं जो दूरदृष्टा हैं, और जिन्होंने राष्ट्र को दूसरों के दाँवघातों से बचाते हुए उसको समुन्नत किया है। सैनिक शक्ति राष्ट्र की शक्ति है। उसकी उपेक्षा मैत्री के आधार पर नहीं की जा सकती। जिस राष्ट्र की सैनिक शक्ति हीन होगी, वह पड़ोसी राष्ट्रों को आक्रमण के लिए प्रोत्साहित करेगा, यह निर्विवाद सत्य है। शक्ति सन्तुलन राष्ट्र का जीवन है। सावधान राष्ट्र उसको स्थिर रखने के लिए अपने-अपने संगठन बनाते हैं। जो मित्रता के सहारे रहते हैं, वे एक न एक दिन अवश्य धोखा खाते हैं।

चीन महत्वाकाँक्षी देश है। उसकी नीति सदैव प्रसार की ओर रही है। वह अपने पड़ोसी राष्ट्रों के लिए एक विकट समस्या-रूप रहा है। तिब्बत और रूस मन्चूरिया, और पूर्वीय तुर्किस्तान से सदैव सीमा सम्बन्धी झगड़े और युद्ध होते रहे हैं जिनका इतिहास साक्षी है। दक्षिण प्रदेशों पर उसने अपने

दाँत सदैव गड़ाने का प्रयत्न किया किन्तु तिब्बत ने उसका मुकाबला डट कर किया और वह बराबर उसके दाँत खट्टे करता रहा; उसे अधिक आगे बढ़ने का साहस नहीं हुआ । उसने किसी देश से मैत्री सम्बन्ध स्थापित नहीं किए । मित्रता का कभी उसे ज्ञान नहीं रहा । मैत्री को उसने सदैव निर्बलता समझा और औपचारिक सम्बन्धों अथवा आदान–प्रदान को वश्यता अथवा अधीनता । वह कूप-मंडूक भी सदैव रहा । उसकी दृष्टि भी सदैव संकुचित, कुत्सित, ईर्ष्यालु रही, दंभ में तो उसका कोई प्रतिद्वन्दी नहीं है । विश्वासघात के लिए चीनी संसार प्रसिद्ध हैं, और मित्रों की असावधानता से उन्होंने सदैव लाभ उठाया । पीठ में छुरा भोंकना उनका पुनीत कर्त्तव्य रहा है ।

नव जागरण अथवा उसके कम्यूनिष्ट हो जाने से पारंपरीय नीति में कोई अंतर नहीं आया । उसके कर्णधारों ने सबसे पहले अपने देशवसियों के साथ विश्वासघात किया, उनको मानव से पशुओं में परिवर्तित किया, उनकी समस्त सम्पत्ति हथिया कर नंगा किया, उनकी भूमि हड़प कर मजदूर बनाया, उनको मानवाधिकारों से वंचित कर निकृष्ट कोटि का दास बनाया और नारियों को वेश्या अथवा उससे भी अधम कोटि की वारवनिता । कुटुम्ब और परिवार की पवित्रता भंग कर सबको एकाकी और पतित स्वार्थी बनाया । उन्होंने अधम से अधम तथा जघन्य से जघन्य उपायों को ग्रहण कर बलात् सबकी आत्माओं को कुचल उन्हें मूक—बधिर, पंगु, और पराश्रित पशुओं के सदृश बनाया । उन्होंने मातृत्व को भी बलिदान कर दिया, और अब प्रश्न केवल यह रहता है कि उन्होंने क्या नहीं किया ?

शक्ति सम्पन्न होने पर उसने सिद्धांतों में अपने गुरु रूस से मत भेद किया । जो कम्यूनी प्रथा रूस में असफल हो चुकी थी, उसको अपने देश में कार्यान्वित कर उसको नीचा दिखाने की कोशिश की । चीन की जन संख्या संसार की जन संख्या के चतुर्थांश से कुछ अधिक होने से वह दर्प से फूल उठा । उसने उसे विश्व-कल्याण के लिए नियोजित न कर उसके द्वारा विश्व पर आधिपत्य जमाने की दिशा में सोचना आरम्भ किया । कम्यूनों की स्थापना से चीन की जनता क्षुब्ध हुई, और उसका वह स्वप्न भंग हो गया, जिसकी आशा

से उसने कम्यूनिस्टों का साथ देकर च्यांग काई शेक की राष्ट्रीय सरकार का तख्ता उलटा था। जब भ्रष्टाचार और पूंजीवाद और बोजुँओं को नष्ट करने के बहाने उन्होंने देश में खून की नदियाँ बहाई तब उसकी आंखें खुली, परन्तु उस समय तक वह निःशक्त हो चुकी थी। उसके बाद जब बुद्धिवादी समाज भी मजदूरों में परिणत कर दिया गया, तब चीन में रोष और विक्षुब्धता का वातावरण बन गया, जो शनैः शनैः कम्यूनी सिद्धांतों की जड़ खोखली करने लगा। किसान और मजदूर अपना-अपना कार्य मन लगा कर नहीं करने लगे। खेतों और कल–कारखानों का उत्पादन कम होने लगा, और देश में भुखमरी छाने लगी। रूस ने इस प्रथा को त्यागने का उपदेश दिया, किन्तु चीनी कम्यूनिस्ट नेताओं ने इसमें अपने गौरव का ह्रास समझ उसकी बात नहीं मानी। यदि वास्तविक निर्माण की ओर उनका ध्यान होता, तब उसकी सुनते, परन्तु वे तो मदान्ध होकर विश्व-विजय की दिशा में सोचने लगे थे। उसने अपने मानव-बल से चारो दिशाओं में सड़कें बनवाना आरम्भ कर दिया। यदि इन मार्गों का निर्माण व्यापारिक दृष्टि से किया गया होता, तब शायद चीन को वाणिज्य व्यापार से कुछ लाभ होता, परन्तु इनको तो सामरिक दृष्टि से बनाया गया था, अतएव समृद्धि की दिशा में कोई प्रगति नहीं हुई। प्रसारवाद उसका मुख्य ध्येय बन गया, और उसने निरीह, तिब्बत पर आक्रमण कर उसकी धन-सम्पत्ति को हड़पने का निश्चय किया। जो सन्धिपत्र भारत, तिब्बत और चीन के बीच लिखा गया था, वह रद्दी की टोकरी में फेंक दिया गयी, और दलाई लामा को भारत में शरण लेना पड़ा। तिब्बत को हड़पने से संसार क्षुब्ध हुआ, परन्तु वह हस्तक्षेप न कर सका, क्योंकि तिब्बत अपने वैदेशिक अधिकार चीन को सौंप चुका था, और वह एक प्रकार से उसका प्रान्त–सा बन गया।

तिब्बत पर अधिकार कर लेने से चीन का दंभ बढ़ गया। वह भारत के उस सीमा प्रदेश को हड़पने लगा, जो तिब्बत के पश्चिम में स्थित है, और जो निर्विवाद रूप से भारतीय शासन के अन्तर्गत था। चीनी-तानाशाहों के दिमाग में एक अद्भुत योजना का विकास हुआ। वह था, अपने बनवाये हुए नकशों में भारत की भूमि को चीन की दिखाना। जब जब इन पर आपत्ति

प्रकट की गई, तब तब उन्होंने उस सम्बन्ध में वाद—विवाद द्वारा निर्णय का आश्वासन दिया। परन्तु उनका हथियाना रुका नहीं। उन्होंने अकसाई चिन के एक बहुत बड़े भाग पर अपना आधिपत्य जमाकर सैनिक चौकियाँ बैठा दी। चूंकि यह प्रदेश पहाड़ी, बंजर और अनुपजाऊ था, और केवल भेड़—बकरियों के चराने का क्षेत्र था, इसलिये भारत की सैनिक चौकियाँ नहीं थीं। जब चीन का प्रसार इस क्षेत्र में बढ़ने लगा, तब भारत ने भी अपनी चौकियाँ स्थापित करना आरम्भ किया। परिणाम स्वरूप कुछ झड़पें भी हुई, और दोनों देशों में सीमाओं को दुरस्त करने का सम्मेलन भी हुआ। अपने स्वाभावानुसार चीनी नेता आश्वासन देते रहे, और वह भारत के दोनों कोणों में उत्तरोत्तर बढ़ते रहे। इधर चीन अपना सैनिक संगठन मजबूत करता रहा, और तिब्बत की जनता को त्रस्त कर उससे दुर्गम स्थानों पर सड़कें बनवाता रहा, जिनके द्वारा सैनिक शक्ति गतिशील हो सके।

जब उसकी सैनिक शक्ति तिब्बत में जम गई, तब उसने पारम्परीय मैकमोहन रेखा को अस्वीकार कर दिया, और हिमालय के इस पार तक के क्षेत्र को हथियाने के लिये उसके समस्त दर्रों को अपना बनाना आरम्भ कर दिया। हिमालय के इस पार नैपाल का स्वतंत्र राज्य था। उसको भारत का विपक्षी बनाने के उद्देश्य से उसने उससे सीमा—समझौता उसी के अनुसार कर लिया। इसी प्रकार बरमा से भी उसने सीमा समझौता कर संसार को यह दिखाने की चेष्टा की कि भारत के साथ सीमा-समझौता न हो सकने का कारण केवल उसकी हठवादिता है, और वह स्वयं चीन की भूमि हड़पे हुये है। छोटे छोटे राष्ट्रों को उसने अपने प्रसार का भक्ष्य इसलिये नहीं बनाया कि उनकी शक्ति नगण्य है, और भारत को परास्त करने के बाद वे स्वयं उसके अनुशासन में आ जाएंगे।

इधर, भारत की निरपेक्ष नीति से दोनों प्रतिद्वंदी राष्ट्र—संगठन उसकी सहायता कर उसे औद्योगिक शक्ति से सम्पन्न बना रहे थे। शान्तिवादी होने से उसका राजनीतिक महत्त्व भी उत्तरोत्तर बढ़ रहा था। चीन की 'लम्बी छलांग' दिवालिया हो चुकी थी। उसकी जनता भूखों मर रही थी। कुछ

उनकी क्षुब्धता से उत्पन्न निष्क्रियता, प्राकृतिक कोप, अनावृष्टि और जल प्लावन से सम्बद्ध होकर चीन में सब प्रकार के अभावों का विकास करने लगी। चीनी तानाशाहों की आंखें फिर भी नहीं खुली। उन अभावों की पूर्ति करना उनके लिए असाध्य हो गया। अब उसको खपाने के अतिरिक्त उनके सामने कोई दूसरा रचनात्मक उपाय न था। इसलिए अपनी जनता के करुण क्रन्दन से ऊब कर उन्होंने भारत पर आक्रमण कर दिया। इसमें उनका एक छिपा उद्देश्य यह भी था कि वे संसार को दिखा दें कि जिन दुर्गम, पहाड़ी क्षेत्रों में शीत के असह्य वातावरण में युद्ध-संचालन एक प्रकार से असम्भव है, उसमें चीनी सैनिक सफलता के साथ युद्ध करने की सामर्थ्य और शक्ति रखते हैं। और इस प्रकार उनकी अजेयता का सिक्का बैठ जावे।

परन्तु संसार का इतिहास बताता है कि मदान्ध सदैव वस्तुतः अंधे रहे, और उनका विनाश स्वतः हो गया है। उनकी पहाड़ के समान ऊँची शक्ति बालू की नींव पर स्थापित प्रमाणित हुई, और वह किसी भी जन-बल के दृढ़ संगठन के समक्ष भहरा कर गिर पड़ी है। संसार के तानाशाह धूमकेतु की भाँति उदय होते हैं, और विश्व में विप्लव, हत्याकांड, अशान्ति फैलाकर कुछ ही दिनों में पुनः समय के गर्भ में विलीन हो जाते हैं, और अपने लिये घृणा, तिरस्कार और धिक्कार का बवंडर फैला जाते हैं। संसार में वे पूजित नहीं होते वरन थूके जाते हैं, और जिस देश के वे होते हैं, वह देश भी उनके पीछे रसातल को चला जाता है। अविद्या, अज्ञान और अन्धकार का उसमें बोलबाला होता है, और शताब्दियों के लिये उसका पतन हो जाता है।

६

पठान कोट आज कल कश्मीर का द्वार है, उससे दस बारह मील के बाद कश्मीर राज्य की सीमा प्रारम्भ होती है। जहाँ रेल यात्रा समाप्त होकर आगे मोटरों से जाना होता है। पठान कोट से श्रीनगर तक वायुयान से भी यात्रा की जाती है। परन्तु उसका उपयोग यात्रियों अथवा उच्च पदस्थ अफसरों के लिए होता है। रसद और सैनिक भेजे जाते हैं। ऊधमपुर तक रास्ता

साफ है, मार्ग में छोटी छोटी पहाड़ियाँ आती हैं, परन्तु उसके आगे चढ़ाई आरम्भ होती है, और आवागमन एकतरफा है।

मकबूल मियां बड़े आश्चर्य से कश्मीर घाटी में प्रवेश देख रहे थे। उनका सैनिक कारवाँ दोपहर के बाद जम्मू पहुँच कर विश्राम करने के लिए रुका। राणा वीरेन्द्र सिंह यद्यपि देवभक्त नहीं थे, तथापि युद्ध में जाते हुए व्यक्तियों की भावनाएँ बहुत कुछ आस्तिक तथा धर्मनिष्ठ हो जाती हैं, उसी प्रकार धार्मिक भाव उनके मन में भी उदय हुए। रास्ते में वैष्णव देवी के भक्तों का काफिला मिला था। उनके मन में उनके दर्शन करने की इच्छा जाग्रत हुई, परन्तु जब उन्हें मालूम हुआ कि वह वहाँ नहीं जा सकते, वह मन मसोस कर रह गये। जम्मू के रघुनाथ जी के मंदिर में दर्शन करने का लोभ वह संवरण न कर सके। मकबूल मियां से अपना इरादा जाहिर कर वह दर्शनों को जाने लगे। वह भी उनके पीछे-पीछे हो लिए। द्वार पर पहुँच कर वह सोचने लगे कि मुस्लिम होने से उनका प्रवेश कहीं निषिद्ध न हो, इसलिए वह वहीं ठिठक गये, परन्तु राणा ने भीतर घुसते ही उनका हाथ पकड़ कर घसीट लिया, और वह भी अन्य गोरखे सिपाहियों के साथ चले गए। मन्दिर के विशाल प्रांगण में घूमते हुए जब वे निज मंदिर के द्वार पर पहुँचे, तब मकबूल मियाँ ने किसी प्रकार उसमें प्रवेश करना स्वीकार नहीं किया। राणा ने भी सत्याग्रह किया, और वह भी वहीं से प्रार्थना करने लगे। उन्हें प्रार्थना का न कोई मन्त्र और न श्लोक याद था। वह औरों की भाँति आँखें बन्द कर हाथ जोड़ कर खड़े हो गये। सहसा उनके मन में विचार आया कि भगवान मन्त्रों और श्लोकों से प्रसन्न नहीं होते, वस्तुतः वे भक्ति और आस्था के प्रेमी हैं। उनका विकार हट गया और अपनी भाषा में वह प्रार्थना करने लगे। मकबूल मियां ने यद्यपि न हाथ जोड़े, और न आँखें बन्द की थीं, तथापि उस पवित्र वातावरण से प्रभावित हुए बिना वह न रहे।

मंदिर से बाहर आकर कहा—"राणा, आज मुझे मालूम हुआ कि खुदा हर जगह है, और उसकी इबादत के लिए कोई खास जगह मुकर्रर नहीं है।"

राणा के मन में उत्साह था। उत्तर दिया—"ठीक कहते हो मकबूल भाई। अगर इतनी ही बात सबकी समझ में आ जाय, तब सब झगड़ा मिट जाय। इतनी साफ और छोटी बात को इन्सान नहीं समझ सका है—बावजूद इतने खून-खराबे और इल्मी तरक्की के।"

"दर असल मुझे यहाँ वह शान्ति मिली जो कभी मयस्सर नहीं हुई। मैंने महसूस किया कि कोई मुझसे कह रहा है कि तुम फतह हासिल कर लौटोगे।"

'मुझे ऐसा कोई अहसास नहीं हुआ। क्योंकि मैं श्लोक और मन्त्र के फेर में पड़ा रहा। भाई, मैं न कभी किसी मंदिर में गया, और न कभी पूजा की। हमेशा रंगीन जिन्दगी बिताई। मौत के मुंह में जाते हुए यह ख्याल अपने आप पैदा हुआ। मैं इतना जरूर महसूस करता हूँ कि मैं उस तरह खुश हूँ जैसे कोई बोझ उतार कर होता है।"

मकबूलमियाँ ने पूछ —"दूसरा पड़ाव कहाँ होगा ?"

"आगे ऊधमपुर की छावनी है, वहाँ हम लोग रात गुजारेंगे, और कल श्रीनगर के लिए रवाना होंगे।"

"यह बड़ा खुशनुमा मुल्क है।"

'अभी हम लोग मैदानों में ही हैं। जम्मू और दिल्ली में बहुत ज्यादा फर्क नहीं है। ऊधमपुर के आगे पहाड़ी छटा देखने को मिलेगी। कुड्ड में हम बादलों से ऊपर होंगे, और दूर-दूर तक हरे-भरे जंगल दिखाई देंगे। राम बन तो वाकई लुभावना मुकाम है। आगे बनिहाल दर्रा अथवा जवाहर टनेल पार कर हम काश्मीर की असली घाटी में प्रवेश करेंगे।"

"कश्मीर में भी पहाड़ होंगे।"

"उसके चारों ओर पहाड़ हैं, और बीच में विस्तृत मैदान है। झरने पग-पग पर और हरेरी चारों ओर है। इसके मशहूर मुकाम हैं, बेरीनाग, कुकुड़नाग, अच्छाबल, अनन्तनाग, मार्त्तण्ड आदि। इन स्थानों पर कुछ दिन रहा जा सकता है, परन्तु इन सबसे उत्तम पहलगाम है, जो सात हजार फुट की ऊँचाई पर बसा है। वहाँ से अमरनाथ जाने का रास्ता है, जो हिन्दुओं का

तीर्थ है।"

"श्रीनगर कैसा मुकाम है?"

"वह तो कश्मीर की रानी है। मुगल बादशाह जहाँगीर का बनवाया शालीमार बाग और चश्माशाही, तथा उसके वजीर का बनवाया निशात बाग है। चिनार और अखरोट बादाम और सेव के पेड़ों ने उसकी खूबसूरती में चार चाँद लगा दिए हैं। चेस्टनट भी खूब मिलता है।"

"लेकिन हम लोगों को देखने का मौका नहीं मिलेगा?"

"वापसी में जब हम चीनियों को खदेड़कर लौटेंगे, तब आजादी से इन मुकामों की सैर करेंगे।"

"श्रीनगर से आगे कहां जाना होगा।"

"वहाँ से हम लेह, जो लद्दाख का पाएतख्त है, जाएंगे। जिन दिनों मैं आया था, तब श्रीनगर से लेह तक सडक बन रही थी, लेकिन अब वह बनकर तैयार हो गई है।"

"लेह में क्या हमारा आखरी पड़ाव होगा?"

"आगे का मुकाम बहुत बीहड़ और पहाड़ी है। ज्यों-ज्यों हम आगे बढ़ते जायेंगे त्यों-त्यों हरेरी कम होती जायगी। चट्टानों पर कोई पौधा उग नहीं सकता, सिर्फ कटीली झाड़ियाँ और बड़े-बड़े गार हैं। वहाँ गड़रिए अपने जानवर चराने ले जाते हैं। आगे कारा कोरम पहाड़ है, इसी क्षेत्र में हमें युद्ध करना है।"

"चीनी इन पहाड़ों को लेकर क्या अपना शिर फोड़ेंगे?"

"बीच बीच में घाटियां भी हैं, झीलें भी हैं, और हमेशा बहने वाले नाले भी हैं। ये मुकाम समुद्र की सतह से बारह हजार फीट और कहीं-कहीं उससे भी ज्यादा ऊंचे हैं। इन्हीं जगहों पर हमने अपने मोरचे बनाए हैं। इन मुकामों का सामरिक मूल्य है। अगर इस जमीन पर चीनियों का कब्जा हो जाता है, तब वे बहुत आसानी से काश्मीर को अपने कब्जे में ले सकते हैं।"

"मुझे ऐसा मालूम होता है कि चीनी हिमालय के दोनों बाजुओं से हमला कर सारे हिन्दुस्तान पर कब्जा करना चाहते हैं। इसीलिए कई हजार

मील की लम्बाई में हमला किया है।"

"उनका ख्याल है कि हम वह कर दिखाएं जो आज तक किसी ने नहीं किया। जब हिटलर ने रूस पर हमला किया था उसने भी पन्द्रह सौ मील लम्बी आक्रमण पंक्ति बनाई थी। परन्तु जो उसकी गति हुई वही चीनियों की होगी। या तो उसे भागना पड़ेगा या फिर उसकी इन्हीं पहाड़ों में कब्र बनेगी।"

"दोनों काम होंगे, कुछ भाग जायेंगे, और कुछ मरेंगे। लेकिन भाई जान, अगर हम दोनों काम आए तब !"

"तब क्या, मारना और मरना हमारा पुश्तैनी पेशा है। जो अपने मुल्क के लिए कुर्बान होते हैं, वे मरते नहीं। बुजदिल ही मरा करते हैं। बहादुरों की मदद भगवान करता है।"

"हकीकत भी यही है। महामारी ताऊन में वही मरते हैं जो मुंह छिपा कर भागते हैं, या किसी दूर मुकाम में पनाह लेते हैं।"

"बहुत सही कह रहे हो मकबूल ! हमारे नैपाल में कई साल पहले हैजा फैला। मैं उन दिनों कालेज में पढ़ता था। बीमारी बढ़ते-बढ़ते हमारी जागीर के गांव में भी आ गई। मुझमें किशोरावस्था का जोश था, और सेवा की भावना थी। मैं जी-जान से अपने गरीब भाइयों की सेवा में जुट गया। दवाइयाँ आ गई थीं। मैं घर-घर फिर कर मरीजों की सेवा करने लगा। दूसरे लोगों ने बहुत रोका, तरह-तरह की अड़चने खड़ी की, लेकिन मैंने अपना सेवा कार्य नहीं छोड़ा। नतीजा यह हुआ कि कुल पांच-छः मौतें हुई, बाकी सब बच गए। और तअज्जुब यह कि मैं मुतलक बीमार नहीं हुआ।"

"यह करिश्मा खुदाई ताकत का है। जो दूसरों के लिए अपनी कुर्बानी करता है, वह मर नहीं सकता। खुदा उसका बचाव करता है। आज मन्दिर में मैंने यही महसूस किया कि हम फतेह हासिल करेंगे।"

"हाँ, तुमने उसका जिक्र किया था। अंग्रेजी की एक कहावत है, जिस का मतलब यह है कि आने वाली घटनाओं की छाया पहले पड़ जाती है।"

"बहरहाल हम लोग सही सलामत लौटेंगे।"

"मेरा ख्याल है कि हमें यह भी न सोचना चाहिए। इसमें दिल में शक रहता है। शक–सुबहा दिल को कमजोर बनाते हैं, और वही हार की निशानी हैं। कहावत मशहूर है—मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।"

"आप बजा फरमाते हैं भाई जान। आज से आपका चेला हुआ।"

"बेशक, फतेह हमारी होगी।"

ठहराव का समय समाप्त हो चुका था। ड्राइवर भोंपू बजा कर आरोहियों को आमन्त्रित करने लगे।

राणा ने मकबूल का हाथ पकड़कर घसीटते हुए कहा—"चलो मकबूल, हम लोगों का कारवाँ रवाना हो रहा है। रघुनाथ जी अब यहाँ से हमारी हिफाजत करेंगे।"

दोनों हंसते हुए मोटर पर आकर बैठ गए। दूसरे अफसर पहले ही आ चुके थे।

"जयहिन्द" के नारे के साथ मोटर आगे बढ़ी।

१०

नवाबजादा मुश्ताक अली अपने पुरफिजां महल में अपने समग्र व्यवसाय का चिट्ठा देख रहे थे और उनके प्रधान मुनीम उनके प्रश्नों का उत्तर देकर उनकी शंकाओं का समाधान करने में तल्लीन थे। चिट्ठा देखने के बाद उन्होंने कहा—"मुनीरमियां साल हाल में गुजिश्ता सालों के मुकाबले में कुछ घाटा रहा।"

"जी हाँ, जहां परसाल करीब दो करोड़ का फायदा हुआ था, वहाँ इस साल नब्बे लाख कम मिले हैं। यह घाटा इसलिए हुआ क्योंकि भारत पाकिस्तान की सीमाओं पर फौजी चौकियां बढ़ गई हैं। हैदराबाद से बाड़मेर तक जो सोना रायकाओं (ऊंट चराने अथवा पालने वालों का तद्देशीय नाम) के द्वारा आता था वह करीब-करीब बन्द हो चुका है। बहावलपुर से ही माल अब जैसलमेर और बीकानेर पहुंचता है।"

"हैदराबाद से बाड़मेर तक आनेवाला माल क्यों बन्द हो गया ?"

"हुजूर का पहले इत्तिला दे चुका हू कि हमारे दो काफिले पकड़े गए थे, जिनसे तीस लाख का नुकसान उठाना पड़ा। उसके बाद रायकाओं ने भी इनकार कर दिया और हमने भी वह रास्ता बन्द करना मुनासिब समझा। तीस लाख की पूंजी जब्त हो जाने से हमें पचास लाख का घाटा हुआ।"

"इस व्यापार में ऐसा होता ही है। लेकिन अब हमें इस व्यापार को बन्द कर देना चाहिए?"

"क्यों? इस सोने के व्यापार में हमें बहुत फायदा होता है?"

"मगर परेशानी कितनी उठानी पड़ती है! इस वक्त पर हमारी कितनी पूंजी है?"

"करीब पचास करोड़।"

"बहुत है। लड़के पाकिस्तान में कमा रहे हैं, और यहाँ दोनों लड़कों के लिए बहुत काफी हैं। मकबूल लड़ाई पर चला गया है, कौन जानता है कि वह जिन्दा लौटे! खुदा न ख्वास्ता अगर वह मुल्क के काम आया, तब रहमान रह जावेगा। इसके अलावा मिलें चल रही हैं, दूसरे व्यापार हैं। अमा म्यां, वे क्या करें, जिनको एक वक्त रोटी भी नसीब नहीं होती।"

"लेकिन हुजूर····।"

"ज्यादा हविस इन्सान को शैतान बनाती है। मेरा कुछ और ख्याल हो रहा है।"

"वह क्या हुजूर?"

"यह कि साल हाल की आमदनी लड़ाई के फण्ड में दे दी जाय।"

"यह क्या गजब करने जा रहे हैं?"

"क्यों? मुल्क की आजादी के लिए जहाँ एक बेटे को कुर्बानी पर चढ़ा दिया है, वहाँ क्या साल हाल की आमदनी निछावर नहीं की जा सकती।"

"लेकिन हुजूर हमारा मुल्क पाकिस्तान है।"

"वाह, यह तो वही मसल हुई कि खाएं शौहर की, गीत गाएं बीरन

के। रहें हिन्दुस्तान में, रोटियाँ खाएँ हिन्दुस्तान की और मुश्किल व तंगदस्ती में हम उसकी मदद न करें, क्योंकि हम मुसलिम हैं, और मुसलिमों का मुल्क पाकिस्तान है ? यह क्या वाहियात बात है ?''

"हुजूर· · · · ।''

"हुजूर–वुजूर कुछ नहीं। मैंने सब सोच-विचार और पक्का इरादा कर लिया है।

"अगर हुजूर का इरादा बन गया है, तब मेरा एक सुझाव है ?''

"वह क्या ?''

"यह कि आधी रकम फंड में दी जाय और आधी रकम के बान्ड खरीद लिए जायं।''

"फायदे के लिहाज से तुम्हारा सुझाव काबिलेगौर है, लेकिन मैं अपने इरादे में कोई तबदीली नहीं कर सकता। मेरे परदादों ने जब गजनी को तर्क कर हिन्दुस्तान को अपना वतन बनाया, तब हम हिन्दुस्तान के हो गए। हमारी चार पुश्तें यहां खप गईं। दो लड़के पाकिस्तानी बन गए। हमारा भी हिन्दुस्तान के साथ बटवारा हो गया। हिन्दुस्तान की कमाई हिन्दुस्तान की आजादी को बरकरार रखने के लिए निछावर करना हमारा फर्ज है।''

"हुजूर के हुक्म की तामील की जायगी।''

मुनीरमियाँ रुखसत होने वाले थे कि दरवाजे पर नैयर और सन्तोष दिखाई दिए। उनको देखते ही नवाबजादा बड़े तपाक से स्वागत करने के लिए उठे,और दो कदम आगे बढ़कर बोले—''खुशामदीद हजरत ! आजकल आप लोग ईद के चांद हो रहे है।''

फिर मुनीर मियां से कहा—''इसी वक्त चेक लिखकर दस्तखतों के लिए ले आओ। अच्छे काम में देर नहीं की जाती।''

मुनीर मियां, मुंह लटकाए गुम-सुम चले गए।

सन्तोष ने पूछा—''कहिए, कोई जश्न है क्या ?''

नैयर ने सकारा—''नवाबों–अमीरों का हर दिन जश्न का है।''

नवावजादा ने बैठाते हुए कहा—''खुदा की कसम, खूब आए। जब से

राणा गए, तब से जिन्दगी एक बोझ हो गई है। जश्न हमेशा संगी-साथियों के साथ हुआ करते हैं।"

नैयर—"जी हां, और इधर मिसेज रिपुदमन सिंह के घर पर ताला लटक रहा है ?"

नवाबजादा—"जो थोड़ी बहुत दिलबस्तगी हो सकती थी उसका भी रास्ता बन्द हो गया है। बुढ़िया ख़ूसट तो जरूर है, लेकिन है तमीजदार।"

"बहुत सही फरमाते हैं।"

नवाबजादा ने घंटी का बटन दबाते हुए कहा—"मैंने अर्ज किया है कि जहाँ दोस्त हैं, वहाँ जश्न है। फरमाइए, क्या मंगवाऊं ?"

नौकर आदेश की प्रतीक्षा में आकर खड़ा हो गया।

नवाबजादा ने उन दोनों को देखते हुए फिर पूछा—"फरमाइए, क्या मंगवाया जाय। अगर चीजें अपने मन मुआफिक हों तो ज्यादा लुत्फ आता है।"

सन्तोष और नैयर एक दूसरे को देखने लगे। नवाबजादा ने संकोच करते देख कहा—"क्यों, हिचक क्या है ?"

नैयर ने मुस्कराते हुए कहा—"वल्लाह, हिचक की आपने खूब फर-माई। जो मर्जी हो मंगवाइए।"

नवाबजादा ने नौकर को चन्द किस्म के खाने दस्तरख्वान पर सजाने का हुक्म देकर कहा—"सचमुच दोस्तों के बगैर जिन्दगी पहाड़ हो जाती है। क्यों सन्तोष बाबू, उस खूनी वारदात का कुछ पता चला ?"

"जी नहीं। पुलिस उसका सुराग निकालने में असफल रही। सिर्फ इतना मालूम हुआ कि वह हत्याकांड चीनियों से सम्बन्धित है, क्योंकि मृत दोनों चीनी थे। रिट्ज होटल में रहने वाली चीनी औरत का नाम मिस मिलर था और वह कनाट सरकस में हमेशा घूमती देखी गई। वहाँ के किसी चीनी दूकानदार ने उसे नहीं पहचाना।"

"और वह आदमी।"

"हुलिए से वह चीनी साबित हुआ, और उसी की गोली से मिलर की

हत्या हुई है। जासूसों का यह आम रवैया है कि पकड़े जाने पर अपने साथियों की हत्या कर देते हैं, क्योंकि मृत व्यक्ति कोई कहानी नहीं कहते।"

"जी हां, तभी तो मामला गोल हो रहा है। मेरा ख्याल है कि इसमें मिसेज रिपुदमन सिंह का हाथ है।"

"शक मुझे भी यही है, क्योंकि वह हत्याकांड के दिन से फरार है।"

"क्या आप उधर गए थे ?"

"जी नहीं, न मालूम वहाँ जाने से कौन बवाल पैदा हो जाय।"

इसी समय नौकर ने आकर एक मुलाकाती कार्ड नवाबजादा के सन्मुख रखा। उन्होंने उसे बेरुखी के साथ उठा कर पढ़ा—'ब्रजमोहन दास मालिक रमणलाल ग्रूप मिल्स, बम्बई।' पढ़ते ही नवाबजादा साहब उठे खड़े हुए और बोले—"दोस्तो थोड़ी देर के लिए मुझे माफ कीजिए। मेरे एक व्यापारी दोस्त बम्बई से तशरीफ लाए हैं, जरा उनसे मिल लूं।"

सन्तोष और नैयर ने अनुमति प्रदान कर दी।

नवाबजादा ने बाहर आकर देखा कि एक सौम्य लम्बा व्यक्ति बड़ी चिन्तित मुद्रा में बरामदे में टहल रहा है। उसने उनको देखते ही कहा—"माफ कीजिए, नवाबजादा साहब··" कहते कहते वह रुक गए।

नवाबजादा ने हाथ बढ़ाते हुए कहा— "खुशामदीद सेठ साहब ! आपने क्यों तकलीफ फरमाई, मुझे ही बुला लिया होता। कहिए सब खैरियत है ?"

सेठ ब्रजमोहन दास ने हाथ मिलाते हुए कहा—"मुसीबत ही दोस्तों के पास आने का तकाजा करती है।"

नवाबजादा ने उन्हें मुलाकाती कमरे में ले जाते हुए कहा— "फरमाइये मैं आपकी क्या इमदाद कर सकता हूं ?"

"कुछ दिनों पहले एक तकलीफ दी थी, और उस सिलसिले में एक खत भी लिखा था।"

"जी हां, मुझे बखबी याद है। उसमें आपने अपने साहबजादे का हाल चाल दरयाफ्त करने को लिखा था, और मैंने उसका जवाब भी तहरीर कर

दिया था।"

"जी हां, वह मुझे मिल गया। उसके बाद मैंने उसको एक खत लिखा, और जब उसका जवाब नहीं मिला, तब कल शाम को वायुयान से दिल्ली आया, और उसके होटेल गया। वहां मालूम हुआ कि वह होटेल छोड़कर चला गया है। आपको तकलीफ देने का कारण यही था कि शायद आपको कुछ मालूम हो।"

"जी नहीं, मुझे मुतलफ खबर नहीं है। वहाँ एक खूनी वारदात हो गई थी, उसी सिलसिले में कुछ रोज पहले उनके होटेल गया था, क्योंकि हादिसा उनके बगल के कमरे में हुआ था। दरयाफ्त करने पर मालूम हुआ कि मिस्टर रमणी मोहन के जाने के बाद उनके खाली कमरे को उन्हीं के पड़ोस में रहने वाले एक अमेरिकन सैलानी ने अपने कुछ दोस्तों को ठहराने के लिये ले लिया था। वह अमेरिकन अपने दोस्तों से बातें करता वहीं सो गया। पिछली रात में चोर उसके कमरे में किसी बुरी नियत से घुसे। किसी तरह होटेल वालों को इसकी इत्तिला हो गई। नतीजा यह हुआ कि जब व पकड़े गए, तब एक ने दूसरे को मार अपनी खुदकुशी कर ली।"

"उस वक्त रमणी मोहन वहाँ नहीं था?"

"जी हाँ, उसके कब्ल वह होटल से चले गये थे।"

"कोई उस पर शक तो नही है।"

"जी नहीं। वह उस वक्त दिल्ली में ही मौजूद नहीं थे।"

"ठीक है, यही रिपोर्ट मुझे होटेल वालों से मिली है। वहाँ यह भी मालूम हुआ कि रमणी मोहन ने जिस वक्त होटल छोड़ा, उसके साथ एक खूबसूरत औरत भी थी।"

"इसकी मुझे कोई इत्तिला नहीं है।"

"मुझे मिली है। मैं समझता हूँ कि यह औरत गालिबन वही है, जो 'मिस इंडिया' चुनी गई थी, तथा जिसके मुकुट को मेरे कुवंर साहब ने ग्यारह लाख खर्च कर वाह-वाही खरीदी थी।"

"जी, मैं इस बाबत आपको कोई इत्तिला नही दे सकता। जैसा मैं

आपको लिख चुका था कि उनका उसके घर आना जाना था। मैंने उन्हें आगाह कर उस घर की हकीकत उन्हें बता दी थी, और होशियार भी कर दिया था। अब नहीं कह सकता कि....।"

"आप नहीं जानते, लेकिन मुझे यकीन है कि वह उसी औरत को लेकर कहीं फरार हो गया है। मैंने उसे अपने पत्र में लिखा था कि अगर वह पत्र मिलते ही रवाना नहीं होता, तब मुझे दिल्ली आना पड़ेगा। शायद इसी भय से वह उस औरत को लेकर फरार हो गया।"

"यह भी हो सकता कि वह औरत और उसकी मां उनको बरगला कर ले गई हों। दरअसल मिस इण्डिया की माँ–मिसेज रिपुदमन सिंह एक जहाँदीदा, और चालाक कुटनी है, जिसका मुझे बखूबी तजरुबा है। मैं तो उसके मकान को चकला समझता हूँ। न मालूम उसके पास कितनी हसीन नाजनीन हैं, और वह उनके जरिए शहर के अमीरों को फाँस कर पैसा कमाती है। वहाँ जुए का फड़ भी लगता है, और दिलजोई के सब सामान मुहैय्या रहते हैं, अगर जेब गर्म है।"

"आपने उसकी रक्षा नहीं की ?"

"मैंने उसका सारा भेद बखूबी बता दिया था। इसके अलावा मैं कर ही क्या सकता था।"

"अस्तु, जो होनहार था वह होकर रहा। अब आगे क्या किया जाय ?"

"मिसेज रिपुदमन सिंह का सुराग अगर मिल जाय, तब आगे की कारवाई की जा सकती है।"

"आप कहते हैं कि वह फरार है ?"

"जी हां, कल तक तो उसके मकान में ताला बन्द था, आज क्या हाल है, यह नहीं मालूम। मुमकिन है कि वह आ गई हो।"

"उसके घर का पता बताइये। मैं खुद जाकर उससे मिलूँगा।"

"मैं आपको अकेले जाने की सलाह नहीं दूंगा। मेरी तरह उसके घर में आने जाने वाले मरे दो दोस्त इस वक्त मौजूद हैं। वे दोनों ऊँचे सरकारी अफसर हैं। उनको साथ लेने में सहूलियत रहेगी। आइये, उनसे आपकी

मुलाकात करवा दूंगा ।"

"मुझे तो केवल आपका सहारा है, जैसा मुनासिब हो, वैसा कीजिए ।"

नवाबजादा उनको लेकर उस कमरे में आए, जहां नैयर और सन्तोष विलायती शराब की चुसकियाँ ले रहे थे। उनको देखकर उन्होंने अपने जाम एक ही घूंट में खाली कर दिए, और नैयर ने बोतल उठा कर अपने पैरों के पास रख ली। नवाबजादा आगे थे, और ब्रजमोहन दास शिर झुकाये थे, इस लिये उनकी दृष्टि से नैयर का बोतल छिपाना ओझल रहा।

नवाबजादा ने उनका परिचय कराने के बाद कहा—"मिस्टर नैयर, हम लोगों को मिसेज रिपुदमन सिंह के यहाँ चलना है।"

"वह क्या आ गई है ?"

"इसी की तहकीक के लिए चलना है।"

"चलिए, हमें साथ देने में कोई इनकार नहीं है।"

नवाबजादा ने सेठ ब्रजमोहन दास से कहा—"जब आप तशरीफ लाये थे, हम लोग कुछ खा-पी रहे थे। आइये आप भी नोश फरमाइये।"

"इस वक्त माफ करिए, क्योंकि आपके यहाँ आने के पहले मैं होटेल से खाकर चला हूं। आप लोग शौक से खाइए-पीजिए। कहीं यह न समझिएगा कि मुझे कोई परहेज है।"

हालांकि नवाबजादा और उनके दोनों दोस्तों ने खाना-पीना जारी रखा, परन्तु रंग न जमा। सब झिझके-झिझके रहे। शीघ्रता से खा-पी वे सब मिसेज रिपुदमन सिंह के घर की ओर रवाना हुए।

११

मिसेज रिपुदमन सिंह अपने कमरे में ताला बन्द कर ज्योंही बरामदे में आई, त्योंही उसकी दृष्टि मिनचू अथवा कला पर पड़ी, जो नीचे जाने के लिए लिफ्ट की ओर तेजी से जा रही थी। जब उसने आगे दृष्टि दौड़ाई तो उससे कुछ आगे रमणी मोहन दिखाई दिए, जो किसी यात्री से बातें करते जा रहे थे। अब उसे ज्ञात हो गया कि वे दोनों इसी मेट्रापालीटन होटेल के किसी

कमरे में ठहरे हैं, जिसको जानने के लिए वह उद्विग्न हो रही थी। उसे भय था कि कहीं वह किसी अपने परिचित चीनी गुप्तचरों के अड्डे में न चली जाय, जिससे वह भी उनके साथ गिरफ्तार हो जाए। पिछली संध्या से वह इसी उधेड़बुन में थी कि कैसे मिनचू को सूचित किया जाय। अब सहसा उसको सामने देखकर उसकी बाँछें खिल गईं, और वह तेजी से उसकी ओर लपकी। किन्तु उसी समय उसके मन में दूसरा विचार उठा कि इस समय वह सर्वथा अकेली नहीं है, रमणी मोहन भी साथ है। उसकी योजना थी कि वह अन्तराल में रहकर मिनचू से कार्य संचलित करावेगी, इस लिये वह अपनी उपस्थिति रमणी मोहन पर प्रकट नहीं करना चाहती थी। वह क्षिप्र पदों से चल कर मिनचू के पास पहुँच गई, और पीछे से उसके कन्धे पर हाथ रखकर उसको ठहरने के लिये संकेत किया। मिनचू उसके स्पर्श से चौंकी और अपनी कथित-माँ को देखकर चकित रह गई। वह उसी से सम्बन्ध स्थापित करने के उद्देश्य से एक चीनी गुप्तचर के अड्डे में जा रही थी।

मिनचू ने साश्चर्य पूछा—"ममी, तुम यहाँ कैसे ?"

उसने धीमे स्वर में उत्तर दिया—"यह फिर बताऊंगी। मैं इसी फ्लैट पर ५७१ नम्बर के कमरे में ठहरी हूँ। तुम उन स्थानों में न जाना, जिनके नाम मैंने बताये थे, अथवा जिनसे तुम परिचित हो क्योंकि गिरफ्तारियाँ होने लगी हैं, और कहीं तुम भी उनकी पकड़ में न आ जाओ।"

"मैं तो वहीं जा रही थी।"

"अब तुम घूम-फिर कर वापस चली आओ, और मुझसे मिलो। रमणी मोहन कहीं देख न ले, इसलिए मैं वापस अपने कमरे में जाती हूं।"

यह कह कर वह पीछे लौट पड़ी, और शीघ्रता से अपने कमरे चली गई।

मिनचू सोचती आगे बढ़ी, और रमणी मोहन के पास जाकर बोली—"तुम अकेले ही घूम-फिर आओ, मैं अपने कमरे में थोड़ी देर आराम करना चाहती हूँ।"

रमणी मोहन ने चिन्तित स्वर में पूछा—"क्या कुछ तबियत खराब

हो गई ?"

"नहीं, थोड़ी थकावट महसूस करती हूँ। आराम करने से ठीक हो जायगा। कोई घबड़ाने की बात नहीं है।"

"तब मैं अकेले जाकर क्या करूँगा। चलो, कमरे वापस लौट चलें।"

"तुम मेरे साथ क्यों अपना समय बरबाद करोगे ? अपने उस दोस्त से मिल आओ, जिसका तुम रास्ते में जिक्र करते थे।"

"तुमको बीमार छोड़ कर कैसे जा सकता हूँ ?"

"मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूं कि मेरी तबियत ठीक है, केवल थकावट है, जो आराम करने से दूर हो जायगी।"

"मन नहीं होता जाने का।"

"वाह, यह भी कोई बात है। जब तुम वापस लौटेगे, मुझे भली-चंगी पाओगे।"

"मैं तुम्हें कलकत्ता की सैर कराने जा रहा था। जब बीमार हो, तब मेरा ज ाना बेकार है।"

"यदि तुम्हारी यही इच्छा है, तब चलो।"

जब तक तुम आराम कर स्वस्थ न हो जाओगी, तब तक मैं कहीं न जाऊंगा।"

"अब मिनचू बड़ी कठिनाई में पड़ी। उनके रहते वह मिसेज रिपुदमन सिंह से मिल कर सब हाल नहीं जान सकती थी, जिसके लिए वह आतुर थी। अपनी चाल व्यर्थ होते देख कर वह बोली—"अच्छा चलो, कुछ दूर घूम-फिर आवें, तब शायद मन बहल जाय।"

"अब तुम्हें जाने की जरूरत नहीं है। अभी खा-पीकर आराम करो, संध्या समय चलेंगे।"

"तुम क्यों नहीं घूम आते ?"

"तुम्हें अकेले छोड़ कर जाने की इच्छा नहीं होती।"

"क्यों, क्या मैं तुमको छोड़ कर कहीं भाग जाऊंगी ?"

"मैं ऐसा नहीं सोच सकता। लेकिन अकेले जाने का मेरा मन

नहीं होता।"

रमणीमोहन यह कह कर पीछे लौटने लगे। मिनचू भी सोचती हुई उनके पीछे पीछे चलने लगी। उनके कमरे का नम्बर था ५९२ और ५७१ नम्बर के सामने से गुजरना पड़ता था। मिनचू उस नम्बर को तलाश करती आगे बढ़ रही थी। जब वह उस कमरे के सामने से गुजरी, उसने मिसेज रिपुदमनसिंह को चिक के पीछे खड़ी देख कर कहा—

"वह अकेले नहीं जा रहा है। मौका लगा कर अभी आती हूं, तुम कहीं जाना नहीं।"

रमणीमोहन के कानों में उसकी भनक पड़ी। वह खड़े होकर पूछने लगे—"क्या कह रही हो?"

मिनचू तेजी से आगे बढ़ कर बोली—"मैं अपने मन से कह रही थी कि 'तूने व्यर्थ ही उन्हें परेशान कर दिया।"

"लेकिन मैंने सुना कि जैसे तुम किसी को कहीं जाने के लिये मना कर रही थी।"

"अपने ही को सम्बोधित कर कह रही थी कि 'तुम कहीं जाना नहीं अब?"

"यह क्यों?"

"इस लिए कि मेरी वजह से तुम भी कहीं नहीं जाना चाहते, गोया मैं तुम्हारे पैरों की बेड़ी बनी हूँ।"

"तुम्हारा विचार सत्य है। अब तुम्हें छोड़ कर पल भर नहीं रह सकता।"

"यह परम सौभाग्य की बात है, और सब नारी यही चाहती हैं कि वे अपने पति से क्षण भर विलग न रहें, किन्तु······।"

"किन्तु क्या?"

"यही कि इस कर्म-भूमि संसार में यह संभव नहीं है।"

"अभी ऐसी कोई समस्या हमारे सामने नहीं है। हम लोग बिना काम-काज के कुछ दिनों रह सकते हैं।"

"मेरा तात्पर्य पैसा पैदा करने से नहीं है। अभी न सही कुछ दिनों बाद तो हमें उसके लिए भी कोई काम करना पड़ेगा, किन्तु नारी और पुरुष के कर्तव्य पृथक-पृथक हैं।"

अब तक उनका कमरा आ गया था। मिनचू ने उसका ताला खोलते हुए कहा—

"आइए, न आप कहीं जाइए, और न मैं।"

"कमरे में आकर रमणी मोहन कुरसी पर बैठते हुए बोले– "अब तुम थोड़ी देर लेट कर आराम करो, तब तक मैं इकरार नामे का मसबिदा बना डालूं।"

"कैसा इकरारनामा ?"

"हमारे-तुम्हारे साथ रहने का। जब हम विवाह बन्धन में नहीं बँधते, तब किसी किस्म का इकरारनामा हमारे बीच रहना चाहिए।"

"इसकी कोई जरूरत नहीं है। जब तक आपका मन हो मेरे साथ रहिए। तबियत ऊब जाने पर छोड़ कर जा सकते हैं।"

"यह तुम क्या बक रही हो ?"

"लिखा-पढ़ी को गुलामी समझती हूँ। हम दोनों में नैसर्गिक प्रेम हुआ है, और उसका रूप हमेशा नैसर्गिक रहना चाहिए।"

"किन्तु लिखा-पढ़ी हो जाने से तुम्हारे भविष्य में स्थिरता रहेगी।"

"मैं भविष्य की चिन्ता नहीं करती।"

"किन्तु संसार में रहकर करना पड़ता है।"

"इस लिखा-पढ़ी से मेरे उस आदर्श की हत्या होती है, जो मैं संसार के सम्मुख रखना चाहती हूँ।"

"वह क्या ?"

"इतनी जल्दी भूल गए। नारी और पुरुष की स्वतंत्रता में किसी प्रकार का बंधन नहीं होना चाहिए। दोनों स्वतंत्र हैं, और अपनी-अपनी इच्छानुसार साथ-साथ अथवा पृथक-पृथक रह सकते हैं। जब तक मतैक्य है, तब तक साथ रहते हैं, और विभिन्नता होने पर पृथक रहें। विवाह

केवल मित्रता का घनिष्ट रूप है। वह न किसी लिखा-पढ़ी अथवा पारम्परीय रूढ़ि पर निर्भर है।"

"ठीक है, परन्तु सन्तान का क्या होगा ?"

"सन्तानों के पालन-पोषण के लिए दोनों समान रूप से उत्तरदायी होंगे। वे दोनों अपनी आय का समान भाग उस संस्था को देंगे जो उनका पालन-पोषण करती हैं।"

"परन्तु सन्तान तो माता-पिता द्वारा पालित होती है।"

"अब भविष्य में यह प्रथा नहीं रहेगी। उसको बदलने का हमारा प्रयास है।"

"किन्तु ममता और स्नेह ?"

"वे मनोविकार हैं, और उनका रूप पारम्परीय। हमारा प्रयास परम्परा की दासता को नष्ट करना है।"

"किसी प्रकार का मुआहिदा न होने से तुम्हारी माँ को आपत्ति हो सकती है।"

"नहीं, उन्हें भी काई आपत्ति नहीं होगी। वह मेरे विचारों से अवगत हैं, और वह भी उसकी अनुयायी हैं।"

"विचित्र बात है ? माँ हो कर अपनी सन्तान के अधिकार की रक्षा करना अनुचित समझती हैं।"

"इस समस्या पर वह तब सोचती, जब उनकी सन्तान अनाश्रित होती। मैं अनाश्रित नहीं हूँ, और अपनी जीविका स्वयं उत्पन्न करूँगी।"

"मेरे रहते तुम कमाने जाओगी ?"

"अपनी जीविका उपार्जन करना प्रत्येक प्राणी का कर्त्तव्य है। पशु-पक्षी तक यही करते हैं।"

"परन्तु ......।"

"परन्तु वरन्तु कुछ नहीं। नारी जब तक स्वयं अपनी जीविका का उपार्जन नहीं करती तब तक उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास नहीं हो सकता।"

"इसका मतलब यह है कि तुम मुझ से पृथक रहोगी !"

"नहीं, पृथक रहना होता तो तुम्हारे साथ क्यों आती ! मैं तुम्हें प्यार करती हूं, तुम्हारे साथ रहूँगी; किन्तु मैं भी अपनी जीविका उपार्जित करूँगी। गृहस्थी हम दोनों के साझे में चलेगी। मैत्री के नाते हम एक दूसरे की वस्तुएं व्यवहार में लायेंगे, केवल निजी खर्च के लिए हम स्वयं प्रबन्ध करेंगे।"

"तुम क्या करना चाहती हो।"

"जो भी काम सामने आवेगा करूंगी।"

'फिर भी उदाहरण के लिए कुछ बताओ।"

"उदाहरण के लिए मैं नर्स का काम कर सकती हूँ।"

"और मैं डाक्टर का।"

मिनचू ने हर्ष से ताली बजाते हुए कहा—"बिल्कुल ठीक। डाक्टर और नर्स का जोड़ा है।"

"इसका अर्थ यह कि मैं यहाँ अपना क्लीनिक खोलूं।"

"इतनी झंझट करने की क्या ज़रूरत ? चीन के साथ युद्ध होरहा है। डाक्टरों और नर्सों की देश को ज़रूरत है। भारतीय होने के नाते हमारा कर्त्तव्य है उसकी सेवा करने का।"

"सुझाव ठीक है।"

"हाँ, इसमें एक लाभ यह भी रहेगा कि तुम्हारे पिता से ....।"

"मुक्ति मिल जायगी, यही कहना चाहती हो न !"

"हाँ, कुछ मेरा ऐसा ही मेरा तात्पर्य है।"

"यह भी सुझाव ठीक है। किन्तु सार्टीफिकेट घर पर हैं।"

"उन्हें मँगवा लीजिएगा। मैंने आज समाचारपत्र में पढ़ा है कि सरकार युद्धस्थल पर डाक्टरों की सेवाएँ चाहती है। हम क्यों न अपने को अवैतनिक सेवा के लिए अर्पित करें ? हमारे स्वतन्त्र व्यक्तित्व के निखार के साथ एक परीक्षण भी होगा।"

"जो तुम्हें स्वीकार है, वह मुझे भी स्वीकार है।"

"तब फिर आज या कल हमें अपनी-अपनी सेवायें भारत सरकार को

अर्पित कर देना चाहिए।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा।"

"जब तक मैं आराम करती हूँ, तब तक तुम फौजी दफ्तर जाकर हाल-चाल ले आओ।"

"अभी क्या जल्दी है, दोपहर या शाम तक हम दोनों चलेंगे।"

"शुभ कामों में देर नहीं की जाती। आप जाकर नियमों को जान आवें। मुझे नींद आ रही है, तब तक मैं एक झपकी लिये लेती हूँ।"

रमणी मोहन को अनिच्छा होते हुए भी जाने को उद्यत होना पड़ा। उनके सामने वह पलंग पर लेट गई, और आँखें बन्द कर सोने का बहाना करने लगी। रमणी मोहन चुपचाप चले गये।

१२

रमणी मोहन मुश्किल से होटल के बाहर निकले होंगे कि मिन्चू पलंग से उठी, और जी खोलकर हँसने लगी। हँसते-हँसते वह मानवाकार दर्पण के सामने खड़ी होकर अपनी रूप-सुधा स्वयं पान करने लगी। वह अपने ऊपर आसक्त होकर स्वयं से कहने लगी—"नारी की शक्ति अपार है। वह कमल से भी अधिक कोमल, शिरीष से भी अधिक सुकुमार और शक्ति में नवनीत है, परन्तु अपनी मोहिनी विद्या से वह पाषाण से भी अधिक कठोर पुरुष को अपना दास बनाती है। वह पहले जान बूझकर उसका खिलौना बनती है, और फिर वह उसे खिलौना बनाकर नचाती है। पुरुष समझता है कि वह साहसी है, किन्तु क्या नारी के साहस की किसी को थाह मिली है? पुरुष अपने को कूटनीति का निष्णात आचार्य मानता है, परन्तु प्रपंच विद्या में उसने किस नारी को पराजित किया है? पुरुष झूठ बोलकर नारी को लुब्ध करता है, परन्तु नारी मिथ्याचरण से उसको पग-पग पर मात देती है। पुरुष कहता है कि चापल्य मेरा स्वभाव है, परन्तु नारी की चपलता उसे पग-पग पर छकाती है। माया फैलाने में नारी जितनी दक्ष है पुरुष उसका सहस्रांश भी नहीं। तन की सुकुमारता के भीतर मन की कठोरता कितनी है उसका अन्दाजा आज तक किसने लगाया है? पुरुष तो तुच्छ है, कीट से भी अधम है। उसके विवेक

और बुद्धि की भक्षक नारी है। प्रकृति ने पुरुष को पग-पग पर पराजित और लांछित करने के लिये उसकी उत्पत्ति की है। रमणी मोहन कितना भोला है, कितना मूर्ख है! वह मेरे रूप पर लुब्ध है। वह 'मिस इण्डिया' को अपना खिलौना बनाना चाहता है, किन्तु वह नहीं जानता कि वह उसे खिलौना बनाकर खेल तथा खेला रही है। उसे नहीं मालूम कि मैं उसे चीन की दासता के लिए तैयार कर रही हूँ।''

इसी समय द्वार खोलकर मिसेज रिपुदमनसिंह ने प्रवेश किया। मिनचू दर्पण के सम्मुख से हटकर उसके गले लिपटकर बोली—''मैडम, देखो, मेरी कारगुजारी ठीक उतरी।''

मिसेज रिपुदमनसिंह ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा—''शाबाश! अभी तक सब काम चौकस उतरे हैं।''

''मैंने आगे की भूमिका भी बाँध ली है।''

''वह क्या ?''

''वह फौजी डाक्टर बनेगा और मैं नर्स। कहो, कैसा जोड़ा है ?''

''बहुत अच्छा। क्या उसने फौजी नौकरी करना मंजूर कर लिया ?''

''क्या मजाल कि इनकार करे ? अब उसकी नकेल मेरे हाथ में है। जिधर घुमाऊँगी, उधर घूमेगा।''

''शाबाश! अधिकारियों से तुम्हारी सिफारिश करूँगी।''

''मैंने उसे अवैतनिक रूप से अपनी सेवायें अर्पित करने के लिये तैयार कर लिया है। उसके साथ मैं भी अवैतनिक कार्य करूँगी।''

''हां, इस प्रकार कोई अड़चन नहीं डाल सकेगा। स्वयं सेवक के रूप में प्रत्येक को सेवा करने का अधिकार है।''

''इसीलिये वेतन आदि का झंझट दूर कर दिया। स्वयं सेवकों की भरती में कोई रुकावट पैदा नहीं होती, यही मेरा ख्याल है।''

''मैं तुमसे अकेले में मिलने के लिए अत्यन्त लालायित थी। हमें अब सतर्कता से काम करना है।''

''यही जानने के लिए मैं बड़ी उत्सुक हूँ। वह मरा इतना चिपट गया है कि किसी तरह टाले नहीं टलता था। बड़ी मुश्किल से उसे धता बताया

है। बताओ मैडम, कैसी और किसकी गिरफ्तारी हुई है।"

"तुमको मालूम है कि ताइ-ची ने एक बहुत जरूरी नकशा, जिसमें चीन की भावी योजनाओं का ब्योरेवार वर्णन था, खो दिया है।"

"मालूम है। वह कहती थी कि इसी रमणी मोहन के बगल वाले कमरे में रहने वाले अमेरिकन ने उसे नशा पिलाकर ले लिया है।"

"काउ-चो से उसने यही बयान किया था। तुमसे मैंने कहा था कि पता लगा लेना कि वह रमणी मोहन के पास तो नहीं है।"

"मैंने उसका राई-रत्ती सामान देख डाला। उसके पास नहीं है।"

"क्या किसी प्रकार उसकी बातचीत से तुमने ताड़ा कि उसे उस नकशे का भेद मालूम है?"

"वह मूर्ख इन राजनीतिक उलझनों को क्या जाने-समझे।"

"तब ठीक है, तुम्हारे काम में कोई बाधा नहीं पड़ेगी।"

"तुम चिन्ता न करो, वह पूरी तरह मेरी मुट्ठी में है। मेरा ख्याल है कि लूँग से अधिक मुझे सफलता मिली है। पुरुष देखने को सिंह है; किन्तु है कागजी। हमारी आंखों का एक बूँद पानी उसे गला देता है।"

"अच्छा, अब आगे की कहानी सुनो। काउ-चो ने उसे चौबीस घण्टे के अन्दर नकशा वापस लाने की मोहलत दी, और तू-सिन को उसकी निगरानी के लिए मुकर्रर किया। काउ-चो ने उसे अजदहे पर बलि चढ़ाने का इरादा किया था।"

"क्या ताइ-ची को वह अजदहे का भक्ष्य बनाना चाहता था?"

"हाँ, इसीलिये उसने तू-सिन को निगरानी के लिये नियत किया था, जिसमें वह आत्महत्या न कर सके।"

"सचमुच, आत्महत्या उसके लिए वरदान होता।"

"वह अजदहे का भक्ष्य तो नहीं बनी, तू-सिन की गोली का शिकार अवश्य हुई।"

"क्या वह भागने का प्रयत्न कर रही थी?"

"नहीं, वह तू-सिन के साथ उसी अमेरिकन के कमरे में तलाशी के लिए

घुसी थी कि होटेल की गारद को किसी प्रकार खबर हो गई, और उन्होंने घेर लिया। तू-सिन तो हमारा मँजा खिलाड़ी था, जब भाग निकलने का कोई रास्ता उसे न मिला होगा, तब उसने पहले ताई-ची को मारा फिर आत्महत्या कर ली।"

"यह सब उसी रात घटित हुआ, जब मैं अपने मोहन राजा को भगाने गई थी?"

"हाँ, वह दिन हमारे लिये बड़ा मनहूस साबित हुआ।"

"कैसे?"

"उसी दिन काउ-चो का आना, अलका के गुप्त गृहों का मुआयना होना, ताई-ची को अजदहे का भक्ष्य बनाने का आदेश मिलना, सन्तोष, नैयर आदि का पहुँचना, तुम्हें रमणी मोहन को भगाने के लिए भेजना, अमरीकन लैम्बर्ट को पकड़ने या मारने का षड़यन्त्र, फिर उसके कमरे में ताई-ची और तू-सिन की मृत्यु होना और काउ-चो के आदेश से मुझे तत्काल दिल्ली छोड़कर कलकत्ता भागना—इतने काण्ड चौबीस घण्टे के भीतर घटित हो गए।"

"काउ-चो ने तुमको क्यों कलकत्ता भेजा?"

"ताई-ची मिलर नाम से अलका आती-जाती थी। पास-पड़ोस वाले उसे देखते ही थे। कहीं पुलिस खोज लगाती हमारे यहां आती; उस समय कहीं कोई सुराग मिल जाता, अथवा किसी प्रकार का सन्देह होता, तब विपत्ति आने की सम्भावना थी।"

"हूँ, यह कहो कि तुम भी भागकर आई हो।"

"और यहां आने पर विपत्ति भी साथ ही साथ आई। चौरंगी पर च्यांग की दूकान पर पुलिस का कब्जा हो गया, सूँग दूकान बन्द कर फरार हो गया। खैरियत हुई कि मैं उस समय च्यांग की दूकान पर नहीं थी, नहीं तो उसके साथ मैं भी गिरफ्तार हो जाती। मैं वहां से भागकर इसी होटल में आई, और काउ-चो को ट्रंक-काल कर सब हकीकत बताई। यहीं रहने का आदेश मिला, और वह भी आज-कल में यहां आने वाला है; तब भविष्य का कार्य-क्रम बनेगा।"

"बेशक, अब हमें बहुत सतर्क रहना चाहिये। मुझे भय होता है कि कहीं मेरे बन्दर का बाप कोई बावेला खड़ा न करे।"

"क्यों ? क्या उसका कोई समाचार मिला है ?"

"उसको अपने बाप की चिट्ठी मिली थी, जिसमें उसने उसको तुरन्त बम्बई पहुँचने का हुक्म दिया था, साथ में यह धमकी भी थी कि उसके बम्बई न पहुँचने पर वह स्वयं आवेगा। इसी बीच मैं पहुँच गई और विष खाने का नाटक रचा। यदि पहले से मुझे उस पत्र की सूचना होती, तब नाटक रचने की जरूरत ही न पेश आती।"

"क्यों ? वह तो तुम्हारा अमोघ अस्त्र था।"

"मैंने अनजाने उसका प्रयोग कर दिया। उसका परिणाम अच्छा ही निकला। वह मेरे साथ तुरन्त होटल छोड़ने को तैयार हो गया, और वहां से सीधे स्टेशन आकर कलकत्ता जाने की अन्तिम गाड़ी पकड़ ली, जिसकी सूचना मैंने तार द्वारा तुमको मिरजापुर से भेजी थी।"

"वह तार मुझे नहीं मिला।"

"मिलता कैसे, तुम तो प्रातःकाल ही दिल्ली छोड़ चुकी थी। तार किसी दूसरे के हाथ में न पड़ जाए।"

"क्या उसमें किसी गुप्त बात का संकेत था ?"

"हां, कुछ बातें अवश्य लिखी थी, जैसे कलकत्ता पहुँचने पर मैं कहां ठहरूँगी।"

"क्या मेट्रोपालिटन होटल का पता दिया था ?"

"हां, मिरजापुर से रास्ते में हमने यही तय किया था और कमरा रक्षित कराने के लिए मैंने दूसरा तार होटल के अधिकारियों को दिया था।"

"तब सुरक्षा के लिहाज से तुम्हें यह होटल छोड़ देना चाहिए।"

"किन्तु उस मूर्खानन्द ने एक सप्ताह का अग्रिम किराया जमा कर दया है। अन्य होटल में जाना क्या वह स्वीकार करेगा ? यहां प्रबन्ध भी उत्तम है, उसमें भी कोई खामी नहीं निकाली जा सकती।"

"किसी तरह समझा-बुझाकर राजी करो।"

"कोशिश करूंगी। तुम क्या अभी अपने को प्रकट नहीं करोगी ?"

"नहीं, मैं अभी गुप्त रहना चाहती हूँ। काउ-चो से परामर्श करने के बाद कार्यक्रम बनाऊँगी।"

"तब जाओ, काफी देर हो गई है, कहीं वह आ न जाए?"

"ठीक कहती हो, मेरा जाना मुनासिब है। जब मेरे कमरे की खिड़की पर पीला परदा देखना, तब समझ लेना कि मैं तुमसे मिलना चाहती हूँ। मौका लगाकर शीघ्र से शीघ्र मिलना।"

"हां, मैं घण्टे-दो घण्टे के अन्तर से देखती रहूँगी। मुझे यदि कोई सूचना देनी होगी तब मैं पत्र लिखकर तुम्हारे कमरे में डाल दूँगी।"

"ठीक, अब जाती हूँ। बहुत सावधान रहना।"

मिसेज रिपुदमनसिंह शीघ्रता से अपने कमरे चली गई।

१३

मेजर कुलदीप सिंह की तैनाती तोबाँग क्षेत्र के एक पहाड़ी मोरचे पर हुई। उसके आसपास छोटी पहाड़ियाँ थी और चतुर्दिक घने दुर्गम जंगल। यह स्थान तिब्बत के दक्षिण और भूटान के पूर्व में स्थित है। चीनियों का भारी जमाव तिब्बत के क्षेत्र में हो रहा था और वहाँ से वे अपने आक्रमण की योजना बना रहे थे।

मेजर मशहूर तोपची थे। वह अपनी सैनिक टुकड़ीमें निशानेबाजी के आचार्य माने जाते थे। ब्रिगेडियर गुरुबन्टा सिंह भी उनके अचूक निशाने से प्रभावित थे, और इसीलिए उन्होंने नाके का मोरचा उनके अधीन किया।

प्रातःकाल का सूर्य पहाड़ियों के तलहटी क्षेत्रों को प्रकाशित करने का उद्योग कर रहा था। कुलदीप सिंह अपना कार्य भार अपने अधीनस्थ लेफ्टीनेन्ट मेजर सन्त सिंह को दे, अपने शिविर में आ रहे थे। इस समय जंगल की सुषमा बड़ी मन मोहक थी। हरे और ऊँचे वृक्षों के ऊपरी टहनियाँ और पत्ते स्वर्ण खचित थे, और जंगली पुष्पों की सुरभि से वायु मंडल गमक रहा था। वह उसे देखने को पहाड़ी से नीचे उतरने लगे।

वह पहाड़ी से उतर कर नीचे जंगल में प्रवेश करने वाले थे कि उन्हें

झाड़ियों की आड़ में कुछ व्यक्तियों की बातचीत की आहट मिली। तुरन्त वहीं ठहर कर एक मोटे तने वाले वृक्ष की आड़ में छिप गए, और अपना 'सर्विस रिवाल्वर' निकाल कर हाथ में ले लिया। कुछ ही क्षण वहाँ ठहरे होंगे कि उन्हें मधुर कंठ से निकलती हुई एक ललित धुन सुनाई दी। यद्यपि वह गीत के बोल समझने में असमर्थ थे, तथापि उसके करुण स्वर बता रहे थे कि यह किसी वियोगी का स्वर है, जो अपनी विरह वेदना गीत के स्वरों में प्रकट कर रहा है। सहसा उनके मानस तल में लुकी-छिपी बैठी प्रकाश कौर की मूर्ति सजग, हो गई। उनके मुख से सहसा निकल गया—"काश,इस वनस्थली में प्रकाश भी होती।" दूसरे ही क्षण उनका मन दिल्ली पहुँच गया और प्रकाश के सम्बन्ध में अनेक कल्पनाएँ करने लगा।

वह उन विचारों में इतना खो गए कि उन्हें ज्ञात न हुआ कि स्वर लहरी कब बन्द हो गई और रंग-बिरंगे परिधानों से अलंकृत पाँच बालक उन्हें निहार रहे हैं। उनको चुपचाप वृक्ष के सहारे खड़ा देख कर उन बालकों को साहस हुआ और वे किसी जंगली वृक्ष की टहनियों से बनी डलियों में जंगली पुष्पों को लिए आगे बढ़ने लगे। नहीं कहा जा सकता कि पक्षियों के कलरव ने अथवा मेजर की तन्मयता ने उनकी पगध्वनि को छिपा लिया था कि वह उस समय तक उनका आगमन नहीं जान सके, जब तक उनमें से एक ने केवल एक शब्द पुकारा—'फूल, फूल।"

मेजर का ध्यान भंग हुआ। क्षण भर के लिए वह इतना भी स्मरण न कर सके कि वे कहाँ हैं? सोए हुए व्यक्ति की भाँति जागने पर जो मन की दशा होती है, लगभग वैसी ही इस समय उनके मन की थी। उन्होंने चौंक कर पूछा—"कौन?"

उन लड़कों में एक चपल बालक ने कहा—"फूल-फूल।" इसके अतिरिक्त शायद उसे भारतीय भाषा के शब्द नहीं मालूम थे।

मेजर एकटक उसकी ओर देखने लगे। वह एक विलक्षण सुन्दर बालक था, परन्तु उसकी मुख-श्री से नरत्व प्रकट नहीं होता था। उसके शिर के बाल घुंघराले और गहरे काले थे। आँखें कुछ छोटी थीं, और नाक नोकीली

न होकर कुछ फैली, किन्तु पूरी तरह चिपटी भी न थी। ललाट चौड़ा और चिकना था। मुँह छोटा और ओष्ठ युगल पतले तथा धनुषाकार थे। दाँत चमकीले श्वेत थे। फूलों की डलिया उठाए हुए हाथ मांसल, सुडौल और छोटे थे। वे पाँचों अपने तन को लम्बे ढीले वस्त्रों में छिपाए थे।

मेजर ने फूलों में से एक लाल फूल उठाते हुए कहा—"कितना पैसा लेगा?" साथ ही हाथ से इशारा किया।

बालक ने उनका आशय समझ कर उत्तर दिया—"रूपी-रूपी।"

मेजर ने हँस कर कहा—"एक का या पाँचों का?" और उन पाँचों डलियों की ओर संकेत किया।

बालक उनका आशय समझ कर हँस पड़ा। उसके साथ उसके दूसरे साथी भी हँसने लगे।

मेजर की दृष्टि उन सबकी दृष्टियों से टकराती हुई सबके पीछे एक वृक्ष की आड़ में खड़े हुए बालक पर पड़ी, जो उनकी ओर मुखातिब नहीं था। उसका शिर, मस्तक लाल ऊनी कनटोप से ढका था, और उसका लबादा तिब्बती लामाओं के सदृश था। ज्यों ही मेजर की दृष्टि उसकी दृष्टि से टकराई त्यों ही उसके फूलों की टोकरी उसके हाथ से गिर पड़ी। तुरन्त ही वह बैठ कर फूल चुनने लगा। मेजर उसकी सहायता के लिए आगे बढ़े, किन्तु अन्य चारों ने उन्हें घेर कर रास्ता बन्द कर दिया।

मेजर ने उन गिरे हुए फूलों की ओर संकेत करते हुए कहा—"इनको उठाना है। तुम क्या अपने साथी की सहायता नहीं करोगे?"

उन्होंने उनके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। शायद समझे नहीं। अभी तक मेजर के हाथ में रिवाल्वर था। वह उसे अपनी कमर में खोंसने वाले थे, कि पहले वाला बालक उसकी नली पकड़ कर अनजान भाषा में कुछ पूछने लगा।

मेजर ने इशारे से बताते हुए कहा—"यह बन्दूक है।" और संकेत से उसके हृदय भाग को छू कर बताने जा रहे थे कि यहाँ गोली लगने से आदमी मर जाता है; परन्तु जहाँ मेजर का हाथ उसके उर प्रदेश में लगा, वह बालक

चिहुँक कर पीछे हटा, और मेजर भी लज्जित तथा शंकित दृष्टि से उन सबको देखने लगे। उन्हें संन्देह हुआ कि बालक वेष में नारियां तो नहीं हैं। उनके शरीर में तडित्प्रवाह वेग से दौड़ने और शरीर रोमांचित होने लगा। निर्णय करने के लिए वह एक लड़के को पकड़ने के लिये दौड़े, परन्तु वे चारो इतनी क्षिप्रता से चारो ओर बिखर गए कि उनके देखते-देखते ही झाड़ियों में लुप्त हो गए।

उनके लुप्त हो जाने पर जब मेजर लौटे, तब भी पांचवां बालक बैठा फूल चुन रहा था। वह अपने कार्य में इतना दत्तचित्त प्रतीत हुआ कि मानों उसको न अपने साथियों के भागने की चिन्ता है, और न मेजर की संदिग्ध दृष्टि का कोई ध्यान है। मेजर ने उसका कनटोप एक झटके से उतार कर दूर फेंक दिया। उसके उतारते ही काले घुंघराले केशों की वेणी नागिन की भांति उसके दोनों कन्धों पर लहराने लगी। मेजर विस्मयविह्वल हो गए। बालक ने अपना शिर नीचे गड़ा लिया, और धीरे-धीरे मुस्कराने लगा। मेजर को निश्चय हो गया कि वह बालक वेष में नारी है। उनका मन चञ्चल होने लगा। लुब्ध दृष्टि से वह उसकी ओर देखने लगे। मनमें कुत्सित भावनाएँ जागृत होने लगी, और एकान्त उन्हें अधिकाधिक प्रदीप्त करने लगा।

उन्होंने उसके फूलों को ठुकराते हुए पूछा—"बोल तू कौन है ?"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया, मानो उसने कुछ सुना नहीं। मेजर ने चारों ओर देखा, और अपने को बिलकुल एकान्त में पाकर उसका हाथ पकड़ने की चेष्टा की। उसने पहले अपना हाथ पीछे हटाया, फिर मेजर के पकड़ लेने पर उसे ढीला कर दिया। मेजर उसे उठाने लगे, और वह भी धीरे-धीरे उठ-कर खड़ी हो गई, किन्तु उसका मुख और दृष्टि पृथ्वी की ओर झुके थे।

मेजर ने उसका चिबुक अपनी दो उँगलियों से ऊपर उठाते हुए कहा—"जरा मेरी ओर देखो तो।"

युवती ने अपना मुख नवोढ़ा की भांति एक ओर फिरा लिया।

मेजर उसकी उँगलियों को दबाने लगे। युवती ने अपना हाथ बिलकुल ढीला कर दिया। मेजर उसको अपने आलिंगन-पाश में बद्ध करने के उद्देश्य से

उसे अपनी ओर घसीटने लगे। वह कुछ-कुछ विरोध करती हुई घसिटने लगी। मेजर ने उसकी गर्दन में हाथ डालने का प्रयत्न किया, परन्तु वह सहसा छिटक कर दूर हो गई, और शोर मचाती हुई जंगल की ओर भागने लगी। मेजर की वासना उद्दीप्त हो चुकी थी। वह विह्वलता से उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे दौड़ने लगे। युवती एक वृक्ष के मोटे तने की आड़ में छिप गई। वह इस समय चुप होकर कनखियों से मेजर को देखती, मुस्कराती हुई पास आने का निमंत्रण दे रही थी। मेजर ज्योंही दौड़कर उसके पास पहुँच कर उसके एक हाथ को पकड़ पाए थे कि वह उसे एक झटके से छुड़ाकर एक दूसरे वृक्ष के तने की आड़ में छिप गई। मेजर उधर लपके, और एक ही छलांग में उसके पास पहुँच-कर इस बार जोर से उसका हाथ पकड़ कर बोले—"अब नहीं छुड़ा सकती।"

युवती ने विशुद्ध भारतीय भाषा में उत्तर दिया—"अब मैं अपने को छुड़ाना भी नहीं चाहती।"

कंठस्वर मेजर के मस्तिष्क में टकरा कर प्रकाश कौर की स्मृति कराने लगा। उन्होंने चकित होकर पूछा—"सच बताओ, तुम कौन हो। जरा अपना मुख इधर घुमाओ।"

"मुख क्या घुमाऊँ, तुमने अब भी नहीं पहचाना। आह, तुम मर्द लोग बड़े बेवफा होते हो।"

मेजर ने उत्फुल्ल कंठ से कहा—"अरे प्रकाश, तू यहाँ आ पहुँची?" कहते हुये मेजर ने उसे अपने आलिंगन पाश में भर लिया।

१४

मानसिक उद्वेग कम होने पर दोनों एक शिलाखंड पर बैठ गए, और वन की सुषमा देखते हुए अपने-अपने विचारों में कुछ देर लीन रहे। मेजर के हाथ में उसका हाथ दबा हुआ था। उसे दबाते हुए मेजर ने पूछा—"तुमने अपनी बात पूरी कर ली।"

"तुमको विश्वास था कि विदाई के समय जो मैंने कहा था कि मैं तुमसे फ्रन्ट पर आकर मिलूंगी, झूठ कहा था?"

"सत्य कहूंगा, उस समय मैंने यही समझा था कि जुदाई के भावावेश में तुम ऐसा कह रही हो ।"

"तुमने मेरे कथन को झूठ अथवा मन बहलावा इसलिए समझा था कि तुम्हें तिब्बत की नारियों की पतिभक्ति का ज्ञान नहीं है ।"

"तिब्बत की नारियां क्या भारत की नारियों से भिन्न हैं ?"

"मैं विश्लेषण नहीं करती, केवल इतना जानती हूँ कि तिब्बत की नारी पति परायण होती है, और वह अपने पति का साथ जंगलों तथा पहाड़ों में भी नहीं छोड़ सकती । वह पति के सुख-दुख की अभिन्न साथिन है, और हर हाल में खुश रहती है ।"

"यह भी कहो कि जहां पति की बुद्धि काम नहीं देती, वहां वह अपनी बुद्धि-ज्ञान से उसकी कठिनाइयों को दूर करती है । सचमुच प्रकाश, मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि तुम इतनी साहसी हो सकती हो ।"

"पुरुषों को नारी के अथाह, असीम प्रेम का ज्ञान हो नहीं सकता, क्योंकि तुम लोग घोर स्वार्थी, कपटी, और मिथ्याचारी होते हो ।"

"नारी और नर की ऐसी भावनाएँ शाश्वत हैं । पुरुष भी नारी को यही उलहना सदा से देता आया है ।"

"गलत है, बिल्कुल झूठ है । पुरुष का प्रेम कभी निस्वार्थ नहीं होता । वह नारी को अपनी एक वासना की तृप्ति मात्र समझता है । उसमें दृढ़ता, अडिगता, और निष्कपटता का अभाव है ।"

"और नारी ?"

"वह अपने पति के लिए मरना जानती है । घोर से घोर कष्टों, आपत्तियों से सहिष्णुता के साथ लड़ती अपनी मर्यादा की रक्षा करती है, और छलिया पति की प्रवंचना को टुक ध्यान न देते हुए उस पर बलि हो जाती है ।"

मेजर निरुत्तर होकर पृथ्वी की ओर देखने लगे ।

विजयश्री से प्रकाश का मुख दीप्त हो रहा था । उसके नयन युगल चमक रहे थे । उसने कनखियों से देखते हुए कहा—"मैं तुमसे अनुमति लेकर ही यहां आई हूँ, और तुमसे मिलने की जो उत्कट इच्छा थी, उसी के बल से इस बीहड़ प्रदेश में अनेकानेक बाधाओं को पार करती, तुम्हारे पास पहुँच सकी

हूँ। नारी के अनन्य प्रेम का यह उदाहरण तुम्हारे सामने है कि नहीं।"

"है, मेरी रानी, है। तुमने मुझे अपना गुलाम बना लिया है।"

"यह भी झूठ है, कपट है, प्रवंचना है।"

"तुम्हें विश्वास नहीं होता ?"

"विश्वास कैसे हो, जब तुमने जंगल में एक बनचरी को देखकर मेरी याद भुला दी। मैं भी मनुष्य हूं, तुम्हारी तरह विरह–विदग्ध हो सकती हूँ।"

"जब मेरा हाथ यकायक उस बालक वेषधारी युवती के वक्षस्थल से लग गया तब मुझे शंका हुई कि ये लोग हकीकत में बालक नहीं, युवतियां हैं, तब उनकी असलियत जानने के लिए उन्हें पकड़ने दौड़ा था।"

"मैं उनकी बात नहीं कहती, अपने सम्बन्ध में कहती हूँ।"

"जब तुम अकेली रह गई, तब उनका खुलासा तुमको पकड़ कर जानना चाहता था।"

"नारी को नर की वास्तविक भावनाओं को जानने में कोई प्रयास नहीं करना पड़ता। यह सिद्धि उसकी जन्मजात है। व्यर्थ बहानेबाजी मत करो।"

"जो हुआ उसे क्षमा करो।"

"मैं कर क्या सकती हूँ, परन्तु मेरा विश्वास तुम्हारे ऊपर से उठ गया।"

"ऐसा न कहो, मेरी रानी ! मैंने अभी तक विश्वासघात नहीं किया।"

"जानती हूँ, किन्तु आज कर देते।"

"मैं माफी चाहता हूँ।"

"माफी तभी हो सकती है, जब तुम मुझे सहेलियों के साथ रहने की इजाज़त दोगे।"

"जब तुम दिल्ली से यहां चली आई, तब मैं……।"

"दिल्ली से यहां आ सकी हूँ, वह तुम्हारे प्रेम की शक्ति से, और यदि अब रहूँगी तो तुम्हारी भक्ति और अनुमति से।"

"पहले यह बताओ कि ये लड़कियाँ कौन हैं ?"

"कहाँ तो, मेरी सहेलियाँ हैं, जिनके साथ बालपने में खेलती थी।"

"यहाँ तुम्हारा बाल्यकाल बीता था ?"

"नहीं बीता तो तिब्बत में, परन्तु मेरी माता कुछ दिनों तक तोवांग मठ में रही थी, अपनी एक तपस्या पूर्ण करने के लिए। तोवांग से लेकर जांग और सेला तक का क्षेत्र मेरा जाना-बूझा है। बचपन से मैं बनचरी रही। इन सखियों के साथ बड़ी-बड़ी दूर तक घूमा-फिरा करती थी।"

"परन्तु तुमने कभी इसका जिक्र नहीं किया।"

"ऐसा कोई प्रसंग नहीं आया। तोवांग से कुछ दूर तिब्बत की सीमा आरम्भ होती है। यहाँ के मोंपा जाति बौद्ध है। तिब्बत की भांति यहाँ भी लामाओं की प्रधानता है। यहाँ से थोड़ी दूर जंगल के उस पार एक छोटा सा गांव है। उसका नाम है कोवांग। पहले वहाँ एक लामा रहते थे जो तीनों काल का ज्ञान रखते थे। मेरी माँ उनके मठ में भी कुछ दिनों तक ठहरी थी। तभी इन लोगों से दोस्ती हो गई थी। कई साल बाद मिली, लेकिन उन सबों ने मुझे पहचान लिया।"

"तब तुम अवश्य इस भूमि से परिचित हो ?"

"हाँ, यहाँ का जंगल बड़ा दुर्गम है, परन्तु केवल वही इसको पार कर सकते हैं, जिनको यहाँ की पगडन्डियां मालूम हैं।"

"तुम वाकिफ हो।"

"पहली याददाश्त कुछ धुंधली हो गई थी, परन्तु दो-चार दिनों में वह ताजी हो गई।"

"तुमको कैसे मालूम हुआ कि मेरी तैनाती इस जगह हुई है ?"

"यह सब भेद क्यों बताऊँ ?"

"मैं तुम्हारी कारगुजारी जानना चाहता हूँ। तुम बड़ी जीवट स्त्री हो।"

"नारी की शक्ति प्रेम में है। प्रेम ही उसकी सब कठिनाइयों को सरल करता है।"

"कौन फौजी टुकड़ी कहां लगाई गई है, इसका ज्ञान बड़े-बड़े अफसरों

को नहीं होता । सब काररवाई अत्यन्त गुप्त होती है, फिर तुम्हें मेरा पता कैसे चल गया ?"

"मुझे तुमने बताया था कि ब्रिगेडियर गुरुबन्टासिंह के अधीन तुम नियुक्त हुए हो ।"

"हाँ, दिल्ली हेडक्वार्टर से यही हुक्म मिला था ।"

"तुम मशहूर तोपची हो, यह भी मुझे मालूम था ।"

"हाँ, तोपखाने में काम करता था ।"

"अब स्पष्ट है कि तुम्हारी नियुक्ति किसी ऐसे मोरचे पर की जाएगी जो अत्यन्त महत्व का हो। कोवांग निवासियों को ब्रिगेडियर का नाम ज्ञात है ।"

"उनको ब्रिगेडियर का नाम कैसे ज्ञात हुआ ?"

"यह मैं नहीं बता सकती । सम्भव है कि आपके सिपाहियों से पूछ-तांछ कर जान लिया हो ।"

"हो सकता है, फौजी गश्त हुआ करती है, और यहां के निवासियों को धैर्य बँधाने का काम भी हमारे सिपुर्द है ।"

"अब आप ही देखिए, कि क्या आपका पता लगाना कोई मुश्किल है?"

"नहीं ।"

"जिस प्रकार दो और दो मिलकर चार होते हैं, उसी प्रकार मैंने जान लिया कि जहाँ ब्रिगेडियर का जत्था होगा, वहीं आप होंगे ।"

"बेशक ।"

"रह गया प्रश्न कि मैंने कैसे जाना कि आपकी तैनाती इस पहाड़ी पर हुई है ?"

"हाँ ।"

"वह इस तरह कि जो सबसे पहली चौकी होगी, अथवा जिस रास्ते से चीनी आक्रमणकारी आवेंगे, वहीं तुम्हारी नियुक्ति होगी, ताकि तुम उनको रोक सको ।"

"बिल्कुल ठीक ! प्रकाश, तुमने सेनापति का मस्तिष्क पाया है ।"

"मैं सेनापति ही हूँ। तुम मेरे अधीन कर्मचारी मात्र हो।"

"तहे दिल से तुम्हारी कमान मन्जूर करता हूँ।"

"सत्य कहते हो, फुसलाते तो नहीं हो?"

"मैं आज से तुम्हारी मातहती में उसी प्रकार काम करूँगा, जैसे ब्रिगेडियर की आज्ञाओं का पालन करता हूँ।"

"देखो, मुकर न जाना।"

"हरगिज नहीं।"

"अच्छा, मुझे अपने शिविर में अपने साथ रखो।"

मेजर सोच–विचार में पड़ गए।

"चुप हो गए न।"

"किसी को अपने शिविर में रखना फौजी नियमों के बिरुद्ध है। और फिर पत्नी को!"

"तब किस मुँह से मेरी मातहती स्वीकार की?"

"तुमने पहले अपनी सहेलियों के साथ गाँव में रहने की इच्छा प्रकट की थी।"

"मैं गांव में रहने के लिए दिल्ली से नहीं आई हूँ।"

"क्या अपनी चारो सहेलियों के साथ फौज में रहना चाहती हो?"

"चार ही क्यों, आठ दस हो सकती हैं।"

"तुम क्या कह रही हो?"

"वही, जो मैं कहना चाहती हूं।"

"यह असंभव है।"

"असंभव तुम्हारे लिए है, मेरे लिए कुछ भी असंभव नहीं है।"

"बताओ कि कैसे तुम इसे संभव बनाओगी?"

"पहले बचन दो कि तुम मेरा साथ दोगे?"

"यदि तुम्हारी जान जोखिम न हो।"

"मैं अपनी मुसीबत से आप बच लूंगी। मैं शैशव से ही मुसीबतों से खेली हूँ।"

"मुझे तुमसे सहयोग करना पड़ेगा । कहो, यह असंभव कैसे संभव करोगी ।"

"इस प्रकार कि हम सब लोग मर्दाने वेष में रहेंगी । यह तुमने देख ही लिया है कि हम लोग किस प्रकार वेष बदलने में चतुर हैं ।"

"यह सब तुमने कहां सीखा ?"

"कह चुकी हूं कि प्रेम सब कुछ सिखा देता है ।" कहती हुई वह उनके उर स्थल से लग गई । उसके घुँघराले बाल मेजर की ठुड्डी छूने लगे, और उनसे सुरभि निकल कर उनके मन को चलायमान करने लगी ।

"प्रकाश, तुम मुझे कितना प्यार करती हो ! तुमको पाकर मैं धन्य हो गया ।"

"धन्य अभी नहीं, अब होगे जब तुम लोगों के बीच मैं रह कर दिखा दूंगी ।"

"तुम अत्यन्त साहसी हो ।"

"साहस हमारा जन्मजात भाई है । देखो, तुम्हारे साथ रहने के लिए मैंने न-मालूम कौन-कौन उपाय सोचे, और कैसे-कैसे यत्न किए हैं ?"

"बताओ, भगवान ने जितनी बुद्धि तुमको दी है, उसका शतांश भी मुझे नहीं दी ।"

"फौजी सिपाहियों के पास बुद्धि होती है, यह किसने कहा ? वे लड़ने में शूरवीर होते हैं–बुद्धि में नहीं ।"

"अब यही मानना पड़ेगा । अपनी योजना बताओ ।"

"साधारण बातों और साधारण रीति को अपना कर ही काम साधने में सुविधा होती हैं । असाधारणता सबका ध्यान आकर्षित करती है ।"

"तुम बताती नहीं, फिजूल भूमिका बांध रही हो ।"

"सुनो ! मैं अपनी सहेलियों के साथ बालक वेष में रहूँगी, और तुम्हारे फौजी साथियों के लिए जंगल से फूल चुन कर लायेंगी, गुलदस्ते बना कर भेंट करेंगी, दिन में शिविरों में सेवा-टहल करेंगी, और रात में चली जाया करेंगी ।"

"तुम ऐसा कर सकती हो, किन्तु गांव की लड़कियाँ कैसे कर सकेंगी।"

"उसकी चिन्ता तुम न करो। यह देश बहुत भूखा है, जहाँ इनको कुछ रुपए, खाने की वस्तुएँ, कपड़े दिए गए, वहां दिन भर क्या, रात भर रह सकती हैं।"

"खाना-कपड़ा, पैसा सब लोग खुशी-खुशी दे सकते हैं।"

"फिर क्या चाहिए। वे सब बड़े मन से आप लोगों की सेवा करेंगी। उनसे घनिष्टता पैदा करना आप लोगों का काम है।"

"हां, यह संभव है, यदि ऊपरी अफसर न जाने।"

"मैंने ऐसा प्रबन्ध किया है कि एक-एक मोंपा बहिन आप के सिपाहियों और अफसरों की सेवा में पहुँच जाये, जिसमें किसी को ईर्ष्या न हो, और बात भी न फूटे।"

"तुमने क्या मोंपा लड़कियों की फौज तैयार कर ली है।"

"दस-बीस को फौज की संज्ञा नहीं दी जा सकती। तुम्हारी अनुमति और सहयोग मिलने पर मैं प्रत्येक सिपाही की सेवा के लिए एक-एक मोंपा बहिन का प्रबन्ध कर सकती हूँ।"

"तुम क्या फौजी शिविर को रंगमहल में परिवर्तित करना चाहती हो।"

"तुम्हारे साथ रहने की लगन मुझसे सब कुछ करवा सकती है। मैं क्या करूँ, मैं तुमसे विलग एक क्षण नहीं रह सकती। न मालूम तुमने कौन सा जादू मेरे ऊपर डाल दिया है। तुमको छोड़ कर मुझसे मरा भी न जायगा।"

कहते-कहते उसके नेत्र अश्रुपूर्ण हो गये। मेजर उनको देख कर विकल हो उठे। मेजर ने उसे सान्त्वना देते कहा—"फिजूल मत बको। तुम्हारी इन बातों से दिल चाक होता है। जियेंगे साथ तो मरेंगे भी साथ-साथ।"

फफकते हुए उसने कहा—"मैं अपनी जन्मभूमि में आई हूँ, यहीं तुम्हारे कदमों में मेरी मृत्यु हो जाय, बस इतनी ही अभिलाषा है।"

मेजर उसके आंसुओं को पोंछते हुए बोले—"यह रणभूमि है, यहां अशुभ भावनाएं पोषित करना, अशुभ बात निकालना, ठीक नहीं है। प्रार्थना करो कि हम दुश्मन को हरा कर सुख-शान्ति से अपने घर लौट चलें।"

"ऐसा ही होगा। मैं कवच बन कर तुम्हारी रक्षा करूँगी। मेरी सहेलियों में कई बन्दूक चलाना जानती हैं। यदि उन्हें थोड़ी शिक्षा दे दी जाय, तो वे कठिन समय पर आप लोगों की सहायता कर सकती हैं। मुझे तुम तोप चलाना सिखाना, देखना मैं कितनी जल्दी सीख लेती हूँ।"

"तुम अभी से मन के लड्डू खाने लगी, अभी तुम लोगों की सेवाएं हमारे सिपाही और अफसर मन्जूर करते हैं या नहीं।"

"सिपाही और अफसर मर्द हैं, जवान हैं, और मेरी सहेलियां नारी हैं, युवती हैं; सुन्दरी हैं, हर प्रकार की सेवा कर सकती हैं, फिर क्यों सिपाही हमें नामंजूर करेंगे। प्रकृति की शोभा भूमि में नारी की शक्ति असीम होती है। पुरुष उसका दास बनकर रहता है।"

"ठीक है मेरी रानी। तुम अपना कार्य करो, मैं सिपाहियों को उत्साहित करता रहूँगा, और आंखें जरूरत पड़ने पर बन्द कर लूंगा।"

"बस इतनी ही तुम्हारी सहायता चाहिए। मेरी सहेलियां स्वयं आपके सिपाहियों और अफसरों को उंगलियों पर नचा लेंगी। अच्छा, अब तुम जाओ और मैं अपना उद्देश्य पूरा करने जाती हूँ।"

यह कहकर वह छिटक कर दूर खड़ी हो गई, और जब तक मेजर उसको पकडने को उठे-उठे, तब तक वह जंगल में छिप गई।

१५

सेठ ब्रजमोहनदास जब नवाबजादा, सन्तोष और नैयर के साथ मिसेज रिपुदमन सिंह की कोठी पहुंचे, तब गोधूलि बेला थी, और सड़कों पर विद्युत दीप जल गए थे। कोठी का फाटक बन्द था, और दो सिख जवान पहरे पर थे। नवाबज़ादा ने ब्रजमोहनदास को एकान्त में ले जा कर कहा-"मामला गठता हुआ नहीं मालूम होता। वह अभी तक लौटी नहीं है। आप मेरे दो साथियों के साथ किसी रेस्ट्रां में बैठ कर चाय पीजिए। मैं अकेले कुछ कोशिश करूँगा। शायद कोई मतलब निकल आवे।"

ब्रजमोहनदास को कोई आपत्ति नहीं थी। सन्तोष और नैयर के साथ

वह चले गए। उनके जाने के बाद नवाबज़ादा फाटक पर आकर बोले "सरदार जी, क्या आप सरदार झण्डा सिंह का पता बता सकते हैं ?" और यह कहते हुए उन्होंने दस रुपयों का नोट उसकी ओर बढ़ा दिया।

उसने बड़ी बेरुखी से जवाब दिया—"मैं किसी झन्डा सिंह को नहीं जानता।" और नोट की ओर लालायित दृष्टि से देखता चला गया।"

नवाबजादा ने पहले वाले नोट के साथ एक दूसरा दस रुपयों का नोट मिलाते हुए कहा—"ज़रा सुनिये तो, आप न-मालूम क्यों नाराज़ हो गए। झण्डा सिंह को अगर नहीं जानते तो होशियार सिंह को ज़रूर जानते होंगे। वह निकोदर ज़िला जालन्धर के रहने वाले हैं, और यहां किसी चीनी के जूतों की दूकान में सन्तरी हैं।"

दूसरा सिख टहलता हुआ वहां आया, और बोला—"हम लोग दिल्ली में किसी को नहीं जानते। हम जालंधर के रहने वाले ज़रूर हैं, लेकिन निकोदर हमारे गांव से दस-बारह मील है। आपको उनसे क्या काम है ?"

नवाबज़ादा ने तीसरा नोट मिलाते हुए कहा—"शाहदरा में मेरा एक मिल बन रहा है, उसके माल-असबाब की निगरानी के लिए मुझे बारह जवान चाहिए। झन्डासिंह और होशियारसिंह कुछ दिनों हमारे पास मुलाजिम रह चुके हैं। वे अपने दूसरे साथियों को लेने के लिए मुझसे इजाज़त और दो सौ रुपए पेशगी लेकर चले गए। महीने भर से उनका इन्तिजार कर रहा हूं, लेकिन न वे लौटे और न अपने साथियों को भेजा। एक मजदूर से सुना कि उन्होंने किसी चीनी सौदागर के यहां नौकरी कर ली है।"

"यह दिल्ली है दिल्ली। यहां धोखा-धड़ी का बाजार हमेशा गर्म रहता है। अब आप घर में बैठिए। न झन्डासिंह वापस आयेंगे और न होशियार सिंह। हां, अगर आपको जवानों की ख्वाहिश हो तो मैं बारह क्या बारह सौ का इन्तिजाम कर सकता हूं, बशर्ते तनख्वाह अच्छी और मुनासिब हो।"

नवाबज़ादा ने अब पचास रुपए पूरे करते हुए कहा—"पचास रुपए आप दलाली के ले लीजिए, लेकिन दस-बारह भरोसेमन्द जवानों को

बताइए । उफ, बड़ी शिद्दत की प्यास लगी है । क्या आप पानी पिलाने की मेहरबानी करेंगे ? ''

''जरूर, आइए भीतर नल पर पानी पी लीजिये ।''उसने नोटों को अपनी जेब के हवाले करते हुए कहा ।

नबाबज़ादा ख़ुशी-ख़ुशी अन्दर घुसे । भीतर लान में पेड़-पौधों की आबपाशी के लिये नल लगा था । वह कनखियों से चारों ओर देखते जाने लगे ।

दोनो सिख आपस में फुसफुसाने लगे, और उनमें से एक ने कहा - ''कहीं, यह कोई भेदिया न हो ।''

दूसरे ने उत्तर दिया—''सी. आई. डी. रुपये नहीं लुटाती । शक्ल-सूरत से अमीर है । कोई मोटी मुर्गी है । पचास रुपए तो बिना किसी मेहनत के मिल गए । और अगर हम अपने कुछ साथियों को नौकर करवा दें, तो उनका और हमारा दोनों का भला होगा ।''

''अनजान आदमी का क्या भरोसा ? तुमने उसको भीतर बुला लिया । अगर चुंग-च्यांग को मालूम हो गया तो आधा रुपया नहीं मिलेगा ।''

''पहले उसको खबर नहीं होगी, दूसरे हमें रकम मुफ्त की मिल रही है । मुफ्त की मुर्गी काज़ी को भी हलाल होती है । मुझे इसकी बात पर यकीन आता है । अगर नौकरी पर कोई ज़रब आएगा, तब इसके यहां नौकरी मिल जाएगी । मुझे बात करने दो, तुम डरपोक हो । देखना, अभी सौ-पचास और घसीटे लेता हूं ।''

नवाबज़ादा ने नल के पास जा कर कहा—''सरदार जी नल बन्द है ।'' यह कह कर वह लौटने लगे ।

उसी सरदार ने पास आकर कहा—''नल बन्द है, इसका ख्याल नहीं रहा । आइये, मेरी कोठरी में, वहां पानी पीजिए ।''

यह कह कर वह उन्हें अपनी कोठरी की तरफ जो एक कोने में बनी थी, ले जाने लगा । रास्ते में उसने कहा-''सेठ जी, मैंने अपने साथी से पूछा था, वह कहता था कि फी आदमी डेढ़-सौ रुपयों से कम कोई नहीं लेगा ।

बात यह है कि इधर चीन से लड़ाई छिड़ गई है। जवान सब फौज में भरती हो रहे हैं।"

"मुझे मंजूर है। तुमको देख कर मेरे मन में यह ख्याल दौड़ गया कि तुम्हारे जैसे मुस्तैद आदमी हों, तो इतनी तनख्वाह कोई ज्यादा नहीं है।"

"अगर आप मुझे रखना चाहते हों, तब मैं भी तैयार हूं, लेकिन तनख्वाह तीन सौ से कम नहीं लूंगा।"

"मैं अपने जमादार को तीन सौ रुपए देता हूं, तुम्हें भी तीन सौ दूंगा, लेकिन निगरानी पूरी रखना होगा।"

"सिख नमक को हलाल कर के खाता है। आइए, यही मेरी कोठड़ी है। भीतर बैठियेगा या बाहर ?"

"जहाँ बात करने की सुविधा हो। क्या मकान में कोई नहीं है ?"

"नहीं, बिल्कुल खाली है।"

"मालिक कौन है ?"

"मुझे नहीं मालूम। एक तार आया था, उसमें मकान मालिक का नाम लिखा होगा। आप खुद पढ़ लीजिए। मैंने अंग्रेजी नहीं पढ़ी।"

यह कह कर उसने तार का लिफाफा अपनी जेब से निकाल कर उनको दिया। नवाबजादा पढ़ने लगे। यह तार वही था जो मिनचू ने मिरजापुर स्टेशन से दिया था। उसमें लिखा था—"योजना के अनुसार ठीक-ठीक प्रगति हो रही है। कलकत्ता में हम लोग मेट्रोपालीटन होटल में ठहरेंगे। मेरे पहुंचने की सूचना साथियों को दे दो। लूंग भी अपने मेजर की तलाश में जा रही है। पूरा हाल कलकत्ता से भेजूंगी।" भेजने वाले के नाम के स्थान पर लिखा था-तुम्हारी बेटी।"

नवाबजादा ने उसे वापस देते हुए कहा—"मिसेज रिपुदमनसिंह को यह तार भेजा गया है। क्या इस कोठी की मालिक कोई जनाना है ?"

"मुझे नहीं मालूम कि मालिक जनाना है या मर्दाना। चीनियों के होटल के मैनेजर च्यांग साहब ने इस खाली मकान का पहरा देने के लिए हम चार जवानों को तैनात किया। तनख्वाह दो-दो सौ माहवार तय हुई जिसमें

सौ-सौ रुपया हमें पेशगी मिल गया। जिन जबानों को आपके मील में रखवा-ऊँगा, उनको भी आधी तनख्वाह पेशगी देना होगा।"

"मैं अपनी मन्जूरी दे चुका हूं। हाँ जी, च्यांग साहब का होटेल क्या जाल घर में है?"

"नहीं जी, यहीं कनाट सर्कस में मक्खियाँ मारता है।"

नवाबजादा ने हँसते हुये पूछा "मक्खियाँ क्यों मारता है?"

"अजी मैंने तो एक दिन ही वहाँ ठहर कर सब पता लगा लिया। दो-चार चीनियों के अलावा कोई वहाँ नहीं झाँकता। मैं तअज्जुब करता हूँ कि इतने नौकरों का खर्च कैसे निकलता होगा?"

"नौकर सब चीनी होंगे?"

"हाँ जी, सब चिपटी नाक वाले हैं।"

"च्यांग साहब से मिलने जाऊँगा।"

"वह कहीं बाहर चला गया है। होटेल का सारा अमला बदल गया है। पुराने नौकरों में कोई देख न पड़ा, जब आज दोपहर को तार देने गया था।"

"शायद इसीलिये तुमने तार वहाँ नहीं दिया।"

"च्यांग साहब की हिदायत थी कि उसके अलावा किसी दूसरे को कोई खबर या खत वगैरह न दिया जाय।"

"यह तुम्हारा साथी कुछ सख्त मिजाज मालूम होता है।"

"गाँव से ताज़ा-ताज़ा आया रंगरूट है। शहर की तहजीब से नावाकिफ है।"

"अच्छा, तुम कब तक आदमियों का इन्तिजाम कर सकोगे?"

"आप परसों आइयेगा। गुरू की मेहरबानी से आपका काम फतेह होगा।"

"अच्छा, मैं अब जाऊँगा। ये पचास रुपए अपने मेहनताने के लीजिए।"

उसने रुपये जेब में रखते हुए कहा—"बातों-बातों में मैं भूल गया था

कि आपको पानी पिलाना है।"

"अब तकलीफ करने की कोई जरूरत नहीं है। किसी रेस्ट्राँ में चाय पी लूंगा।"

"वाह, यह कैसे मुमकिन है कि आपको बिना पानी पिलाए जाने दूं।"

यह कह कर वह अपनी कोठरी में घुस गया, और शीशे के गिलास में पानी लाकर पेश किया। नवाबजादा ने दो-घूंट पी बाकी फेंक कर कहा—"लब नम कर लिए, प्यास तो चाय से बुझेगी। अब परसों आऊँगा, इसी वक्त। तब तक आप जवानों को ढूंढ़ रखियेगा।"

"जरूर, जरूर। मैं कल छुट्टी लेकर खुद ढूंढ़ने जाऊँगा। आप यकीन रखिए। गुरुभक्त सिंह की बात कभी खाली नहीं जाती।"

"आपका नाम सरदार गुरुभक्त सिंह है?"

"हाँ जी, माँ-बाप ने यही नाम दिया है।"

नवाबजादा ने फाटक पर आकर विदा ली और अपने साथियों को ढूंढ़ने चल दिए।

१६

नवाबजादा अपने साथियों के साथ अपनी कोठी वापस आए और उन्हें बैठाने के बाद बोले—"दोस्तो, नेक कामों में खुदा हमेशा मदद करता है। सौ रुपयों ने हमारा वह काम बनाया, जिसको हम ख्वाब में भी न सोच सकते थे। सब बातें आप लोगों के सामने रखता हूँ, संजीदगी के साथ सोचिए—विचारिए।"

सन्तोष—"आप रास्ते भर इस तरह गमगीन रहे, जैसे मिसेज रिपुदमनसिंह की कब्र पर फातिहा पढ़कर लौट रहे हों।"

नवाबजादा—"दोस्त माफ करना, मैं जन्जीर की कड़ियां जोड़ने में मशगूल था, इसलिए आप साहबान से और वहां बात करना मुनासिब न था, इसलिए आप लोगों को इस तखलिए के मुकाम पर ले आया।"

नैयर—"तमहीद न बांधिये। बताइए, आपके सौ रुपयों ने क्या

करिश्मा किया ? कोई राज खुला ?''

नवाबजादा—''मेरे दिमाग में अब बातें बिल्कुल साफ हो गई हैं; लेकिन मामला अहम है, इसलिए आप भी अपने-अपने तरीके से सोचिए।''

सन्तोष—''अजी किबला कुछ फरमाइए तो।''

नवाबजादा ने अपनी कारगुजारी सांगोपांग वर्णन करने के पश्चात् कहा—''अब आप लोग सोचिए।''

नैयर—''सोचना क्या है, बात बिल्कुल साफ हो गई। इस खूसट ने हमारी आँखों में धूल झोंकी है।''

सन्तोष—''हमारे सन्देहों की आज पुष्टि हो गई।''

नैयर—''जी हां। सन्तोष और मैं बहुत पहले इस नतीजे पर पहुंच चुके थे कि वह कोई चीनी गुप्तचर है, और भेद जानने के लिए 'खैर-ए-फलक' का जाल बिछाया है।''

सन्तोष—''हम लोगों की जो इतनी आवभगत और बिना पैसे खातिरी होती थी उसकी वजह यही थी कि वह हमसे हमारे भेद लेना चाहती थी।''

नवाबजादा—''आप दोनों सरकारी अफसर होने से आपको जाल में फँसाना ठीक था। लेकिन हम लोगों से कौन भेद हासिल होता था ?''

नैयर—''ऊँचे तबके के लोगों से मेल-मुलाकात, आमद-रफ्त से उसका सामाजिक रुतबा बढ़ता था। वह इज्जतदार, अमीर, उदार और रंगीन मिजाज बेवा का पार्ट अदा कर रही थी।''

सन्तोष—''हम लोगों की वजह से उसका सामाजिक स्तर ऊंचा उठा, और उसकी लड़की 'मिस इन्डिया' बन गई।''

नवाबजादा—''अब मालूम हुआ कि उसमें आप दोनों साहबान का हाथ था।''

नैयर—''जी हाँ। हम लोगों को ऐसा भरमाए रही कि वह जो कहती, हम दोनों सर-आँखों पर उठाते।''

नवाबजादा—''खैर-ए-फलक, हम सबको अन्धा बनाए थी; लेकिन

इतनी खूबसूरत लड़कियां कहां से इकट्ठा करती थी ?"

नैयर—"वह अकेली नहीं थी, उसके पीछे चीन की ताकत थी। चीन ने हमला करने से पहिले हमारे देश में गुप्तचरों का जाल बिछा दिया है। जासूस लड़कियों को इकट्ठा करना कोई मुश्किल नहीं था।"

नवाबजादा—"एक मकसद साफ हो गया, दूसरा क्या हो सकता है ?"

नैयर—"दूसरा मकसद होगा चीन की पंचमांगी सेना बनाना।"

नवाबजादा—"लेकिन हममें से कोई पंचमांगी नहीं बना।"

सन्तोष—"दूसरे कितने उसके मुरीद हुए, कौन जानता है ? सब काम एक जगह, और एक आदमी से नहीं होते। मुमकिन है कि यह उनका गुप्त सैनिक केन्द्र हो।"

नवाबजादा—"यही मेरा ख्याल है। उस मकान की इतनी हिफाजत करने के मतलब हैं कि उसके अन्दर कोई न कोई गहरा भेद छिपा है।"

नैयर—"सुन्दर, दर्शनीय आवरण के पीछे प्रायः गन्दगी रहती है।"

सन्तोष—"उसके शीशमहल के भीतर कोई गुप्त रहस्य अवश्य है। उस कमरे में हम लोग कभी नहीं ले जाये गये।"

नवाबजादा—"जब शैतान की खाला किसी नये शिकार को फांसती थी तब उसका इस्तेमाल होता था। रमणी मोहन की पहली दावत उसी कमरे में हुई थी।"

अभी तक सेठ ब्रजमोहन दास चुप बैठे उनकी बातें सुन रहे थे। रमणी मोहन का जिक्र आने पर वह बोले—"जिसको आप लोगों ने मिस इण्डिया बनवाया, क्या वह इस औरत की औरस सन्तान थी ?"

नवाबजादा—"इस बाबत हमें कोई इल्म नहीं है; लेकिन दोनों के नाक-नकशों में जमीन-आसमान का फर्क है।"

सन्तोष और नैयर ने एक स्वर में अपनी सहमति प्रकट की।

ब्रजमोहन दास—"मेरा अनुमान है कि इन लोगों ने मेरे लड़के को किसी खास मतलब से उस मिस इण्डिया के द्वारा फोड़ लिया है।"

नवाबजादा—"लेकिन मैंने उसे होशियार कर दिया था।"

ब्रजमोहन दास—"इश्क अक्ल का बोझ उठा नहीं सकता।"

नवाबजादा—"बजा फरमाते हैं लेकिन आपने भी उसे खर्च की छूट दे रखी थी।"

ब्रजमोहन दास— "अकेले सब कार-बार सँभाल नहीं सकता, इसीलिए उसको डाक्टरी पेशे में नहीं जाने दिया। हालांकि यह उसकी इच्छा के प्रति-कूल था और जो कारबार देखेगा, उसे रुपयों की छूट देनी पड़ेगी।"

नवाबजादा—"फिर आपने उसकी शादी भी नहीं की ?"

ब्रजमोहन दास—"जिस लड़की को उसकी मां पसन्द करती है, उससे वह विवाह नहीं करना चाहता, इसलिये दोनों के झगड़ों से सम्बन्ध रुका हुआ है।"

नवाबजादा—"जब लड़का उसे नापसन्द करता है, तब छोड़ दीजिये। उसके मन की शादी कीजिये।"

ब्रजमोहन दास—"यही मैं कहता हूँ, परन्तु उसकी माँ अपनी एक सहेली से बचन हार चुकी है, इसीलिए दोनों अपनी टेक पर अड़े हैं। मेरी पत्नी पुराने विचारों और दृढ़ निश्चय की है।"

नवाबजादा—"आपके दूसरे लड़के भी हैं, उनमें से किसी की शादी उस लड़की से कर दीजिये। इस तरह सांप मर जायगा और लाठी भी नहीं टूटेगी।"

ब्रजमोहन दास—"अब कुछ ऐसा ही करना पड़ेगा। आपने अभी तक यह नहीं बताया कि आपके सौ रुपयों ने क्या-क्या हुनर दिखलाये।"

नवाबजादा—"जनाब आपके साहबजादे का सुराग मिल गया। वह अपनी आशना के साथ कलकत्ता के मेट्रोपालीटन होटल में मिलेगा।"

"आप लोग भी साथ चलें। कलकत्ता जाने वाले हवाई जहाज में चार सीटें सुरक्षित कराए लेता हूँ।"

सन्तोष और नैयर ने एक साथ कहा—"लेकिन हम लोग किसी तरह नहीं जा सकते।"

नवाबजादा—"ठीक है आप दोनों नहीं जा सकते। लेकिन एक काम आसानी से कर सकते हैं।"

नैयर—"क्या ?"

नवाबजादा—"आप लोग महकमा बचाव और घरेलू मामलों की वजारत से तअल्लुक रखते हैं, इसलिए मिसेज रिपुदमन सिंह के खिलाफ तलाशी वारण्ट जारी करवाकर इस मकान की तलाशी लेने की काररवाई करें।"

सन्तोष—"तब मामला पुलिस में देना पड़ेगा ?"

नवाबजादा—"यही मेरा सुझाव है कि कोई पुलिस को इत्तिला दे कि मिसेज रिपुदमनसिंह चीनी जासूस हैं, और आकाश होटेल में जो खून हुआ है, उससे उसका ताल्लुक है, और उसी वह दिन से फरार है।"

सन्तोष—"यह हो सकता है, लेकिन किसी को मुखबिर बनकर रिपोर्ट करना पड़ेगा। हम लोग मुखबिर बन नहीं सकते।"

नवाबजादा—"मुखबिर मैं बनूँगा।"

नैयर और सन्तोष एक साथ बोल उठे—"किबला, मुखबिर आप बनेंगे ?"

नवाबजादा—"क्यों ? मैं मुखबिर नहीं बन सकता, मुखबिर बनने में क्या हर्ज है ?"

सन्तोष—"हर्ज तो कुछ नहीं है, सिर्फ आपको सामने आना पड़ेगा।"

नवाबजादा—"मैं मुल्क और दोस्तों के लिए सब कुछ कर सकता हूँ।"

सन्तोष—"आप रिपोर्ट दीजिये, और मैं काररवाई करवाता हूँ।"

नवाबजादा—"आप बोलते जाइये, मैं लिखता हूँ। मैं एक मसविदा पहले तैयार करता हूँ, उसमें जो मुनासिब समझें, दुरुस्ती कर देवें।"

सन्तोष—"इसी वक्त ?"

नवाबजादा—"बेशक, इसी वक्त। पुलिस के किसी बड़े अफसर को बुलाकर मामला समझाइये, और सुबह उस मकान की तलाशी ले ली जाय।"

सन्तोष—"इतनी जल्दबाजी ठीक नहीं ? कहीं मामला उलट गया ?"

नवाबजादा— 'देर करना भी ठीक नहीं।"

सन्तोष—"अगर कहीं मामला उलट गया तो.....।"

नवाबजादा—"मामला उलट नहीं सकता, खून के मामले में पुलिस को पूरा अख्त्यार है। चीनी मुल्क के दुश्मन हैं, उसका तअल्लुक चीनियों से हैं, क्योंकि उसके पहरेदारों को चीनी होटल के मैनेजर च्यांग ने मुकर्रर किया है, और वह भी फरार है।"

नैयर—"सन्तोष कुछ डरपोक हैं। आप रिपोर्ट लिखिए, मैं सब काररवाई खुद करूँगा। मुल्क की हिफाजत का सवाल है।"

नवाबजादा खुशी-खुशी रिपोर्ट लिखने लगे।

१७

सरकारी कार्यवाही का जब श्रीगणेश हो जाता है, तब उसके आगे बढ़ने में कुछ देर नहीं लगती, अगर अफसरान उसमें दिलचस्पी लेते हैं। नवाब जादा की मुखबिरी रिपोर्ट पर तुरन्त अमलदरामद शुरू हो गया। अलका के पहरेदार गिरफ्तार किए गये और उसके साथ चीनी होटेल के कर्मचारी भी कैद कर लिए गए। मिसेज रिपुदन सिंह की गिरफ्तारी के वारण्ट के साथ उसके मकबूजा मकान की तलाशी का भी वारन्ट जारी हुआ। इतना सब उसी रात हो गया। प्रातःकाल सुपरिन्टेडेन्ट मोतबरान के साथ जिनमें नवाबजादा और सेठ ब्रजमोहन दास, तथा संतोष और नैयर भी थे, अलका का ताला तोड़ कर अन्दर प्रविष्ठ हुए। चारो ओर चीजें बिखरी पड़ी थीं और अतिशदान कागजों से भरा था। उस राख के ढेर में खोजने से कई कागज अधजले मिले। उनमें से एक बिल्कुल साबुत बच गया था। उससे मालूम हुआ कि वह मिस मिलर की कलकत्ता कारगुजारी की रिपोर्ट है। इसके अतिरिक्त अलमारियों में बहुत से पिस्तौल, कारतूस और खंजर मिले। एक कमरे में निशाना साधने की कई सहायक वस्तुएँ मिलीं। वह कमरा शब्द अभेद्य था। उसके भीतर मोटी नमदे की तहें जड़ी थी, जिससे मालूम होता था कि वह हथियारों के चलाने की शिक्षा देने के काम आता है। एक कमरे में जनाने-

मर्दाने कपड़ों का अम्बार अलमारियों में सजाया मिला। एक अलमारी में विलायती और देशी कारखानों की बढ़िया किस्म की शराबों की बोतलें थीं। सबसे आखिर में वे शीशमहल पहुँचे। उसकी सुन्दरता देख कर सभी मुग्ध हो गये।

नवाबजादा अपने सन्देहों को सत्य में परिणत होते देख, प्रसन्न हो रहे थे। उन्होंने आगे आकर कहा—"मेरा ख्याल है कि ये शीशे अपने पीछे कोई बहुत बड़ा भेद छिपाये हैं। इन शीशों को उखड़वाइये।"

पुलिस सुपरिटेन्डेन्ट हैरत से उन्हें देखता हुआ बोला—"इस कमरे की खूबसूरती क्यों नष्ट करवाते हैं?"

"अगर कोई नुकसान का तावान माँगेगा तो मैं उसको अदा करूँगा। मैं मुखबिर हूँ और दावे के साथ कहता हूँ कि इन शीशों के पीछे कोई बड़ा राज़ छिपा है।"

पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट ने सिपाहियों को शीशे उतारने का संकेत किया। उतारने में बहुत से टूट गये और जब सब उतर गये तब उनके पीछे चार फुट चौड़ा गलियारा साफ झलकने लगा। उसके देखने से मालूम हुआ कि कमरे की असली दीवाल से ४ फुट आगे लकड़ी की दीवाल थी जिसमें शीशे जड़े थे। जब तीसरी तरफ की दीवाल साफ हुई तो उसका फर्श लकड़ी का मिला, जो परीक्षा करने से पोला मालूम पड़ा। उसके तख्ते उखाड़े जाने लगे। एक तख्ता उखाड़ने में कुछ कठिनता हुई। जब वह कुल्हाड़ियों से चीरा गया तो नीचे उतरने को सीढ़ियां दिखाई दी। टार्च के प्रकाश में वे उतर कर जब नीचे आये, उन्हें एक कोठरी में डायनोमो मिला। पुलिस गैस बत्तियां मंगाकर आगे बढ़ी। अब कोठड़ियों के दरवाजे खोले जाने लगे। उनमें रखे शस्त्रास्त्रों को देख सब दंग रह गये। नवाबजादा की प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं था। संतोष और नैयर भी विस्मय विमुग्ध थे।

पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट ने शस्त्रास्त्रों को देख कर कहा—"यहाँ इतना सामान बन्द है जिससे पूरा एक डिवीजन शस्त्रास्त्रों से लैस किया जा सकता है। दुश्मन इतनी गहरी काररवाई कर रहे थे, और हमारी आँखें बन्द थीं।

नवाब साहब, आपने हमारी सबकी आंखें खोल दी हैं। हम आपके अहसान को कभी नहीं भूल सकते।"

नवाबजादा ने मुस्कराते हुए कहा—"अहसान नहीं, मैंने अपना फर्ज अदा किया है। काश, चीनी हमारी सरहद पर आ जाते, तब दिल्ली में उसके साथ पांचवीं जमात अपनी तोड़-फोड़ की काररवाई शुरू कर देती।"

"जी हाँ, यह सामान देखते हुए यही अहसास होता है। दर असल यह सारा मकान पोला है। तहखाने ही तहखाने चारों तरफ हैं। कहा जाता है कि यह मकान किराये पर है, पर मालिक का कोई पता नहीं चलता।"

"मेरा ख्याल है कि यह मकान कॅनाट सरकस वाले चीनी होटल के कथित मालिक च्यांग का है।"

"हो सकता है, क्योंकि ये सब सम्वद्ध हैं।"

"अभी आपकी जांच पड़ताल मुकम्मिल नहीं है। ढूंढ़िये, अभी कुछ और सामने आएगा।"

"यह सामने ईंट की दीवाल है; इसके आगे क्या हो सकता है?"

नवाबजादा ने उस ईंटों की दीवाल को स्पर्श करते हुए कहा—"मुझे तो यह भी लकड़ी की मालूम होती है, हां रँगा उसको इस खूबी से गया है कि जाहिरा तौर पर यह ईंटों की मालूम हो।"

पुलिस अफसर ने जहाँ उसको पिस्तौल के दस्ते से ठोंकना शुरू किया, वहां तुरन्त मालूम हुआ कि वह भी लकड़ी की बनी है। उसने उसको तोड़ने का आदेश दिया, और तख्तों के अलग होने पर अजदहे की मूर्ति देख पड़ने लगी। सब चकित होकर उसे देखने लगे। उसको अच्छी तरह देखने के बाद सुपरिन्टेन्डेन्ट ने कहा—"वाह नवाब साहब, आपको क्या इलहाम हुआ था?"

नवाबजादा प्रसन्न कंठ से बोले—"मैं सिर्फ जन्जीर की कुछ कड़ियाँ पकड़ कर इस नतीजे पर पहुँच सका हूँ। मुझे अंग्रेजी कवि शेक्सपियर का यह फिकरा बार-बार याद आता है कि, सब चमकने वाली चीजें सोना नहीं होती।"

"बेशक आपका ख्याल बिल्कुल सही उतरा। दिल्ली में चलने वाली चीनी साजिश की रीढ़ टूट गई है।"

सन्तोष अजदहे के चौतरे पर हाथ फेर रहे थे, कि उनकी उंगली एक सूराख में चली गई, और उसका बटन दब गया। उसके दबते ही घड़घड़ाहट की आवाज हुई, और अजदहे के अन्दर छिपे कल पुरजे चलने लगे। उसके साथ अजदहे का शिर उठ गया, और उसके अगले पैर उठ कर हवा में किसी को पकड़ने की क्रिया करने लगे। देखने वाले हैरान होकर पीछे हट गए। नवाब-जादा की बुद्धि इस समय चमत्कारिक रूप से काम कर रही थी। अजदहे के हाथों को पकड़ने की क्रिया करतेदेखकर वह एक लकड़ी का कुन्दा उठा लाए, और उसके हाथों में दूर से थमा दिया। कुन्दा हाथों में पकड़ते ही अजदहे की लंबी गर्दन नीचे झुकी और उसके मुँह ने कुन्दा पकड़ लिया। उसके फौलादी दाँत उसे चीरने-फाड़ने का प्रयत्न करने लगे। अजदहे ने थोड़ी देर बाद आगे सरक कर अपना पेट खोल दिया, और वह उसके पेट में समा गया। उसके भीतरी तेज आरे और चाकू उसके टुकड़े करने लगे। थोड़ी देर में उसका पिछला भाग उठ गया, और लकड़ी के महीन-महीन टुकड़े उसकी दुम के पास छिपे छिद्र से निकल कर नीचे गिरने लगे।

नवाबजादा ने चिल्ला कर कहा—"अब राज समझ में आया। इन्सान को कत्ल करने की यह अनोखी मशीन बनाई गई है। फ्रान्सीसी क्रान्ति में जिस तरह कत्ल करने के लिए एक इन्जीनियर ने एक मशीन बनाई थी, जिसका नाम उसी के नाम पर 'गिलोटीन' दिया था, उसी तरह इन चीनियों ने अपना यह अजदहा बनाया है। वाकई बड़ी कारीगरी दिखायी है।"

पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट ने कहा—"नवाब साहब, गिलोटिन बनाई गयी थी बिना तकलीफ के इन्सान को मारने के लिये, लेकिन यह उसके बिल्कुल बरक्स है। काश, लकड़ी के कुन्दे की जगह कोई आदमी होता तो वह तिल-तिल कट कर मरता।"

"जी हां, तारीफ की बात यह है कि लाश के इतने टुकड़े हो जाते हैं कि कभी कोई शिनाख्त नहीं हो सकती, और न कोई सुराग लगा सकता है।"

"बेशक, उसका कोई वजूद ही नहीं रह जाता। इस मशीनरी को बंद कैसे किया जाय?"

"सन्तोष साहब ने इसे चलाया है, वही इसको बन्द करने की कोशिश करेंगे।"

सन्तोष उस चबूतरे के छेद के भीतर उँगली डालकर बटन दबाने लगे, किन्तु परिणाम कुछ नहीं निकला। वह जब चबूतरे के दूसरी ओर जाकर देखने लगे तो उनको पहले वाले छेद के मुकाबले में एक छेद दिखायी दिया। उसका बटन दबाते ही कल-पुरजों का चलना बन्द हो गया, और धीरे-धीरे अजदहा अपनी पहली सूरत में आ गया।

सन्तोष ने विजय भरी दृष्टि से देखते हुए कहा—"अब मालूम हो गया उस तरफ से अजदहा अपना काम शुरू करता है, और इस तरफ से बन्द होता है। किन्तु प्रश्न यह रहता है कि इन पुरजों को चलाने वाली ताकत कौन हैं, बिजली या और कुछ।"

नवाबजादा ने चबूतरे की ऊँचाई पर गौर करते हुए कहा—"मेरा ख्याल है कि यह बिजली की बैटरी से चलता है। अपनी बिजली पैदा करने के लिए वह डायनोमो है, और काश वह भी बिगड़ जाय तो उसके लिए ऊँची ताक़त की बैटरियाँ इस चबूतरे के नीचे रखी गई हैं। बैटरियों को चार्ज करने का कोई तरीका जरूर होगा।"

पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट ने हँसते हुए कहा—"आप जो कहेंगे वह सही उतरेगा, क्योंकि आपको इलहाम हुआ है। अब चलिए हम लोग बाहर चलें दम घुटने लगा है।"

उसके साथ सब लोग बाहरी बैठक में चले आये

१८

जिसकी आशंका थी वह सन्मुख आ गया। चीनियों ने अपनी पूरी ताक़त से हिमालय के पूर्वीय और पश्चिमीय कोणों से आक्रमण कर दिया। देश भर में बिजली की गति से सनसनी फैल गई। संसार के सभी राष्ट्र चकित रह गए। कम्यूनिस्ट राष्ट्र भी छिपे-छिपे विरोध करने लगे और पश्चिमीय तो खुलकर सामने आ गए। इस युद्ध की तोपों की गूंज अमेरिका और ब्रिटेन तक

पहुंची, और वे भारत की सहायता के लिए उत्सुक और सचेष्ट होने लगे।

भारतीयों ने डट कर शत्रु की चुनौती स्वीकार की। चीनियों ने इस कथित सीमा विवाद को सैनिक शक्ति से सुलझाने का नया उपाय निकाला और कई डिवीजन सेनाओ से दोनों क्षेत्रों को अधिकृत करने के उद्देश्य से आक्रमण करने लगे। चीनियों के पास जनशक्ति का बाहुल्य था और वे मच्छरों और मक्खियों की भाँति मारे जाने लगे। समुद्र की लहरों की भाँति वे उमड़ते किन्तु हमारी तोपों और बन्दूकों की मार आगे बढ़ने ही नहीं देती थी।

जिस समय कलकत्ते के समाचार पत्र बेचने वाले हाकरों ने युद्ध–आरम्भ की सूचना दी, उस समय समस्त शहर स्तंभित रह गया। मिसेज़ रिपुदमन सिंह को भी कम आश्चर्य नहीं हुआ। यद्यपि वह इस समय अपने दल से विलग थी तथापि उसे आशा नहीं थी कि युद्ध का आरम्भ इतना शीघ्र होगा। उसे मालूम था कि युद्ध की योजना ग्रीष्म ऋतु में कार्यान्वित की जायगी। उसने समाचार पत्र दूर फेंक कर टेलीफोन उठाया और होटेल के इक्सचेन्ज को चीनी वाणिज्य दूतावास से सम्बन्ध स्थापित करने का आदेश दिया। सम्बन्ध मिल जाने पर उसने पूछा–"क्या अपना नाम बताने की कृपा करेंगे ?"

उत्तर मिला—"मैं चीनी वाणिज्य दूतावास से फिंग चुन बोल रहा हूं।"

नमस्कार के बाद मिसेज़ रिपुदमन सिंह ने पूछा–"क्या आप बता सकते हैं कि महाशय नम्बर एक कलकत्ता आ गए हैं और यदि अभी नहीं आए तो क्या उनका कोई समाचार है ?"

उत्तर मिला--"मैं कुछ नहीं जानता। आप कहाँ से बोल रही है?"

"मैं कुईलीन मेट्रोपाटिन होटेल के कमरा नम्बर ५७१ से बोल रही हूँ।"

"वही, जो दिल्ली में रहती हैं ?"

"हाँ मैं नम्बर एक से कुछ परामर्श करना चाहती हूं। वह आजकल में कलकत्ता पहुँचने वाले थे। क्या वह आ गए ?"

"ठहरिए। टेलीफोन का सम्बन्ध मत तोड़ियेगा।"

मिसेज़ रिपुदमन सिंह चिन्तित अवस्था में प्रतीक्षा करने लगी।

पांच मिनट बाद उत्तर मिला—"आप आज अपने कमरे में दोपहर बारह बजे से अपरान्ह दो बजे तक प्रतीक्षा करें।"

"क्यों ? क्या महाशय नं०१ आवेंगे ?"

"मैं इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता।"

"इतना तो आप कृपा कर बताइए कि महाशय नं० १ आ गए हैं या नहीं ?"

"आप संकेत करने पर भी नियमों को भंग करती हैं।"

मिसेज़ रिपुदमन सिंह ने सुना कि वक्ता ने टेलीफोन का सम्बन्ध विच्छेद कर क्रोध से रिसीवर पटक दिया है।

मिसेज रिपुदमनसिंह परिस्थितियों से चिन्तित थी। प्रथम उसे भय था कि रमणी मोहन से भेंट न हो जाए, और दूसरे वह काउ–चो के परामर्श के बिना कहीं जा नहीं सकती थी। वह लगभग सब समय अपने कमरे में काटती थी। मिनचू से कोई नई बात कहने को थी नहीं, इसलिए उसने अभी तक पीला कपड़ा खिड़की पर टांगा नहीं था। इस समय उसका मन उद्विग्न होने से वह किसी से आलाप करने के लिए आतुर हो गई। और तुरन्त एक पीला कपड़ा खिड़की के बाहर टांग दिया, और मिनचू के आने की प्रतीक्षा करने लगी।

लगभग आध घंटे के पश्चात् मिनचू ने प्रवेश किया। उसे देखकर वह प्रसन्नता से उठ खड़ी हुई, और देखते ही पूछा—"तुमने आज का दैनिक पढ़ा?"

मिनचू ने बैठते हुए उत्तर दिया—"पढ़ चुकी हूं।"

"तुमको मालूम हो गया होगा कि हमारा आक्रमण हो गया है।"

मिनचू ने शिर हिलाकर अपनी जानकारी बताई। क्षण भर के लिये दोनों मौन हो गईं।

थोड़ी देर के बाद मिसेज रिपुदमन सिंह बोली—"हम लोग बराबर

गलतियां करते जाते हैं। यह मौका आक्रमण का नहीं था।"

"हम नीति निर्धारक नहीं हैं। स्थिति बताना हमारा काम है, निर्णय लेना उनका।"

"मैं सोचती हूँ कि दिल्ली के लिए जो योजना कार्यान्वित करने के लिए बनाई थी, अब उस पर अमल नहीं हो सकता।"

"क्यों"

"इसलिए कि मेरा वहां जाना अब हो नहीं सकता, और मेरे बिना गए अलका के शस्त्रागार से कौन अस्त्र-शस्त्र निकालकर पंचमांगियों को वितरित करेगा ?"

"आप क्यों नहीं जा सकती। आप तो भारतीय नागरिक बन चुकी हैं, फिर आपको क्या भय है ?"

"युद्ध छिड़ जाने से स्थिति गंभीर हो गई है, वहां जाना खतरे से खाली नहीं है।"

"वहाँ का हाल-चाल जान कर जाइयेगा। मेरा सुझाव है कि आप तुरन्त दिल्ली वापस जावें, अभी कुछ बिगड़ा नहीं है। वहां जाकर आप स्थिति संभाल लेंगी।"

"काउ–चो से मिले बिना कहीं नहीं जा सकती।"

"वाणिज्य दूतावास से पूछिए कि वह आये या नहीं।"

"पूछा था, लेकिन साफ उत्तर नहीं मिला। केवल इतना उत्तर मिला कि मैं अपने कमरे में बारह से दो बजे तक प्रतीक्षा करूँ। मेरा मन न-मालूम क्यों घबड़ा रहा है ?"

"वाह, इस छोटी बात के लिये आप घबड़ा रही हैं ! संभव है कि काउ–चो उस समय के बीच आवे।"

"प्रतीक्षा के अतिरिक्त दूसरा उपाय नहीं, रमणी मोहन से क्या तय हुआ ? वह सैनिक अस्पताल में काम करेगा ?"

"उसकी नकेल मेरे हाथ में है, जिधर घुमाऊँ, उधर घूमेगा।"

"तुम दोनों सैनिक अस्पताल में जा रहे हो ?"

"वह तैयार है, केवल आपके आदेश की प्रतीक्षा है। अभी तक उसने अपनी सेवाएँ किसी को अर्पित करने की बात किसी से नहीं की, किन्तु जब युद्ध छिड़ गया है, तब हमारे काम में आसानी हो जायगी।"

"इस समय वह कहां है ?"

"आज जब से उसने युद्ध—आरम्भ का हाल सुना है तब से वह उद्विग्न है, और उसी का हाल-चाल लेने को कहीं बाहर गया है ?"

"कहीं तुमको छोड़कर चल न दे।"

"वह सब कुछ कर सकता है, किन्तु यह नहीं।"

इसी समय काउ—चो ने प्रवेश किया। उसके सहसा आगमन से दोनों उठ खड़ी हुई, और मिनचू उसे पहचानकर कमरे से बाहर जाने लगी। काउ—चो ने उसे रोकते हुए कहा—"कमरा बन्दकर तुम भी ठहरो।" और वह एक कुर्सी पर बैठ गया।

मिसेज रिपुदमनसिंह ने पूछा—"आप दिल्ली से कब आए ? वाणिज्य दूतावास को मैंने कुछ देर पहले फोन किया था।"

काउ—चो ने गम्भीर वाणी में कहा—"मुझे मालूम है। तुमने अपने होश-हवास खो दिये हैं, और इसी कारण मुझे निर्धारित समय से पहले आना पड़ा।"

"मुझसे क्या अपराध हुआ ?" और मिसेज रिपुदमनसिंह उसका मुख ताकने लगी।

"जब दिल्ली से आदेश दिया था कि होटल में मेरे पहुंचने की प्रतीक्षा करो, तब क्यों वाणिज्य दूतावास को टेलीफोन किया।"

"आज जब पत्रों में पढ़ा कि हमारी तरफ से आक्रमण हो गया, तब महसूस किया कि इस अवसर पर मुझे दिल्ली में होना चाहिए, ताकि पंचमांगियों को हथियार वितरण कर सकूं।"

"यह उचित है कि तुम्हें इस अवसर पर दिल्ली में रहना चाहिए, परन्तु वहां तुम्हें भेजना या न भेजना मेरी इच्छा पर निर्भर है।"

"आपका आदेश जानने के लिए ही फोन किया था।"

"परन्तु तुमने गलत ढंग से फोन किया। नंबर एक कहकर मुझे क्यों सम्बोधन किया? क्या नहीं जानती कि वाणिज्य दूतावास को किए जाने वाले फोन भारतीय अधिकारियों द्वारा सुने जाते हैं?"

"क्षमा कीजिए, युद्ध की खबर सुनकर अवश्य उद्विग्न हो गई थी।"

"युद्ध संचालक दूसरे हैं, और वे अपनी रीति से नीति संचालित करते हैं।"

"युद्ध आगामी ग्रीष्म में आरम्भ होने की योजना बनी थी। उसके अचानक शुरू होने से पहले की योजनाओं में गड़बड़ हो सकती है।"

"क्यों?"

"सब तैयारी ग्रीष्म को मद्देनजर रखकर की थी।"

"यह तुम्हारी गलती थी।"

"किन्तु पहले मुझको यही सूचना मिली थी।"

"क्या ताई-ची ने यह सूचना नहीं दी कि युद्ध किसी समय आरम्भ हो सकता है, उसके लिए सदैव तैयार रहो।"

"नहीं उसने मुझे कोई सूचना नहीं दी।"

"इसी समय कमरे के सामने, बरामदे में पुलिस वालों का एक दल आकर खड़ा हुआ, और दिल्ली के एक पुलिस अफसर ने दरवाजे पर दस्तक देते हुए आदेश दिया—"दरवाजा खोलो।"

काऊ-चो चौंक कर खड़ा हो गया और मिसेज रिपुदमनसिंह से पूछा—"यह कौन है?"

मिसेज रिपुदमनसिंह ने सशंकित स्वर में कहा—"मैं नहीं जानती।" और मिनचू को आगन्तुक का नाम पूछने का संकेत किया।

मिनचू ने निर्भीक स्वर में पूछा—"कौन है?"

पुलिस अफसर ने आदेश दिया—"पहले दरवाजा खोलो।"

काउ-चो ने संदिग्ध स्वर में कहा—"मुझे भारतीय पुलिस का सन्देह होता है। पीछे से कोई रास्ता बाहर निकलने का है?"

मिसेज रिपुदमनसिंह ने धीमे स्वर में उत्तर दिया—"यह खिड़की

है, किन्तु यह पृथ्वी तल से लगभग सौ-सवा सौ फुट ऊँची है। यहां से कूदने का अर्थ है, निश्चित मौत।"

"फिर चूहे की तरह पिंजड़े में फँस कर पकड़ा देना भी मुनासिब नहीं है।" कहते-कहते उसने अपनी जेब से रिवाल्वर निकाल लिया।

"अभी जल्दी न करिये। संभव है कि ये लोग कोई दूसरे हों अथवा कोई गलती कर रहे हों। मैं बाहर जाकर देखती हूँ।"

आश्वासन देकर वह द्वार खोलते हुए बोली–"क्या गड़बड़ मचा रखा है? यह शरीफों का होटल है या मछली बेचने की दूकान?"

पुलिस अफसर ने मुस्कराते हुए कहा–"मछलियों की दूकान समझ कर ही हम लोग मछली पकड़ने आए हैं। मिसेज रिपुदमन सिंह किसका नाम है?"

अपने हृदय की धड़कन को दबाते हुए कहा–"मेरा नाम है। कहिये, आप कौन हैं, क्या चाहते हैं?"

पुलिस अफसर ने शान्तस्वर में कहा–"दिल्ली पुलिस का आपके नाम वारन्ट गिरफ्तारी है।" और पुलिस के दो जवान उसके दोनों बाजू आकर खड़े हो गए।

"आपको गलतफहमी हुई है। मैं दिल्ली की एक सम्भ्रान्त नागरिक हूँ।" इसी समय नवाबजादा और ब्रजमोहन दास बरामदे के सिरे पर दिखाई दिए। उन पर दृष्टि पड़ते ही वह बोली–"देखिये मेरे सौभाग्य से नवाब साहब यहाँ आ गये हैं। वह मेरे मित्र हैं। आपको अवश्य कोई गलत फहमी हुई है।" फिर नवाबजादा को मुखातिब करने के उद्देश्य से कहा–"आइए नवाब साहब, आप कब तशरीफ लाए। बड़े मौके से आप पहुँच गए। यह कहते हैं कि मेरे नाम वारन्ट गिरफ्तारी है। आप मेरी सफाई दीजिए।"

नवाबजादा ने आकर कहा–"आप यहाँ कहाँ? आपके मकान पर पुलिस का कब्जा हो गया है, और उसने कई किस्म के हथियार बरामद किए हैं।"

"मेरे मकान पर पुलिस का कब्जा हो गया, यह कैसे? यह भारत है, जहां प्रजातंत्र है और उसका संविधान प्रत्येक नागरिक की रक्षा करता है।"

"परन्तु उनकी नहीं जो भारत के विरुद्ध तोड़-फोड़ की कारवाई कराने के लिए विध्वंसात्मक शस्त्र अपने घर के तहखानों में इकट्ठा करते हैं और चीन के राजचिन्ह अजदहे की मूर्ति स्थापित कर उसके द्वारा इन्सानों को टुकड़े-टुकड़े कर हलाक करते हैं।" पुलिस अफसर ने उत्तर दिया।

"यह सब झूठ है। किसी दुश्मन ने मेरे खिलाफ झूठी कारवाई की है।" मिसेज रिपुदमन सिंह ने पीछे हटते हुए कहा।

"झूठ नहीं सब सच है, सब चीजें बरामद हो गई हैं।"

"आप पुलिस वोले हैं, मेरी गैबत में पुलिस ने रखवा दी होंगी।"

"यह प्रश्न अदालत के सामने उपस्थित होने पर उठाइयेगा।"

"नवाब साहब, आप क्यों नहीं बोलते ?"

"मैं मिस्टर रमणी मोहन के वालिद के साथ उनको यहां कलकत्ते में ढूंढ़ने आया था। आपके घर में एक तार मिला था जिसमें आप की बेटी ने आप को सूचित किया था कि वह उसके साथ कलकत्ता जा रही है और मेट्रोपालीटन होटेल में ठहरेगी। यह रमणी मोहन के वालिद सेठ ब्रजमोहन दास हैं।"

कमरे के अन्दर बैठी मिनचू ने भी सुना। उसके चेहरे का रंग उड़ गया और वह थर-थर कांपने लगी।

काउ-चो ने एक दूसरा रिवाल्वर देते हुए धीमे स्वर में चीनी भाषा में कहा—"हम दो हैं किन्तु सहसा आक्रमण से अब भी इस दबसट से निकल सकते हैं। मेरे साथ आक्रमण करो, उधर चीन ने भारत पर आक्रमण कर हमारा मार्ग निर्देशन कर दिया है।"

मिनचू ने कांपते हाथों से रिवाल्वर पकड़ लिया। उसकी त्रस्त दशा देख कर काउ-चो ने सक्रोध कहा—"सावधान ! मेरे आदेश का पालन कर, नहीं तो तू-सिन ने जैसे ताई-ची को मारा, उसी तरह पहले तुझे अपनी गोली का शिकार बनाऊँगा। चीन को कायरों की जरूरत नहीं है।"

वह फुसफुसाई—"सामने मैडम हैं।"

काउ-चो ने आदेश दिया—"पहले मैडम को ही खत्म करो। उसको

हमारे कई भेद मालूम हैं। पुलिस की यंत्रणाओं से वह उन्हें खोल सकती है। मैं कुईलीन को और तुम सामने खड़े पुलिस अफसर को निशाना बनाओ। उनके मरते ही गड़बड़ मचेगी, और बन्दूक की गोली के वेग से जीने की ओर भागो। लिफ्ट की ओर हरगिज न जाना, नहीं तो पकड़ी जा सकती हो। और यदि पकड़ जाओ तब तू-सिन की भाँति अपनी बलि अजदहे पर चढ़ा देना।"

कहते हुए उसने मिनचू को चिक के एक ओर और स्वयं दूसरी ओर खड़े होकर उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करने लगा।

उधर मिसेज रिपुदमन सिंह सेठ ब्रजमोहन दास को देखकर स्तंभित रह गई। अब उसे विश्वास हो गया कि वह चूहे की भाँति पिंजड़े में फंस गई है, और उसकी कोई युक्ति कारआमद नहीं होगी। उसका पैशाचिक रूप प्रकट होने के लिए अधीर होने लगा। वह अपने वस्त्रों से छिपा रिवाल्वर निकालने के उद्देश्य से अपना हाथ अपने गले के पास ले जाने को उद्यत हुई थी कि उधर काउ-चो ने चिक हटा कर मिनचू को संकेत करने के साथ पुलिस अफसर पर निशाना साधते हुए वार किया, और उसी के साथ मिनचू ने मिसेज रिपुदमन सिंह को अपनी गोली का निशाना बनाया। उनके रिवाल्वरों में ध्वनि अवरोधक यन्त्र लगे थे, अतएव साधारण पटाखे की आवाज के साथ मिसेज रिपुदमन सिंह और पुलिस अफसर धराशायी हुए और उसके साथ दोनों भीड़ को काईकी तरह फाड़ते निकल भागे। यह सब पल के अर्धांश में घटित हो गया, और सभी स्तंभित रह गए। काउ-चो आगे था, और मिनचू पीछे। जब वह जीने के पास पहुँचा, उसने मुड़कर पीछे देखा कि मिनचू उससे कितनी दूर है। मिनचू ऊँची एड़ियों के जूते पहने होने के कारण क्षिप्रता से दौड़ने में असमर्थ थी, और उसका पीछा करता पुलिस का एक जवान उसे पकड़ने वाला था, कि काउ-चो ने मिनचू को भी अपना निशाना बनाया। गोली उसके चेहरे पर लगी, और बिना एक शब्द निकाले वह मुंहभरा गिर पड़ी। काउ–चो सीढ़यां उतरने लगा, किन्तु सामने एक मोड़ पर पुलिस का एक जवान रिवा-ल्वर लिए खड़ा था, जो ऊपर की आवाजों से सतर्क था। काउ-चो ने उस पर भी निशाना साधा, किन्तु पुलिस जवान की सावधानता से वार खाली गया,

और उसने जवाबी वार किया। गोली इतने समीप से मारी गई थी कि वह काउ-चो का उर स्थल बेधती हुई बाहर निकल कर दीवाल में लगी, और वहाँ से उचट कर पुन: काउ-चो के झुकते हुये शिर से टकराई। इतना सब कांड पलक भाँजते घटित हो गया।

नवाबजादा पुलिस अफसर की प्राण परीक्षा करने लगे। उन्होंने देखा कि गोली उसके स्कंध प्रदेश में लगी है, और मरात्मक नहीं हो सकती।

दूसरे पुलिस अफसर ने जो मिसेज रिपुदमन सिंह की परीक्षा कर रहा था, घोषित किया कि वह निर्जीव होकर शव में परिणत हो गई है।

१६

कलकत्ता की चौरंगी बाज़ार के एक अमरीकन कम्पनी के कार्यालय से निकलते हुए लैम्बर्ट पर रमणीमोहन की दृष्टि पड़ी, जो उधर से अपने होटेल को लौट रहे थे। वह लपक कर उसके पास पहुंचे, और पीछे से धीमे-स्वर में कहा—"नमस्कार, मिस्टर लैम्बर्ट।"

लैम्बर्ट चकित होकर पीछे मुड़ा और रमणीमोहन को मुस्कराते देख कर हर्ष विभोर हो गया, और उसने हाथ मिलाते हुए कहा—"वाह, खूब मिले। मैं अमेरिका लौटने के पहले आप से मिलने के लिए आकुल था। मैंने यहां पहुंच कर प्रत्येक होटेल में आपको तलाश किया, किन्तु कोई पता नहीं चला। आप यहां कहाँ ठहरे हैं?"

"यहाँ पहुंचते ही आपको पत्र लिखा था। क्या वह नहीं मिला?"

"नहीं।"

"इसी लिए आप मेरा पता नहीं लगा सके। मैं छद्मनाम से मेट्रोपालिटन होटेल में ठहरा हूं।"

"छद्म नाम का क्यों सहारा लेना पड़ा।"

"इस लिये कि मेरे कुटुम्बियों को पता न चले। यदि मेरा पत्र मिल जाता, तब सब बातें मालूम हो जाती, और भटकना भी न पड़ता।"

"आपका पत्र अब अमेरिका जायगा, क्यों कि होटेल के अधिकारियों

को वहाँ का भी पता दे आया हूं । मैं अब अमेरिका जा रहा हूं ।"

"क्यों ?"

"भारत में मेरा कार्य समाप्त हो चुका ।"

"आप सैलानी हैं, सैर करने आए थे ?"

"सैर करते हुए कुछ काम भी किया जाता है ।" सब बातें यहां खड़े-खड़े नहीं हो सकती । आइए किसी रेस्तरां में बैठ कर बातें की जावें । अथवा मेरे होटेल ओडियन चलें, हमें वहां बिल्कुल एकान्त मिलेगा ।"

"आप कहाँ ठहरे हैं ?"

"यहीं से लगभग पचास गज दूर 'ओडियन' में ।"

"तब वहीं चलिए, मुझे भी आपसे बहुत बातें जाननी हैं ।"

दोनों शीघ्रता से चल कर 'ओडियन' होटेल आए, और लैम्बर्ट ने अपने कमरे का द्वार खोलते हुए पूछा—"आप यहाँ कब पहुंचे थे ?"

"मैंने रेल से यात्रा की थी, इस लिए दिल्ली छोड़ने के तीसरे दिन यहां पहुंचा । कला मेरे साथ थी, उसने तार देकर मेट्रोपालीटन में एक कमरा सुरक्षित करवा लिया, इस लिये स्टेशन से हम सीधे वहाँ पहुँच गए ।"

"आपके आने के बाद बड़ी-बड़ी घटनायें घटित हुई ?"

"वे क्या ?"

"मैं वहाँ से आरम्भ करता हूं, जब आपके जाने के पहले हम लोग बातें कर रहे थे, और आप कला के प्रति अपनी कोमल भावनाएं बना कर रहे थे, और उसी शाम को आप से विदा लेकर मैं अपने दोस्तों से मिलने चला गया था ।"

"हाँ, आप वहीं से आरम्भ कीजिए । उसके बाद ही कला आई और मैंने होटेल छोड़ दिया ।"

लैम्बर्ट ने आद्योपान्त अपनी कथा बताने के पश्चात् कहा—"मिस मिलर और उसके साथी का जब अन्त हो चुका तब मैंने वहाँ ठहरना उचित नहीं समझा; क्योंकि चीनियों का कुचक्र दिल्ली में तेजी से चल रहा था ।"

"तब क्या मिसेज़ रिपुदमन सिंह चीनी गुप्तचर हैं ?"

"निस्सन्देह, यदि वह चीनी गुप्तचर नहीं है, तो पूर्ण रूप से पंचमांगी हैं।"

"और कला ?"

"मैं उसे चीनी गुप्तचर कहूंगा, क्योंकि उसके प्रमाण मिलते हैं। मिस मिलर की मिसेज़ रिपुदमन सिंह से घनिष्ठता थी, क्योंकि मेरी हत्या करने के लिए वहीं से अपने उस साथी को लेकर आई थी, जिसने उसे मेरे कमरे में मारा।"

"किन्तु वह अभी नौ.उम्र है। इतनी छोटी अवस्था में वह क्या चीनी जासूस हो सकती है ?"

"चीन ने असंख्य लड़कियों को बाल्यावस्था से जासूसी की शिक्षा दे कर भारत भेजा है, यह मुझे भली भाँति मालूम है। भारत में चीनी गुप्तचरों के सर्वत्र केन्द्र हैं, और वे यहाँ के निवासियों से इतने घुल मिल गए हैं कि उनकी वास्तविकता का पता लगना मुश्किल है। उन्होंने पंचमांगियों की एक सेना बना ली है, जो समय आने पर यहां विद्रोहात्मक कारवाई करेंगी।"

"चीन ने आक्रमण कर दिया है, अब उनके लिए क्षेत्र तैयार है।"

"तैयार नहीं, हो रहा है। जब चीन की सेनाएँ भारत प्रवेश करेंगी तब तोड़-फोड़ की कारवाई आरम्भ होगी। अभी उसमें देर है। यदि भारत उनके अभियान को रोकने में समर्थ हो गया, तब पंचमांगी दबे रहेंगे, और सिर नहीं उठाएंगे। वे खुलकर तब सामने आवेंगे, जब उनकी सहायता के लिए चीनी सेनायें प्रदेश की सीमाओं पर पहुँच जायेंगी।"

"परन्तु क्या भारत में इतनी शक्ति है कि वह उनके आक्रमण को रोक सके।"

"मैं आप से सत्य कहूंगा कि भारत बुरी तरह ठगा गया है। चीनियों के मुकाबले में उसकी सैनिक शक्ति बहुत निर्बल है। भारतीय जवान बहादुर हैं शत्रु को अपने साहस और धैर्य से परास्त करने की उनमें अपूर्व क्षमता है, किन्तु चीन की तैयारी के समक्ष भारत की तैयारी अपर्याप्त है।"

"तब क्या होगा ?"

"अमेरिका और ब्रिटेन अथवा पश्चिमीय राष्ट्रों को भारत की सहायता के लिए आना पड़ेगा।"

"किन्तु भारत उनके गुट में नहीं है।"

'गुट में नहीं है अवश्य, परन्तु वह प्रजातंत्र का गढ़ है। एशिया ही नहीं वरन संसार के प्रजातन्त्रवाद की सफलता भारत की विजय में निहित है। यदि भारत अपनी प्रभुसत्ता चीनियों के मुकाबले में खो देता है तब संसार में कम्यूनिज्म को फैलने से कोई शक्ति रोक नहीं सकती।"

"भारत के कम्यूनिस्ट हो जाने से विश्व की आबादी का अर्धांश से अधिक कम्यूनिस्ट हो जाता है।"

"बेशक, इससे शक्ति संतुलन पश्चिमीय राष्ट्रों के विपरीत हो जायगा, और वे इसे स्वीकार कर अपने गले में फांसी लगाने को तैयार नहीं होंगे। उन्हें हर हालत में भारत की सहायता करना पड़ेगा।"

"किन्तु बीच में पाकिस्तान का रोड़ा है।"

"जैसे समाचार मुझे मिले हैं, उनसे मालूम होता है कि निस्सन्देह पाकिस्तान और चीन की सांठ-गांठ चल रही है। चीन भारत को बिलकुल अकेला बनाने के प्रयत्न में है, और कश्मीर के प्रश्न को लेकर जैसा पाकिस्तान और भारत में विरोध चल रहा है, उससे अनुमान होता है कि वह उसे हस्त-गत करने के लिए चीन से गुप्त सन्धि देर-अबेर में अवश्य करेगा।"

"तात्पर्य यह कि भारत को चीन और पाकिस्तान की सम्मिलित शक्ति से मुठभेड़ करना पड़ेगा। पाकिस्तान फिर 'सीयटो' और 'सेन्टो' सन्धियों से पृथक हो जायगा ?"

"भारत के विरोध में अपनी सैनिक शक्ति दृढ़ करने के लिए वह इन गुटों का सदस्य था। पश्चिमीय राष्ट्र उसके इस उद्देश्य को जानते थे, और वे बराबर उसकी सहायता करते रहे, किन्तु राष्ट्रसंघ में रूस के वीटो अधिकार से उनके प्रयास व्यर्थ होते रहे। इससे पाकिस्तान उनसे भी रुष्ट है, और वह भारत को सैनिक सहायता पहुँचाने के विरुद्ध है।"

"तब शायद वह सहायता भारत को नहीं मिल सकेगी ।"

"ऐसी बात नहीं है । पाकिस्तान को सैनिक सहायता कम्यूनिस्टों के अभियान को रोकने के लिए दी गई थी। योरोप में पश्चिमीय जर्मनी से लेकर जापान तक उन्होंने अपने सैनिक अड्डों की शृंखला बनाकर कम्यूनिस्ट राष्ट्रों–चीन और रूस को घेर लिया है। पाकिस्तान उसकी एक कड़ी है। यदि यह कड़ी टूटकर कम्यूनिस्टों के प्रसार के लिए मार्ग देती है, तब समस्त नीति में परिवर्तन करने के लिये उन्हें बाध्य होना पड़ेगा ।"

"भारत को शायद उस गुट में जाना पड़े ।"

"भारत को पश्चिमीय गुट में शामिल हो जाने से विश्वयुद्ध की आशंका प्रबल हो जाती है। युद्ध को स्थानीय बनाये रखने के लिए आवश्यक है कि भारत अपनी निरपेक्ष नीति पर चलता रहे ।"

"इससे लाभ ?"

"लाभ इसी में हैं, क्योंकि इससे रूस युद्ध में तटस्थ रहेगा। यदि भारत पश्चिमीय गुट में चला जाता है, तब चीन और रूस की पारस्परिक सहायक सन्धि के अनुसार उसे चीन का साथ देना पड़ेगा । रूस की तटस्थता तभी तक रहेगी, जब तक चीन और भारत में विवाद चलता है। रूस और चीन में भी शक्ति सन्तुलन की भावना है। अभी दोनों की शक्तियां इसलिए सन्तुलित हैं कि रूस में वैज्ञानिक शक्ति है, और चीन में मानवशक्ति। भारत के पराजित होने से चीन की मानवशक्ति के साथ वैज्ञानिक बल भी बढ़ जायगा, जिसे रूस कदापि न चाहेगा। अतएव रूस भी पश्चिमीय राष्ट्रों की भांति भारत की अर्ध-सैनिक सहायता के लिये तत्पर रहेगा ।"

"किन्तु पाकिस्तान के फूट जाने से चीन की शक्ति बढ़ जाती है ।"

"पाकिस्तान जानता है कि उसकी स्थिति पश्चिमीय शक्तियों के बल पर निर्भर है। वह केवल कश्मीर को हस्तगत करने के लिए ही चीन के साथ जायगा, परन्तु भारत पर आक्रमण न कर भय से उसे संत्रस्त रखेगा, ताकि पूरी शक्ति से भारत चीन का सामना न कर सके। वह तब तक खुलकर सामने नहीं आवेगा, जब तक भारत पराजित होकर कम्यूनिस्ट नहीं हो

जाता। कम्यूनिस्ट शासन हो जाने पर भारत की कम्यूनिस्ट सरकार खुशी-खुशी कश्मीर पाकिस्तान के हवाले कर सकती है।"

"और पश्चिमीय राष्ट्र कोई विरोध नहीं करेंगे ?"

"वे इस स्थिति को आने नहीं देंगे। भारत का मानव-बल चीन के समकक्ष है, और जब उसे आधुनिक शस्त्रास्त्रों की सहायता, उनके बनवाने और तैयार माल में मिलेगी, तब वह चीन से कभी परास्त नहीं होगा। भारत में जो जन-जागरण मैंने लक्ष्य किया है, वह अभूतपूर्व है, वैसा कोई उदाहरण इतिहास में नहीं मिलता। जिसकी जनता सचेष्ट है, इतनी जागरूक है, उसे कोई शक्ति पराजित नहीं कर सकती।"

"तब आपको भारत की विजय में विश्वास है ?"

"निस्सन्देह ! वस्तुतः उसका स्वातन्त्र्य युद्ध तो अब आरम्भ होता है, और जिस प्रकार अमेरिका ने उसकी सहायता ब्रिटिश शासन के विरुद्ध की थी, उसी प्रकार वह फिर चीन के विरुद्ध भी करेगा।"

"शायद अमेरिका ने कोई सहायता ब्रिटिश शासन के विरुद्ध नहीं की।"

"कोई कार्य किसी एक कारण से नहीं अनेक कारणों से होता है। जहां भारतीय जनजाग्रति स्वतन्त्रता के प्रति उत्पन्न हुई, जहां जल-थल और नभ सैनिकों में विद्रोहात्मक भावनाएँ पनपी और खुलकर विद्रोह हुए, जहाँ दूसरे विश्वयुद्ध के पश्चात् ब्रिटिश सैन्य शक्तिक्षीण हुई, वहां अमेरिका के प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट का चर्चिल सरकार पर दबाव भी भारत को स्वतन्त्र कराने में सहायक हुआ है। रूजवेल्ट दूरदर्शी थे। एशिया में कम्यूनिज्म के प्रसार को रोकने के लिए भारत के अतिरिक्त कोई अन्य देश नहीं था। और स्वतन्त्र भारत ही उसके प्रसार को रोक सकता था। यह कट्टर ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की हठवादिता थी, जिससे उन्होंने भारत को दो टुकड़ों में विभक्त करवा दिया।"

"परन्तु भारत विभाजन के अतिरिक्त उसकी स्वतन्त्रता प्राप्त करने का कोई उपाय भी न था।"

"ब्रिटेन साम्राज्यवादी है, और विभाजन-नीति का वह निष्णात

आचार्य है। चलते-चलाते एक भाग पर अपनी प्रभुसत्ता जमाये रखने के उद्देश्य से मुस्लिम वर्ग को पाकिस्तान बनाने के लिये मजबूर किया। इसी तुरुप के पत्ते से भारत को दबाए रखना चाहता था, और यह अमेरिकन राजनीतिज्ञों की नीति के विरुद्ध थ।"

"किन्तु इससे ब्रिटेन को कुछ अधिक लाभ नहीं हुआ।"

"अनुदार दल अपने हितों के सामने दूसरों तथा संसार के हितों की परवा नहीं करता। अमेरिकनों की तरह वे दूरदृष्टा नहीं हैं। अमरीका की नीति संसार को स्वतन्त्र रखने की है। वह किसी देश पर शासन करना नहीं चाहता। मानवमात्र की स्वतन्त्रता का वह कट्टर हामी है।"

"तब अमेरिका भारत की सहायता करेगा ?"

"अवश्य उसे करना पड़ेगा, नहीं तो मानव अधिकेन्द्रित कम्यूनिज्म की मशीन का एक पुरजा बनकर रहेगा।"

"इन परिस्थितियों में क्या करना चाहिये ? कला के प्रति मेरा मोह सर्वथा विवेकहीन था। मुझे उसका त्याग करना चाहिये ?"

"बेशक, नहीं तो एक दिन वह आपकी जान की ग्राहक बन जायगी, यदि आप उसके आदेश के विरुद्ध जाने का संकल्प या चेष्टा करेंगे।"

"किन्तु इन चीनियों को मेरे फांसने में क्या लाभ था ?"

"यह वे जाने, किन्तु इतना स्पष्ट है कि वे आपको अपनी शतरंज का एक पैदल बनाना चाहते होंगे। आप धनी हैं, प्रसिद्ध व्यापारी हैं, दक्षिण-पूर्वीय एशिया में आपके व्यापारिक सम्बन्ध हैं। मिस मिलर से जो नकशा प्राप्त हुआ था, उसमें आप देख चुके हैं कि चीन का लक्ष्य एशिया, आस्ट्रेलिया और दक्षिणी अमेरिका को हस्तगत करने का है, अतएव आप उनके अमूल्य सहायक हो सकते हैं। कम्यूनिस्ट इसी प्रकार अपनी नीति चलाते हैं।"

"यह तो बताइये वह नक्शा कहां है ?"

"वह उचित स्थान में पहुँचा दिया गया है।"

"किन्तु कहां ?"

"इस विषय में न पूछिये और न मैं इसका उत्तर ही दूंगा।"

"आपका सहायक होने के कारण कुछ मेरा भी अधिकार है। कम से कम जानने का अधिकार तो अवश्य है।"

"जहां उसकी जरूरत थी वहां मैंने भेज दिया है और वह सुरक्षित है। यदि उससे आप का कोई स्वार्थ सिद्ध होता तब मैंने आपको दे दिया होता।"

"अब चाहता हूँ कि उससे अपनी सरकार को अवगत करूँ।"

"उसे सूचना मिल जायगी आप निश्चन्त रहिए।"

"वह चीनियों के एक धोखे की चाल हो सकती है।"

"धोखा हो या सत्य हो, वह सब तरह से हमारे लिए लाभदायक है। चीन की महत्वाकांक्षाओं का एक चित्र निश्चय है।"

"अब किस प्रकार कला से पिंड छुड़ाया जाए ?"

"आपने वह अधिकार खुला रखा है। वैवाहिक सूत्र में बंधे होते तब कोई कठिनाई थी, किन्तु आप स्वतन्त्र हैं।"

"उससे विलग होने की स्वतन्त्रता अवश्य है, परन्तु चीनियों के कुचक्र से किस प्रकार बचा जाए ?"

"आप अपने परिवार में चले जाइए।"

"किन्तु क्या वहां मैं निरापद रहूँगा ?"

"अभी चीनियों की शक्ति इतनी नहीं बढ़ी कि वे आप पर सांघातिक हमला कर सकें।"

"आप पर तो उन्होंने किया।"

"इसलिए कि मेरे पास उनका नक्शा था।"

"किन्तु वह सोच सकते हैं कि आपने उसका भेद मुझे बता दिया हो।"

"यदि यह सन्देह होता तो कला आप की संगिनी न बनी होती। आपकी गति वही होती जो मेरी होने वाली थी।"

"आप यहां से कहां जा रहे हैं ?"

"सीधे अमेरिका। मैंने अपनी सीट सुक्षित करा ली है।"

"फिर आप से कब भेंट होगी ?"'

"शीघ्र। सम्भव है दो तीन सप्ताहों में मैं पुनः आऊँ। भारत के कई स्थान अभी देखना शेष है।"

"क्या आप वस्तुतः सैलानी हैं ?"

"और इसके अतिरिक्त क्या हूँ ?"

"सैलानी चीनी गुप्तचरों के भेद जानने का प्रयत्न नहीं करते।"

"शुरू से मुझे ऐसी बातों का शौक है, इसलिए व्यर्थ में झगड़े मोल ले लेता हूँ।"

"कहिए तो मैं भी आप के साथ अमेरिका चलूं ?"

"पासपोर्ट की झंझट न हो तब आपके चलने से प्रसन्नता होगी। वीसा का प्रबन्ध करवा सकता हूँ।"

"पास पोर्ट मिल जायगा; किन्तु कुछ देर में।"

"किन्त मैं अब एक क्षण भी नहीं ठहर सकता। यदि आज-आज आप का पासपोर्ट बन जाय तब ठीक है अन्यथा आप दूसरे वायुयान से आइयेगा। न्यूयार्क में मैं आपकी प्रतीक्षा करूँगा।"

"इस वक्त मैं पासपोर्ट प्राप्त करने की कोशिश में जाता हूँ। संध्या को मिलूंगा।"

यह कह कर लैम्बर्ट से विदा ले वह कमरा के बाहर आ गए।

२०

अभी रमणी मोहन लिफ्ट तक पहुँच न पाए थे कि लैम्बर्ट ने उन्हें पुकार कर वापस आने का अनुरोध किया। उनके आने पर लैम्बर्ट ने कहा—"आइए अन्दर।"

रमणी मोहन ने कमरे में आकर कहा—"क्या कुछ बताना शेष है ?"

"नहीं, किन्तु आप क्या सचमुच मेरे साथ अमेरिका चलना चाहते हैं?"

"इसमें क्या सन्देह है ? मेरी आँखों से मोह का परदा हट गया। बिना अमेरिका में शरण लिए चीनियों के कुचक्र से रक्षा नहीं होगी।"

"आपने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।"

"वह क्या ?"

"मेरा प्रश्न है कि क्या आप मेरे सहयात्री बनकर अमेरिका जाना चाहेंगे ?"

"उसी के लिए पासपोर्ट का प्रबन्ध करने जा रहा हूँ।"

"तब आप न जाइए। मैं आपके पासपोर्ट का प्रबन्ध करूँगा।"

"आप मेरा पासपोर्ट बनवायेंगे ?"

"मित्र के लिए सब कुछ किया जाता है।"

"वह कैसे ?"

"आप सब बातें न पूछिए। आपको आम खाने से मतलब कि गुठलियाँ गिनने से !"

यह कहकर उसने टेलीफोन उठाकर होटेल के एक्सचेंज से अमेरिकन वाणिज्य दूतावास से सम्बन्धित करने को कहा।

सम्बन्ध स्थापित होने पर लैम्बर्ट ने कहा— "मिस्ट बटरवर्थ बोल रहे हैं ?"

"हाँ, मैं बटरवर्थ हूँ, और आप ?"

"लैम्बर्ट हूँ। आप कृपा कर मेरे एक मित्र के लिए एक पासपोर्ट का प्रबन्ध कर दीजिए। उनकी हुलिया है, नाम रमणी मोहन, पिता का नाम सेठ ब्रजमोहन दास, निवासी चर्चगेट बम्बई। आयु लगभग अट्ठाइस साल, शिर के बाल काले, दहिने गाल पर एक तिल, लम्बाई पांच फिट सात इंच, वर्ण भूरा। उनका फोटो अभी दो घण्टे में भेजता हूँ।"

"आप कब चाहते हैं ?"

"आज शाम तक।"

"मुश्किल है। आज सब अस्त व्यस्त है, क्योंकि चीन ने आक्रमण कर दिया है।"

"लेकिन कल प्रातःकाल उनको मेरे साथ जाना है।"

"अमेरिका जाना है या और कहीं ?"

"अमेरिका।"

"तब आप उनको लेकर दूतावास के वायुयान से क्यों नहीं यात्रा करते। अभी दो घण्टे में वह जाने वाला है। उसमें जाने से कोई झंझट नहीं रहेगी। वीसा मैं तैयार कराए देता हूँ। दौत्यकर्मी होकर जाने में सुविधा रहेगी।"

"अच्छा उसी का प्रबन्ध कीजिए, 'पान अमेरिकन लाइन्स' से मेरी यात्रा रद्द करवा दीजिए।"

"आपकी आज्ञानुसार सब प्रबन्ध हो जायगा। आप 'ओडियन' से सीधे हवाई अड्डे पर पहुँचिए। मैं वहाँ मिलूंगा।"

"ठीक।" और लैम्बर्ट ने सम्बन्ध तोड़कर कहा— "लीजिए मिस्टर रमणी मोहन, आप मेरे साथ चलिए। सब प्रबन्ध हो गया, हमें तुरन्त रवाना होना है।"

"मैं बिल्कुल तैयार हूँ।"

"किन्तु कपड़े आदि लेने के लिए आप अपने होटेल जायेंगे?"

"शायद नहीं।"

इसी समय टेलीफोन की घंटी बजने लगी। लैम्बर्ट ने रिसीवर उठाकर पूछा— "कहिए, मैं लैम्बर्ट बोल रहा हूँ।"

उत्तर मिला— "मैं रैमजे हूँ। मेट्रोपालीटन होटेल से बोल रहा हूँ। अभी-अभी यहां एक बड़ी दुर्घटना हो गई है।"

"वह क्या?"

"यहां चार हत्याएँ हो गई हैं। तीन चीनी तत्क्षण मर गए, और एक भारतीय पुलिस अफसर सख्त घायल हुआ है?"

"तीन चीनी मारे गए! खुलासा कहो।"

"दिल्ली पुलिस की पार्टी मिसेज रिपुदमन सिंह, और मिस कला को गिरफ्तार करने के उद्देश्य से कलकत्ता आई, और उनके ठहरने की सूचना होने से मेट्रोपालिटन होटेल पर धावा बोल दिया। मिसेज रिपुदमनसिंह के कमरे में मिस कला और एक चीनी मौजूद मिले। जब पुलिस गिरफ्तारी की काररवाई कर रही थी कि अचानक मिस कला अथवा उसके साथी ने पीछे से

रिपुदमनसिंह और पुलिस अफसर पर रिवाल्वर से आक्रमण किया। मिसेज रिपुदमनसिंह वहीं ढेर हो गई। पुलिस अफसर के पैर में गोली लगी। अचानक आक्रमण की गड़बड़ी का लाभ उठाकर मिस कला अपने साथी के साथ भाग निकली; किन्तु वह अधिक दूर न गई होगी कि उसके साथी ने पलटकर उसको अपनी गोली का शिकार बनाया। गोली उसके चेहरे पर लगी और वह वहीं पर ढेर हो गई। सीढ़ियों पर एक पुलिस जवान तैनात था, उसकी गोली से दूसरा चीनी मारा गया।"

"अच्छा, मिसेज रिपुदमनसिंह और कला अपने ही साथियों से मारे गए! और वह दूसरा चीनी कौन था?"

"अभी उसका पता नहीं चला। पुलिस उनकी लाशें मुर्दाघर लिए जा रही है। आपको अवकाश हो तो देखकर निर्णय कर लें। मैं भी वहाँ मिलूंगा।"

"तुम्हारी सूचना बड़े मौके से मिली। धन्यवाद। मैं मुर्दाघर आध घंटे में पहुँच जाऊँगा।

टेलीफोन का सम्बन्ध काटकर रमणीमोहन से कहा— "दोस्त, मेरी बधाई स्वीकार करो।"

"किस बात की?"

"एक दिन मैंने बधाई दी थी जब आपने अपनी कला को प्राप्त करने के लिए ग्यारह लाख की बोली लगाई थी, और आज बधाई दे रहा हूँ, जब भगवान ने आपको उससे मुक्ति दिला दी।"

"क्या मतलब?"

"आपकी कला, और उसकी तथाकथित माँ मिसेज रिपुदमनसिंह दोनों मेट्रोपालीटन होटेल में अपने एक चीनी साथी द्वारा मारी गई।"

'कला मर गई?"

"हाँ, वह मर गई, और आप सर्वथा मुक्त हो गए। सत्य की सहायता भागवत शक्तियां करती हैं। अब सब बातें स्पष्ट हो गई। वे दोनों चीनी गुप्तचर थीं, यह निर्विवाद प्रमाणित हो गया।"

रमणीमोहन ने एक दीर्घ निश्वास खींचा।

लैम्बर्ट ने हँसते हुए कहा— "आपको वेदना हो रही है ?"

"हाँ, कुछ ठेस तो अवश्य लगी है।"

"आप एक नागिन को प्यार कर रहे थे, जो एक दिन आपके शरीर में अपने जहरीले दाँत अवश्य गड़ाती और यह भी संभव था कि वह आपके समस्त परिवार को क्रमशः यमलोक पहुँचा आपकी सम्पत्ति हस्तगत करती।"

"भगवान ने रक्षा की, वह अपने आप मर गई।"

"क्या अब भी आप अमेरिका चलना चाहते हैं ?"

"अब तो और अधिक चाहूँगा।"

"क्यों ? आपको मुक्ति मिल गई !"

"मेरे मनमें भयानक द्वन्द्व मचा हुआ है। बड़े भाग्य से आपका साथ मिला है। आपके साथ मुझे शान्ति मिलेगी। मैं आपके साथ चलूँगा।"

"तब होटल जाकर सामान ले आइए।"

"उसे वहीं पड़ा रहने दो। होटेल वाले उसे अपने तोशाखाने में जमा रखेंगे।"

"एक पत्र लिखकर उन्हें सूचना दे दीजिए।"

"अवश्य, और उसके साथ पिता जी को भी सूचना दे दूँगा कि मैं अमेरिका जा रहा हूँ।"

"अब हमारे पास समय बिल्कुल कम है। अभी मुझे दो-तीन आवश्यक काम करना है। जब तक उनसे निपटूँ, तब तक आप पत्र लिख डालिए।"

"एक प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करें।"

"वह क्या ?"

'आप वास्तव में कौन हैं ?"

"अमेरिकन सैलानी।"

"या अमेरिकन सिनेटर अथवा उसके समकक्ष कोई अधिकारी !"

"आपका अनुमान गलत है।"

रमणीमोहन ने एक फटा मुलाकाती कार्ड उसके सामने रखते हुए कहा—

"यह कार्ड बता रहा है कि आप क्या हैं।"

"वह मेरे एक दोस्त का है, जो यहाँ भूल गए थे।"

"संभव है कि यह आपका असली नाम न हो, किसी दूसरे का हो, किंतु इसमें सन्देह नहीं कि आप एक विशिष्ट व्यक्ति हैं और आपकी आज्ञाएँ दूतावास तक में पालन की जाती हैं।"

लैम्बर्ट ने हँसते हुए कहा—"मिस्टर बटरवर्थ से मेरा आलाप आपने सुनकर यह निराधार अनुमान लगाया है।"

"वह मुख्य कारण होते हुए भी कई दूसरी बातें भी यही संकेत करती हैं।"

"आप इन व्यर्थ विचारों में न फँसिए। अमेरिका मेरे साथ चल ही रहे हैं, वहाँ मेरी वास्तविकता प्रकट हो जायगी। जो मैं यहाँ हूँ, वही वहाँ भी हूँ। आप किसी भ्रम में मत पड़ें।"

'अमेरिका तक प्रतीक्षा करूँगा।"

"आप बड़े भोले हैं। आपको हर कोई फुसला कर भगा ले जा सकता है। पहले आपकी कला आपको भगा कर लाई और आज मैं आपको अमेरिका भगाए ले जा रहा हूँ।"

"अन्तर केवल इतना है कि कला एक नारी थी और आप एक भद्र पुरुष हैं।"

दोनों उन्मुक्त हृदय से हँसने लगे।

२१

कुमारसंभव नामक महाकाव्य में कालीदास ने हिमालय का वर्णन करते हुए लिखा है—"उत्तर में देवताओं का निवास क्षेत्र नागाधिराज हिमालय है, जिसकी स्थिति देख कर यह प्रतीत होता है कि वह महान मापदंड की भाँति पृथ्वी के पूर्वीय तथा पश्चिमीय सागरों की दूरी नाप रहा है।" हिमालय की स्थिति वस्तुतः ऐसी ही है। यह काराकोरम पर्वत से बर्मा के आराकान योमा पहाड़ी क्षेत्र तक फैला हुआ है। यह लगभग अठ्ठारह सौ मील लम्बाई

और तीन सौ मील की चौड़ाई में स्थित है। यद्यपि यह समस्त क्षेत्र पहाड़ी मरुभूमि की भाँति दुर्भेद्य कठिन और अनाकर्षक है, तथापि भारतीय देवताओं, यक्षों, किन्नरों का यह आवास क्षेत्र बताया गया है। देवाधिदेव शंकर की यह तपोभूमि मानी जाती है, तथा पौराणिक उपाख्यानों में वर्णित सुरों-असुरों की क्रीड़ा भूमि भी है। हिन्दू की भाँति बौद्ध भी इसके उतने ही भक्त हैं, और उनके अनेक ग्रन्थों में इसकी महिमा का विस्तृत वर्णन मिलता है। इसने अनादि काल से कवियों को कुछ न कुछ कहने के लिए उत्साहित तथा विवश किया है, हालांकि समस्त प्रदेश अनुर्वर चट्टानों से आच्छादित है। इसके ऊँचे शिखर बारहो महीने बर्फ से ढके रहते हैं, और प्रातः तथा सायं सूर्य की किरणें सप्त रंगों में नृत्य करती हैं। सत्तरह हजार फुट से आगे बर्फीला क्षेत्र है और वहाँ न वनस्पति उगती है न पशु-पक्षी रह सकते हैं। हिमालय पर्वत–माला तीन समानान्तर पंक्तियों में विभक्त है, और वहाँ हिमाच्छित शिखर हैं, गहरे भयानक खड्ड हैं, दुर्गम दर्रे हैं और तुषार तथा उष्ण जल कुंड है। उत्तरीय भारत की समस्त नदियों का वह पिता भी है, जिनमें दो नद हैं—सिन्धु और ब्रह्मपुत्र, एवं पुण्यतोया भागीरथी, यमुना, सतलुज आदि नदियों का उद्‌गम स्थान भी है। नटराज महादेव के तांडव-नृत्य की भूमि कैलास, इसका एक शिखर है और मानसरोवर उसके चरणों पर अपना अर्घ्य नित्य प्रदान करता है।

इस दुर्भेद्य पर्वत माला में लगभग बीस दर्रे हैं, जिनमें पन्द्रह ग्रीष्म ऋतु में व्यापारिक मार्गों के रूप में व्यवहृत होते हैं, यद्यपि इनकी ऊँचाई बीस हजार फुट तक है; केवल जोजीला नामक दर्रा तेरह हजार फुट की ऊँचाई पर है। यह दर्रा कश्मीर घाटी को गिलगिट और लद्दाख से सम्बन्धित करता है।

हिमालय के उस पार तिब्बत का महान पठार है, जो चीन तक चला गया है। जबसे तिब्बत पर चीन का अधिकार हो गया, तबसे इसका सामरिक महत्त्व बढ़ गया है। यह कहना अत्युक्ति न होगा कि चीन की महत्त्वाकांक्षाएं इस प्रदेश पर अधिकार करने के बाद ही बढ़ी हैं, क्योंकि उसके प्रसार का मार्ग उसको अनायास मिल गया। तिब्बतीय पठार समुद्र तल से बारह हजार फुट की ऊँचाई पर स्थित है, अतएव यहाँ के निवासी वहाँ की जलवायु के अनुरूप

हृष्ट-पुष्ट, भयानक शीत के अभ्यस्त, नृत्य-गीत के उपासक और कठिनाई झेलने में सहिष्णु होते हैं। भूगोलवेत्ता इस प्रदेश को विश्व की छत के नाम से पुकारते हैं और यह पृथ्वी मंडल का सर्वोच्च पठार है।

इस प्रदेश की जलवायु अत्यन्त शीत तथा उष्ण है। सूर्योदय के साथ पवन का वेग आरम्भ होता है और वह उसकी प्रगति के साथ बढ़ कर संध्या के समय प्रायः शान्त हो भयानक शीत का आवाहन करता है। रात्रि में कट-कटाती सर्दी पड़ती है। घाटियों और दर्रों में भी प्रचंड वेग से पवन सदैव बहता रहता है, जो चलने में पग-पग पर कठिनाई उत्पन्न करता है। चीन ने इसी भयानक क्षेत्र में भारत को युद्ध के लिए ललकारा है, यह समझ कर कि भारत को परास्त करने में नैसर्गिक क्षेत्र तथा वतावरण उसका सहायक होगा।

लद्दाख और तिब्बत का जलवायु एक समान है। मई से सितम्बर तक यहाँ की वर्षा ऋतु है और अक्टूबर से शीतकाल आरम्भ होता है। वर्षा ऋतु में बादलों के कारण वातावरण धुंधला रहता है, और रसद पहुँचाने वाले वायु-यानों को रसद गिराने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। संकीर्ण मार्गो गहरी खाइयों और भयानक हिमाच्छादित आँधियों के कारण भी गमना-गमन दुस्साध्य है और यात्रा चींटी की चाल से होती है। हमारे जवानों ने इस क्षेत्र में अपने साहस, धैर्य तथा सहिष्णुता का जो परिचय दिया है, वह इतिहास में अद्वितीय है, और इतनी ऊँचाई पर विश्व का कोई युद्ध नहीं लड़ा गया।

शीतऋतु में यहाँ का तापमान शून्य से नीचे उतर जाता है, और शुष्क बर्फीली हवाएँ शरीर के खुले भाग को झुलसाती है। जल केवल बर्फ को गला-कर प्राप्त होता है, और विचित्रता यह है कि प्यास कभी बुझती नहीं। इस प्रदेश का प्राकृतिक वातावरण क्षण-क्षण में बदलता है, और इसलिए सैनिक काररवाई में पग-पग पर बाधाएँ आती हैं। आक्सीजन अथवा प्राणवायु का पतलापन तथा न्यूनता कुछ क्षणों में मनुष्य को थका देती है। शस्त्रास्त्रों तथा अन्य सैनिक सामग्री भेजने का वायुयानों के अतिरिक्त दूसरा साधन नहीं है, तथा बीच-बीच में ऐसे दुर्गम स्थान हैं, जहाँ वे भी असफल होते हैं, एक चौकी से दूसरी चौकी तक सैनिक स्वयं सामान ढोने के लिए बाध्य होते हैं।

इस क्षेत्र में उपयोग किए जाने वाले शस्त्रास्त्र भी साधारण शस्त्रास्त्रों से भिन्न हैं, और उनके बिना कोई युद्ध सफलता के साथ नहीं लड़ा जा सकता। चीन इस पर्वतीय युद्ध के लिए वर्षों से तैयारी कर रहा था, और उसने योरोप के कम्यूनी देशों से छोटी बन्दूकों से लगाकर तोपों तथा टैन्कों तक संग्रहीत किए हैं। परन्तु इसके विरुद्ध भारत अपने पुराने शस्त्रास्त्रों से लैस था।

लेह पहुँचकर राणा वीरेन्द्र सिंह और मकबूल मियाँ की तैनाती चेशूल चौकी पर की गई। वहाँ से उनके दस्ते को पैदल रवाना किया गया। गोरखे जवान पहाड़ियों पर चढ़ने उतरने के आदी होते हैं, इसलिए उन्हें अपना-अपना फौजी सामान लेकर जाने में विशेष कठिनाई नहीं हुई, किन्तु मकबूल मियाँ का बुरा हाल था। राणा ने उनको हल्का करने के लिए उनका थोड़ा फौजी सामान लेने का प्रयत्न किया, परन्तु वह किसी तरह हार मानने को तैयार नहीं थे। रास्ता चढ़ाई का था। नवम्बर की तीव्र हिमानिल उन्हें अग्रसर नहीं होने देती थी। मकबूल मियाँ का जब दम फूल गया, और उनके पग लड़खड़ाने लगे, तब राणा ने कहा—"आइए, इस शिलाखंड पर बैठकर हम लोग कुछ सुस्ता लें।"

इच्छा होते हुए भी वह बोले—"आगे चलकर सुस्ताएंगे।"

राणा ने उन्हें जबरदस्ती बैठाते हुए कहा—"अपने शरीर के साथ जब्र न करना चाहिए। यह पहाड़ी मुल्क है, और आप कभी मैदानों से आगे बढ़े नहीं, फिर आपका जिस्म कैसे इतना जब्र बरदाश्त कर सकता है।"

मकबूल मियाँ बैठ गए या गिर-से पड़े। उनकी श्वास फूल रही थी, और फेफड़ों में नहीं समा रही थी। कुछ स्वस्थ होने के बाद कहा—"भाई साहब, जब आप मुझे 'आप' कहकर बात करते हैं, तब मुझे बहुत बुरा मालूम होता है। अव्वल, आप मेरे वालिद के दोस्त हैं, दूसरे मैं आपको अपना बड़ा भाई मानता हूँ। मेहरबानी कर आयन्दा आप मुझे, 'तू' या 'तुम' कहकर बात किया करें।"

"अच्छा, आयन्दा ख्याल रखूँगा।"

थोड़ी देर बाद मकबूल मियाँ ने कहा—"भाई साहब, मैं यह सोचकर

हैरान हूँ कि यहाँ लड़ाई कैसे लड़ी जायगी ?"

"जैसे हर जगह लड़ी जाती है, तोपों और बन्दूकों से ।"

"हम लोग कोई तोप ला नहीं सके ।"

"आवेंगी ।"

"यहाँ पैदल चलना दुश्वार है, फिर तोपें कैसे चढ़ाई जायंगी ?"

"चढ़ाई नहीं, उड़ाई जायंगी ।"

मकबूल मियाँ हंस पड़े । बोले—"वाह भाई साहब, घोड़ों से खिचवाने के बजाय क्या उनके पंख लगाए जाएंगे ?"

"हवाई जहाज पर उड़ाकर लाई जायगी ।"

"यह तो टेढ़ी खीर है ।"

"जरूर मुश्किल है, लेकिन जब तक दुश्मनों की तोपों के मुकाबले में हमारी जवाबी तोपें न होंगी, तब तक हमारी फतेह कैसे होगी ?"

"क्या चीनी ऐसे मुकामों पर भी तोपें ले आने में कामयाब हो गए ?"

"तोपें क्या, वे टैंक तक ले आए हैं ।"

"कैसे ?"

"यहीं पर हमारी कुछ थोड़ी कमजोरी है । तिब्बत एक पठार है । अगर आसमान से देखा जाय तो मालूम होगा कि हिमालय अपनी गर्दन भारत की ओर ऊँची किए तिब्बत में सुदूर तक पट पड़ा है ।

"लेकिन इधर की जमीन बहुत ऊबड़-खाबड़ ऊँची-नीची है । अगर बिल फर्ज किसी का पैर फिसले तो वह इन खड्डों में गिर कर चकनाचूर हो जायगा । शायद एक हड्डी तक साबित न बचे ।"

"हाँ, असलियत यही है ।"

"सुना है कि चीनियों का हमला हो गया ।"

"खबरें ऐसी हैं, इसीलिए हमको फौरन चेशूल चौकी पर रवाना किया गया है ।"

"चेशूल पिछला अड्डा है । लड़ाई उसके आगे हो रही है ।"

"चेशूल वह मुकाम है, जहाँ डटकर युद्ध होगा, क्योंकि इस मुकाम तक

हमारी रसद काफी कामयाबी से पहुँच रही हैं। हमारे जवानों ने यहाँ भार-वाही वायुयानों के उड़ान भरने और उतरने की पट्टी बना ली है। हमारे टैंक और तोपें उड़ाकर लाई जा रही हैं।"

"अब्बाजान ने आपके खत में क्या लिखा है? मेरे खत में कोई खास बात नहीं है।"

"कई भेद उन्होंने खोले हैं, क्या बताऊँ, मैं वहाँ नहीं था?"

"कौन से भेद।"

"यह शायद तुमको नहीं मालूम कि भारत में चीनी जासूसी कारवाई में भी बहुत बढ़े चढ़े हैं।"

"इसका मतलब यह कि उनके जासूस यहाँ अरसे से अपनी कारवाई कर रहे हैं?"

"हाँ, उस वक्त से जब से हमने उनको अपना भाई बनाया है, कर रहे है।"

"यानी जब से हमने 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' का नारा बुलन्द किया है।"

"बेशक, और शायद उससे भी पहले से।"

"तब क्या पचशील की आड़ में वह हिन्दुस्तान पर कब्जा करना चाहता था?"

"अब तो यही जाहिर होता है।"

"वह धोखे की टट्टी थी?"

"बिला शक।"

"तब हम मात खा गए।"

"नहीं, हमारा स्वप्न टूट गया है। अब हम उन्हें मात देंगे।"

"जासूसों के बारे में उन्होंने क्या लिखा है?"

राणा ने सविस्तार मिसेज़ रिपुदमन सिंह का रहस्य और कलकत्ता में उसकी तथा कला, एवं काउ-चो की मृत्यु का समाचार बताकर कहा—"अगर मिसेज़ रिपुदमन सिंह का भेद न खुलता, तब इस हमले के साथ चीनी अपने

पंचमांगियों की सहायता से दिल्ली में उलट फेर करने और तोड़–फोड़ की कारवाई जारी कर देते।"

"और इस भीतरी कारवाई से हमें गहरा नुकसान उठाना पड़ता।"

"उस वक्त क्या होता, यह कहना मुश्किल है। किन्तु ईश्वर ने सहायता की, और उसके घर से इतने हथियार बरामद हुए हैं, जिनसे कई डिवीज़न सेना लैस की जा सकती है।"

"वाकई, खुदा ने खैर की।"

"तभी तो विश्वास होता है कि इस लड़ाई में ईश्वरीय शक्तियाँ हमारे साथ हैं और हमारी फतेह होगी।"

"अजीब फितरती हैं ये चीनी।"

"फितरती, धोखेबाज, दोस्त कह कर पीठ में छुरा मारने वाले साजिश में अपना सानी नहीं रखते।"

"लेकिन आमने-सामने की लड़ाई में क्या फितरत करेंगे ?"

"देखना, वे यहाँ भी अपनी फितरत से बाज़ नहीं आवेंगे।"

"क्या यहाँ पर उनकी जासूस औरतें हमारे जवानों को बहकाने आवेंगी ?"

"असंभव नहीं है।"

"जब हम पहले से होशियार हैं, तब उनकी चालें खाली जायगी।"

"जवानों को बिगाड़नें वाली खूबसूरत औरतें होती हैं। चीन में इनकी कमी नहीं है।

"मैंने इरादा कर लिया है कि मैं चीनी औरतों पर गोलियाँ चलाऊँगा।"

"अभी ऐसा कहते हो। हमारी मजहबी किताबों में ऐसे कई किस्से बयान किए गए हैं जब बड़े बड़े कट्टर ऋषि–मुनि भी जानते-बूझते औरतों के फरेब के शिकार हुए हैं।"

"लेकिन मकबूल उनके फरेब में नहीं फँसेगा, यह इतमीनान रखिए।"

"ईश्वर करे तुम्हारी बुद्धि ऐसी ही बनी रहे। तुम्हारा विवेक ऐसा ही बना रहे।"

इसी समय उनके पीछे चला हुआ दूसरा दस्ता आ गया। उसके नायक ने पूछा—"क्या कोई दुर्घटना हो गई है ?"

राणा ने उठते हुए कहा—"दुर्घटना कोई नहीं हुई, सिर्फ मेरा साथी थक गया है।"

उसने मकबूल की ओर संकेत करते हुए कहा--"शायद आपकी भरती नई है।"

"हाँ एन.सी.सी. में ट्रेनिंग कर चुके हैं, लेकिन रण क्षेत्र में आने का पहला मौका है।"

"यहाँ एन०सी०सी० ट्रेनिंग काम नहीं देगी। आप लोगों को पहाड़ों पर चढ़ने, उतरने का अभ्यास करना होगा।"

"इसका अभ्यास हम कर रहे हैं।"

"अभ्यास इस प्रकार नहीं किया जाता। मेरा अभ्यास देखिए।"

यह कह कर उसने मकबूल मियाँ को गोद में उठा लिया, और तेज़ी से चढ़ाई पर दौड़ने लगा। मकबूल चिल्लाते ही रहे, किन्तु उसने उसे नहीं उतारा। जब वह बहुत हाथ पैर चलाने लगे, तब उन्हें उतार कर बोला--"इसे अभ्यास कहते हैं।"

राणा ने पास आकर पूछा—"भाई जी, आपका नाम क्या है ?"

उसने मुस्कराते हुए उत्तर दिया--"शेरसिंह नेगी। मैं कुमायूनी हूं।"

"मैं गोरखा हूं, और मेरा साथी पठान है।"

"भला चीनी अब क्या खाकर हमारा मुकाबला करेंगे।"

तीनों दिल खोल कर हँसने लगे। सनसनाती वायु ने हहरा कर उनका अनुमोदन किया।

२२

चेशूल क्षेत्र की एक अग्रिम चौकी पर राणा और मकबूल मियाँ की, गोरखा जवानों के साथ, तैनाती हुई। उनमें अदम्य उत्साह और शत्रु से लोहा लेने की उमंग थी। अफसरों तथा सैनिकों में अपूर्व मैत्री सम्बन्ध स्थापित हो

गए थे, एक दूसरे से सहयोग देने के लिए सभी लालायित थे, और वे सम्मिलित कुटुम्ब की भांति रहते थे। इन दोनों के साथ शेर सिंह की गहरी मित्रता हो गई, और अवकाश का समय प्रायः साथ बीतने लगा।

प्रथम पंक्ति की चौकियों के पत के समाचार आ रहे थे, परन्तु वे उनसे हतोत्साहित न हो कर, दृढ़ तथा उग्र हो रहे थे। चीनियों का आक्रमण रात्रि के अन्तिम प्रहर अथवा सूर्योदय के पूर्व होता था, और उस समय भारतीय सैनिक अधिक सावधान रहते थे।

उस दिन चौकी की पहरेदारी का भार शेर सिंह और मकबूल की टुकड़ी को सौंपा गया। वे व्यूह रचना कर दोनों एक साथ घूम-घूम कर सैनिकों को सावधान कर रहे थे। तोपें गोला उगलने के लिए तैयार खड़ी थी। हालांकि उनके सैनिक बर्फ के भट्ठों में जैसे-तैसे आराम कर रहे थे। बिश्राम करने के लिए पालियां बंधी थी। जिनकी पाली विश्राम लेने की थी वे हिमाच्छादित गह्वरों में गहरी नींद में सोये पड़े थे, दूसरे सतर्क आक्रमण का उत्तर देने के लिए कटिबद्ध खड़े थे।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष की अष्टमी का चन्द्रमा क्षितिज से ऊपर उठ आया था। उसकी किरणें श्वेत हिम शिखरों से टकरा कर झिलमिला रही थी। सर्वत्र शान्ति थी, केवल हहराती वायु उस चांदनी में पर्वत शिखरों से खेल तथा हँस रही थी। मकबूल मियां और शेर सिंह उस प्राकृतिक भयावने सौन्दर्य को निरखने लगे। मकबूल मियां ने कहा—"भाई नेगी, देखो चांद कैसा भीगा-भीगा नजर आ रहा है।"

"पठान भाई, मुझे चांद से सूरज ज्यादा अच्छा मालूम होता है।"

"इस ठंडे मुल्क में सूरज की ज्यादा कद्र है, क्योंकि वह हमें गर्मी बख्शता है।"

"और वह हमारे जीवन का आधार भी है।"

"लेकिन दोस्त, मैदानों में वह लू-लपट पैदा करता है। चांद हमेशा सुहावना है गर्मियों में भी और सर्दियों में भी।"

"ठंडे मुल्कों के लोग सूरज के प्रेमी हैं, उनके लोक गीतों में जहां

चांद की महिमा का बखान यत्किन्चित है, वहाँ सूरज के गुणगान से पोथे भरे हैं।"

"जहाँ हिन्दू सूरज के पुजारी हैं, मुसलमान चांद के।"

"पठान भाई, मुसलिम धर्म अरब में जन्मा है, जहाँ सूरज अग्नि बरसाता है, तथा चाँद शीतलता देता है, इसलिए शायद मुसलिम समाज में चांद की महिमा ज्यादा है।"

"आपका कयास ठीक है। हमारे सब त्योहार चांद पर मुनहिसर हैं।"

"हिन्दुओं के सूरज पर। देखिए भौगोलिक स्थिति मनुष्य के विचारों में कितना अन्तर डाल देती है।"

"लेटिन भाषा में चाँद को 'ल्यूना' कहते हैं, और अंग्रेजी में पागल को 'ल्यूनैटिक' जिसका मतलब है चाँद का मारा हुआ। उनका कहना है कि कुछ लोग चांद को देखते-देखते पागल हो जाते हैं। इससे यह मतलब निकलता है कि चाँद इतना खूबसूरत है कि वह आदमी को पागल बना देता है।"

"पठान भाई, तब चाँद को न देखो। उसकी खूबसूरती में फँसकर कहीं तुम्हारा भी दिमाग खराब न हो जाय।" यह कह कर वह हँसने लगा।

मकबूल मियां हँसते हुए आगे बढ़ने लगे। कुछ दूर जाने के बाद उन्हें एक बड़ी चट्टान के पीछे श्वेत बालों से मंडित कोई वस्तु चलती प्रतीत हुई। दोनो सतर्क होकर उसकी ओर अग्रसर हुए, किन्तु वह ओझल हो गई। मकबूल मियां ने पूछा—"नेगी भाई, वह सफेद बालों वाला भालू कहां छिप गया? मैंने उसे इधर जाते देखा था।"

शेरसिंह ने अपनी दृष्टि गड़ाते हुए उत्तर दिया—"देखा तो मैंने भी, लेकिन अब वह नहीं देख पड़ता। कोई जानवर या भालू होगा जो किसी खोह में छिप गया है,। यह भी हो सकता है कि हमारा दृष्टि भ्रम हो।"

"नहीं जी, मैंने उसे हरकत करते साफ देखा था। मेरा ख्याल है कि वह किसी चट्टान की आड़ में दबक गया है। दो पैरों वाला जानवर इनसान है, हैवान नहीं।"

"अब चांद देखने का असर नुमायां हो रहा है।"

"क्या मतलब ?"

"तुम्हारे दिमाग में फुतूर पैदा होने लगा।"

"और तुम क्या उससे खाली हो ? पहले तुमने ही उसे देख कर इशारा किया था।"

"पठान भाई, मैं कब इनकार करता हूं। चाँद तो हम दोनों ही देख रहे थे। उसका असर हम दोनों पर समान रूप से होगा।"

मक़बूल मियां के उत्तर देने के पहले फिर सफेद बालों का पुलिन्दा हरकत करता दिखाई दिया। उन्होंने उसकी ओर संकेत करते हुए कहा—"देखो, वह जा रहा है।" कहने के साथ वह उधर तेज़ी से लपके, किन्तु समीप पहुंचते-पहुंचते वह पुन: ओझल हो गया। नेगी दौड़ कर आगे बढ़ गया, और मक़बूल मियां दाहिनी ओर लपके। वह पन्द्रह-बीस पग बढ़े होंगे कि उनके एक पैर में रस्सी का फन्दा पड़ गया और जब तक वह संभले तब तक गर्दन और छाती में भी फन्दे पड़ गए। उनकी गति अवरुद्ध हो गई। उसके साथ ही चार श्वेत बालों वाले भालुओं ने सब तरफ से आक्रमण कर उनको एक विशेष युक्ति से चाँप लिया, और एक ने बालों का गुच्छा उनके मुंह में ठूँस दिया। घबड़ाहट से जो चीख निकलने वाली थी, वह गे-गे शब्द में बदल गई, और वह भी हहराती वायु में खो गई। उसी क्षण इसी प्रकार का आक्रमण नेगी पर भी हुआ। बालों के गुच्छे मुँह में ठुंसे होने पर भी उनके मुख कपड़ों से बांध दिए गए। इसके बाद क्लोरोफार्म से भीगा कपड़ा उनकी नाक पर रख कर उन्हें अचेत कर दिया गया।

अचेत होते ही उनके सरदार ने चीनी भाषा में कहा—"तुम लोग उन्हें याक पर चढ़ा कर ले जाओ।"

उनमें से एक ने पूछा—"हेड क्वार्टर या कैम्प ?"

उसने आदेश पूर्ण स्वर में कहा—"नोलिंग।"

उन्हें उठाए हुए वह कुछ दूर गए और एक मोटी चट्टान के पास खड़े दो याकों पर उनको लाद कर सफेद बालों के कम्बलों से ढक दिया गया। वे जिस प्रकार मौन आए थे, उसी प्रकार पहाड़ों में छिप गए।

उपर्युक्त घटना इतनी क्षिप्रता से घटित हुई कि किसी को भी कानों-कान खबर नहीं हुई। हहराता हुआ पवन ही एक मात्र साथी था, और वह भी अट्टहास करता हुआ उनके आगे-पीछे चलने लगा। हालांकि एक सजग चौकीदार प्रहरी की दृष्टि उन पर पड़ी, किन्तु श्वेत चांदनी और श्वेत हिम ने उनको अपने समान दिखा कर उसको दृष्टि भ्रम समझने के लिये बाध्य किया। उन सबों ने नोलिंग नगर का मार्ग पकड़ा।

२३

मकबूल मियाँ और शेरसिंह का अपहरण इतना गुपचुप हुआ कि उनके सैनिक जो चारो दिशाओं में पहरा दे रहे थे, सन्देह तक न कर सके। उनकी अनुपस्थिति उस समय प्रकट हुई जब राणा वीरेन्द्रसिंह के जवानों के पहरा देने की पाली आई, नियमानुसार पहरे आध-आध घन्टे में बदला करते थे, क्योंकि हिमाच्छादित पवन वेग उनकी दृष्टि शक्ति पर दूषित प्रभाव डालकर उन्हें स्पष्ट देखने से मजबूर कर देता था। यह हानिकारक प्रभाव प्रायः आध घण्टे के पश्चात उत्पन्न हो जाता था, परन्तु निरन्तर अभ्यास और अदम्य उत्साह तथा सहिष्णुता से उसकी अवधि एक घण्टे तक बढ़ गई थी। जब अन्य प्रहरी पहले वालों का पहरा बदलने के लिये नहीं आये, और न उस बीच मकबूल मियाँ और शेरसिंह दिखाई दिए, तब वे घबड़ाकर इस अव्यवस्था का कारण जानने के लिए चिन्तित होने लगे। राणा उस दिन विशेष रूप से थके होने से गहरी नींद में सो गए थे। नियमानुसार मकबूल मियाँ को जगाकर अधिकार भार देना था, परन्तु उनके अपहरण हो जाने से उस नियम का पालन नहीं हो सका। पाली वाले प्रहरी जाग कर आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। उधर नाके वाले प्रहरी को सुदूर पहाड़ की घाटी में कुछ हरकत का सन्देह हुआ। पहले उसने अपना दृष्टि भ्रम समझा, परन्तु दूरबीन से देखने पर उसे स्पष्ट प्रतीत हुआ कि शत्रु सेना एकत्रित होकर कोई वस्तु ऊपर चढ़ा रही है। उसने तुरन्त सतर्क करने वाला बिगुल बजा दिया। उसका शब्द सुनते ही सैनिकों ने सावधान होकर राणा को जगाया। राणा ने समझा कि

जगाने वाला मकबूल मियां है। उन्होंने अपनी आंखें मलते हुए कहा—"मकबूल भाई, मैं तो गहरी नींद में सो गया था। सब ठीक है ?"

सैनिक ने उत्तर दिया—"हम लोग बड़ी देर से उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, परन्तु वह नहीं दिखाई दिये। नाके के प्रहरी ने बिगुल बजाकर शत्रु के आगमन की सूचना दी है। हम सब सतर्क हैं, और....।"

राणा हड़बडा कर उठे और पूछा—"शत्रु आ गया ! चलो मैं तैयार हूँ। मकबूल और नेगी कहां है ?"

"पता नहीं, वे कहां गायब हो गये ? एक घण्टे से उन्हें किसी ने नहीं देखा।" इसी समय बन्दूक दागने की आवाज सुनाई दी।

उसके साथ शिविर में हलचल मच गई। उस हलचल में कोई अव्यवस्था नहीं थी। सभी काम एक निर्दिष्ट व्यवस्था से चलने लगे। मशीनगनें और तोपें पहले से यथास्थान लगी थीं। पहली पाली के सैनिक बदलकर दूसरे उनकी जगहों पर तैनात होने लगे।

राणा वीरेन्द्रसिंह ने नाके के सिपाहियों के पास पहुँचकर पूछा—"साथी, क्या देख रहे हो ?"

सैनिक ने संकेत करते हुए कहा—"देखिये उस घाटी की पहाड़ी पर कई आदमी कोई बोझल वस्तु ऊपर चढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं।"

राणा ने अपनी दूरबीन से देखकर कहा—"तुम्हारा अनुमान सत्य है। मुझे वह तोप मालूम पड़ती है। शायद वे मोर्चा बांध कर उस पहाड़ी से यहां निशाना साधेंगे। हमें उनकी यह काररवाई तुरन्त बन्द कर देना चाहिये।"

यह कहकर वे तोपचियों की ओर दौड़े।

इस समय चन्द्रमा अर्ध आकाश में आ गया था, और पूर्व दिशा में पौ फटने लगी थी। हिमाच्छादित पवन सांय-सांय करता हुआ बह रहा था। प्रायः इसी समय चीनियों के आक्रमण होते थे। शायद उनको यहां की सजगता का भान हो गया था। इसी समय सुदूर पहाड़ी की चोटी पर लगाई तोप ने पहला गोला उगल कर आक्रमण की सूचना दी और उसकी गड़गड़ाहट दूर-दूर तक फैल कर गिरि कन्दराओं को ध्वनित करने लगी।

राणा ने क्षिप्रता से अपनी तोपों की शिस्त ठीक कर पहला गोला स्वयं दागा। निशाना अचूक बैठा और गोला घाटी में एकत्रित सैनिकों के मध्य गिरा। कई चीनी हताहत हुए और चढ़ाई जाने वाली तोप लुढ़क कर नीचे गिर पड़ी। राणा ने दूसरा गोला दागा और उसके जवाब में शत्रुओं की तोपें, जो पहले ही अँधेरी रात में चढ़ा दी गई थीं अग्नि बरसाने लगीं। इधर से भी प्रत्युत्तर में तोपें दगने लगी। इसी समय शत्रु विपुल संख्या में पहाड़ी पर अधिकार करने के लिए दौड़ पड़े। मशीन गनों की गोलियों की बौछार से वे धराशायी होने लगे। राणा ने दूरबीन से देखा कि शत्रु पक्षीय सैनिक पांच-पांच की पंक्तियों में अग्रसर हो रहे हैं। उनके पास छोटी-छोटी मशीन गनें हैं, और ज्योंही उनमें से कोई मरता या गिर पड़ता है त्योंही उसके पीछे के सैनिक सबसे पहले उनके अस्त्रों पर कब्जा कर उसे मरने के लिए छोड़ देते हैं। भारतीय जवानों की मुस्तैदी से की गई मार ने उनको क्षण भर के लिए छिन्न-भिन्न कर दिया, परन्तु वह अव्यवस्था बहुत देर नहीं रही। चीनी सैनिकों की एक दूसरी लहर बड़े वेग से आगे बढ़ी। राणा ने दौड़कर तोपचियों को उस सैनिक समूह पर गोले बरसाने का आदेश दिया। तोपों की मार से वे पुनः विचलित हुए किन्तु उन्होंने बढ़ना जारी रखा।

राणा ने अपने अधीन कर्मचारी से कहा—"शत्रु की संख्या अपार है। वे हमें तीनों दिशाओं से घेरने की कोशिश कर रहे हैं। पार्श्वों की पहाड़ियों पर वे शायद अभी जम नहीं पाये, किन्तु देखो वे दाहिनी ओर की पहाड़ी पर आ गए। अपनी एक तोप का मुंह उधर घुमाकर गोले बरसाओ जिसमें वे अपना मोर्चा न बांध पाएं।"

उसने तुरन्त आदेश पालन किया, और तोपें गोले बरसाने लगीं। राणा दौड़ कर उस ओर गए जहां से बाईं तरफ की पहाड़ी पर निशाना साधा जा सकता था। उधर के तोपची पहले से तैयार थे। उनके आदेश पर वहां की तोपें भी गोले उगलने लगी। सामने की पहाड़ी से शत्रु की तोपें निरन्तर गोले दाग रहीं थीं और पैदल सैनिक बराबर बढ़ते चले आ रहे थे। उनको अपने साथियों के मरने की परवाह न थी। मन्त्रमुग्ध की भांति वे उत्तरोत्तर अग्रसर

होते आते थे।

राणा ने अपने चुनिन्दा गोरखों को सावधान करते हुए कहा—"वीरो, शत्रु अपने अपार मानव बल से हमें आक्रान्त करना चाहता है ।तुम्हारी खुखड़ी की मार विश्वविजयिनी है। नैपालियों और भारतीयों में कोई भेद नहीं है, दोनों एक ही राजपूत कुटुम्ब के वीर हैं। यह आपत्ति भारत के ऊपर नहीं वरन तुम्हारे ऊपर आई है। इन चीनियों को दिखा दो कि दो पृथक राष्ट्रों के होते हुए भी विपत्तियों में एक ही राष्ट्र है जो एक दूसरे की रक्षा में अपने प्राणों की बाजी लगा देते हैं । इन भूखे-नंगे चीनियों को मारना बकरों के मारने के समान सरल है। अगर चीनियों को अपने मानव बल पर नाज है तो हमें अपने दुर्धर्ष शौर्य पर। जैसे तालाब में फैली काई को एक चतुर तैराक काट कर आगे बढ़ता है वैसे तुम भी शत्रुओं के समूह को काटकर आगे वढ़ो। भगवान पशुपति नाथ तुम्हारी रक्षा अपने त्रिशूल से इस चेशूल पर कर रहे हैं ।"

गोरखे सैनिक पशुपतिनाथ की जय-जयकार के साथ मुकाबला करने के लिए आगे बढ़े।

राणा फिर बोले—"ठहरो, मैं भी तुम्हारी तरह गोरखा सिपाही हूँ। पहले मुझे आगे बढ़ कर भारत का ऋण चुकाने दो।"

उन सैनिकों के नायक ने कहा—"आप सेनापति हैं, इस मौके पर सैन्य संचालन मुख्य कार्य है। उसमें किसी प्रकार की शिथिलता न आनी चाहिए। शत्रु को मारने के लियें हम लोग बहुत काफी हैं। जिस प्रकार चीनी सैनिक बढ़ रहे हैं, उसी प्रकार हमारे स्थान लेने के लिए राजपूतों को भेजिए। जन्म से हम सब खुखड़ी से खेलते हैं, आज हमारा कौशल देखिए। हम सौ-सौ को मारकर मरेंगे। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि हमारा एक-एक सैनिक पूरे एक सौ से कम शत्रुओं को भू-लुंठित नहीं करेगा।"

राणा को पीछे ठेलकर गोरखों का दस्ता आगे बढ़ा, और पल मात्र में शत्रुसमूह को चीरता घुस गया। अपने प्रहार से चीनियों कोगाजर मूली की भाँति काट कर वह आगे बढ़ने लगा। चीनी सैनिकों की पंक्तियां लहरों की भाँति एक के पीछे एक चली आ रही थी। गोरखे जवानोंमें अदम्य उत्साह और तेज था।

वे भारत की स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहे थे, इसलिए अनुपम शौर्य और बिश्वास से उनकी पंक्तियों का वध करने में संलग्न थे । जब उनके पीछे मेवाड़ी राजपूतों का जत्था भगवान एकलिंगजी की जय जयकार करने लगा, तब उनके थकते हुए हाथों में नवस्फूर्ति आई, और द्विगुणित उमंग से शत्रुओं का वध करने लगे । उसके बाद जब चामुंडा देवी और करणी माता की जय बोलते राठौड़ रणभूमि में उतर आए तब सबका उत्साह चौगुना हो गया और वे चीनियों के शवों से घाटियों को पाटने लगे । मार-काट का बाजार गर्म हो गया, और अमूल्य मानव जीवन चीन की महत्वाकांक्षा की वेदी पर बलि चढ़ने लगा । उनकी मार से सारी शत्रु सेना तितर-बितर हो गई । वे भागने का मार्ग ढूंढ़ने लगे, किन्तु पीछे से चीनी सैनिकों का प्रवाह उन्हें ठेल-ठेलकर मरने के लिए बाध्य करने लगा ।

उधर तोपों का युद्ध बराबर जारी था । इस समय चंद्र बिल्कुल निष्प्रभ हो मध्य आकाश में स्थित हो युद्ध देख रहा था । उषा सुन्दरी का कब आगमन हुआ, और कब वह अन्तर्धान हुई, किसी ने न जाना, काराकोरम के श्वेत शिखर स्वर्ण मंडित होने लगे । सप्तवर्ण विकसित होकर क्षण–क्षण में प्रकृति सुन्दरी का नवीन शृंगार करने लगे, और बाल सूर्य रक्त सरिता में अपना मुख देखने का प्रयास करने लगा । पवन की प्रचंडता में वृद्धि हुई, और हवायें उस रक्त प्रपात को देखने में अक्षम हो गिरि कन्दराओं, अथवा उत्तुंग शिखरों की आड़ में दौड़–दौड़ कर छिपने लगी । दोनों पक्षों के सैनिक एक दूसरे को स्पप्ट देखने लगे थे । तोपों के घननाद से वातावरण इस कदर गूंज रहा था, कि किसी का शब्द ठीक से सुना नहीं जाता था, परन्तु यन्त्र-चालित पुतलों की भाँति सभी सिपाही अपने-अपने स्थान पर जमे युद्ध करने में संलग्न थे । उनमें से जहाँ किसी को निपात होता, वहाँ तुरन्त दूसरा उसके स्थान पर बिना किसी हिचकिचाहट आकर डट जाता । भारतीय जवान एक मन, एक विचार और एक दृढ़ता से लड़ चीनियों का बध करने में व्यस्त थे ।

राणा की क्षिप्रता देखने योग्य थी । वह बिजली की तेजी से यत्र-तत्र-सर्वत्र देख पड़ रहे थे । कभी किसी तोपची के पास जाकर उसको शाबाशी

देते, कभी किसी की शिस्त ठीक करते, कभी किसी के आहत हो जाने से स्वयं तोपें दागने लगते, और कभी ओजस्वी स्वर में सैनिकों को उत्साहित करते। उनके पूर्वजों का शौर्य आज उनमें पूर्णतया साकार हो गया। धुंए से उनका शरीर और मुंह काला हो गया परन्तु उस कालिमा में उनका सहज शौर्य और पुंसत्व का लोहित वर्ण स्पष्ट प्रकट हो रहा था। वह मन-वचन-कर्म से शत्रु के संहार में जुटे थे। वह युद्ध के अग्निकुंड में अपनी आहुति देने के लिए तत्पर थे, परन्तु शत्रु की गोलियां और गोले चारो ओर बरसते हुए भी उन्हें छू नहीं रहे थे। जब वह पशुपतिनाथ की जयकार करते, तब प्रतीत होता कि स्वयं पिता की अपनी जय बोलकर सबके साथ अपने को उत्साहित कर रहे हैं। जीवन और मृत्यु का मिलन प्रत्यक्ष था। क्षण भर पहले जो जीवित था, वह दूसरे क्षण मिट्टी का एक पुतला बन जाता। स्पष्ट प्रतीत होता था कि शिव का तांडव नृत्य हो रहा है, और सभी एक के बाद एक अनन्त समाधि में लीन हो रहे हैं।

राजपूत और गोरखे सैनिकों ने वह उत्साह और शौर्य प्रदर्शित किया, जो इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखा जायगा। वस्तुतः वे ऐसा इतिहास बना रहे थे, जो उनकी परम्परा के सर्वथा अनुकूल था, और अपने पूर्वजों की आन-बान-शान में चार चांद लगा रहे थे। उनकी मार से चीनियों के पैर उखड़ गए, और वे अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भाग कर खड्डों में गिरने लगे। पीछे से आती हुई उनकी कुमुक का भी अन्त हो गया। अब वे चिल्ला रहे थे—'चीनी-हिन्दी भाई-भाई'। उनके हथियार फेंकने पर भी किसी का ध्यान नहीं जाता था। चीनियों के शवों के अम्बार पर अम्बार चारों ओर लगे थे, और भूमि उनसे पटी पड़ी थी।

भारतीय तोपचियों की मार से शत्रु-पक्ष की सभी तोपें बन्द हो चुकी थीं, जिससे प्रकट होता था कि उनके चालक भी हताहत हो गए हैं। उधर से विजय प्राप्त कर राणा सम्मुख युद्ध का संचालन करने के लिए दौड़ पड़े। उनकी रक्षा के लिए कई जवान भी उनके आगे-पीछे दौड़ने लगे। राणा ने देखा कि सर्वत्र शवों के ढेर लगे हैं, और भारतीय जवानों ने मैदान

सर कर लिया है। उनके शौर्य ने उन्हें ललकारा और वह खुखड़ी निकालकर पिल गए। साथ के सैनिक टामीगनों से शत्रुओं को मारने लगे। जब उन्होंने दहाड़कर पशुपतिनाथ की जय बोली, तब जहाँ-तहाँ घायल पड़े गोरखों में नवजीवन का संचार हुआ, और वे चीनियों के शवों को हटाकर खड़े होने का प्रयत्न करने लगे।

इसी समय सहसा एक चीनी सैनिक के टामीगन की गोली राणा के दाहिने भुजमूल में लगी। उसके लगते ही खुखड़ी वाला हाथ नीचे झूल गया, किन्तु वह उससे तनिक विचलित न हो अपने बाँए हाथ से उसे उठा रहे थे कि एक दूसरी गोली जांघ में घुस गई। राणा अचेत होकर गिर पड़े, किन्तु साथ के सिपाहियों ने उन्हें लपक कर उठा लिया, और युद्ध–भूमि से उठा शिविर में ले आए।

घड़ी दिन चढ़ते-चढ़ते युद्ध का पटाक्षेप हुआ, और केवल पवनदेव की गर्जना अवशेष रही। बचे-खुचे चीनी न-मालूम कहाँ अदृश्य हो गए।

शिविर में पहुँचते ही राणा की संज्ञा लौटी, और उन्होंने मन्द स्वर में युद्ध का समाचार पूछा। सैनिकों ने एक स्वर में भारत की जय जयकार से उत्तर दिया। उनकी आँखें उल्लास से चमकने लगीं। उनके मुख से अनायास निकल गया—"भगवन् तेरी इच्छा पूर्ण हो।" और यह कह कर पुन: अचेत हो गए। इस बार की बेहोशी विजयोल्लास की चरमोत्कर्षता के कारण हुई।

२४

लद्दाख क्षेत्र में युद्ध छेड़ने के साथ चीनियों ने पूर्वीय क्षेत्र नेफा में भी आक्रमण कर दिया। भारत–बर्मा की सीमा से भूटान–भारत सीमा तक का क्षेत्र युद्ध ज्वाला से प्रज्ज्वलित हो उठा। लांगजू पर उनका पहले ही अधिकार हो गया था, और इस बार उनका ध्येय था उस क्षेत्र पर अधिकार करना जो भारत और तिब्बत के मध्य स्थित है और विशेष रूप से उन दर्रों पर, जो तिब्बत से भारत में प्रवेश के द्वार हैं। भारतीय सेनाओं ने अपने मोर्चे उन

सभी दर्रों के मुकाबले में बना लिए थे, और शत्रु के आक्रमण की प्रतीक्षा कर रहे थे।

विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जिसने कभी किसी पड़ोसी राष्ट्र पर आक्रमण नहीं किया। आक्रामकों से उसने सदैव अपनी रक्षा ही की है, और जो युद्ध उसे लड़ने पड़े उनमें रक्षात्मक नीति थी; शायद इसीलिए पड़ोसी राष्ट्रों ने बार-बार उस पर आक्रमण भी किए हैं। विदेशी आक्रमणों का एक यह भी कारण था कि भारत चन्द्रगुप्त के पश्चात् कभी संगठित राष्ट्र नहीं हुआ। वह छोटे छोटे राज्यों में सदैव विभक्त रहा, तथा गृह युद्धों में ही वे अपनी शक्ति क्षीण करते रहे। यह कहना अत्युक्ति न होगी कि उसकी कोई अपनी वैदेशिक नीति कभी नहीं रही। उसने पड़ोसी राष्ट्रों से कभी सैनिक मित्रतायें नहीं की, और न कभी शक्ति संतुलन की ओर ही ध्यान दिया। बिना एकतन्त्रीय राष्ट्र के वैदेशिक नीति हो ही नहीं सकती, इसीलिए वह सदैव आक्रमणकारियों द्वारा त्रस्त होता रहा। चन्द्रगुप्त के पश्चात् भारत का एकीकरण ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत हुआ, और स्वाधीनता प्राप्त करने के पश्चात् समग्र अन्तर्देशीय राज्यों के विलीनीकरण से वह संगठित राष्ट्र बना। इस समय से उसकी वैदेशिक नीति का श्रीगणेश होता है। विश्व के समग्र राष्ट्रों से मैत्री–सम्बन्ध स्थापित करने में उस नीति का विकास आरम्भ होता है। इसी नीति के कारण उसने चीन से भी अपने मैत्री सम्बन्ध जोड़े, तथा हिन्दी–चीनी भाई–भाई का नारा बुलन्द किया, और तिब्बत की प्रभुसत्ता भी उसे सौंप दी। परन्तु तिब्बत पर प्रभुसत्ता प्राप्त करते ही उसकी जन्मजात महत्वाकांक्षा में वृद्धि हुई, और वह समग्र दक्षिण-पूर्वीय एशिया पर अपना अधिकार जमाने के लिए उद्विग्न हो उठा। जहां दूसरे एशियाई राष्ट्र विदेशी जुआ उतार फेंकने के बाद अपनी आन्तरिक समृद्धि तथा स्थिति को सुधारने में संलग्न हुए, वहाँ चीन अपने साम्राज्य–विस्तार की तैयारी में लग गया। वह योरोप के कम्यूनिस्ट देशों से अपरिमित मात्रा में सैनिक सामग्री एकत्रित करने लगा। इसी अवधि में उसने तिब्बत पर पूर्ण रूपेण अधिकार जमा लिया, तथा दलाई लामा को अपनी प्राण-रक्षा के लिये स्वदेश से निष्कासित

शौकीन थे। इधर कई दिनों से उन्हें मछली खाने को नहीं मिली थी, यद्यपि मांसलभोजन उन्हें नित्य मिलता था। प्रकाशकौर और उसकी सहेलियाँ बनैले पशुओं तथा पक्षियों का शिकार करने में अति प्रवीण थी, और वे उनको अपने गाँव से अनेक विधियों से पकवा कर लाती थी, परन्तु मछली उनके दस्तर ख्वान पर नहीं आई थी। उन्होंने एक पतले तार को मरोड़ कर कांटा बनाया और उसमें केचुआ वेध कर नदी में डोर के सहारे लटका दिया। वह बैठ कर मछली फँसने की राह देखने लगे। बैठे-बैठे दो घंटे का समय बीत गया, परन्तु कोई मछली न फँसी। उस दिन प्रकाश कौर मेजर से दो घंटे की छुट्टी लेकर गांव गई और वादा कर गई थी कि वह उनके लिए एक अनूठी वस्तु लाएगी। मछली का शिकार करने के अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय उस विरह व्यथा को भुलाने का नहीं था। जब मछली भी न फँसी और प्रकाश भी न आई, तब उन्होंने सक्रोध कांटा और डोर एक ओर फेंक दिया, और उसके आगमन की प्रतीक्षा चहल कदमी करते हुए करने लगे। ज्यों-ज्यों समय बीतता था, त्यों-त्यों उनकी उद्विग्नता क्रोध का रूप धारण करती जाती थी। वह सोच रहे थे कि आयन्दा कभी उसको जाने की अनुमति नहीं देंगे। जब सूर्यास्त हो गया और अन्धकार गाढ़ा होगे लगा, तब वह चिन्तित होने लगे। वह अपने शिविर में भी न लौट सकते थे, क्योंकि प्रकाश उनको जंगल के किनारे प्रतीक्षा करने को कह गई थी। पक्षियों का कलरव शान्त हो गया और वे सब अपने-अपने घोंसलों में रैन-बसेरा लेने लगे। उनके मन में अनेक प्रकार की आशकाएँ उठने लगी। उनके कान खड़े थे, और प्रति पल भ्रम होता था कि वह अपनी सहे-लिमों के साथ जंगल के बाहर आने वाली है। सूखे पत्तों की धीमी खड़खड़ाहट भी उनके मन में आशा का दीप प्रज्वलित करती, और जब उनकी अधीरता चरमसीमा को पहुँच गई, तब उन्होंने जोर-जोर से उसका नाम लेकर पुकारना आरम्भ किया। प्रतिध्वनि उनका मजाक उड़ाने लगी। पुन: उनकी इच्छा होने लगी कि वह जंगल भेद कर स्वयं उस गाँव तक जांय, जहाँ वह गई है और जिसे वह बन प्रदेश के उस पार बताती थी। किन्तु गहन अन्धकार उनको उधर कदम उठाने का परामर्श न देता था, क्योंकि आवागमन की पंगडंडियों को ढूंढ़

निकालना असंभव था।

अनेक चिन्ताओं में वह निमग्न थे कि उन्हें जंगल के भीतर टार्च के प्रकाश की एक किरण दिखाई दी। आशान्वित होकर पुकारा—"प्रकाश !"

आगन्तुक प्रकाश और उसकी सहेलियां थी। उसने तुरन्त उत्तर दिया—"अभी आई।" और कुछ पलों में वह दौड़ती हुई, उनके पास आकर उनसे लिपट गई।

मेजर ने उसे ठेलते हुए कहा—"वापस अपनी सहेलियों में लौट जाओ, यहाँ तुम्हारा कोई काम नहीं है।"

प्रकाश उन्हें मनाते हुए बोली—"बस इतनी देर में रूठ गए। मैं आज एक ऐसी चीज लाई हूँ, जिसकी तुम कल्पना नहीं कर सकते।"

"मैं तुम्हारी कोई चीज खाने की कौन कहे, छुऊँगा भी नहीं।"

"खाना मत, केवल पी लेना।"

"मदिरा की कोई कमी यहाँ नहीं है।"

"परन्तु मैं एक विशेष विधि से उतार कर लाई हूँ। तुम्हारी मदिरा उसके सामने हेच है। मैं जानती थी कि तुम घबड़ा रहे होगे, किन्तु ऐसी फँस गई थी कि वादे पर नहीं पहुँच सकी। मुझे क्षमा करो।"

यह कह कर वह उन्हें मनाने लगी।

इसी बीच प्रकाश की सहेलियाँ अपने-अपने शिरों पर गगरियाँ उठाए वहाँ आ पहुँची।

प्रकाश ने हँसकर कहा—"देखो, मेरी सहेलियाँ तुम्हारे और जवानों के लिए यह सौगात लाई हैं। जानते हो, यह सब किस उपलक्ष में है?"

मेजर ने कोई उत्तर नहीं दिया।

प्रकाश ने उनका हाथ पकड़ते हुए कहा—"मैं एक ऐसा समाचार लाई हूँ, जिसे सुनकर तुम प्रसन्न होगे।"

"वह क्या?"

"उसे तब बताऊंगी, जब तुम माफ कर दोगे।"

"पहले बताओ।"

"अच्छा सुनो, गाँव के निवासियों ने बताया है कि चीनियों ने तोवांग के मोर्चे पर आज सुबह आक्रमण किया था, परन्तु वे बुरी तरह मारे गए, और हमारी विजय हुई है।"

"सच ?"

"और नहीं क्या झूठ ! विजय का समाचार चौकी पहुँच गया होगा। तुम चूंकि यहाँ जंगल में बैठे मछली मारते रहे, इसलिए नहीं सुन सके। शिविर में चलो। वहां सबके साथ जश्न मनाएँ।"

"क्या सत्य चीनी मार भगाए गए ?"

"उनके हजारों जवान खेत रहे, और वे मोर्चा छोड़कर भाग गए। उस क्षेत्र से भाग कर कई व्यक्ति गाँव में आए, और उन्होंने यह समाचार दिया है। दरअसल इसी समाचार के कारण इतनी देर हुई, क्योंकि सब लोग नाचने-गाने लगे, और मदिरा उतारने का काम बिलम्ब से आरम्भ हुआ।"

"यदि यह बात है, तब मैं तुम्हें माफ करता हूँ। आओ चौकी चलें।"

प्रकाश और मेजर साथ-साथ चले, और उनके पीछे उल्लास से गाती हुई उसकी सहेलियां चलने लगी।

× × ×

वह रात्रि उल्लास की रात्रि बन गई। चौकी के जवानों को जब समाचार मिला कि चीनी अगली चौकी से भगा दिए गए हैं। तब वे भी हर्ष-विभोर हो उठे। पूर्वीय क्षेत्र में पहली विजय मनाने के लिए सब आतुर हो गए। जवान अपनी-अपनी प्रेयसियों के साथ नाचने गाने लगे। प्रकाश साकी बन कर सब को पात्र भर-भर कर पिलाने लगी। जो न पीता अथवा अधिक का बहाना करता, उसे प्रकाश स्वयं मनुहार कर पिलाती। पहर रात तक पीने-पिलाने, नाचने-गाने का जश्न बड़ी धूम-धाम से चलता रहा।

सहसा एक धड़ाका हुआ, और 'चीनी-हिन्दी भाई-भाई' पुकारते हुए चीनियों की एक सशस्त्र टुकड़ी ने उन्हें चारो ओर घेर लिया। प्रकाश और उसकी सहेलियाँ अपने-अपने प्रेमियों को छोड़कर भागने लगीं। नाचते-गाते जवान अपनी-अपनी जगह पर किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो एक दूसरे का मुंह निहारने लगे।

मेजर भी दूसरे जवानों की भाँति नशे में चूर थे। उनकी समझ में कुछ नहीं आया।

एक चीनी अफसर ने कड़क कर आदेश दिया—"अपने-अपने हाथ ऊपर उठाओ।"

मेजर और भारतीय सैनिक दूसरे क्षण गिरफ्तार कर लिए गए।

चीनी अफसर ने पुकारा—"लूंग !"

प्रकाश एक कोने में दबकी खड़ी थी। वह सामने आकर आदेश की प्रतीक्षा करने लगी।

अपनी भाषा में उसने पूछा—"यहाँ पर सब इतने ही सिपाही हैं, या अभी कुछ बाकी हैं। तुम्हारा मेजर यही है ?"

लूंग ने उत्तर दिया—"हां मेजर यही है, और दो को छोड़ शेष सब मौजूद हैं। वे गश्त करने गए हैं।"

"उनको भी पकड़ लिया जायगा। तुम अन्य गुप्तचरों से कहो कि यहाँ का सब खाने-पीने का सामान इकट्ठा कर हेड क्वार्टर पहुँचावें।"

हथकड़ी पहने मेजर ने प्रकाश को घूरते हुए पूछा—"इससे क्या तेरी पुरानी जान-पहचान है ?"

लूंग के अट्टहास से वातावरण कांपने लगा।

उसने हँसते हुए उत्तर दिया—"मेजर साहब, चीनी मेरे देशवासी भाई हैं। मैं उन्हें नहीं पहचानूंगी ?"

मेजर ने दांत किटकिटाते हुए कहा—"तू चीनी है ?"

लूंग ने उसके गाल पर गुलचा मारते हुए कहा—"नहीं तो क्या मैं हिन्दुस्तानी हूँ !"

"और तेरी मां मिसेज रिपुदमन सिंह ?"

"वह मेरी माँ नहीं, चीनी गुप्तचर है। जैसी मैं हूँ वैसी वह, अन्तर केवल इतना है कि मुझे उसके अधीन काम करना पड़ता था।"

"उफ ! मैंने बुरा धोखा खाया।"

"धोखा केवल तुमने नहीं, बल्कि समस्त भारत ने खाया है। शत्रु को

छल छद्म से परास्त करना चीनी कूटनीति है ।"

"आज शाम को क्या तुम इन्हीं चीनी सैनिकों के आने की राह देख रही थी, क्या इसीलिए तुम्हें देर हुई थी ?"

"अपने जीवन में तुमने पहली बार मेरे छल को समझ पाया है ।"

"भारत की विजय की बात क्या झूठ थी ?"

"सोलह आना । भारतीय भला क्या खाकर चीनियों को हरायेंगे । अब जाइए, चीन में पुनः आपके दर्शन करूंगी, किन्तु इस बार मुझ पर क्रोध न करना, ताकि मुझे मनाना न पड़े ।"

यह कह कर वह अपनी सहेलियों के साथ हँसती, नाचती चली गई । मेजर और उसके सैनिक दाँत किटकिटाते रहे ।

चीनी सैनिक उन सबको पशुओं की भाँति रस्सियों में बांध कर ले जाने लगे ।

सेला क्षेत्र में भारतीय सेना इसी भाँति बन्दी बनाई गई । जो थोड़े बहुत भाग निकले, उन्हें चीनियों ने घेरकर बनैले पशुओं की भाँति बध कर डाला । इस क्षेत्र में उनको अपार रसद की सामग्री और नवीन शस्त्रास्त्र हाथ लगे ।

अष्टमी का चांद पूर्व दिशा से झांकने लगा था । वह गर्दन ऊँची कर देखता हुआ आँसू बहाने लगा । सांय-सांय करता हुआ पवन भी सिसकियाँ भरने लगा । मेजर ने एक दीर्घ निश्वास के साथ कहा—"बहुत बुरा धोखा खाया । इस पाप का प्रायश्चित केवल आत्महत्या है ।" और उनकी आँखों से आँसू बहने लगे ।

आत्मग्लानि से वह मृतक तुल्य हो गए ।

२५

जब मकबूल मियां को होश आया, तब उन्होंने अपने को एक बड़े कमरे में पलंग पर पड़े पाया । उसे स्वप्न समझकर उन्होंने अपने नेत्र पुनः बन्द कर लिए, परन्तु मस्तिष्क की चेतन क्रियाएँ उन्हें बार-बार आंखें खोलने के

लिए विवश करती और सुप्त घटनाएँ याद आने लगी। वह सोचने लगे कि जिन भालुओं ने उन्हें घेर लिया था, वास्तव में भालू न होकर उसकी खाल ओढ़े हुए चीनी थे। परन्तु इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता था कि उन्हें क्यों इस प्रकार भगा कर लाया गया।

इन्ही गुत्थियों के सुलझाने में वह व्यस्त थे कि कई एक चीनी सुन्दरियाँ नर्स की पोशाक पहने प्रविष्ट हुई, और उनकी परीक्षा करने लगी। मकबूल मियाँ आश्चर्य से उनको देखने लगे। हृदय आदि अवयवों की परीक्षा करने के बाद एक ने अपनी चीनी भाषा में कुछ पूछा, और परीक्षक की सहमति पाकर उसने हिन्दी में पूछा—

"अब आपकी तबियत कैसी है ?"

मकबूल मियाँ उसको मौन घूरते रहे; किन्तु उत्तर नहीं दिया।

उसने उनके रूक्ष बालों पर हाथ फेरते हुए कहा—"जवाब दीजिए। आप बोलते क्यों नहीं ?"

"ठीक है।" संक्षिप्त उत्तर देकर वह फिर मौन हो गए।

प्रश्नकर्ता के अतिरिक्त सब नारियों के चले जाने के बाद, वह उनके पास कुर्सी खींच कर बैठ गई, और धीरे धीरे उनके कपाल को सहलाने लगी। इस प्रकार किसी नारी का स्पर्श उन्होंने कभी अनुभव नहीं किया था। उनकी धमनियों का रक्त उष्ण होने लगा, और शरीर रोमांचित।

उसका हाथ हटाते हुए पूछा—"पहले यह बताइए कि आप कौन हैं, और मैं कहाँ हूँ ?"

उसने पुन: हाथ रखते हुए कहा—"घबड़ाइये नहीं, आप अपने भाइयों में हैं।"

"क्या मतलब ?"

"यही कि हिन्दी-चीनी भाई-भाई हैं, और आप अपने चीनी भाई के मेहमान हैं।"

मकबूल मियाँ हँसने लगे।

उस नारी ने उनसे पूछा—"आपकी हँसी बताती है कि आप अब

बिल्कुल अच्छे हो गए हैं ?"

"क्या मैं बीमार था ?"

"आप दो दिनों की बेहोशी के बाद एक दिन कुछ देर के लिए जगे थे, और फिर दवा पिलाकर सुला दिए गये थे।"

"यह मुझे कुछ याद नहीं है।"

"उस वक्त तक आप का दिमाग साफ नहीं हुआ था, इसलिए याद नहीं है।"

"लेकिन जब याददाश्त लौटी तब अपने को आपका क़ैदी पाता हूँ।"

"आप न क़ैदी हैं, और न कोई वैसा बर्त्ताव आपके साथ किया जा रहा है। क़ैदियों को लेटने के लिए पलंग, रहने को कमरा, तीमारदारी को नर्से नहीं मुहैय्या की जाती। आप मेहमान हैं, और वैसा ही बर्त्ताव किया जा रहा है।"

"यह आज सुना कि दुश्मन भी मेहमान बन सकता है।"

"लेकिन दुश्मनी हो तब तो !"

"चीन क्या भारत से दुश्मनी नहीं कर रहा है ?"

"हरगिज नहीं। चीन सिर्फ भारत से सीमाओं का समझौता करना चाहता है।"

"लड़ाई से ?"

"भाइयों की आपसी झगड़ा लड़ाई नहीं है।"

"तब जो इतनी मार-काट हो रही है, दोनों तरफ के हजारों जवान मर रहे हैं, वह सिर्फ भाई-चारे को मजबूत करने के लिए है ?"

"इसी गलतफहमी को दूर करने के लिए आप यहाँ लाए गए हैं।"

"और शायद इसीलिए हमारे दूसरे जवान भी लाए जा रहे हैं, या लाए जायेंगे।"

"हाँ, हिन्दुस्तानी फौजी भाइयों के दिलों से यह बदगुमानी हटा देना ज़रूरी है।"

"आपकी जुबान बहुत सलीस है। आप अपनी तारीफ कीजिए।"

"आज नहीं, किसी दूसरे दिन आपको अपने बारे में बताऊँगी।"

"आज क्यों नहीं ?"

"अभी जल्दी है, और दूसरे हमारी बातें सुन रहे हैं।" यह वाक्य उसने झुक कर उनके कानों के समीप अति धीमे स्वर में कहा।

"इस कमरे में कोई नहीं है।" उसी तरह धीमे स्वर में मकबूल मियाँ ने संकेत में कहा।

"इस कमरे में ऐसे आले लगे हैं, जो आवाज़ बाहर ले जाते हैं?" फिर जोर से बोली—"आप क्या खाना पसन्द करेंगे ?"

"क्या कैदी को पसन्दगी का हक हासिल है ?"

"कह चुकी हूं कि आप कैदी नहीं, मेहमान हैं ?"

"अगर बिलफर्ज मैं मेहमान हूं, तब आप अपने रिवाज मुवाफिक मेहमान की खातिरदारी कीजिए।"

"मुर्ग का शोरवा और चपातियाँ आपको पसन्द हैं ? वह खाना आपको फुर्ती और ताकत देगा।"

"हाँ मेरी हालत के मुवाफिक होगा।"

"अब जाने की इजाजत दीजिए; ताकि इसका बन्दोबस्त करूँ।"

"और मैं अकेला क्या करूँ ?"

"आराम कीजिये और खाने का इन्तजार कीजिए।"

"काम मुश्किल है।"

"थोड़ी देर में यह मुश्किल हल हो जायगी।"

इतना कह मुस्करानी हुई वह कमरे के बाहर चली गई। उसके जाने के बाद मकबूल मियाँ कुछ देर तक पड़े ज़मीन आसमान के कुलाबे मिलाते रहे। उन्हें यह विचित्र व्यवहार समझ में नहीं आ रहा था। उनकी गिरफ्तारी के बाद चेशूल की चौकी पर कैसी घटनाएँ घटीं, राणा वीरेन्द्र सिंह और उनके जवानों पर क्या बीती, इसी प्रकार के विचार उनके मन में उठ रहे थे, परन्तु उनका कोई उत्तर नहीं मिल रहा था।

जब लेटे-लेटे वह उकता गए तब कमरे में चहल कदमी के लिये पलँग से नीचे उतरे, परन्तु खड़े होने पर उनके पैर लड़खड़ाने लगे। वह अज़ों-अज़ों

में दर्द महसूस करने लगे। मजबूर होकर उन्हें फिर लेट जाना पड़ा।

थोड़ी देर आँखें बन्द किये लेटे रहने के बाद थकावट कुछ दूर हुई। थोड़ी देर में कमरे का दरवाज़ा खुला, और वही नर्स उनका भोजन लेकर आई।

उसने उनका हाथ पकड़ कर उठाते हुये कहा—"आप से कह गई थी आराम करने को, लेकिन आप माने नहीं, और उठने की कोशिश की। आखिर लड़खड़ा कर गिर पड़े?"

"यह आपने कैसे जाना?"

"आपकी हालत से। लीजिए गर्म-गर्म शोरवा पीजिए। दो दिनों की बेहोशी और दवा की तेज़ी से आप काफी कमज़ोर हो गए हैं। कल तक आप अच्छे हो जाएंगे।"

नर्स ने उन्हें उठाकर शोरवा पिलाने के बाद कहा—"इस वक्त इतना ही काफी है। दोपहर को आपको सालन-रोटी मिलेगी। अब सोने की कोशिश कीजिए।"

"सोया नहीं जाता।"

"शोरवे की गर्मी आपको सुला देगी।"

"इसमें कोई बेहोशी पैदा करने वाली दवा तो नहीं मिली है?"

"अब उसकी कोई जरूरत नहीं है।"

"मेहरबानी कर इतना बता दीजिये कि चेशूल में मेरे भगा लाने के बाद क्या हुआ?"

"जल्दी न कीजिए। धीरे-धीरे मालूम हो जायगा।"

"वह सब जानने के लिए मैं हौलदिल हो रहा हूं।"

"सब्र से बढ़ कर दुनियाँ में कोई चीज आरामदेह नहीं है।"

"लेकिन उसको हासिल करना भी टेढ़ी खीर है।"

"देखिए, आपकी आँखें झपकने लगी हैं। आप सो जाइए।"

सत्य ही मकबूल मियाँ औषधि के प्रभाव से इच्छा न रहते हुए भी सो गये।

नर्स ने मुस्कराते हुए करीने से लिटा दिया और ओढ़ा कर चली गई ।

२६

दो पहर दिन चढ़ने के बाद मकबूल मियाँ की नींद स्वत: टूट गई, और जागकर पुन: हैरानी के साथ वह अपने विचारों को सम्बद्ध करने लगे। अब उनके मन में विचार आया कि क्या शेर सिंह भी उन्हीं की भाँति कैद कर लाया गया है, अथवा वह चेशूल में कैद होने से बच गया है। इस समय उन्हें भूख सता रही थी, और वह खाने के लिए उतावले हो उठे। उन्हें अधिक देर तक प्रतीक्षा नहीं करना पड़ा, और भोजन की ट्रे लिए हुए उसी नर्स ने प्रवेश किया। मुस्कराती हुई मेज़ पर खाना चुनने के बाद वह बोली—"आइए अब खाना खाइए। खूब ज़ोर की भूख लगी होगी।"

मकबूल मियाँ एक छलांग में उठ कर कुर्सी पर बैठ गये और देखने लगे कि खाने के लिये कौन चीज़ें आई हैं।

नर्स ने शोरवे का प्याला देते हुए कहा—"पहले शोरवा पी लीजिये।"

"इसको सबसे आखीर में पिऊँगा, क्योंकि डर है कि पहले की तरह फिर नींद का हमला न हो जाय।"

"उस वक्त आपको नींद की जरूरत थी, इसलिये नींद लाने वाली दवा आपको दी गई थी। चूंकि अब उसकी कोई जरूरत नहीं है इसलिये इसमें वह शामिल नहीं है।"

शोरवा पीने के बाद वह खाने पर टूट पड़े। नर्स उनको करुण दृष्टि से देखने लगी। कुछ भोजन पहुँचने के बाद जब उन्हें कुछ शान्ति मिली, तब कहा—"यह आपने पकाया है? बड़ा लज़ीज़ है।"

"खाना लज़ीज़ नहीं, भूख लज़ीज है।"

"हो सकता है। भूख शिद्दत की लगी है।"

"शौक से खाइए। मगर ख्याल रखियेगा कि कहीं ज्यादा न हो जाय।"

"कोई मुजायका नहीं। ज्यादा होने पर आप दवा दे दीजियेगा।"

"यह कोई अस्पताल नहीं है।"

"फिर आप नर्स की पोशाक क्यों पहने हैं ?"

"आपकी तीमारदारी के लिये।"

"बताइये, मैं कहाँ लाया गया हूँ, और मेरे साथ क्या वर्त्ताव होगा, और मुझे क्या करना होगा ?

"आपने तीन सवाल एक साथ कर दिये !"

"अच्छा एक-एक का जवाब दीजिए। पहले बताइए कि मैं कहाँ हूं?"

"आप चीन में हैं।"

"मुकाम का नाम क्या है ?"

"नोलिंग।"

"यह क्या कोई नया शहर है ?"

"हाँ, तिब्बत फतेह करने के बाद सरहदी काररवाई के लिये यह नौ-आबाद किया गया है।"

"हिन्दुस्तान से कितनी दूर है ?"

"बहुत दूर नहीं, लेकिन काराकोरम पहाड़ बीच में हायल है।"

"क्या उसे पार करना मुश्किल है ?"

"उनके लिये नहीं जो रास्ता जानते हैं बाकी के लिये वह मौत की घाटी है।"

"आप रास्ता जानती हैं ?"

"हाँ, और नहीं।"

"वाह, आप तो पहेली बुझाने लगीं।"

"जरा दिमाग़ पर जोर दीजिये, तो पहेली सुलझ जायगी।"

"मेरा दिमाग़ काम नहीं करता।"

"तब समझिये कि अपने लिये जानती हूं, दूसरों के लिये नहीं।"

"दूसरों से मतलब शायद मुझसे है।"

"दूसरों में आप भी शामिल हैं।"

"अब मेरे दूसरे सवाल का जवाब दीजिये; मेरे साथ कैसा वर्त्ताव होगा ?"

"बर्त्ताव आप देख ही रहे हैं, पहले भी इस का जवाब दे चुकी हूं, कि आपके साथ मेहमान का बर्त्ताव होगा।"

"तीसरा सवाल है कि मुझे क्या करना है?"

"इसका जवाब मैं नहीं दे सकती, क्योंकि मुझे खुद नहीं मालूम।"

"किसको मालूम है?"

"चीन के आला अफसरों को, जिनके हुक्म से आप लाये गए हैं।"

"वे आला अफसर कौन है?"

"जैसे आपके मुल्क में आला अफसर होते हैं, वैसे यहां भी हैं।"

"उनके नाम बताइए?"

"यहां नाम नहीं, नम्बर होते हैं।"

"आपका भी कोई नम्बर होगा?"

"हां,।"

"वह क्या है?"

"जान कर क्या कीजिएगा?"

"शायद कभी ज़रूरत पड़े।"

"ज़रूरत पड़ने पर बता दूंगी।"

"कुछ मामला बैठा नहीं।"

"सब्र से सब बैठ जायगा।"

"अच्छा बताइए मेरा साथी कहां है?"

"आपके साथी हिन्दुस्तान में रह गए।"

"मेरे साथ किसी दूसरे को पकड़ा गया है?"

"पकड़े जाने वालों की तादाद हजारों में है?"

"क्या?"

"यही कि आपके हजारों साथी चीन के सच्चे इरादों को जानकर उसके हिमायती बन गए हैं।"

"उन्होंने हिन्दुस्तान के साथ गद्दारी की।"

"गद्दारी नहीं, दोस्ती!"

"दोस्ती और भाईचारे की नींव धसक गई है, फिर भी आप उसकी दुहाई देती हैं।"

"लाठी मारने से कहीं पानी जुदा होता है। सच्चाई हर सूरत में सच्चाई रहती है। चीन और हिन्दुस्तान भाई-भाई बन कर ही रह सकते हैं। आखीर नतीजा भी यही होगा।"

"हिन्दुस्तान ने दोस्ती का हाथ हमेशा बढ़ाया है, दर हकीकत चीन ने ही उसकी कद्र नहीं की।"

"चीन जितनी भारत की कद्र करता है, उतनी किसी देश की नहीं, किन्तु देश की सीमाओं को दुरुस्त करना भी तो ज़रूरी है। भारत पश्चिमीय देशों के प्रभाव में आकर सीमा-समझौता नहीं करना चाहता, इस लिए बल-प्रयोग करना पड़ा।"

"बलप्रयोग या हमला ?"

"अपनी भूमि पर अपना अधिकार करना कभी हमला नहीं कहा जा सकता। यदि हमला करना चीन का मकसद होता, तब वह एकतरफा युद्ध-बन्दी की घोषणा कर अपनी विजयिनी सेनाओं को क्यों वापस बुला लेता ?"

"क्या यह सत्य है ?"

"बेशक, चीन ने लड़ाई खत्म करने का ऐलान कर दिया है, और उसकी फौजें वापस आ रही हैं। चीन किसी देश पर हुकूमत करना नहीं चाहता। वह पुनः भारत को सीमा-समझौता करने की दावत दे रहा है।"

"यह बात मानने में नहीं आती। और, भारत पश्चिमीय देशों के असर में है, सरासर गलत है।"

"अगर यह गलत है, तब बताइये क्यों अमेरिका और ब्रिटेन फौजी हथियार उसे मुफ्त में दे रहा है।"

"नहीं, यह भी ग़लत है।"

"आपको मालूम नहीं, क्योंकि अमेरिका ने आपके यहां आने के बाद फौजी इमदाद देना शुरू किया है। कहीं यह सीमाओं का झगड़ा तीसरे महा युद्ध में बदल न जावे, इस लिए चीन अपनी फौजें लौटा रहा है।"

"क्या भारत की शिकस्त हुई ?"

"नेफा और लद्दाख दोनों जगह हमारी मुकम्मिल जीत हुई है, बल्कि नेफा में हमने हज़ारों की तादाद में कैदी बनाए हैं। हमारी फौजों ने न वहां की आबादी उजाड़ी और न कोई तोड़-फोड़ की, जैसा अक्सर लड़ाई में हुआ करता है।"

मकबूल मियां सोच-विचार में डूब गए। कोई उत्तर नहीं दिया।

नर्स कुछ देर तक उनकी प्रतियिक्रायें देखती रही, फिर बोली—"आप यकीन मानिए कि जो कुछ मैंने कहा है, वह सौ फीसदी सच है।"

"मानना ही पड़ेगा।"

"आपको शक है, लेकिन हम लोगों ने अपनी फौजी काररवाई की फिल्में ली हैं, आज रात को आपको इसी कमरे में मशीन लगवा कर दिखा दूंगी। फोटोग्राफी तो झूठ नहीं हो सकती। वह हकीकत उतारती है, और हकीकत परदे पर दिखाती है।"

"देखूंगा।"

"फिल्में यहां आगई हैं, आज रात को दिखा दूंगी। अब आराम कीजिए। यों तो मैं आपकी बराबर खोज-खबर लेती रहूँगी, फिर भी अगर कोई ज़रूरत महसूस हो तो आप अपने पलंग पर लगी घंटी का बटन दबा दीजिएगा। मैं फौरन आ जाऊंगी।

यह कह वह भोजन की ट्रे उठाकर चली गई। मकबूल मियाँ पलंग पर लेट कर विचारों में मग्न हो गए।

२७

नवाबज़ादा और ब्रजमोहन दास निराश होकर दिल्ली वापस लौट आए। रमणीमोहन का कोई पता न लगा। मिसेज रिपुदमनसिंह, मिनचू और काउ-चो की मृत्यु का समाचार संकट कालीन अध्यादेश के अनुसार सर्व साधारण पर प्रकाशित नहीं किया गया। दिल्ली पुलिस अफसर अस्पताल में स्वास्थ्य लाभ करने लगा। चीनी आक्रामक दोनों क्षेत्रों में बढ़ते चले आ रहे थे।

देश में सर्वत्र हा-हाकार मच गया, और भारतीय जनता की बेफिक्री की नींद बहुत बुरा धक्का खाकर टूटी । किन्तु यह पुरदर्द हालत कुछ ही देर रही। चीन का मुकाबला करने के लिए समस्त भारत एक व्यक्ति की भांति संभल कर उठ खड़ा हुआ । जन जागरण की ऐसी लहर आज के पहले कभी नहीं उठी थी । प्रत्येक नागरिक छोटा-बड़ा , बच्चा-बूढ़ा-जवान, गरीब-अमीर, भिखारी और कोट्याधीश, स्त्री-पुरुष कश्मीर से कन्याकुमारी तक हड़बड़ा कर उठ बैठा और रक्षा कोष में अपना सब कुछ मुक्त हस्त से दान करने लगा। प्रत्येक शहर फौज में भरती होने वाले जवानों से उतराने लगा । रक्त दान की होड़ लग गई । सब एकस्वर, एकमन, और एकउद्देश्य हो गए । चीनियों को अपने देश से बाहर खदेड़ने की प्रतिज्ञायें सर्वत्र होने लगी । चीन से लोहा लेने में भारत की दृढ़ता देख कर विश्व चकित हो गया । अमेरिका और ब्रिटेन शस्त्रास्त्र भेजने में संलग्न हो गए, और वायुयानों से ब्रिटिश तथा अमरीकी सैनिक सामग्री पहुंचाई जाने लगी । भारत ने महसूस किया कि वह अकेला नहीं है, पश्चिमी राष्ट्र उसकी जी-जान से सहायता कर रहे हैं, इससे उसकी शक्ति सौगुनी हो गई । जब वह प्रत्याक्रमण के लिए तैयार हुआ, तब चीनी आक्रामक अपनी स्थिति बनाए रखने के लिए एकतरफा युद्धबन्दी की घोषणा कर अपनी सेनायें लौटाने लगे । किन्तु भारत की जनता पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा । शीत ऋतु का आगमन हो गया था । पहाड़ों पर युद्ध करना दुर्धर्ष ही नहीं, वरन असंभव था, इस लिए भारत को रुक जाना पड़ा। चीनियों ने विजेताओं की हैसियत से सीमा-समझौता-वार्ता का निमन्त्रण अपनी शर्तों के साथ दिया, जिसे भारत ने अस्वीकार किया, और घोषणा की कि वार्ता तभी आरम्भ हो सकती है, जब चीनी वे सब मुकाम खाली कर वापस चले जाँय जो उन्होंने छल, कपट के युद्ध से प्राप्त किए हैं ।

ब्रजमोहनदास बम्बई लौट जाना चाहते थे, परतु नवाबजादा ने उनको जाने की अनुमति नहीं दी । चीनियों की प्रारंभिक विजय से उन्हें चिन्ता हो गई थी । कई दिनों से राणा और मकबूल मियां का कोई समाचार नहीं मिला था । चेशूल पर चीनियों का अधिकार नहीं हो सका था, इससे उन्हें कुछ

सन्तोष हुआ था, परन्तु उन दोनों के सम्बन्ध में कोई समाचार न मिलने से वह बहुत व्याकुलता से दिन व्यतीत कर रहे थे। सन्तोष और नैयर को दम मारने का अवकाश नहीं मिलता था। इस लिए उनसे भी भेंट नहीं होती थी। टेलीफोन से समाचार पूछ लिया करते थे।

नवाबजादा अपने कमरे में बैठे ब्रजमोहन दास से युद्ध सम्बन्धी चर्चा कर रहे थे कि उस दिन की डाक लेकर उनके मुनीम मुनीर मियाँ ने प्रवेश किया। पत्रों का समूह उनके सामने रख कर वह जाने लगा। नवाबजादा ने पूछा-"डाक देख ली है ?" कोई खास चिट्ठी है ?"

"पाकिस्तान के दो खत हैं और एक सेठ साहब के लिए है।" यह कह कर सेठ ब्रजमोहन दास का पत्र निकाल कर उन्हें दे दिया।

ब्रजमोहन दास ने उसे देखते ही कहा-"यह पत्र रमणीमोहन का है, बम्बई से लौट कर आया है।"

नवाबजादा ने उत्सुकता से कहा-"शुक्र है। बरखुरदार ने अपना पता तो दिया। जरा पढ़िये क्या लिखते हैं ?"

सेठ ब्रजमोहन दास पढ़ने लगे।

मेरी लैण्ड्स

वाशिंगटन (अमेरिका)

पूज्य पिता जी,

सादर प्रणाम

मुझसे कुछ ऐसी भयंकर भूलें हो गई हैं जिनसे मैं आप को मुंह दिखाने योग्य नहीं हूँ। मैं चीनी गुप्तचरों के कुचक्र में आकंठ डूब गया था परन्तु ईश्वर ने एक देवदूत भेज कर मेरी रक्षा की है। उसी देवदूत के साथ मैं अमेरिका आ गया हूँ और कुछ दिन यहीं रहने और अपने पापों का प्रायश्चित करने का विचार है। आशा है कि आपका आशीर्वाद प्राप्त होगा।

अब मैं अब तक की घटनाओं पर प्रकाश डालता हूँ । दिल्ली में 'मिस इण्डिया' का चुनाव हो रहा था । उसका ताज नीलाम पर चढ़ाया गया, और यह घोषित किया गया कि उसकी आय राष्ट्रीय-सुरक्षा कोष में दी जायगी । मैंने भी एक बोली लगा दी और यहीं से मेरा पतन आरम्भ होता है । बोलियां बढ़ने लगीं । नीलाम का भूत मेरे ऊपर सवार हो गया । मैंने आखीर तक बोली लगाने का निश्चय किया । अन्त में बोली मेरे नाम ग्यारह लाख रुपयों में खत्म हुई । इस पागलपन में केवल इतना संतोष था कि रकम सुरक्षा कोष में जा रही है । तीर हाथ से निकल चुका था और उन रुपयों के भुगतान के लिए आपको लिखना पड़ा और आपने बिना आपत्ति के भुगतान कर दिया । यदि बात यहीं समाप्त हो जाती तब तक कोई अधिक चिन्ता की बात नहीं थी । किन्तु जिन घटनाओं का मैं शिकार बना वह अवश्य शोचनीय हैं ।

'मिस इण्डिया' की कथित मां मिसेज रिपुदमन सिंह जो वास्तव में गुप्तचरों की संचालिका थी, मुझे अपने एक गुप्तचर द्वारा अपने घर में निमंत्रित किया । उत्सुकतावश मैं वहाँ गया । मिसेज रिपुदमन सिंह ने अपनी कथित लड़की कला को मेरे पीछे लगा दिया । कहते लज्जा मालूम होती है कि मैं उसके प्रेम जाल में फँस गया । उसका कुछ ऐसा जादू चढ़ा कि मुझे सब कुछ विस्मृत हो गया और उसको लेकर कलकत्ता रवाना हो गया । वहां मेट्रोपालीटन होटेल में ठहरा और आप के भय से फौज में डाक्टर होकर जाने का विचार करने लगा । इसी बीच चीनियों का आक्रमण हो गया । समाचार सुन कर मैं अधीर हो उठा और अधिक विस्तार से जानने के लिए होटेल के बाहर आया ।

मेरी अनुपस्थिति में होटेल में अनेक भंडा-फोड़ करने वाली घटनाएं घटी । दिल्ली की पुलिस मिसेज रिपुदमन सिंह को पकड़ने के लिए कलकत्ता आई और उसी होटेल में छापा मारा जिसमें मैं कला के साथ ठहरा था । मिसेज रिपुदमन सिंह के वहाँ ठहरने की मुझे कोई जानकारी नहीं थी किन्तु कला को अवश्य होगी क्योंकि वह उस समय उसी के कमरे में थी जब पुलिस उसकी गिरफ्तारी के लिये आई थी । उस सिलसिले में वहां मिसेज रिपुदमन

सिंह कला की गोली से और कला अपने चीनी साथी की गोली से मारी गयी। दूसरा चीनी गुप्तचर भागने में असमर्थ रहा और वह पुलिस द्वारा मारा गया। यह सारा रहस्य मुझे एक देवदूत से विदित हुआ जो चौरंगी में मुझे मिल गया था। मैं इस देवदूत का बहुत कृतज्ञ हूँ, और उसका कुछ परिचय देना आवश्यक है।

देवदूत का नाम मिस्टर जान वुडवर्थ है जो छद्म नाम लैम्बर्ट धारण किए सैलानी के रूप में भारत भ्रमण कर रहे थे। भ्रमण करते हुए उन्हें चीनियों की साजिश का पता चला। चीन कई वर्षों से भारत में सर्वत्र अपने गुप्तचरों का जाल बिछाए उसको हस्तगत करने की गुप-चुप काररवाई कर रहा था। कलिम्पोंग, कलकत्ता, दिल्ली, बम्बई, आदि शहरों में उनके प्रमुख केन्द्र थे। सबसे पहले उन्हें मिस मिलर नामक चीनी गुप्तचर से जो अमेरिकन पिता और चीनी माता की सन्तान थी चीनी गुप्तचरों की काररवाई का आभास मिला। लैम्बर्ट अमेरिकन सिनेटर भी हैं और गुप्त रूप से भारत की औद्योगिक स्थिति का पता लगाने आए थे क्योंकि वह भारत में एक औद्योगिक प्रतिष्ठान खोलने की योजना बना रहे हैं। उन्होंने कई प्राइवेट जासूसों, अमेरिकन सहायकों को बुलाकर चीनी षड़यन्त्र का पूरा पता लगाने का आदेश दिया। वह पता लगाते हुए दिल्ली आए और संयोग से वह आकाश होटेल में मेरे बगल वाले कमरे में ठहरे। पड़ोसी होने के नाते उनसे मेरा आलाप हो गया। एक दिन मिसमिलर से उनकी भेंट पुन: दिल्ली में हुई। मिस मिलर रंगीन तबियत की युवती थी। वह होटेल आने जाने लगी और उसी के द्वारा मैं भी मिसेज रिपुदमन सिंह के यहां निमंत्रित किया गया था। उस समय तक कोई मिसेज रिपुदमन सिंह की वास्तविकता से परिचित न हो पाया था, यहाँ तक कि लैम्बर्ट भी नहीं। एक दिन लैम्बर्ट ने मिस मिलर को गहरी शराब पिलाकर बेहोश कर दिया और उसके वस्त्रों से एक नक्शा बरामद किया जिसमें चीनियों की योजना का खुलासा वर्णन था। लैम्बर्ट ने उस नक्शे को चुरा लिया। मिस मिलर ने उसे प्राप्त करने के लिए कई उपाय किये और उसी चेष्टा में वह एक रात में लैम्बर्ट के कमरे में अपने एक चीनी साथी के साथ

पकड़ी तथा जान से मारी गई। यह घटना उसी दिन घटित हुई जिस दिन मैं कला के साथ कलकत्ता प्रस्थान कर चुका था। इसी कारण मैं उसकी मृत्यु से अज्ञात रहा। लैम्बर्ट दिल्ली से कलकत्ता आ गए और चौरंगी में उनसे अकस्मात भेंट हो गई और उन्होंने सब बातें बताईं। जब मैं उनके होटेल में बैठा था तब लेंम्बर्ट के एक गुप्तचर ने मेट्रोपालिटन होटेल में मिसेज सिंह; कला और चीनी गुप्तचर के मारे जाने की रिपोर्ट की। लैम्बर्ट ने मुझे अमेरिका चलने का परामर्श दिया क्योंकि भारत में मेरा जीवन सुरक्षित नहीं था। अतएव मैं उनके साथ अमेरिका चला आया और उनके साथ ठहरा हूँ।

मिस्टर जान वुडवर्थ अथवा लैम्बर्ट भारत में कई नए उद्योगों का विकास करने के लिए आतुर हैं। उनके लिए वह हमारी सहायता चाहते हैं और साझे में कारबार चलाने के इच्छुक हैं।

उनकी आर्थिक स्थिति का पता मैंने लगाया है। वह अमेरिका के प्रसिद्ध उद्योगपतियों में हैं। अमेरिकी सरकार में भी उनका अच्छा प्रवेश है और शासनतन्त्र में एक प्रमुख स्थान रखते हैं। अमेरिकन सहायता जो इस समय भारत पहुँच रही है, उसमें उनका विशेष हाथ है। वह हमारे साझे में कारबार चलाना चाहते हैं।

आप उनके सुझाव पर विचार कीजिएगा। सबको मेरा यथोचित निवेदन कीजिएगा। क्षमा प्रार्थना के साथ,

आपका सेवक

रमणी मोहन

पत्र सुनकर नवाबजादा ने कहा—"अब मालूम हुआ कि बरखुरदार अमेरिका की सैर कर रहे हैं। भला बताइए कलकत्ता में कैसे पता लगता। अक्ल ठिकाने आई हालांकि इतनी रुसवाई और नदामत उठाने के बाद।"

"बड़ा भारी बोझ मेरे शिर से टल गया। मैं तो डर रहा था कि कहीं वह चीनियों के षड़यन्त्र में न फंस जाए।"

"भाई साहब, फारसी में एक कहावत है—देर आयद दुस्त आयद; यानी जो काम देर में होता है वह ठीक होता है। अब आपका क्या इरादा है?"

"उसकी तरफ से निश्चिन्त हो गया। कल बम्बई के लिए रवाना हो जाऊँगा।"

"अभी तक आपका दिल रंजीदा था इसलिए कुछ जश्न नहीं हुआ। आज बड़ी खुशी का दिन है। कुछ जरूर होना चाहिए।"

"मंजूर है, लेकिन दावत मेरी तरफ से होगी।"

"कोई मुजायका नहीं। यह शर्त मुझे मन्जूर है। जरा देखूं कि नैयर और संतोष का क्या हाल है ?"

यह कहकर वह टेली फोन मिलाने लगे। नैयर ने उत्तर दिया और पूछा—"कहिए क्यों याद फरमाया ?"

नवाबजादा ने उलाहना दिया—"जितना खुदा से मिलना दुश्वार है, उतना आप लोगों से। एक खुशखबरी है।"

"सुनाइए।"

"सेठ ब्रजमोहन दास के साहबजादे रमणी मोहन का पता चल गया ?"

"सचमुच ?"

"जी हाँ, साहबजादे का खत वाशिंगटन अमेरिका से आया है। वह अपने दोस्त लैम्बर्ट उर्फ जान वुडवर्थ के मेहमान हैं।"

"बड़ी लम्बी छलांग मारी।"

"लेकिन चीन की छलांग से कहीं कम है। राणा और मकबूल का कोई पता चला ?"

"मैं बराबर इसी टोह में हूँ। उनकी तैनाती चेशूल में हुई थी। उस पर दुश्मन क़ब्जा नहीं कर सके। उम्मीद है कि वे दोनों सही सलामत हैं क्योंकि अभी तक जो सूची मरने वालों की आई है उसमें उनका नाम नहीं है।"

"खुदा उनको महफूज रखे। राणा के बगैर सब सूना-सूना है। आज सेठ ब्रजमोहन दास रमणी मोहन का पता लग जाने की खुशी में दावत कर रहे हैं। दो-तीन घण्टे का समय निकाल कर संतोष बाबू के साथ जरूर आइए।

मिसेज रिपुदमन सिंह के साथ सैर-ए-फलक खत्म हो गई, राणा के साथ हंसी-खुशी गई और तुम लोगों की कनाराकशी से खाना-पीना। गोया तमाम दिन मनहूसियत में बीतता है।"

"आप दिलगीर न होइये। हम दोनों जरूर हाजिर होंगे। सेठ साहब को मुबारकबादी भी तो देना फर्ज है।"

"दफ्तर से सीधे यहीं तशरीफ ले आवें।"

"आपके हुक्म की तालीम होगी।"

नवाबजादा ने टेलीफोन काट कर कहा—"बहुत दिनों बाद यह मौका हाथ आया। चलिए हम लोग तैयारी करें।"

सेठ ब्रजमोहन दास के साथ वह कमरे के बाहर आए और दावत की तैयारी में लग गए।

२८

चीन ने जिस प्रकार नारी जाति का शोषण और मातृत्व का गला घोटा है, वह इतिहास में वर्णित अनेक शोषणों से भयावह, कुत्सित और खून खौलाने वाला है। जहां अन्य कम्यूनिस्ट देशों में नारी के व्यक्तित्व का विकास हुआ है, वहां चीन में उसके व्यक्तित्व को रौंदकर बड़ी निर्ममता से नष्ट किया गया है। उसकी वेषभूषा में जो परिवर्तन किया गया, वह महत्वहीन है; परन्तु उसकी सुकुमार भावनाओं—स्नेह, प्रेम और वात्सल्य को भी माओवाद की वेदी पर चढ़ा दिया गया है। उससे खेतों, कारखानों और सैनिक हलचलों में मशीन की भांति जबरन काम लिया जाता है। मौत के भय से उससे वे सब काम करवाये जाते हैं, जिन्हें करने की शक्ति प्रकृति ने नहीं दी है। साज-श्रृंगार जो उसका प्राकृतिक अधिकार है, उससे कतई वंचित कर दिया गया है। उसे पति, पुत्र और परिवार के प्रति निष्ठा नहीं सिखाई जाती बल्कि माओवाद के प्रति अटूट श्रद्धा, विश्वास और दृढ़ता सिखाई जाती है। उसे अपने परिवार के प्रति गुप्तचरी करना पड़ता हैं। यह सत्य है कि चीन में परिवारवाद भी नष्ट किया जा रहा है और कुछ प्रान्तों में उसके भग्नावशेष

छितरे-बिखरे मिलते हैं, परन्तु वहां भी पिता को पुत्र के विरुद्ध, पत्नी को पति और सन्तानों के विरुद्ध गुप्तचरी करना पड़ता है। माओवाद में पति-पत्नी का सम्बन्ध केवल वासना को तृप्त करने का साधन माना गया है। उसकी सन्तान पर माता-पिता का कोई अधिकार नहीं है। उसका पालन-पोषण राजकीय बाल-गृहों में होता है। बड़ा होने पर बालक न पिता को जानने पाता है और न माता को—उसका पिता भी माओवाद है और माता भी। कल-कारखानों में भी माओवाद है, खेतों में भी माओवाद है—चीन के गगन के नीचे सर्वत्र माओवाद है। और वह माओवाद है, प्रत्येक चीनी का सर्वस्व, उसका ईश्वर, उसका स्वर्ग और उसकी गति। जिस प्रकार अतीत में हिरण्यकशिपु ने संसार का कर्त्ता–धर्त्ता–हर्त्ता अपने को घोषित किया था, ठीक उसी के चरण-चिन्हों में चीन का तानाशाह चल रहा है। माओवाद में शान्ति, शिष्टता, सौम्यता, उदारता आदि मानवोचित गुणों का कोई स्थान नहीं है, वे सब बोर्जुआई घोषित किये गये हैं।

माओवाद को यदि युद्धवाद कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। उसका एकमात्र ध्येय है विश्व में युद्ध प्रवृत्त करना। उसे दर्प है कि उसके अस्सी करोड़ चीनी संसार को तहस-नहस कर देंगे। उसे विश्वास है कि हाइड्रोजन और ऐटम बम संसार का नाश भले ही कर दे, किन्तु उनसे चीन का बाल-बांका न होगा। वस्तुत: माओवाद चीन को विश्व-विजयी नहीं, वरन् उसका नाम-निशान मिटाने में कटिबद्ध है।

चीन पिछले कई वर्षों से जीवित है, इसीलिए कि उसकी नीति शान्ति पूर्ण थी क्योंकि वह शताब्दियों अहिंसा के प्रवर्तक भगवान बुद्ध का अनुयायी था। यह भी सत्य है कि उसके कुछ शासक महत्वाकांक्षी होकर अपने पड़ोसियों की भूमि हड़प करते रहे, परन्तु चीन की जनता कनफ्यूशियस की अनुगामी होने से शान्तिप्रेमी थी, और इसीलिए किसी महत्वाकांक्षी सम्राट के निधन के पश्चात युद्धों से मुंह मोड़कर वह शान्ति की व्यवस्था में लग जाती। सम्भवत: माओवाद ने इस कमजोरी को दूर करने के लिए नारी जाति को आमूल परिवर्तित करने का बीड़ा उठाया, और उसका पहला प्रहार

परिवार और उसकी धुरी नारी जाति पर हुआ। उसने नारी जाति की पवित्रता को नष्ट कर उसको वेश्या से अधम बनने के लिए मजबूर किया। उसके नष्ट होने पर उसको सैनिक कार्यों के लिए उपयोग करना आरम्भ किया। उसने भारत के प्रमुख नगरों में, और विशेषकर नेफा में असंख्य नारियों को उनके निवासियों की रखेल बनने के लिए विवश किया, जिनका काम था तथ्य संग्रह कर माओवाद के संचालकों को सूचित करना। जिन क्षेत्रों में उन्हें गुप्तचरी के लिए भेजना होता, उनके रस्म-रिवाज, रहन-सहन आदि की शिक्षा देने के लिए सैनिक विद्यालय खोले जाने लगे और जब वे मानवीय भावनाओं से सर्वथा शून्य हो जाती, उन्हें भेज दिया जाता।

गुप्तचरी के लिए भारत से अधिक सुविधा उसे अन्यत्र नहीं थी, क्योंकि वह उसकी दोस्ती का दम भर रहा था। मलय, इण्डोनेशिया आदि देशों में भी उसकी हलचलें हुई, किन्तु वहां के शासक सतर्क थे, और चीनियों को अपने देश से निष्कासित करने में प्रवृत्त हो गए। केवल भारत में उन्हें समस्त नागरिक सुविधाएँ प्राप्त थीं, तथा उन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया। अतएव वे यहां खुलकर खेलने लगे।

यद्यपि भारत चीनी मैत्री की दुहाई दे रहा था, तथापि चीन उससे किंचित प्रभावित नहीं हुआ। वह अपने प्रसार की योजना बना रहा था। यह भेद उसने किसी अन्य कम्यूनिस्ट देश पर प्रकट नहीं किया। भारत को हस्तगत कर वह दक्षिण अमेरिका तक लम्बी छलांग भरने की योजना बनाने लगा।

नेफा और लद्दाख उसके समीपवर्ती क्षेत्र थे। उसने सीमा-विवाद उठाकर छेड़-छाड़ आरम्भ की, और साथ-साथ उसने अपने गुप्तचरों को उन क्षेत्रों में फैला दिया। नेफा के द्वार से भारत में प्रवेश करना सुगम था। इसलिए इस क्षेत्र में उसने व्यापक गुप्तचरीय कारवाई की। प्रशिक्षित गुप्तचरीय कार्य में निपुण चीनी सुन्दरियों को नेफा के सभी विभिन्न जातियों में भेजकर प्रणय-लीलाओं के बल से वशीभूत करने के आदेश दिए। वे वन-प्रदेश की चप्पा-चप्पा भूमि से अवगत होकर अपने सैनिकों को मार्ग प्रदर्शन के लिए

तैयार होने लगी। जब भारतीय सेनायें वहाँ पहुँची तो उन्होंने उनकी स्वागत गीतों से अभ्यर्थना की, और आदर-सत्कार इस भाँति तत्परता से किया, जैसा अतिथियों का किया जाता है। भारतीय सैनिक अन्त तक उन्हें भारतीय नागरिक समझते रहे और वैसा ही व्यवहार करते रहे।

चीनियों का मुख्य अभियान सेला दर्रे की ओर से हुआ, हालांकि कई अन्य दर्रों से भी उनकी सैनिक काररवाई आरम्भ हुई थी। सेला दर्रे के मुहाने पर भारत की ज़बरदस्त तैयारी थी, किन्तु चीनी सेनाओं ने वन-प्रदेश से घुसकर उनको घेर लिया, और रसद पहुँचाने का मार्ग बन्द कर दिया।

मेजर कुलदीप सिंह और उनके साथियों को घेरे में लिए चीनी सैनिकों ने पहाड़ी से उतर कर यातुंग छावनी की दिशा में प्रस्थान किया। यातुंग दक्षिण तिब्बत में चीनियों की एक बड़ी छावनी है। जब वे तोवांग-चू नदी के तट पर पहुँचे, तब उनके अफसर के पास वन प्रदेश से निकल कर एक नारी गुप्तचर आई, और उसको एक पत्र दिया। उसे पढ़कर उसने गुप्तचर को मेजर को पहचानने के लिये संकेत किया, और उसके इंगित करने पर उनको अन्य साथियों से विलग कर दो सशस्त्र सैनिकों के पहरे में उसके साथ रवाना कर दिया। मेजर ने अनुमान लगाया कि यह काररवाई प्रकाश कौर के इशारे पर की जा रही है। उन्होंने मन ही मन संकल्प किया कि यदि इस बार प्रकाश कौर से साक्षात हुआ तो अपनी जान पर खेल उसका अवश्य बध कर डालेंगे। ऐसे ही मन्सूबे बाँधते हुये वह जाने लगे। अन्य चीनी सैनिक भारतीय सिपाहियों को लिये हुए आगे बढ़े।

मेजर के हाथ इस समय खुले थे अवश्य; परन्तु उनके दोनों पार्श्वों को उनकी पिस्तौल की नलियां बराबर दबाए हुए यह संकेत कर रही थीं कि भागने का प्रयत्न करने पर इनकी गोलियाँ उनके शरीर में बिध जांयगी। मार्ग दिखाती हुई आगे-आगे वह गुप्तचर चल रही थी।

अब तक अष्टमी का चांद क्षितिज के ऊपर उठ आया था, और उसकी किरणें कान्तार प्रदेश की गहनता ऊँचे वृक्षों की पत्तियों से लुक–छिपकर बता रही थी। वह कुछ ही दूर गए होंगे कि पगडंडी के पार्श्व से एक भारतीय

सैनिक ने पूछा—"कौन जा रहा है ?"

नारी गुप्तचर तो प्रश्न सुनते ही एक झाड़ी में दबक गई, और एक चीनी सैनिक ने अपनी पिस्तौल से उन पर वार कर दिया। ये दोनों वही भारतीय सैनिक थे, जो गश्त से लौट रहे थे, चीनी सैनिक की गोली निशाना चूक गई। भारतीय जवानों ने जान लिया कि वे शत्रुपक्षीय हैं, अतएव उन्होंने भी वार किया। इसी बीच दूसरे चीनी ने बाएँ हाथ से एक छुरा अपनी कमर से निकाल कर इस खूबी से फेंका कि वह एक भारतीय सैनिक के हृदय में बिध गया। वह लड़खड़ा कर गिरा। दूसरे भारतीय सैनिक ने पिस्तौल से वार कर पहले चीनी सैनिक को मार गिराया। मेंजर कुलदीप सिंह को मौका मिला और वे भाग निकले। चीनी सैनिक ने चिल्ला कर नारी गुप्तचर को उनका पीछा करने का आदेश दिया, और वह भारतीय सैनिक से भिड़ गया। उधर से भारतीय सैनिक ने अपनी पिस्तौल चलाई, और इधर चीनी सैनिक ने अपने साथी की भाँति उस पर छुरा फेंका। दोनों के आघात एक दूसरे पर एक साथ लगे, और दोनों तत्क्षण घायल होकर गिर पड़े। मेजर ने गहन बन का मार्ग पकड़ा। नारी गुप्तचर ने कुछ दूर तक उनका पीछा किया, किन्तु वह अचानक एक वृक्ष के तने से टकराई। टक्कर से उसका शिर फट गया, और वह अचेत होकर वहीं गिर पड़ी। जब मेजर ने किसी की पद चाप नहीं सुना तब वह भी धीरे-धीरे गहन वन में प्रवेश करने लगे।

२९

मेजर को जब प्रतीत हुआ कि वह घटनास्थल से काफी दूर चले आये हैं, तब एक पेड़ की जड़ के पास बैठकर सोचने लगे कि वह किधर जांय, ताकि चीनियों की पकड़ के बाहर हो सके। अभी घने जंगलों में वह छिपे रह सकते थे, किन्तु प्रात:काल होने पर वह अवश्य पकड़ लिये जायेंगे। इसी बीच चंद्रमा का प्रकाश भी घने बादलों को भेद कर पृथ्वी तल पर आने में असमर्थ हो गया और सर्वत्र भयानक सन्नाटा छा गया। कभी किसी निशाचर पक्षी की चिल्लाहट से वातावरण क्षण भर के लिये स्पन्दित हो जाता, परन्तु दूसरे क्षण फिर

निस्तब्धता छा जाती। थोड़ी बूंदा-बांदी भी होने लगी। मेजर वृक्ष के तने से सटकर खड़े हो गए। हिममंडित वायु वर्षा से बोझल होकर उन्हें कँपाने लगी। मेजर सोचने लगे कि अब निकल भागना मुश्किल है। वर्षा का जोर बढ़ने लगा। अभी तक पेड़ का तना उनकी रक्षा कर रहा था, किन्तु वह भी भीषण वर्षा के कारण असमर्थ हो गया।

वर्षा लगभग एक घंटे तक होती रही। मेजर भीग कर लथपथ हो गये। सौभाग्य से वर्षा के बन्द होते ही आकाश स्वच्छ हो गया और ज्योत्स्ना पत्तियों से छन-छन कर नीचे नाचने लगी। अब उन्होंने सोचा कि शत्रुओं से रक्षा केवल पश्चिम जाने से हो सकती है, क्योंकि वह भूटान का प्रदेश है, और चीनियों की आक्रमण सीमा से बाहर है। चन्द्रमा की स्थिति देखकर उन्होंने पश्चिम दिशा की ओर प्रस्थान किया।

वायु का वेग प्रतिक्षण बढ़ रहा था, जो तेजी से चलने में बाधक था। छोटे-छोटे गुल्म लताओं के घने जाल, उन्हें पग-पग पर बाधा पहुंचाने लगे। वह निशस्त्र थे। आत्मरक्षा का कोई साधन उनके पास नहीं था। चलते-चलते वह वृक्ष की एक पतली सूखी डाल से टकराये। आंख फूटते-फूटते बची। उन्होंने सक्रोध उस डाल को पकड़ कर नीचे झुकाया, और वह टूट कर उनके हाथ में आ गई। मनः तुष्टि के लिये उसे अपना साथी बनाया, और उसके सहारे वह आगे बढ़ने लगे।

वह बढ़ते जाते थे, किन्तु जंगल का अन्त न मिलता था। कभी-कभी सोचते कि वह कहीं गोलाकार चक्कर तो नहीं काट रहे हैं, ऊपर आकाश में चन्द्रमा की स्थिति देखने का यत्न करते। चन्द्रमा लगभग मध्य आकाश में आ गया था। पूर्व दिशा में पौ फटने लगी थी, परन्तु जंगल में घोर अन्धकार था। वह अनुमान से फिर आगे बढ़े।

थोड़ी देर बाद पक्षियों के कलरव से वनप्रदेश मुखरित हो उठा। अनेक प्रकार के पक्षी अपनी बोलियों में प्रकाश का स्वागत-गान गाने लगे। मेजर थक कर एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने के लिए ठहर गए। प्रकाश तीव्र गति से आकाश को आलोकित करने लगा। पेड़, आदि का आभास स्पष्ट

होने लगा ।

अपनी स्थिति का पता लगाने के लिए एक पेड़ पर चढ़कर देखने का निश्चय किया । वह कोई ऐसा वृक्ष खोजने लगे जो चढ़ने में सुगम हो, और सब में ऊँचा हो । उन्हें सुपारी के कई पेड़ दिखाई दिए, किन्तु उन पर चढ़ना कठिन था । खोजते-खोजते उन्हें एक वृक्ष मिल गया, जिसकी डालें इस प्रकार फैली और एक दूसरे के समीप थी, कि उस पर चढ़ना-उतरना आसान था । ऊपर पहुँच कर वह अपने चारो ओर देखने लगे । दूर तक उन्हें आकाशचुम्बी वृक्षों की फुनगियों के अतिरिक्त कुछ न दिखाई पड़ा । उत्तर तथा पश्चिम में श्वेत हिमाच्छादित शिखर अवश्य दिखाई दिये, किन्तु वह दूरी का अनुमान लगाने में असमर्थ रहे । निराश होकर नीचे उतरे और पुनः पश्चिम दिशा की ओर प्रस्थान किया ।

आसपास की स्थिति देखकर वह सोचने लगे कि वह उत्तरोत्तर गहन बन में प्रवेश करते जा रहे हैं । पेड़ों के बीच की दूरी कम हो गई थी, और जँगली लताएँ किसी दिशा में जाने का मार्ग अति कठिनता से देती थीं । कहीं कोई पगडंडी भी नहीं देख पड़ती थी । इन लक्षणों से उन्होंने अनुमान किया कि यह स्थान वहाँ की जंगली जातियों के विचरण परिधि के बाहर है । उनका मन भय से त्रस्त होने लगा । किन्तु स्वाभाविक साहस तथा परिस्थिति ने उन्हें आगे बढ़ने को मजबूर किया ।

प्रकाश की आभा से वन की सघनता सत्य रूप में प्रकट होने लगी । उनके आगे–पीछे, दाहिने–बाएँ सभी ओर वृक्ष, लताएँ, गुल्म, कटीली झाड़ियाँ थीं । भूमि की समतलता भी समाप्त हो गई थी । पहाड़ी भूमिका ऊबड़–खाबड़पन शुरू हो गया था । अब उनके पैर ऊँचे–नीचे पड़ने लगे, और सावधानता तथा प्रयत्न के बावजूद वह एक छोटे गड्ढे में गिर पड़े । अवसाद, क्लान्ति, मानसिक विकलता से उनका शरीर चूर–चूर हो रहा था । सूखी पत्तियों हरी लताओं से भरा हुआ वह गड्ढा भी उन्हें फूलों की सेज-सी कोमल महसूस हुआ, और वह उढ़क कर विश्राम करने लगे । इन्द्रियाँ थककर अचेत-सी हो गईं, और निद्रा ने उन्हें धर दबाया ।

लगभग दोपहर को उनकी आंखें सहसा खुल गईं। पहली घटनाएँ विस्मृत–सी हो गई थी। वह हड़बड़ाकर उठ बैठे। स्थिति बीती घटनाओं को स्मरण कराने लगी। अपनी असहायता पर उन्हें झुंझलाहट होने लगी। भख भी सताने लगी थी। वह अपने चारो ओर की परिस्थिति देखकर विकल होने लगे। उनका ऊनी कोट कुछ–कुछ सूख चला था। एक्का-दुक्का सूर्य-किरणें भी पत्तों की ओट से झांक रही थी।

मेजर अपने कपड़ोंको झाड़ते हुए उठे। पैर उनके भारी हो गये थे, और उस छोटे गड्ढे से निकलने में उन्हें काफी जोर पड़ा। बाहर आकर आगे बढ़ने के अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय न था, किन्तु उनके सामने प्रश्न था कि वह किधर जाय ! वह पुनः समीप के एक ऊँचे वृक्ष पर चढ़कर स्थिति ज्ञान करने लगे। दूर तक वृक्षों की फुनगियों के अतिरिक्त उन्हें कुछ न दिखायी दिया, सूर्य इस समय ठीक मस्तक पर था, अतएव उन्हें अनुमान करना पड़ा कि दोपहर का समय है। सँभल-सँभल कर वह नीचे उतरने लगे। वृक्ष में अनेक फल लगे थे, किन्तु उनसे परिचित न होने के कारण खाने से घबड़ाते थे। भूख उत्तरोत्तर तीव्र हो रही थी। परिणाम का बिना ध्यान दिये, उन्होंने एक फल तोड़कर सूँघा, और दाँतों से एक टुकड़ा काटने का प्रयत्न किया। फल कट तो गया, किन्तु वह कुछ बखटा और बदजायका था। उसे थूक कर वह नीचे उतरे। पवन सवेग अब भी चल रहा था, हाँलाकि वह रात्रि की भाँति शीतल न था। अनुमान से वह पश्चिम दिशा की ओर चलने लगे। धैर्य तथा शक्ति को समेट कर वह फिर आगे बढ़े। कटीली झाड़ियों और लता-गुल्मों के जाल में वह रात्रि की भांति फँसते न थे। किसी पगडन्डी का चिन्ह ढूँढ़ने का वह प्रयत्न कर रहे थे। यद्यपि थकावट उन्हें आगे बढ़ने से रोकती थी, तथापि स्थान की दुरूहता उनके धैर्य को विलुप्त नहीं होने देती थी।

सहसा उन्हें एक पगडंडी का अनुमान हुआ जो उनके दाहिने से बाईं दिशा को जा रही थी। सूखे पत्तों को हटा कर वह उसका निर्णय करने लगे। सब चिन्ह पगडंडी के प्रकट होने पर वह निर्णय करने लगे कि कौन मार्ग

ग्रहण करें। बहुत सोच-विचार के बाद उन्होंने अपनी बाईं दिशा में चलना मुनासिब समझा। 'जय वाह गुरू, और 'सत-श्री अकाल' को स्मरण करने के बाद वह आगे बढ़ने लगे।

ज्यों-ज्यों वह आगे बढ़ते जाते त्यों-त्यों पगडंडी स्पष्ट होती जाती। कटीली झाड़ियां भी अब उनका मार्ग नहीं रोकती थी। वृक्षों की टहनियों से अवश्य उन्हें बचना पड़ता था, परन्तु प्रकाश की बहुलता के कारण, वह सहज ही अपनी रक्षा कर लेते थे। जंगल की सघनता भी धीरे-धीरे कम हो रही थी। भूख के साथ अब प्यास भी उन्हें सताने लगी थी, किन्तु उन दोनों को शान्त करने का कोई उपाय नहीं था।

लगभग दो घन्टे लगातार चलने के बाद उन्हें एक दूसरी पगडंडी पहली को नब्बे अंश के कोण पर काटती हुई मिली। अब प्रश्न फिर उपस्थित हुआ कि आया व सामने ही चले जाए, अथवा दांए-बांए मुड़ें। अन्त में अनेक तर्क-वितर्क के पश्चात वह फिर बाँई दिशा में चलने लगे।

प्यास से उनका कंठ सूखने लगा। मुख की लार उत्तरोत्तर गाढ़ी होकर कंठ नली में चिपकने लगी। शरीर के अवयव काम करने से इनकार कर रहे थे। साहस और धैर्य जवाब देने लगे। पगों की दृढ़ता अदृश्य होने लगी, और लड़खड़ाते हुए आगे-केवल आगे बढ़ने की धुन में चलने लगे। परन्तु वह अधिक दूर तक न जा सके, और एक पेड़ के सहारे बैठ कर सुस्ताने लगे। भूख-प्यास से विकल होने पर भीं वह तन्द्रालु हो कर वहीं सो गए।

लगभग आध घन्टे ही सोए होंगे कि उनकी विपरीत दिशा से मोंपाओं के एक लामा अपने दो शिष्यों के साथ वहाँ आगए। पगडंडी के बीचो-बीच सोए हुए मेजर को देख कर वे ठिठके और ध्यान से उन्हें देखने लगे। श्वास-प्रश्वास चलते देख कर उन्हें विश्वास हुआ कि जीवन अब भी शेष है। लामा उनके समीप बैठ कर नाड़ी की परीक्षा करने लगे। ठंडे हाथ के स्पर्श से मेजर की तन्द्रा उचट गई, और वह शंकित दृष्टि से उनकी ओर देखने लगे, किन्तु उनके प्रशान्त चेहरे से यह प्रकट हो रहा था कि वे सब शत्रु नहीं, मित्र हैं। मेजर ने बोलने का प्रयत्न किया, परन्तु जिह्वा फंसी होने के कारण वाणी

स्पष्ट नहीं थी। लामा को तुरन्त कारण ज्ञात होगया। वह उठ कर जंगल के भीतर चले गए और किसी वृक्ष की पत्तियां हाथ में मलते हुए वापस आए, और उनके मुँह में देते हुए चबाने का संकेत किया। असहाय मेजर उनके आदेशानुसार ज्यों-ज्यों पत्तियां चबाते त्यों-त्यों प्यास की विकलता कम होती जाती। लार पतली होने लगी और जिह्वा की शुष्कता दूर होने लगी।

उसका परिणाम देख कर लामा पुनः जंगल में प्रविष्ट हो गए, और कुछ फलियां लिए हुए वापस आए और उसके दाने निकाल कर खाने को दिया। मेजर उन दानों को खा कर उठने का प्रयत्न करने लगे, परन्तु लामा ने लेटे रहने का संकेत किया। लगभग आधी घड़ी बाद उनका शैथिल्य दूर होने लगा और नव-जीवन शक्ति आगई। शक्ति का अनुभव कर मेजर उठ खड़े हुये। लामा ने संकेत से पूछा—"कहां जाओगे ?" मेजर ने हाथ हिलाकर ठिकाने की अनिश्चितता प्रकट की। तब लामा ने स्वयं आगे बढ़ते हुए साथ चलने का संकेत किया और अपनी भाषा में शिष्यों को उनकी सहायता के लिए आदेश दिया।

मेजर उत्तरोत्तर स्वस्थता अनुभव करते हुए उनका अनुसरण करने लगे।

३०

नोलिंग में मक़बूल मियां को तीन दिन बीत गए। अभी तक किसी चीनी अधिकारी के समक्ष उन्हें न उपस्थित किया गया और न उस नर्स के अतिरिक्त कोई उनसे मिलने अथवा पूछ-तांछ करने आया। उसकी दिनचर्या में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। नियमित रूप से उनके भोजन की व्यवस्था होती, और नर्स उनसे मीठी मीठी बातें करती किन्तु तत्व की कोई बात वह अभी तक नहीं जान सके थे। परिवर्तन केवल इतना हुआ कि पहले नर्स जहां खिला-पिला कर चली जाती थी, अब वह अधिक देर तक उनके पास बैठने लगी, और दिन में भी तीन-चार बार आने लगी। प्रायः वह चीन के नव जागरण और उसकी उन्नति तथा विकास की चर्चा किया करती। मकबूल

मियां यद्यपि कम्युनिस्ट नहीं थे तथापि उसके सिद्धान्तों को पढ़ा और समझा था। मार्क्स और एन्जिल के विचारों से अपरिचित नहीं थे। रूस के लेनिनवाद का भी उन्हें ज्ञान था। वह प्रायः बीच-बीच में टोक देते कि चीन की उन्नति रूस की सहायता से हो रही है, और चीन का कम्यूनी सिद्धान्त उसके विरुद्ध है, किन्तु वह रूसी कम्युनिस्टों को विश्वासघाती बताती।

इसी प्रकार एक दिन मकबूल ने कहा—"चीन का उरूज़ रूस के कदम–बकदम चलने में है।"

नर्स ने तुरन्त जवाब दिया–" यह सच नहीं है। चीन किसी देश का पिछलगुआ नहीं है। उसका स्वतन्त्र अस्तित्व है। रूस से आप लोग इस लिए प्रभावित हैं, क्योंकि उसने कुछ वैज्ञानिक चमत्कार दुनियां के सामने रखे हैं।"

"उसने कम्युनिज्म को सफल अमली जामा पहनाया है। जो मुल्क सन् १९१७ तक एक पिछड़ा मुल्क था, जिसके पास कोई ताकत नहीं थी, वही रूस आज दुनियाँ की दूसरी ताकत है। लेकिन चीन···।"

"चीन की ताकत का अब इज़हार होने जा रहा है। पिछली जंग से रूस की तरक्की हुई है। जंग के बिना कोई तरक्की होना नामुमकिन है, इसी लिए चीन आयन्दा कुछ सालों में तीसरी जंग शुरू करेगा। वह अभी उसी तैयारी में लगा हुआ है।"

"भारत से उसने जंग शुरू कर दी। शायद वह······।"

"यह जंग नहीं, भाइयों की लड़ाई है। जैसे बड़ा भाई छोटे भाई को राह-रास्ता पर चलने के लिए गोशमाली करता है, वैसे चीन ने भारत के कान भर खींचे हैं।"

"गोया चीन अपने को भारत का बड़ा भाई समझता है।"

"समझने के क्या मानी ? वह दर हकीकत बड़ा है। मुल्क की चौहद्दी में देख लीजिये, आबादी का मुकाबला कर लीजिए, सन अत-हुनर को ले लीजिए, चीन भारत से एक्कीस है। आपके मुल्क के नुमाइन्दे इसे

तसलीम करते हैं, तभी उन्होंने उसको बड़ा भाई बनाया, और आपके पंचशील का वजूद तभी हुआ जब चीन ने उस पर अपनी मोहर लगाई ।"

"अब आप लोगों का यह दावा है ?"

"दावा हमेशा सच्चाई का किया जाता है। इधर जब भारत दोरुखी चाल चलने लगा, तब उसको थोड़ी सज़ा देने का इरादा करना पड़ा ।"

"दोरुखी चाल कैसे ?"

"वह मगरिबी ताकतों की दलाली करने लगा है ।" जिन मगरिबी ताकतों ने उसे सदियों गुलाम बनाये रखा, वह फिर उन्हीं के दामन में छिप रहा है, इसी लिये उसको सबक सिखाने की ज़रूरत पड़ी ।"

"भारत सब से दोस्ती करता है, दुश्मनी किसी से नहीं ।"

"किसी गुट में शामिल होने का मतलब है, किसी एक से दुश्मनी ।"

"यह गलत रास्ता है। दुनिया दो साफ हिस्सों में बट गई है–एक है सरमायादारी का गुट और दूसरा कम्यूनिस्ट गुट । इन दोनों में जमीन आसमान की दूरी है, और कभी साथ मिल कर नहीं रह सकते । हर मुल्क को किसी गुट में रहना पड़ेगा । रूस और चीन के कम्यूनिज्म में यही फर्क है। रूस पिछली लड़ाई से बुजदिल हो गया और पूंजीवाद से समझौता और साझेदारी करने की सोचने लगा है। जो मार्क्स और लेनिन के सिद्धान्तों का गला घोटता है ।"

"क्या दुनियाँ इतनी छोटी है, जहाँ मुखतलिफ विचारों की गुन्जाइश नहीं है ?"

"दुनियाँ में हमेशा एक ही ख्याल का बोल बाला रहा है। बादशाहत के जमाने में हर मुल्क में बादशाहत थी । जम्हूरियत के जमाने में हर मुल्क में जम्हूरियत फैल रही है, इसी तरह इस कम्यूनिस्टी जमाने में कम्यूनिज्म फैलेगा ।"

"और वे जो दोनों से अलग रहना चाहते हैं ?"

"वे उसी तरह बरबाद हो जाएंगें, जैसे दो हाथियों की टक्कर में बीच का आदमी या [illegible]क्की के पाटों के बीच में दाना ।"

"अफ्रीकी एशियाई मुल्क किसी गुट में शामिल नहीं होना चाहते।"

"उनको भारत से हिमायत मिलती है, और वह गैर जानिबदारी ख्यालात का मसीहा है। इसी जादू को तोड़ने की गरज से चीन को अपनी फौजी ताकत इस्तेमाल करना पड़ा। या तो वह खुलकर कम्यूनिस्टी कैंप में आ जाय या फिर मगरिबी ताकत से अपना गठबन्धन करले, ताकि कोई मुगालते में न रहे।"

"रूस से क्या वर्त्ताव होगा ?"

"पहले उसे समझा-बुझाकर ठीक रास्ते पर लाने की कोशिश की जायगी, और अगर वह चीन की हिमायत नहीं करता, तब मौजूदा सरकार का तख्ता उलटने में इमदाद दी जायगी।"

"क्या यह मुमकिन है ? क्या रूस की मौजूदा सरकार से वहाँ की कोई जमात मुखालिफ भी है ?"

"रूस के अवाम ने स्टैलिन की कब्र खोद कर उसकी लाश को किले की दीवाल में ज़मीदोज़ करने को अच्छी आंखों नहीं देखा। रूस की तरक्की का बायस स्टैलिन है। उसने रूस को दुनियाँ की एक मज़बूत ताकत बनाया, और उसी तरह चीन को भी हमारा माओ बना रहा है।"

"ग़र्ज़े, स्टैलिन और माओ बराबर हैं।"

"नहीं, माओ का दर्जा स्टैलिन से ऊँचा रहेगा क्योंकि वह दुनियाँ पर हुकूमत नहीं कर सका, लेकिन माओ करेगा।"

"चीन यह ख्वाब देख रहा है।"

"चीन की ताकत से वाकिफ न होने से इसे ख्वाब कहते हैं।"

"आप कुछ वकफियत कराइए।"

"आज रात को आपको कुछ तसवीरें दिखाऊँगी जिनसे चीन की तैयारी का कुछ हाल मालूम होगा।"

"क्या किसी सिनेमाघर ले चलेंगी ?"

"नहीं, इसी कमरे में मशीन लगाकर सामने की दीवाल में आप तसवीरें देख सकेंगे।"

"इतनी ज़हमत आप सिर्फ मेरे लिये उठायेंगी।"

"ज़हमत नहीं, यह फर्ज है हर चीनी का कि वह एक दोस्त के दिल से सब तरह के शक–शुबहा रफा कर दे। अच्छा अब इज़ाजत दीजिए, मशीन लगवाने का इन्तजाम करूँ।"

इतना कह, उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना वह तेजी से चली गई।

सांध्य भोजन करने के बाद नर्स ने सिनामेटोग्राफ की मशीन पलँग के पीछे लगा कर कहा–"आप बैठे या लेटे देख सकते हैं।"

"आप क्या कोई चीनी फिलम दिखायेंगी।"

"चीन में वैसी फिल्में नहीं बनाई जाती, जैसी आपके मुल्क में बनती हैं।"

"क्यों ?"

"हमारे सामने एक मकसद है, उसे हर हालत में पूरा करना है। हमारा दिल बहलाव आपके मुल्क से मुखतलिफ है। आपके यहाँ मुहब्बत का सबक सिखाया जाता है, मुहब्बत के तराने गाये और गवाए जाते हैं; लेकिन हमारे यहाँ इसका रिवाज नहीं है। हमने मुहब्बत का नाम–निशान मिटा दिया हैं। मुहब्बत इन्सान को कमजोर और बुजदिल बनाती है।"

"लेकिन मुहब्बत के बिना क्या इन्सान जी सकता है ? मुहब्बत जिन्दगी का पानी है, जिसके बिना वह रेगिस्तान बन जायगी।"

"चीन ने अपने नए निज़ाम में इन्सान की उन तमाम लखसत को बदल दिया है जो सरमायादारी वाले मुल्कों में पनपी हैं। शायरों और दीगर फनकारों ने मुहब्बत का फरेब खड़ा किया है, जबकि उसका बजूद सिर्फ एक इन्सानी ख्वाहिश को पूरा करना भर है। चीन का नया निजाम इंसानी खसलत बदल रहा है।"

"बाप-माँ, भाई-बहन, बेटा–बेटी के रिश्ते बदल जाएंगे ?"

"बेशक, उनसे इन्सान एकमन–एकतबियत नहीं हो सकता। हर एक चीनी का बाप–माँ, भाई–बहन, बेटा–बेटी उसका मुल्क है। मुल्क का रिश्ता ही सच्चा है, बाकी सब लग़ो हैं।"

"लेकिन इंसान प्यार भी चाहता है।"

"दर हकीकत इन्सान वही चाहने लगता है, जो उसे सिखाया जाता है।"

"क्या चीनियों का नया निजाम अपनी रिआया को तमाम दुनियाँ से नफरत और हिकारत सिखा रहा है?"

"नफरत नहीं, भाईचारा। वह भी बराबरी के दर्जे पर। माँ–बाप का रुतबा बड़ा है इसीलिये कि वे उसकी परवरिश करते हैं। लेकिन परवरिश जब मुल्क का निजाम करता है, तब सब बराबर हैं।"

"लेकिन वे उसको पैदा भी करते हैं।"

"क्या आपकी इस दलील में कोई दम है? आगे मुझे कुछ न कहना चाहिये, आप खुद समझदार हैं। अब आप तसवीरें देखिये।"

उसके बाद चलचित्रों का प्रदर्शन आरम्भ हुआ। मकबूल मियाँ पलंग पर बैठ गए, और नर्स उसके पीछे मशीन चलाने लगी।

पहले चीन का मानचित्र सामने आया। उसकी चौहद्दियाँ एक के बाद एक स्पष्ट की गईं। उत्तरी सीमा पर स्थित मन्चूरिया भी उसकी सीमा के अन्तर्गत दिखाया गया। उसको दिखाते हुए नर्स बोली—"दरअसल यह चीन का है, लेकिन रूस की ताकत पाकर वह अपने को आजाद समझने लगा है।"

उसके बाद पश्चिमीय सीमा दिखाई गई। तुर्किस्तान, उजबेकस्तान के चित्र दिखाते हुये वह बोली—"यह भी चीन के हिस्से हैं, जिन्हें रूस ने चीन की हुकूमत कमजोर होने पर हड़प लिये हैं।"

इसके पश्चात् दक्षिणी सीमा का प्रदर्शन किया गया, जिसमें अफगानिस्तान से लेकर पूर्वीय समुद्र तक का प्रदेश सम्मिलित था। लद्दाख, नेपाल, भूटान, उत्तरी बर्मा, आदि चीन के बताए गए। फिर उन स्थानों को दिखाया, जहां चीन ने हमला किया है।

इस संदर्भ में नर्स बोली—"दर हकीकत लद्दाख और असम तिब्बत के हैं, जिस पर भारत ने अपना कब्जा कर रखा है। हम सिर्फ वह जमीन चाहते हैं, जो तिब्बत की हिफाजत के लिए जरूरी है, और उसी के टुकड़े हैं।"

सीमाओं के प्रदर्शन के बाद परदे पर कई ऐसे चित्र आए जिनमें यह दिखाया गया था कि लाल चीन की हकूमत का चीनी जनता कैसे स्वागत करती है और किस प्रकार चीन का नवीनी करण हुआ; उसके चित्र दिखाए गए। कल-कारखानों में चीनी जनता कैसी हंसी-खुशी से देश के निर्माण में लगी हुई है, और कैसे लहलहाते खेतों में काम होता है! संक्षेप में यह कि वे सब बातें बताई गई जिनसे चीन की समृद्धि का पता चलता था।

सबसे अन्त में चीन का शस्त्रागार दिखाया जाने लगा। इस समय नर्स बोली—"यह देखिए हमारा हवाई बेड़ा है, जो दुनिया में इस वक्त तीसरे नम्बर पर है। देखिए, यह लम्बी कतार लड़ाकू विमानों की है, जिनकी संख्या तीन हजार से ज्यादा है। इनमें अधिकतर मिग १५, मिग १७ मिग १९ हैं। इन के अलावा पांच सौ इलूशियन बमबारी के लड़ाकू जहाज हैं। अब आप देखिए इनके चालकों को। कैसे ताकतवर नौजवान हैं, और उड़ान में अपना सानी नहीं रखते। इनकी तादाद अभी पांच लाख से ज्यादा है, और इतने ही सिखाए जा रहे हैं। अगली मई तक कमोवेश इनकी तादाद दस लाख से कम नहीं होगी। अब हमारी थल सेना देखिए। इनकी तादाद से चौंकिए नहीं, इस वक्त चार करोड़ से ज्यादा है। इनमें सब तरह के जवान हैं, जो बर्फ पर, पहाड़ों पर, जंगलों में लड़ सकते हैं। अब हमारा समुद्री बेड़ा भी देखिए।"

"अब खत्म कीजिए। तेज रोशनी से आंखें दुखने लगी हैं।"

"अच्छा आप लेट जाइए थोड़ी देर आराम कर लीजिए।" सिनेमा घरों में भी आखों के आराम के लिए छुटटी दी जाती है।"

उसने उनका कन्धा पकड़ कर लिटा दिया, और काला कम्बल उढ़ाते हुए एक बन्द लिफाफा देकर धीमे स्वर में कहा—"इसे आप कम्बल के भीतर टार्च की रोशनी में पढ़ियेगा। टार्च आपकी तकिया के नीचे रख दी है। कम्बल के बाहर हरगिज न पढ़ियेगा, नहीं तो आपकी और मेरी दोनों की जानें खत्म कर दी जायगी। अभी मशीन की आवाज में मेरी आवाज छिपी है। कुछ न पूछिए, न बोलिए। सब बातों का जवाब इस खत में मिल

जाएगा। अभी थोड़ी देर आप लेटे–लेटे चन्द तसवीरें और देखिए, क्योंकि यही मेरे लिए हुक्म हुआ है। हर काम बहुत होशियारी से कीजिएगा।"

यह कह कर वह फिर चित्र प्रदर्शित कर उनका खुलासा करने लगी। नर्स मशीन की भांति अपना काम कर रही थी, किन्तु मकबूल मियां न कुछ देख और न सुन रहे थे। वह अनेक प्रकार के विचारों में डूब–उतरा रहे थे।

एक घंटे बाद चित्र प्रदर्शन समाप्त हुआ, और नर्स चुपचाप बाहर चली गई।

३१

मकबूल मियां टार्च की रोशनी में कम्बल के भीतर नर्स का पत्र पढ़ने लगे—"सबसे पहले मैं यह बता दूं कि मैंने क्यों इतनी सावधानी बरतने का अनुरोध किया है। आपका कमरा ऐसे यन्त्रों से सज्जित है कि उसकी समस्त काररवाई यहां के अफसरों द्वारा देखी और सुनी जाती है। आपको एक परीक्षण के लिए लाया गया है। चीन सरकार अपने कैदियों पर ऐसे प्रयोग करती है, जिसमें गत जीवन भूल कर वही विचार उनके मस्तिष्क में रहें, जिन्हें वह चाहती है। इस क्रिया का नाम है 'मस्तिष्क प्रक्षालन'। पहले उन्हें नाना प्रकार की यन्त्रणाएं दी जाती हैं, जैसे उन्हें कई दिनों तक भूखा एक यन्त्र में जकड़, एक ही स्थिति में रखा जाता है, फिर बर्फ के शिलाखण्डों पर उस समय तक लिटाए रखना, जब तक प्राण वियोग की अवस्था न आ जाय, उसी तरह भाप और गर्म जल से स्नान कराते हैं, फिर भयाकुल दृश्यों को उपस्थित करते हैं। तड़पा-तड़पा कर मारने वाले यन्त्रों का प्रदर्शन भी होता है फिर उनका उपचार विशेष विधि और औषधियों से किया जाता है जिसके प्रभाव से पुरानी स्मृतियां, विचारों की दृढ़ता सब नष्ट हो जाती है। इस प्रकार मस्तिष्क धुल जाने पर साम्यवाद के सिद्धान्त रटाए जाते हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे स्कूल के बच्चे को पाठ याद कराया जाता है। अब उनके साथ मुलायम बर्ताव होता है, लेकिन भोजन नपा-तुला मिलता है।

घूमने फिरने की छूट रहती है, किन्तु उन्हीं स्थानों में जहां चीन के अधिकारी चाहते हैं। संसार के दूसरे व्यक्तियों के प्रति, घृणा के भाव भरे जाते हैं। थोड़े दिनों बाद वे चीन के पूर्ण अनुयायी बन जाते हैं और उसके लिए मरने में भी आगा पीछा नहीं करते।

"आपके साथी के साथ जो आपके साथ लाया गया था, यही व्यवहार किया जा रहा है। वह इस समय यातूँग में है। जहाँ हजारों भारतीय कैद हैं, और वहां मस्तिष्क प्रक्षालन की क्रिया जारी है। आपके साथ उल्टा परीक्षण किया जा रहा है। भय उत्पन्न करना इसका भी ध्येय है, किन्तु शारीरिक कष्टों को न देकर अन्य प्रकार से। पहले चलचित्रों के प्रदर्शन से आपके मन में पहले चीन की अजेयता और भय के भाव भरे हैं। उसके बाद आपके साथ वही व्यवहार होगा, जो दूसरों के साथ हो रहा है।

"अब मैं अपना परिचय देती हूं। मेरा नाम पहले था मेरिया उडवर्थ, किन्तु अब एक संख्या है। मेरी माता चीनी थी, किन्तु पिता अमरीकन जो च्यांग काई शेक के समय में चीन आया था। मेरी माता अभिजात वंशीय थी, और पिता के साथ प्रेम हो जाने से उसने ईसाई विधि से विवाह किया था। मेरे पिता का नाम था चार्ल्स वुडवर्थ, और वे च्यांग के सैनिक परामर्शदाता थे। सन १९४८ में मेरे माता-पिता को लाल चीन की सेना ने पकड़ लिया, और वे दोनों एक साथ गोली से उड़ा दिए गए। मैं उस सयय कैन्टन के मिशनरी विद्यालय में पढ़ती थी। मुझे वहां से पकड़ कर एक चीनी विद्यालय में भरती कराया गया और जासूसी कार्य में दक्ष किया जाने लगा। उन यंत्रणाओं का वर्णन करूं तो पत्र बहुत लम्बा हो जायगा, और अब उनका विवरण व्यर्थ है। इतना ही बताना पर्याप्त है कि हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, फारसी आदि भाषाएं पढ़ाई गई, चीनी और अँग्रेजी मैं पहले से ही जानती थी। फिर सैनिक अभ्यास भी अन्य चीनी नारियों की भांति कराया गया। जब उक्त संस्था की सब शिक्षा पूर्ण हो गई। तब मुझे पाकिस्तान भेजा गया। कुछ दिनों पाक अधिकृत कश्मीर, लाहौर, कराँची और रावलपिंडी में रहकर काम किया। भारत पर आक्रमण करने के पहले मुझे अकस्मात बुला लिया गया, और नोलिंग में

आगामी आदेश की प्रतीक्षा में ठहराई गई। इन्हीं दिनों आपको एक साथी के साथ लाया गया, और आपकी सेवा के लिए मेरी नियुक्ति हुई। जैसा ऊपर लिख चुकी हूं, आपके साथी को यातूंग भेज दिया गया, और आपका दिल बहलाने के साथ चीन की अजेय शक्ति के गुण गाने के लिए मुझे आदेश मिला।

"इस समय चीन के कुछ प्रान्तों और पूर्वीय तिब्बत में विद्रोह फैल गया है। जिन चीनी सैनिकों को चीन सरकार लद्दाख में लड़ने के लिए ला रही थी, उनमें से अधिकांश विद्रोहियों द्वारा मारे गए। अब आन्तरिक विद्रोह का दमन किए बिना भारत से लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती। अतएव चीनी सरकार ने एकतरफा युद्ध बन्द कर, अपने सैनिकों को विद्रोहियों के दमन के लिए भेज दिया है। भारतीय मोर्चों पर लड़ने के लिए चीन ने उन सैनिकों को भेजा था जो कोरिया के युद्ध में राष्ट्र संघ के सैनिकों से लड़े थे, तथा जिन्हें भयंकर शीत में लड़ने का अभ्यास था। विद्रोही भी वैसे ही पहाड़ी क्षेत्रों के थे, अतएव उनका दमन वही सफलता पूर्वक कर सकते थे। विद्रोह को दमन करना परम आवश्यक था, क्योंकि उसके बढ़ जाने से च्यांग काई के आक्रमण की सम्भावना विशेष रूप से थी, और वह विद्रोह भी उसके गुमाश्तों द्वारा कराया गया था। आधुनिक हथियार भी वहीं से प्राप्त हुए थे। अभी भारत की विपत्ति टल गई है किन्तु बहुत दिनों के लिए नहीं। चीन की सांठ-गांठ पाकिस्तान से चल रही है, और मैंने वहां के अधिकारियों को चीन का मित्र बनाने में काम किया है। ऐसा अनुमान है कि शीघ्र ही पाकिस्तान से चीन की सन्धि हो जायगी। लद्दाख और कश्मीर के बटवारे में कुछ मतभेद है, किन्तु चीन कुछ हेर-फेर से पाकिस्तान की शर्तें मन्जूर कर लेगा, ताकि अमेरिका पाकिस्तान से आक्रमण न कर सके। चीन पाकिस्तान को कश्मीर का लोभ देकर उसे अमेरिका और भारत से पृथक करना चाहता है, ताकि वह निर्द्वन्द्व होकर भारत की ओर प्रसार कर सके।

"इस समय विद्रोह की प्रचंडता से चीन के अधिकारी उन क्षेत्रों में

दमन चक्र चलाने के लिए चले गए हैं। यहां की व्यवस्था में शिथिलता आ गई है। यदि आप इससे लाभ उठाना चाहें तो मैं आपकी सहायता कर सकती हूँ। अर्ध रात्रि के पश्चात आप चलने के लिए तैयार रहें। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर का मार्ग मुझे मालूम है। मैं कई बार उन मार्गों से आई-गई हूं। कई ऐसी गुफाएं हैं, जहां दिन में छिपा जा सकता है। मेरा अनुमान है कि मैं आप को कश्मीर तक सुरक्षा के साथ पहुँचा सकूंगी।

"आपका मेरे ऊपर सन्देह होना स्वाभाविक है। मैं यहां के शासन से ऊब गई हूँ, और अमेरिका पहुंच कर पिता के सम्बन्धियो का पता लगाना चाहती हूं। आप पूछ सकते हैं कि मैं पाकिस्तान में रहते हुए क्यों नहीं भागी। कारण स्पष्ट है, मैं वहाँ स्वनन्त्र न थी। चीन में गुप्तचरों की निगरानी के लिए दूसरे गुप्तचर होते हैं और उनको आदेश प्राप्त हैं कि किसी भी गद्दार को मौत के घाट उतार देवें। अब आपके साथ चलने में रुकावट नहीं रहेगी। आप मेरे लिए भारतीय पारपत्र दिलवा दें। बस मेरा इतना ही लोभ है।

"मैं यात्रा का सब प्रबन्ध कर आऊँगी और द्वार पर चार थपकियां दूंगी। इस बीच उस मशीन को बिगाड़ दूंगी जिससे कमरे की काररवाई एक फिल्म में अंकित होती है। आप मेरे ऊपर विश्वास कीजिए।"

नीचे किसी के हस्ताक्षर नहीं थे। मकबूल मियां पढ़कर परिस्थिति पर विचार करने लगे। अन्त में निकल भागने का निश्चय किया।

....

अर्ध रात्रि के पश्चात उनके कमरे के द्वार पर चार थपकियाँ पड़ी। वह उठकर खड़े हो गये और द्वार खोल कर बाहर आए। सर्वत्र अन्धकार छाया था। नर्स उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसने अपने पीछे आने का संकेत किया और वह उसी मकान के एक दूसरे कमरे में जिसकी दीवारें लकड़ी की थीं प्रविष्ट हुई। वह टार्च की रोशनी में एक छिद्र में हाथ डाल कर कोई यन्त्र घुमाने लगी। यन्त्र घुमाते ही दक्षिण दिशा की दीवाल से एक तख्ता बगल में सरक गया और नीचे उतरने को सीढ़ियाँ दिखाई दी। पहले वह उस द्वार में स्वयं प्रविष्ट हुई और मकबूल मियां को अनुसरण करने का संकेत किया।

वह पहले कुछ झिझके किन्तु उस भाव को दबा कर वह भी उसके पीछे सीढ़ियों से उतर कर नीचे आए। वहां आकर नर्स ने फिर एक बटन दबाया और तख्ते ने सरक कर द्वार का चिन्ह छिपा लिया ।

सुरंग में लगभग दो सौ गज चलने के पश्चात् वह उसके दूसरे मुहाने पर पहुँचे। यहाँ भी वैसे ही ऊपर जाने को सीढ़ियां थी। पहली विधि से यहां का भी द्वार खोला और ऊपर के कमरे में आई। टार्च के प्रकाश में मकबूल मियां ने देखा कि उसमें काले और सफेद रीछ जैसे बालों के कोटनुमा खालें टंगी हुई है। एक काली ख़ाल उठाकर मकबूल मियां को देते हुए कहा-"इसे आप पहन कर भालू बन जाइए। देखिये सामने यह हुक लगे हुए हैं।" मकबूल मियाँ को याद आया कि इसी किस्म की खाल ओढ़े हुए चीनियों ने उन पर हमला किया था। वह उसे उलट-पलट कर देखने लगे।

नर्स ने उन्हें शीघ्रता करने को कहा और स्वयं उन्हें पहनाने लगी। उसने उस खाल को उलटा किया और उस पर लेट जाने को कहा। उनके लेट जाने पर उसे मस्तक से पैरों और हाथों तक पहना कर हुक लगा दिए। वह बिलकुल रीछ के समान खड़े हो गए। उसी पोशाक के पास एक विचित्र रूप के जूते रखे थे, जिनका तला कांटेदार लोहे, और ऊपर का हिस्सा नमदे और रबड़ का बना था। नर्स ने उनके पुराने जूते खोल कर वे पहना दिए। फिर उसने स्वयं उसी भांति भालू की काली खाल पर लेट कर हुक लगाए तथा अपने जूतों की जगह उनके जैसे जूते पहन लिये। उसने मुस्कराते हुए कहा—"अब हम लोग भालू बन गए रास्ते में अगर कोई मिल भी गया तो वह कोई रोक-टोक नहीं करेगा। हमारी यह खाल पासपोर्ट का काम करेगी। ये खालें उन्हीं को दी जाती हैं जो विशेष गुप्त कार्य से शत्रुओं के क्षेत्र में भेजे जाते हैं। उनसे कोई पूंछ-तांछ नहीं कर सकता।" यह कह कर उसी रीति से कमरे का द्वार खोल कर वह फिर सुरंग में उतरने वाली थी कि रुक कर कहा—"अरे हम लोग अपने पुराने जूते लेना भूल गए। कितनी बड़ी गलती हो रही थी। इससे उनको हमारी गतिविधि का पता चल जाता। आप अपने जूते उठाइए और मैं अपने उठाती हूँ। रास्ते में कहीं खंड में फेंक देंगे।"

यह कह कर वह पुनः सुरंग में उतरी और तेजी से जाने लगी। लगभग दो सौ कदम चलने के बाद उन्होंने अपने को एक कन्दरा में पाया। यहाँ भी उसने यंत्र घुमा कर द्वार खोला किन्तु यह लकड़ी का न होकर लोहे का था। कन्दरा के बाहर आते ही हिमाच्छादित वायु का प्रचंड झोंका कहने लगा कि "अब आजाद हो।' दोनों दक्षिण दिशा की ओर चल दिए।

३२

टेलीफोन की घण्टी सुनकर नवाबजादा ने रिसीवर उठाकर उत्तर में कहा—"हलो।"

उतर मिला—"मैं नैयर बोल रहा हूँ, मिजाज मुबारक।"

"खुदा के फज्ल से सब खैरयत है। भाईजान, तुमने तो आने की कसम खा ली है।"

"क्या बताऊँ नवाब साहब, यकीन मानिए कि दम मारने को भी फुरसत नहीं है।"

"चीनियों का हमला खत्म हो गया, अब क्या ?"

"जी हाँ, लेकिन उससे कम से कम मेरी समस्या हल नहीं हुई। काम और बढ़ गया है।"

"मसलन।"

"यह कि अमेरिका से एक फौजी डेपूटेशन आ रहा है जो हमारी फौजी कमजोरियों की तहकीकात करेगा और उसी मुताबिक फौजी सामान पहुँचायेगा।"

"सुनने में आया था कि अमरीकी हथियारों के चालान आ रहे हैं।"

"जी हां कुछ सामान आ गया है और काफी आ रहा है।"

"फिर तहकीकात क्यों ?"

"उन सभी कमियों को पूरा करने के लिए जो हिन्दुस्तान की फौजी ताकत को चीन के मुकाबले में चाहिए।"

"अमाँ, जब वह आए तब फुरसत न मिलने का बहाना करना। हिनोज

दिल्ली दूर अस्त ।"

"फरमाइए क्या काम है ?"

"अभी तक सेठ ब्रजमोहन दास थे, उनसे गपशप में वक्त गुज़र जाता था, लेकिन उनके चले जाने से सब सूना है ।"

"सेठ जी कब गए ? हैं वह भी जिन्दादिल आदमी । अभी उनको रोकना था ।"

"वह पिछले हफ्ते आज ही के दिन गए थे । आदमी निकले मजलिसी ।"

"जी हां उस दिन की बैठक जो अपने लड़के रमणी मोहन के पता लगाने के तुफैल में की थी 'एवन' थी ।"

"आखिर अरबों के धनी हैं ।"

"जी हां वैसा लुत्फ अभी साल में नहीं आया । उनको आपने क्यों जाने दिया ?"

"भाईजान,मैं ने हजार कोशिश की लेकिन वह रुके नहीं । दर हकीकत उनका जाना लाजिमी था। कारबार छोड़ कर लड़के की तलाश में आए थे । खुदा की मेहरबानी से पता लग गया । उधर, बुलाहट पर बुलाहट आ रही थी इसलिए उनको मजबूरन जाना पड़ा ।"

"रमणी मोहन ने अजीब हलचल पैदा कर दी । खैरयत इतनी है कि ग्यारह लाख रुपये सुरक्षा कोष में आ गए नहीं तो चीनियों के पास चले जाते ।"

"बेशक हर काम खुदा की मर्जी से होता है । क्यों राणा, का कोई हाल मिला ?"

"जी हाँ, वही खबर देने के लिए टेलीफोन किया था, लेकिन......।"

"कोई बात नहीं, पहले यह कहिए कि वह सही सलामत हैं ?"

"जी हां, ईश्वर की कृपा से वह बिल्कुल सही सलामत हैं । लड़ाई में वह जख्मी हो गए थे । उन्होंने बड़ी बहादुरी और साहस से दुश्मनों के दाँत खट्टे कर चेशूल क्षेत्र की अपनी चौकी चीनियों के हाथ में नहीं जाने दी । और वास्तव में वहीं से चीनी सेना को पीछे हटने के लिए मजबूर होना पड़ा ।

उनके साथियों का बयान है कि चौकी की रक्षा केवल उनकी मुस्तैदी, हिम्मत और निर्भयता से हो सकी है। उनका लेखा यहां आकर देखिए तो उनकी जांफिशानी शौर बहादुरी का पता चलेगा।"

"वाह! राणा ऐसे ही हैं। उनसे मुझको ऐसी ही उम्मेद थी। अब उनके जख्म कैसे हैं?"

"ठीक हो रहे हैं।"

"किस शहर के अस्पताल में हैं?"

"आजकल श्रीनगर के फौजी अस्पताल में हैं।"

"बरखुरदार की कोई खबर है?"

"मकबूल मियाँ की?"

'जी हां।"

"अभी तक उनका कोई सुराग नहीं चला।"

"उनकी लाश भी बरामद नहीं हुई?"

"जी नहीं, हालांकि उस चौकी के करीब सब मुमकिनात जगहों को बखूबी ढूंढ़ा गया है।"

"फिर क्या आसमान निगल गया या जमीन खा गई।"

"वहां के सब लोग हैरान हैं। उनके साथ एक दूसरा फौजी अफसर भी गायब है।"

"क्या दोनों एक साथ गायब हुए?"

"जी हां, रिपोर्ट तो यही है।"

"रिपोर्ट को खुलासा कीजिये।"

"इक्कीस नवम्बर की रात को मकबूल मियाँ और गढ़वाली नायक शेरसिंह नेगी के सिपाही चौकी का पहरा दे रहे थे। वे दोनों साथ-साथ पहरेदारों की देख-भाल कर रहे थे। पहरेदारों के बयान से मालूम हुआ कि वे दस पन्द्रह मिनट तक देखे गए, फिर यकायक न-मालूम कहाँ गायब हो गये। उनको फिर किसी ने न देखा और न किसी ने उनकी कोई पुकार सुनी। पहरा बदलने में भी देरी हुई, और इसी दरमियान चीनियों ने धावा बोल दिया।

लड़ाई खत्म होने के बाद फिर उनकी तलाश शुरू हुई, लेकिन कोई पता नहीं चला ।"

"मालूम होता है कि चीनी उसे पकड़ ले गए ।"

"इसका कोई सुबूत नहीं है ।"

"सुबूत कयास है, और कुछ नहीं । जब उसकी न लाश बरामद होती है, और न कोई खबर मिलती है, तब यकीनन वह दुश्मनों की कैद में है । यह बेशक नहीं कहा जा सकता कि वह वहाँ जिन्दा है या फौत हो गया ।"

"अब राणा से शायद कुछ पता चले ?"

"कल श्रीनगर जा रहा हूँ, अगर उनकी सेहत ठीक बात करने काबिल हुई, तब जरूर उनसे दरयाफ्त करूँगा ।"

"उनकी हालत अब दुरुस्त है । क्या बताऊँ मेरी भी तबियत चलने की हो रही है ।"

"वाह दोस्त, अगर आप भी साथ चलें तो रास्ता बड़े मजे से कटेगा । दो-चार दिनों की इत्तिफाकिया रुखसत ले लो । सन्तोष बाबू को भी तैयार करो । खुदा कसम, बड़ा लुत्फ आयगा । पार्टी के सब लोगों को देखकर राणा की आधी तकलीफ दूर हो जाएगी ।"

"बात बड़ी सुहावनी है, लेकिन छुट्टी मंजूर होना मुश्किल है ।"

"यह बहानेबाजी किसी दूसरे से करना । आपका दिमाग इतना जरखेज है कि कोई न कोई बहाना आप निकाल सकते हैं ।"

"अच्छा, कोशिश करूँगा । सन्तोष की सलाह लेता हूँ ।"

"जरूर, जरूर । जब आप जाने की ख्वाहिश बतायेंगे, तब वह भी तैयार हो जाएगें ।"

"अच्छा, उनसे सब बातें तय करने के बाद आपको टेलीफोन करूँगा ।" नैयर ने टेलीफोन का सम्बन्ध काट दिया ।

नवाबजादा कमरे में टहलने लगे । मकबूल मियाँ के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के विचार उनके मस्तिष्क में चक्कर काटने लगे ।

इसी समय मुनीर मियाँ उस दिन की डाक लेकर आए । नवाबजादा

को उदास देखकर पूछा—"हुजूर, क्यों इस कदर दिलगीर हो रहे हैं ?"

"कुछ नहीं, मकबूल का ख्याल हो आया। नैयर ने टेलीफोन से बताया कि राणा श्रीनगर के अस्पताल में हैं, लेकिन मकबूल का कोई पता नहीं चलता। उसकी लाश भी बरामद नहीं हुई। मेरा ख्याल है कि वह चीनियों की गिरफ्त में है।"

"खुदा खैर करे। चीनी बड़े बेरहम होते हैं।"

"लेकिन वह भी पठान है, उसके खून में तकलीफ झेलने की कूवत है।"

"जी हाँ, वह दिलेर और हिम्मती हैं।"

"आज की डाक में कोई खास बात है ?"

"जी हाँ, एक खत सेठ ब्रजमोहन दास का है। 'प्रायवेट' लिखा होने से मैंने उसे नहीं खोला। आप पढ़िए।"

नवाबजादा पत्र पढ़ने लगे।

चर्चगेट,
बम्बई

प्रिय नवाब साहब,

आपको यह जानकर खुशी होगी कि रमणी मोहन अपने मित्र श्री लैम्बर्ट के साथ वापस दिल्ली आ रहा है। वह पहुँचने की तारीख की इत्तिला केबुल से देगा, लेकिन अगले हफ्ते तक जरूर आ जायेगा। उससे मिलने के लिए मैं भी दो-तीन दिनों में दिल्ली आ रहा हूँ। आपके अनुरोध के अनुसार इस बार किसी होटेल में न ठहर आपके पास ठहरूँगा। नैयर और सन्तोष बाबू को मेरा नमस्कार कहियेगा।

शुभकामनाओं के साथ
आपका—
ब्रजमोहन दास

पत्र पढ़कर नवाबजादा की उदासी कम हो गई। मुनीर से कहा—"इस नम्बर पर बम्बई की 'ट्रंक काल' करो।"

"सेठ जी को ट्रंक काल करना है? क्या लिखा है?"

"वह अपने लड़के रमणी मोहन से मिलने के लिए दिल्ली फिर आ रहे हैं। मैं इधर श्रीनगर जा रहा हूं, राणा को देखने व मकबूल के हालात जानने।"

"तब क्या मैं......"

"तुम 'अरजेण्ट काल' करो, मैं खुद बात करूँगा।"

मुनीर मियाँ के जाने के बाद उन्होंने नैयर को पुनः टेलीफोन किया। उत्तर मिलने पर कहा—"भाई नैयर, सेठ ब्रजमोहन दास का अभी खत मिला हैं, जिसमें लिखा है कि वह रमणी मोहन से मिलने दिल्ली आ रहे हैं, और मेरे यहाँ ठहरेंगे। क्या आप और सन्तोष बाबू श्रीनगर चलेंगे?"

"जी हाँ, सन्तोष ने साथ चलना मंजूर कर लिया है। हम दोनों ने छुट्टी भी ले ली है।"

"बहुत खुशी हुई। लेकिन अगर एक-दो दिन देर से चलें तो कैसा रहेगा?"

"क्या आप उनका इन्तजार करना चाहते हैं?"

"हां जी, उनको ट्रंक काल किया है। उनसे दरख्वास्त करूँगा कि वह कल शाम तक हवाई जहाज से दिल्ली आ जावें। जहाँ तक मुमकिन होगा वह जरूर मेरी बात मन्जूर कर लेंगे।"

"ठीक है। उनके आने पर चलेंगे। वह दिल्ली फिर क्यों आ रहे हैं?"

"रमणीमोहन अपने दोस्त लैम्बर्ट के साथ दिल्ली आ रहे हैं।"

"अमेरिका से आ रहे हैं?"

"हाँ। आजकल नौजवानों का कोई ठिकाना नहीं। कब क्या कर उठावें, कोई नहीं कह सकता।"

"कोई बात नहीं, उनको आ जाने दीजिए। आदमी दिलचस्प है। अच्छा, आदाबअर्ज करता हूँ। जरूरी काम निपटाना है।"

"शौक से आप काम कीजिए।"

टेलीफोन का सम्बन्ध काट कर वह उस दिन की डाक देखने लगे।

३३

कई दिनों के कठिन परिश्रम, सुविधानुसार रात-दिन चल, और दुर्गम पहाड़ों को लाँघने के बाद मक़बूल मियाँ और नर्स पाक अधिकृत कश्मीर में प्रविष्ट हुए।

मक़बूल मियाँ का बुरा हाल था, किन्तु नर्स बिल्कुल स्वस्थ और चैतन्य थी। उसने पाकिस्तान की सीमा में प्रवेश करते हुए कहा—"अब हमें कोई चीनियों से भय नहीं है।"

"यहां हमारे दो भाई भी कराँची में रहते हैं।"

"किन्तु कराँची नहीं जा सकते।"

"क्यों ?"

"एक तो वह दूर है, रास्ते में पकड़े जा सकते हैं, दूसरे जैसी अभी तक हमको कठिनाइयाँ सहनी पड़ी हैं, उससे कम इधर नहीं हैं।"

"फिर आपका क्या इरादा है ?"

"मैं सोचती हूँ कि अभी किसी खोह में हम लोग आराम करें। रात में युद्ध-बन्दी रेखा आसानी से पार कर सकेंगे। रीछ की पोशाक में हमें सन्तरी रीछ शुमार करेंगे।"

"आगे ?"

"यहाँ से श्रीनगर चलेंगे।"

"लेकिन बर्फ ने सभी रास्ते बंद कर रखे हैं।"

"इसके अलावा कोई रास्ता भी तो नहीं है। यदि हम लोग पाकिस्तान में पकड़े गए तो फिर न मालूम कितनी झंझटों का सामना करना पड़े। जब बर्फीले पहाड़ लाँघ कर लम्बा और ख़तरनाक रास्ता पार कर आए हैं, तब एक-दो दिन मुसीबत और झेलें। श्रीनगर भारत में है। आप भारतीय सैनिक हैं। सही-सलामत लौटने पर आपका इस्तक़बाल होगा, और लोग आपको हाथों-हाथ उठा लेंगे।"

"ठीक है, जैसी आपकी मर्जी। मैं आपका ताबेदार हूँ।"

"यह दावा कब से करने लगे ?"

"जब से आपने अपनी जान जोखिम में डाल कमतरीन को बचाने की कोशिश की ।"

"वाह, मैं खुद भागने की फिक्र में थी । अकेले हिम्मत न पड़ती थी । आप का साथ मिल जाने से मेरी हिम्मत बढ़ गई, और आपके साथ मैंने भी आज़ादी हासिल की । लिहाज़ा मुझे आपका मशकूर होना चाहिए ।"

"मतलब यह कि आप मेरी खि़दमत क़बूल नहीं करती ।"

"इसमें किसी का एक दूसरे पर कोई अहसान नहीं है । खुदगर्ज़ी ने हम दोनों को मिलाने के लिए मजबूर किया । काश, आप मेरी बात मंजूर न करते तब क्या मैं आज़ादी हासिल कर सकती ?"

"दुश्मनों के पंजे से छुड़ाने की बात मंज़ूर न करता ?"

"नहीं भी कर सकते थे, क्योंकि सुझाव आया था दुश्मन के घर से ।"

"लेकिन जिसने सुझाव दिया था, उसका मुझे यक़ीन था । तवारीख़ बताती है कि ऐसी गैबी इमदाद अक्सर दुश्मनों के घर में मज़लूमों को औरतों के जरिए ही मिला करती है, लेकिन....?"

"रुकते क्यों हैं, कह डालिए ।"

"इज़ाजत है, तब ज़रूर कहूँगा कि ऐसी भी मिसालें हैं, जहाँ इमदाद करने वाली नेकबख्त के कदमों पर मजलूम अपनी जान निसार करने के अलावा कोई दूसरी तरह अपनी वफ़ादारी जाहिर नहीं कर सका ।"

"यानी ?"

"यानी मजलूम उससे मुहब्बत करने लगता है ।"

नर्स के ठहाके से कन्दरा प्रतिध्वनित होने लगी । हँसने के बाद बोली—"अजीब तरीके से आपकी मुहब्बत का इजहार सुन रही हूँ ।"

"मलका के सामने किस तरह क्या कहा जाय, इसकी वफफियत नहीं है ।"

"मलका ?"

"दुनियां की नहीं, मेरे दिल की ।"

"वाह, आप भी आजकल के नौजवानों की तरह दिलफेंक मालूम होते हैं।"

"जमाने की हवा किसको अछूता रखती है। अब इतनी गुजारिश है कि जैसे चीनियों की गिरफ्तारी से निकालकर ऊँचे-नीचे पहाड़ों और घाटियों से सही सलामत लाई हैं, उसी तरह इस नाचीज की जिन्दगी को भी पार लगाने की इल्तिजा मन्जूर फरमावें।"

"आप उँगली पकड़ कर पहुँचा पकड़ने की कोशिश में है।"

"बशर्ते आप इजाजत दें।"

"आप जानते हैं कि मैंने जासूसी तालीम पाई है। दगा और फरेब में माहिर हूँ।"

"कोई मुजायका नहीं। मेरी खिदमत आपको कभी कोई छल-कपट करने की इजाजत नहीं देगी। आप अपने दिल को देखिए, वह बिल्कुल पाक-साफ है, मक्खन से ज्यादा मलायम, और मुहब्बत से सराबोर है।"

"मर्द अक्सर वे बातें अपनी खुशामद से पैदा करने की कोशिश करते हैं, जिनका कोई वजूद नहीं होता।"

"और औरत उन सब बातों को इनकार करती है, जिनसे उसका दिल लबरेज होता है।"

नर्स फिर अपनी हँसी रोक न सकी। मकबूल मियाँ का साहस बढ़ा, और उसका हाथ चूमते हुए कहा—"मेरी खिदमत मन्जूर करने की मेहरबानी कीजिए।"

नर्स का शरीर रोमाञ्चित होने लगा। उसने अपना हाथ नहीं छुड़ाया। मकबूल मियाँ ने घुटने टेकते हुए कहा—"मेरी दरख्वास्त मन्जूर फरमाइए, और आफतों के समुन्दर से निकाल कर दोबारा उसमें न ढकेलिए।"

नर्स ने बिना हाथ छुड़ाए हुए कहा—"आपको श्रीनगर सही सलामत पहुँचा दूँगी, फिर दोबारा आफतों के समन्दर में ढकेलने का सवाल ही नहीं उठता।"

"लेकिन जिन्दगी बवाल हो जायगी।"

"अपने मुल्क की किसी खूबसूरत लड़की से शादी कर लीजिए ।"

"मेरी नजरों में आपसे ज्यादा कोई दूसरा खूबसूरत नहीं है ।"

"लेकिन हम एक दूसरे को बिल्कुल नहीं के बराबर जानते हैं ।"

"यह महसूस करता हूँ कि आपको मैं आपसे ज्यादा जानता हूँ, और आप अगर मुझे अभी तक नहीं जान सकीं, तब दिल्ली चल कर जान लीजिएगा ।"

नर्स सोच-विचार में पड़ गई, किन्तु उसने अपना हाथ ढीला कर उनके हाथ में रहने दिया ।

मकबूल मियाँ उत्साहित होकर कहने लगे—"इतने दिनों रात-दिन साथ रहकर मैंने आपको बखूबी जान लिया है । खुदा को हाजिर नाजिर समझकर कहता हूँ कि आपके बिना मेरी जिन्दगी दूभर हो जायगी । अव्वल तो जिन्दा ही नहीं रहूँगा । काश खुदकुशी न कर सका, तब मजनूँ की तरह किसी बयाबाँ की खाक छानता घूमूंगा ।"

नर्स ने हाथ खींचते हुए कहा—"बातें न बनाइए । मैंने इस सवाल के बारे में कभी नहीं सोचा ।"

मकबूल मियाँ ने गद्गद् कंठ से कहा—"आप मेरी दरख्वास्त ठुकराती नहीं, इतना ही मेरे सब्र के लिए काफी है । आस लेकर जिन्दगी काटी जा सकती है । आप सोच-विचार लीजिए, मेरी मुहब्बत को तौल लीजिए और अगर उसका पलड़ा भारी पड़े तब आप फैसला कीजिएगा ।"

नर्स बिना कोई उत्तर दिए उठ खड़ी हुई, और पहाड़ों को देखती बोली—"यहाँ से यह कितने सुहावने देख पड़ते हैं, लेकिन जब इनसे गुजरना होता है, तब कलई खुलती है कि इनसे ज्यादा डरावने, जान के गाहक दूसरे नहीं हैं । उसी तरह आप मुझे भी समझिए । मैंने अपनी जिन्दगी के चौबीस सालों में न-मालूम कितने गुनाह किए हैं, कितने लोगों को ठगा है । मैं, बिलकुल नापाक हूँ, दुनियाँ के लिए नजिस हूँ । कोई भी इन्सान मुझे प्यार नहीं कर सकता, और शायद मैं भी न कर सकूँगी । चीनियों ने मेरे प्यार और मुहब्बत का चिराग गुल कर दिया है । कभी वह रोशन हो सकेगा, मुझे यकीन नहीं आता ।"

यह कह कर वह भावना से भरकर आँखें पोंछती हुई पथगामी हुई। मकबूल मियाँ भी बिना कुछ कहे, उसका अनुसरण करने लगे।

३४

मेजर कुलदीपसिंह उस बौद्ध लामा के साथ उसके मठ में आकर रहने लगे। मठ, भारतीय सीमा के तट, भूटान प्रदेश के डुनांग नामक गाँव में स्थित था। डुनांग दस-बारह घरों की आबादी का गाँव था। वह चारों ओर दुर्गम पहाड़ों से घिरा था। उसके निवासी चरवाहे थे, जो भेड़, बकरी और सुरा गायें पालते, तथा आसपास की ऊँची-नीची ढलुवा भूमि में खेती कर लेते थे। ऊन और खालें पहनते, तथा मलिन वेष में रहते थे। वे परम धार्मिक स्वभाव तथा विचारों के सीधे, प्रपंचरहित व्यक्ति थे। मिथ्या भाषण, मिथ्या कर्म, मिथ्या आचरण कभी नहीं करते थे। प्रकृति ने उन्हें अपने अनुरूप ही बनाया था।

गाँव के बीचो-बीच मठ था। उसके प्रांगण में बुद्ध भगवान का मन्दिर था, जिसमें अभय मुद्रा में चांदी की वेदी पर उनकी भव्य, शान्त मूर्ति स्थित थी। उसके आस-पास छोटे किन्तु सुरक्षित घर बने थे, जिनमें लामा अपने दो शिष्यों सहित रहते थे। गाँव निवासी दोनों समय पूजा-आरती में नियमित रूप से सम्मिलित होते और भजनों द्वारा उनके गुण-गान करते।

लामा का नाम था नुवोंग-पो। उन्होंने तोवाँग मठ में शिक्षा पाई थी, और भारत के बौद्ध तीर्थों का भ्रमण कई बार किया था। सारनाथ में कई वर्षों रहकर बौद्ध ग्रन्थों का पारायण किया था, और साधारण रूप से हिन्दी बोल व समझ लेते थे। मेजर की कहानी सुनकर उन्हें पीड़ा हुई, और केवल इतना कहा—"अन्त में शान्ति और सत्य की विजय होती है।"

यद्यपि शीतकाल था, असह्य सर्दी की कल्पना मेजर कर रहे थे, तथापि इस गाँव का वातावरण उनके अनुमान की अपेक्षा कम शीतप्रद था। मेजर हिमाचल प्रदेश के निवासी होने से शीत सहने के अभ्यासी थे, अतएव उन्हें कोई कठिनाई वहाँ रहने में नहीं हुई।

प्रकाश कौर के विश्वासघात से उन्हें मर्मान्तिक पीड़ा हुई। वह वस्तुतः उसको प्राणसम प्यार करते थे, और विवाह के पश्चात उसने प्रेम में कमी नहीं आने दी, हालांकि वह कृत्रिम था। वह इतनी सावधान तथा सचेत थी कि मेजर सदा उसको तन-मन-प्राण से अनुगत समझते रहे। वह स्वयं छल-कपट तथा प्रपंच से रहित थे। सीधे सरल सिपाही थे। मन में कोई गांठ रखते नहीं थे, अतएव वह सदैव उसके कपट जाल में मुग्ध होकर अपने सौभाग्य को सराहते और मन ही मन संतुष्ट तथा प्रसन्न होते रहे। नेफा में उसका पहुँचना अपने प्रति अथाह प्रेम का प्रतीक समझा। यदि कोई उनसे कहता कि वह चीनी गुप्तचर है, और अपने कार्य साधन के लिए आई है, तब मेजर उसको कत्ल करने में तनिक आगा-पीछा न करते। उनका प्रेमावृत मस्तिष्क यह सोचने में असमर्थ रहा कि भारतीय ललनाएँ युद्ध क्षेत्र में प्रेयसी के रूप में रंगस्थली बनाने नहीं जाती। उसके मिथ्याचार के स्तूप में उन्हें छल-प्रपंच का एक छिद्र तक नहीं दिखाई दिया। उनके मन ने यह प्रश्न कभी नहीं किया कि वह कैसे नेफा के आदिवासियों से इतनी घनिष्टता उत्पन्न कर सकती है, और कैसे उनको सैनिकों के मनोरंजन के लिए वेश्याओं की भांति ला सकती है। चौकी के अन्य सिपाहियों और छोटे अफसरों के मन में कोई शंका उठने का प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि वे अपने अफसर की पत्नी पर पूर्ण विश्वास करते थे, उसके साहस, मृदुल व्यवहार से पूर्णतया सन्तुष्ट थे। इसके अतिरिक्त वे स्वयं अन्य नारी-गुप्तचरों के प्रेम-प्रदर्शन से प्रभावित तथा मुग्ध रहते थे। रोमानी प्रसंग प्रायः तरुण व्यक्तियों को आकर्षित करने में अधिक सफल होते हैं, और फिर संसार के फौजी जवान इस प्रकार के रस रंग के लिए प्रायः लालायित देखे जाते हैं। अविश्वास, छल, कपट की आशंका किसी को नहीं हुई, और न उस दिशा में सोचने का कोई कारण ही उपस्थित हुआ।

जब उस कपट का भंडाफोड़ हुआ और वे चीनियों द्वारा कैद किए गए, तब उनकी आँखें खुली और प्रेम का भूत उतरा, परन्तु अब पछताने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं था। मेजर को अब उसके कपटाचरण की गंध सर्वत्र अपने बीते जीवन में आने लगी। मिसेज रिपुदमनसिंह का जब ध्यान

उन्हें आता, और जिस प्रकार वह उसके द्वारा छले गए थे, उनका स्मरण कर वह क्रोधान्ध हो उठते। प्रकाश कौर तो उनके हाथ से बाहर निकल गई थी, किन्तु मिसेज रिपुदमनसिंह को अब भी दंडित कर सकते थे। प्रतिहिन्सा की भावना से वह ओत-प्रोत हो गए और शीघ्र से शीघ्र दिल्ली पहुँचने के लिए आतुरता से दिन बिताने लगे।

किन्तु इन विचारों के साथ उनके मस्तिष्क में एक दूसरी विचार-धारा का उद्गम हो रहा था। वह था संसार त्याग कर बौद्ध-भिक्षु होने का। यह विचार उस समय उत्पन्न हुआ, जब उन्होंने लामा नुवोंग-पो के साथ डुवाँग गाँव में रहकर उनके शान्त, सरल, धार्मिक जीवन को निकट से देखा। उनकी करुणार्द्र उज्ज्वल नयनों की दृष्टि से कितनी शान्ति विकीर्ण होती थी, उसे देख और अनुभव कर उन्हें एक नया दृश्य दिखाई दिया, जिसकी ओर उनका ध्यान स्वप्न में भी नहीं गया था। सरलता ही सरलता को आकर्षित करती है। मेजर स्वभाव से सरल थे, और सैनिक समाज में रहने के कारण अन्य उदात्त भावनाएँ सुप्त थी। वातावरण और संसर्ग से वे कोमल भावनायें उठने लगी, तथा संसार के प्रति विराग उत्पन्न होने लगा। मानसिक क्लेश और क्षोभ भी इस भावना को पुष्ट करने में समर्थ हुए।

उनके आने से कुछ दिन पहले, तिब्बत के एक मठ के लामा साँगपा ने भी इसी मठ में शरण ली थी। वह तिब्बत पतन के समय अपनी जन्म भूमि त्याग भारत में आए और तोवाँग मठ में रहने लगे थे। जब चीनियों के आक्रमण के समाचार वहाँ फैलने लगे, तब तोवाँग मठ के स्वामी ने उन्हें डुवांग जाकर रहने का परामर्श दिया, और स्वयं मठ छोड़ना अस्वीकार किया। उनके शिष्य सांगपा लामा को डुवाँग पहुँचा कर वापस चले गये। जब आक्रमण की आशंका अधिक ज्वलन्त हो उठी, तब तोवाँग मठाधीश ने कुछ अमूल्य वस्तुओं को ले जाने के लिए नुवोंग-पो को बुला भेजा। नुवोंग-पो अपने दो शिष्यों के साथ उनको लेने गये, और वहाँ से लौटते समय मार्ग में मेजर से उनकी भेंट हुई और उन्हें अपने साथ ले आए।

सांगपा लामा एकान्तवासी तपस्वी थे। उन्होंने तिब्बत के प्रसिद्ध विद्या-

लय जोरवाँग मठ में शिक्षा पाई थी, और योग विद्या की दीक्षा भी वहीं ली थी। वह लामा-समाज में त्रिकालज्ञ प्रसिद्ध थे, और उन्होंने तिब्बत निवासियों को बहुत पहले तिब्बत के पतन की सूचना देकर लामाओं को विशुद्धाचरण करने का उपदेश दिया था। परन्तु उनकी वाणी नक्कारखाने में तूती की आवाज साबित हुई, और यथा समय उसका पतन हुआ।

जब मेजर को उनके विषय में कुछ आश्चर्यजनक बातें ज्ञात हुई, तब उनके मन में अपना भविष्य जानने की उत्कंठा हुई। प्राय: संसार के सैनिक भविष्य जानने के लिए आतुर देखे जाते है और सैनिक छावनियां रम्मालों और ज्योतिषियों से उतराती रहती हैं। एक दिन मेजर ने नुवोंग-पो से कहा—"अब मैं स्वस्थ हूँ। मैं भारत जाना चाहता हूँ।"

नुवोंग-पो ने पूछा—"यहाँ क्या मन नहीं लगता ? कोई कष्ट हो तो बताओ, मैं उसे यथाशक्ति दूर करूँगा।"

"न कोई कष्ट है, और मन भी यहाँ अधिक शान्त और सुखी है, किन्तु मुझे एक व्यक्ति से प्रतिशोध लेना है।"

"प्रतिशोध का विचार मन में मत लाओ, उसे भगवान के निमित्त छोड़ दो। प्रत्येक कर्म की प्रतिक्रिया होती है, अतएव धैर्य के साथ उसकी प्रतीक्षा करो। उचित समय पर भागवत् शक्तियाँ तुम्हारा प्रतिशोध लेंगी, उसके लिए तुम्हें कर्म करने की आवश्यकता नहीं है।"

मेजर की सैनिक भावना को यह तर्क युक्तिपूर्ण तथा संगत प्रतीत नहीं हुआ। किन्तु उत्तर भी नहीं दिया।

नुवोंग-पो को विदित हुआ कि मेजर को यह उत्तर रुचिकर नहीं हुआ। उन्होंने थोड़ी देर बाद कहा—"धर्म की गति अति सूक्ष्म है। इस ब्रह्मांड की रचना किसी उद्देश्य से हुई है, और ऐसा प्रबन्ध किया गया है कि सब काम स्वयमेव्-स्वशक्ति से होते रहें।"

"आपकी बातें मेरी समझ में नहीं आती। यदि मनुष्य भागवत् शक्तियों के सहारे बैठ जाय, तब आततायियों की सब काल प्रधानता रहेगी, क्योंकि वे उन शक्तियों पर विश्वास न कर अपनी शक्ति पर निर्भर रहते हैं।"

"किन्तु जगत में सब काल आततताइयों की प्रधानता कब रही है ? वे धूमकेतु की भाँति उदय होते हैं, और कुछ दिनों में पुनः अदृश्य हो जाते हैं। प्रकृति शान्त है, निस्पृही है, उसी प्रकार रहने में शान्ति और सुख है।"

"किन्तु हमारा धर्म कहता है कि आततताइयों को नाश करो—अत्याचार अनाचार को समूल नष्ट करना चाहिए।"

"यह वैष्णव मत है, और विष्णु के सब अवतारों में यही तथ्य प्रतिपादित किया गया है, परन्तु जब इसका दुरुपयोग होने लगा, तब उनको भी बुद्ध का अवतार लेकर सत्य अहिंसा को प्रतिष्ठित करना पड़ा।"

"आप लोगों के जीवन में जो शान्ति देख रहा हूँ, उससे मैं प्रभावित अवश्य हूँ। कभी-कभी सोचता हूँ कि मैं भी आपसे दीक्षा ले लूं, परन्तु जब विचार आता है कि यह निष्क्रियता होगी, तब प्रतिशोध की भावना जाग्रत होकर उसे विकल करने लगती है।"

"ठीक है, अभी कुछ दिन और ठहर कर अभ्यास करो। जसे सैनिक बनने के लिए तुम्हें कई प्रकार के अभ्यास करना पड़ा, उसी प्रकार इस मार्ग पर चलने के लिए तुम्हें अभ्यास करना पड़ेगा। दुराग्रही मन को वशीभूत करो, तब मेरी बात तुम्हें पाखंड प्रतीत नहीं होगी। किसी दिन तुम्हारी भेंट गुरुदेव साँगपा से कराऊँगा। वे त्रिकालज्ञ हैं, तुम्हारी सब शंकाए निवारण करने में समर्थ होंगे।"

"वह क्या सत्य ही त्रिकालज्ञ हैं ?"

"हाँ, सुना तो ऐसा ही जाता है। मेरे सामने किसी ने उनकी परीक्षा नहीं की है।"

"आपने भी नहीं ?"

"नहीं, गुरु की परीक्षा नहीं ली जाती।"

'तब मुझे लेने दीजिए।"

"तुम अन्य धर्मावलम्बी हो, ले सकते हो।"

"तब इसका प्रबन्ध कीजिए।"

"प्रबन्ध यथा अवसर हो सकेगा, आज सम्भव नहीं, क्योंकि व[illegible] [illegible]ाधि

में हैं।"

"अच्छा, उनसे मिलने के बाद प्रस्थान करूँगा।"

वह उठकर अपने कक्ष में चले आए। नुबोंग-पो अध्ययन में लीन हो गये।

३५

चेशूल क्षेत्र में जख्मी जवानों को शीघ्र से शीघ्र श्रीनगर के सैनिक अस्पताल में लाया गया। उनमें राणा भी थे। उनकी गोलियाँ निकाल कर पट्टियाँ बाँधी गईं। जब उनकी आँखें खुली, और होश आया, तब वह चकित होकर अपने चारों ओर देखने लगे। उत्सुक डाक्टर और नर्स के चेहरे प्रफुल्लित हो गए। नर्स ने उनके शिर पर हाथ फेरते हुए मृदुल स्वर में पूछा—"कहिये, अब आपकी तबियत कैसी है ?"

राणा का कंठ शुष्क था। उन्होंने संकेत से पानी माँगा। नर्स आदेश के लिए डाक्टर का मुंह ताकने लगी। डाक्टर ने कहा—"ब्रान्डी के साथ गर्म दूध और ग्लूकोज पिलाओ। जल हरगिज न देना। रक्त निकल जाने से जल की कमी हो गई है, इसलिए कंठ सूख रहा है।"

नर्स आदेशपालन के लिए चली गई। राणा अपने विचारों को संतुलित करने लगे। धीरे-धीरे पिछली घटनाएँ स्मरण होने लगीं। दूसरे क्षण नर्स दूध लेकर लौटी और चम्मच से दूध पिलाने लगी। दूध और ब्रान्डी से स्फूर्ति पैदा हुई और वह थोड़ी देर में सो गए।

रात्रि के प्रथम प्रहर में उनकी नींद टूटी। इस समय उनका मन स्वस्थ था, और प्यास भी कम थी। नर्स को अपने पास बैठी देखकर पूछा—"मैं कहाँ हूँ।"

नर्स को आदेश था कि जब वह जागें, तब फिर दूध पिलाया जाय, इसलिए वह बिना उनके प्रश्न का उत्तर दिए, दूध लेने चली गई। उसके दूध लाने पर वह उठने की चेष्टा करने लगे, किन्तु कराह कर गिर-से पड़े। नर्स ने चम्मच से दूध पिलाते हुए कहा—"आप उठने की कोशिश न करें। मैं

चम्मच से दूध पिलाती हूँ, आप दूध पीजिए।"

राणा बिना प्रतिवाद के दूध पीने लगे। उष्ण दूध अन्य पौष्टिक पदार्थों के साथ उनमें नव स्फूर्ति देने लगा। दूध पीकर वह अधिक स्वस्थ हुए और पूछा—

"यह कौन जगह है ?"

नर्स ने उत्तर दिया—"श्रीनगर का अस्पताल।"

"चेशूल के युद्ध का क्या परिणाम हुआ ?"

"हमारी विजय हुई, और चीनी शत्रुओं ने युद्ध बंद कर दिया है।"

"क्यों ?"

"मैं इसका उत्तर नहीं दे सकती, किन्तु उन्होंने युद्ध-बन्दी की घोषणा कर दी है और अगले महीने में अपनी सेनाएँ पीछे वापस ले जावेंगे।"

"बड़ी अद्भुत बात है। बिना परिणाम निकले युद्ध समाप्त हो गया, कुछ समझ में नहीं आता। आज का समाचार पत्र दीजिए।"

"अभी केवल विश्राम कीजिए। डाक्टर की अनुमति नहीं है।"

"मैं अब स्वस्थ हूँ। छोटे-मोटे घाव भर जायंगे। मैं उनकी परवा नहीं करता।"

"इस समय आप स्वतंत्र नहीं हैं। अपनी इच्छानुसार कुछ नहीं कर सकते।"

"तब क्या चीनियों का बन्दी हूँ।"

"नहीं, आप भारत में है, और स्वतंत्र हैं। किन्तु डाक्टर के आदेशों के सामने पराधीन हैं।"

राणा कुछ उत्तर न देकर सोचने लगे।

नर्स ने पूछा—"कुछ खाइयेगा ?"

राणा ने शिर हिला कर नकारात्मक उत्तर दिया।

नर्स ने पुनः अनुरोध किया—"अंडे की जरदी का आमलेट ले लीजिए। यदि यह पसंद न हो तब उबला या अध-उबला अंडा ले लीजिये।"

राणा ने कोई उत्तर नहीं दिया। मौन को अर्ध-स्वीकृति समझ कर वह

अंडा लेने चली गई।

राणा के मस्तिष्क में युद्ध के पूर्व की घटनाएँ सजग होने लगी। उन्हें मकबूल मियाँ का ध्यान आया। वह उनका समाचार जानने को व्याकुल हो उठे।

उन्होंने नर्स के आते ही कहा -"क्या आप किसी सैनिक अफसर को बुलाने की कृपा करेंगी ?"

"अंडा खिलाने के बाद बुला लाऊँगी।"

"पहले आप बुला लाइए। मैं अपने एक साथी का हाल जानने के लिए व्याकुल हूँ। जब तक उसका हाल नहीं मिलता, तब तक मैं कुछ नहीं खा सकता।"

"सैनिक अफसर को आने में देर होगी, आपको खिलाने के बाद तुरन्त ले आऊँगी।" और यह कह कर वह जर्दी नमक मिला कर खिलाने लगी।

इसी समय उनके जागने का समाचार पा कर डाक्टर वहाँ आ गया, और मीठे स्वर में तबियत का हाल पूछा। उत्तर में राणा ने कहा—"कृपा कर आप किसी बड़े सैनिक अफसर को बुला देवें।"

"इस समय किसी का आना कठिन है।"

"क्यों ? मैं अपने एक साथी का हाल जानना चाहता हूँ।"

"वे सब प्रातःकाल आते हैं, तब आप उनसे पूछ लीजिएगा।"

"किन्तु बिना उसका हाल जाने मुझे शान्ति नहीं मिलेगी।"

"चेशूल के समाचार सब ठीक हैं। हमारे बहुत कम जवान मारे गए हैं, और आपने तो उनके छक्के ही छुड़ा दिए। आपकी चौकी के सब सिपाही आपकी प्रशंसा मुक्त कंठ से करते हैं। वास्तव में आप भारतीय वीरों में शिरोमणि हैं।"

प्रशंसा किस को द्रवित नहीं करती ! राणा सन्तुष्ट होकर सोचते-सोचते प्रगाढ़ निद्रा में निमग्न हो गए।

कई दिनों के उपचार और सेवा सुश्रूषा से राणा के घाव भरने लगे, और उनका स्वास्थ्य उत्तरोत्तर सुधरता गया।

एक दिन जब नर्स उनके शरीर के उभरे दानों को साफ कर औषधि

लगा रही थी, तब उसने कहा—"आप बड़े साहसी और दृढ़ स्वभाव के मालूम होते हैं।"

राणा ने मुस्कराते हुए पूछा—"क्यों ?"

"मैं देखती हूँ कि आप घावों के धोने और दवा भरने में एक शब्द मुंह से नहीं निकालते, जब दूसरे सैनिक हाय-तोबा मचाते हैं।"

"मैं गोरखा सिपाही हूँ। गोरखे शारीरिक पीड़ाओं को पीड़ा नहीं समझते।"

"यहाँ दूसरे गोरखे भी हैं, वे आपकी तरह चुपचाप नहीं पड़े रहते।"

"उन्हें भारत की हवा लग गई होगी।"

"क्या मतलब ?"

"भारत ऐश–आराम का देश है, नैपाल पहाड़ों का। पहाड़ी जीवन आरंभ से कठोर होता है। हाथ-पैर कट जाने पर भी वे साहस नहीं छोड़ते।"

"इसके यह अर्थ हुए कि आप सच्चे नैपाली है।"

"आप भी तो सबकी सेवा करते नहीं थकती। आप कौन हैं ?"

"पहचानिए कि मैं कौन हूँ।"

"मुझे तो आप पंजाबिन मालूम होती हैं ?"

"आपने कैसे जाना ?"

"आपकी लगन और चेहरे-मोहरे से। इतने साफ रंग की नारियां या केवल कश्मीरिन या पंजाबिन होती हैं। आपकी बोली में पंजाबी लहजा है।"

"किन्तु मैं पंजाब में कभी नहीं रही। मैं दिल्ली में पैदा हुई, और वहीं शिक्षा पाई है।"

"पंजाब और दिल्ली पास-पास हैं; बल्कि दिल्ली पंजाब का ही एक भाग है। इसके अलावा पंजाबी भाषा का असर दिल्ली में बहुत अधिक है। आप दिल्ली में कहाँ रहती हैं, और कब से इस सेवाकार्य में प्रवृत्त हुई ?"

"मैं पहाड़गंज में रहती हूँ, और इन्द्रप्रस्थ कालेज की ग्रेजुएट हूँ। नर्सिंग कोर्स पास कर ज्यों ही निकली त्यों ही लड़ाई आरंभ हो गई। मैंने अपनी सेवाएँ अर्पित कर दी। आखिर देश की सेवा किसी न किसी रूप में करना

चाहिए ।"

"बेशक, मैं आपके विचारों की कद्र करता हूँ । मैं भी नई दिल्ली में रहता हूँ ।"

"कहाँ ?"

"नई दिल्ली में औरंगजेब रोड पर मेरा बँगला है । मैं भी दिल्ली विश्व विद्यालय का ग्रेजुएट हूँ ।"

"आपका शुभ नाम ?"

"मेरा नाम क्या मेरी तख्ती पर नहीं लिखा ?"

"उसमें तो आपका ओहदा दर्ज है । नाम बहुत अस्पष्ट लिखा है ।"

"लाइए देखूँ ।"

नर्स ने तख्ती देते हुए कहा—"न मालूम क्या लिखा है—बरन्दर सिंह ।"

"खैरयत इतनी हुई कि लिखने वाले ने बन्दर सिंह नहीं लिखा ।"

दोनों हँसने लगे । नर्स हँसती हुई बोली—"मुझे यह नाम अजीब-सा मालूम हुआ, इसीलिए मैं असली नाम जानना चाहती थी ।"

"मेरे नाम का पंजाबीकरण हुआ है ।"

"पंजाबीकरण कैसे ?"

"यह न पूछिए । संस्कृत भाषा के शब्दों को वे लोग अजीब तरह से तोड़ते मरोड़ते हैं ।"

"आपके नाम को कैसे तोड़ा-मरोड़ा गया ?"

"मेरा नाम वीरेन्द्रसिंह है—उसका पंजाबी संस्करण हो गया बरन्दर सिंह । यह कैसे हुआ, मुझसे न पूछिए ।"

दोनो पुनः हँसने लगे । राणा ने पूछा—"अच्छा, आपका क्या नाम है?"

नर्स शर्मा गई । नाम बताने में अनिच्छा दिखाती हुई बोली—"मुझे नर्स या अधिक से अधिक सिस्टर कहिये ।"

"जब आप अपना नाम नहीं बताना चाहती, तब मेरा क्यों पूछा ?"

"पुरुष तो अपने नाम का प्रचार चाहते हैं ।"

"और नारियाँ?"

"उनका अस्तित्व ही क्या है? वे मौन अपनी सेवाएँ अर्पित करती हैं।"

"समय उनके मौन को अब तोड़ना चाहता है। संविधान में दोनों का दर्जा बराबर है।"

"वह कागजी कार्रवाई है। उसका अमल अभी नहीं हुआ है, कभी होगा, नहीं जानती।"

"आज ही से उसका श्रीगणेश होना चाहिए। आप नाम बताइए।"

"मेरा नाम सिर्फ दो अक्षरों का है।"

"तब वह वैसा ही सुन्दर होगा जैसी आप हैं?"

"आप मजाक करते है?"

"अच्छा मजाक न करूँगा, नाम बताइए।"

"प्रभा"

"देखिए मेरा अनुमान कितना सही निकला! प्रभा; कितना सुन्दर नाम और इसके अर्थ ..।"

"अर्थ के साथ आप क्या अनर्थ करते हैं?"

"आप कोई आशंका न कीजिए। आपके पिता का क्या नाम है?"

"पिता नहीं हैं। माता का भी देहान्त परसाल हो गया। मेरा एक छोटा भाई है, जो यूनीवर्सिटी में पढ़ रहा है। पैतृक धन सिवाय एक छोटे मकान के और कुछ नहीं है। उसको पढ़ाने के लिए मुझे प्रबन्ध करना पड़ता है। इसलिये नौकरी करती हूं। खैरियत इतनी हुई कि मां के सामने नर्स की ट्रेनिंग ले चुकी थी, नहीं तो मेरे भाई की पढाई समाप्त हो जाती।"

"आपके भाई का क्या नाम है?"

"प्रमोद चन्द्र। इस साल एम०ए० फाइनल में है। पढ़ने-लिखने में अच्छा है। आशा है कि प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होगा।"

"भगवान करे ऐसा ही हो।"

"प्रमोद अपनी यूनीवर्सिटी की बड़ाई करते नहीं थकता।"

"क्या कहता है ?"

"उसे यूनीवर्सिटी के पिछले दस साल के विद्यार्थियों के नाम रटे हुए हैं जिन्होंने विशेष योग्यताएँ दिखाई हैं। वह उन सबके आगे जाना चाहता है।"

"यह बड़ी शुभ बात है। उसका भविष्य निश्चय ही उज्ज्वल है।"

"प्रायः सभी ऐसा कहते हैं। आपने यूनीवर्सिटी कब छोड़ा था ?"

"यही पांच छः साल हुए होंगे।"

"तब तो वह आपके नाम से परिचित होगा। वह आजकल यहीं मेरे साथ कश्मीर घूमने आया है।"

"इस भयंकर जाड़े में !"

"मैंने उसे बहुत मना किया, किन्तु वह किसी तरह नहीं माना। बात यह है कि वह मुझसे दूर नहीं रह सकता। और मैं भी उसको अकेले छोड़ नहीं सकती। भाई-बहिन को कोई दूसरा आधार भी तो नहीं है।" कहते-कहते उसके नेत्र अश्रुपूर्ण हो गए।

राणा भी उसकी व्यथा के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए बोले— "संसार में सभी अकेले आते है और अकेले जाते हैं। आपके भाई है, मेरे तो कोई नहीं है।"

"कोई नहीं है ?"

"यो सब हैं, परन्तु अपना सगा कोई नहीं है। मेरी जायदाद के अनेक दावेदार हैं, परन्तु उन्हें मेरी सम्पत्ति से स्नेह है, मुझसे नहीं, अतएव मेरा कोई नहीं है।"

"कल प्रमोद को आपके पास ले आऊंगी। आपका कुछ जी बहलायेगा। राजनीति का वह विद्यार्थी है।"

"उसे अवश्य ले आइयेगा। उससे मिलकर मुझे खुशी होगी।" इसी समय एक दूसरे रोगी ने उसे पुकारा। वह उसके पास चली गई। राणा उसकी मराल-गति को मुग्ध दृष्टि से देखने लगे।

३६

पहाड़ों, घाटियों, तथा दुर्गम विकट पथ को पार करते हुए मकबूल मियां और उनकी प्राण रक्षा करने वाली नर्स, अन्त में श्रीनगर पहुँच गए। पाकिस्तान की सीमा में नर्स को अधिक कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ा, क्योंकि वह उस क्षेत्र से परिचित थी, और कई बार आई-गई थी, परन्तु भारतीय कश्मीर से वह सर्वथा अनजान थी । बादल, वर्षा, आंधी तुषारपात से वे दोनों असहनीय कष्टों को झेलते आ रहे थे । यदि उनके पास भालू की खाल न होती , तब वे सुरक्षित पहुंचने में असमर्थ हो जाते। खालों के भीतर वे उस भयानक शीत का शतांश भी अनुभव नहीं करते थे परन्तु उनके चेहरे तुषार पीड़ित हो गये थे, और आंखों की ज्योति भी कुछ मन्द पड़ गई थी । कानों में सदैव घहर–घहर का शब्द सुनाई पड़ता, चाहे पवन चलता हो अथवा धीमा या बन्द हो। दोनों को एक दूसरे के शब्दों को सुनने-समझने में कठिताई होती थी। दिन बहुत छोटे होते जा रहे थे, और रात्रि कतई चलने लायक न होती थी। जहां कहीं खोह, कन्दरा अथवा आड़ की कोई जगह मिल जाती , वहां ठहर जाते, और जैसे-तैसे रात काट-कर प्रकाश होते ही चल देते । वैज्ञानिक रीति से बनाई भोजन सामग्री, अब समाप्त हो रही थी। सबसे अधिक कठिनाई जल की थी । वह सर्वत्र जमा हुआ मिलता था। जब किसी कन्दरा में सूखे पत्ते और टहनियाँ जलाकर बर्फ के टुकड़े को गर्म कर जल में परिणत करते, तब पीने को मिलता, किन्तु वह भी पीते-पीते हिम समान शीतल हो जाता था। परन्तु आश और धैर्य ने अब भी उनका साथ नहीं छोड़ा था। रास्ते सभी सुनसान थे। यदि कहीं कोई गांव मिल जाता, तब रास्ता पूछकर आगे बढ़ते। नर्स वहां की बोली से परिचित थी, और उनकी भाषा में बातें करती थी। उनकी सब कठिनाइयों का अन्त हुआ और उन दोनों में श्रीनगर में प्रवेश किया।

श्रीनगर इस समय श्रान्त और उजड़ा–सा था। नागरिकों में वह चहल–पहल नहीं थी जो ग्रीष्म में देखने को मिलती है। डल झील अभी

जमी नहीं थी। उसके किनारे बैठकर दोनों ने सब से पहले भरपेट पानी पिया। कृत्रिम जल पीते-पीते वह ऊब गए थे, और प्यास दर असल डल झील के जल से बुझी।

नर्स ने स्वस्थ होकर पूछा—"श्रीनगर तो हम लोग आ गए, अब कहाँ चलना चाहिए ? आपका क्या ख्याल है ?"

'मेरे पैरों का बुरा हाल है, एक कदम चलने की ताकत नहीं है। आज बहुत दिनों में धूप मिली है। कुछ देर यहीं ठहरिए। अभी तक श्रीनगर की लौ लगाए चला आ रहा था, अब हिम्मत पस्त हो गई है।"

"अभी हिम्मत पस्त न करिये। देखिए, मैं औरत हूं। मैं नहीं घबड़ाती, लेकिन आप मर्द बच्चे होकर घबड़ाते हैं।"

"आपको ऐसे रास्तों में चलने का मश्क हैं। जासूसी की तालीम में आपको सब सिखाया और मश्क कराया गया है। इसके अलावा आप पहाड़ों में रहीं, काम किया, इससे इन कामों में आप मँज गई हैं।"

"और आप क्या बच्चों के पालने में लेटकर लड़ाई लड़ने आये थे ?"

"लेकिन ऐसी मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा, यह भी न जानता था। इससे बेहतर था कि चीनी मुझे कत्ल कर देते।"

"वे कत्ल नहीं करते, घुला घुलाकर जान निकालते हैं। उनकी तकलीफों के मुकाबले में हमें कुछ भी तकलीफ नहीं उठाना पड़ा।"

"जो हो, अब सही सलामत श्रीनगर पहुंच गए। अब यहां से दिल्ली सिर्फ छः घंटे का रास्ता है।"

"छः घंटे का ?"

"हवाई जहाज ज्यादा से ज्यादा छः घंटों में दिल्ली पहुँचा देगा।"

"बल्कि उससे भी कम वक्त में। यह कहिए, आप जमीन पर न चलकर आसमान में उड़ेंगे। लेकिन आपको हवाई जहाज क्या बिना पैसे ले जायगा ?"

"भारतीय फौज के लेफ्टीनेन्ट मेजर से जो चीन फतेह कर लौटा है, किराया मागेंगे ?"

"यह दावा ?"

"जानती हैं आप, कुत्ता भी अपने घर में शेर होता है।"

"आपने मिशाल अच्छी नहीं चुनी।"

"आप कुत्ते को हकीर समझती हैं। दुनियां में ऐसे कितने ही कुत्ते हैं जिनकी किस्मत को देखकर लाखों इन्सान रश्क करते हैं। इसी तरह काश, मैं आपका कुत्ता होता तो आपका प्यार तो पाता !"

"फिर वही वाहियात बातें। अहसान इतनी जल्दी भूल गये ?"

"अहसान अगर भूला होता तो आपका कुत्ता न बनना चाहता। अगर अपनी खाल की जूतियाँ बनाकर आपके खूबसूरत पैरों में पहनाऊँ, तो भी वह खत्म नहीं होगा।"

"उठिये, चलिये, बातें न बनाइये। मर्दों को क्या औरतों की खुशामद के लिए बनाया गया है ?"

"मेरी समझ में खुदा का कोई दूसरा ख्याल नहीं था।"

"बहुत खूब। आप खुशामद करते रहिये, मैं तो चली।"

"कहाँ ?"

"हवाई अड्डे।"

"क्या आपके पास पैसे हैं ?"

"नहीं है, तो हो जायेंगे। पाकिस्तानी नोट हैं, और कुछ सोना भी है।"

"लेकिन दोनों की अदला-बदली में हम पकड़े जायगें। कहीं हम पाकिस्तानी एजेन्ट न करार दिये जांय।"

"यह सुझाव आपका बहुत दुरस्त है। यह डर है। फिर क्या किया जाय ?"

"जरा आराम कर लीजिए। खुदा कोई न कोई रास्ता निकालेगा।"

"आराम बहुत कर लिया। बेकार वक्त न खराब कीजिये। किसी दूकान में चलकर खाना खायें, फिर आगे की सोचें।"

"पैसे का फिर सवाल आता है।"

"दूकानदार सोना ले लेगा।"

"हमारी शक्ल ही बता रही है कि हम लोग बयाबां से भाग कर

आये हैं। भगोड़ों के पास सोना कहां से आया, यह शक हो सकता है।"

"उठिये तो, कोई हल निकलेगा।"

मकबूल मियाँ को लाचार होकर उठना पड़ा। घूमते-घूमते वह 'टूरिस्ट' सेन्टर आए और उसके विशाल भवन के सामने चक्कर काट रहे थे कि मकबूल मियाँ की दृष्टि सामने पैदल जाते हुये चार व्यक्तियों पर पड़ी। उनमें से एक की चाल पहचानी मालूम हुई। वह सन्देह निवारण के लिये बिना कुछ कहे-सुने दौड़ पड़े। पीछे पदध्वनि सुनकर वे सब ठहर गये। उनके पास पहुँचते ही मकबूल मियाँ ने अपने पिता नवाबजादा को पहचान लिया, और बोल उठे—"अब्बाजान, अब्बाजान! "नवाबजादा ठहर कर उनको पहचानने की कोशिश कर रहे थे। आवाज उन्हें मकबूल मियाँ की मालूम हुई, किन्तु शक्ल कोई दूसरी नजर आई, जो जानी पहचानी शक्ल से बिल्कुल अजीबो-गरीब थी।

मकबूल मियां ने और पास आते हुए कहा—"अब्बाजान, आप नहीं पहचान पाए? मैं मकबूल हूँ।"

नवाबजादा को अब विश्वास हो गया कि उनका पुत्र मकबूल ही है। आगे बढ़कर उन्होंने उसको अपनी छाती से लगाते हुए कहा—"मकबूल, तू यहां कहां?"

मकबूल ने उनके हृदय में सिमटते हुए कहा—"खुदा की मेहरबानी से बड़ी मुश्किलों से बचकर आया हूँ।"

दोनों प्रेमाश्रु बहाते हुए एक दूसरे से चिपके रहे।

नवाबजादा की खुशी का ठिकाना नहीं था। पुत्र स्नेह उन्हें विगलित कर रहा था। प्रेमाश्रु थामें नहीं थमते थे। नैयर, सन्तोष और सेठ ब्रजमोहन दास अवाक् पिता-पुत्र का मिलन देख रहे थे। कुछ दूर नर्स खड़ी विस्मित दृष्टि से उन सबको देख रही थी। प्रेमावेग कुछ शान्त होने पर नवाबजादा न पूछा—"बेटा, यहाँ कैसे आ गये? हम सब लोग तुम्हारे लापता होने से हैरान और परेशान थे। तुम कहाँ थे?"

मकबूल ने मुड़कर नर्स को इंगित करते हुये कहा—"अब्बाजान, मुझे

और मेरे एक साथी को चीनी उड़ा ले गये थे। मैं उनकी कैद में था। वहाँ से छुड़ाकर लाने वाली वह नेकबख्त है।"

सब लोग उसकी ओर आश्चर्य से देखने लगे। उसने लजाकर अपना शिर नीचा कर लिया।

नवाबजादा ने भावना में भर कर उसके पास पहुँच कर कहा—"बेटी, मैं नहीं जानता, कि किन लफ्जों में तुम्हारा शुक्रिया अदा करूँ। मकबूल की जान बचाकर तुमने न सिर्फ उसके ऊपर बल्कि मेरे ऊपर भी वह अहसान किया है, जिसका एवज मैं ता-जिन्दगी नहीं चुका सकता। बेटी, तुम्हारा नाम क्या है?"

नर्स भी भाव विभोर हो रही थी। ऐसी स्नेहमयी वाणी उसने अपने पिछले जीवन में कभी नहीं सुना था। उसको अपने पिता का विस्मृत स्नेह जागता हुआ दिखाई दिया। उसका कंठ अवरुद्ध हो गया।

नवाबजादा ने उसकी पीठ सहलाते हुए कहा—"बेटी, मैं किस नाम से तुम्हें पुकारूँ?"

नर्स ने नत दृष्टि से उत्तर दिया—"मैं चीनी जासूस हूँ। मेरा नाम नहीं, नम्बर है।"

"क्या चीन में नाम रखने का रिवाज खत्म हो गया है?"

"जी हाँ!"

मकबूल मियां ने पास आकर कहा—"आप अमेरिकन पिता से उत्पन्न हुई हैं, इसलिये चीनी नहीं अमेरिकन हैं।"

नर्स ने आहत दृष्टि से मकबूल को देखकर मुंह फिरा लिया।

नवाबजादा ने प्रसंग बदलने की चेष्टा से कहा—"तुम लोगों की कहानी होटेल में चलकर इतमीनान से सुनेंगे। क्यों नैयर, क्या ख्याल है?"

नैयर अभी तक आश्चर्य में डूब-उतरा रहे थे। अपना नाम सुनकर वह मानो सोते से जगे हों। हकबका कर उत्तर दिया—"जी हां, होटेल नजदीक है। वहीं सुनना मुनासिब होगा।"

नवाबजादा ने नर्स को साथ चलने का संकेत करते हुये कहा—"चलो बेटी! तुम्हारे मां-बाप नहीं है। आज से तुम मेरी बेटी हुई। खुदा ने मुझे

कोई बेटी नहीं दी थी । उस कमी को आज उसने इस तरह पूरी की । तुम मेरी पाँचवीं औलाद हुई ।" यह कह कर वह उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे ।

नर्स से मकबूल मियां ने धीमे स्वर से कहा—"अब तो दामन छुड़ाकर नहीं भाग सकेंगी आप । मैं जानता था कि अब्बाजान आपकी कैसी कद्र करेंगे । उनकी गिरफ्त से आप निकल नहीं सकती ।"

नर्स तिरछी दृष्टि से उनको देखती, नवाबजादा के साथ-साथ जाने लगी । अन्य साथियों ने उनका अनुसरण किया ।

३७

राणा वीरेन्द्र सिंह उस दिन बहुत प्रसन्न थे । उनके मस्तिष्क में एक नया भाव, जो पहले कभी नहीं उदय हुआ था, उठकर उद्वेलित कर रहा था । वह अपनी नर्स प्रभा की सेवा-सुश्रुषा और उसकी एकान्त निष्ठा से इतने प्रभावित हुए कि उन्हें स्पष्ट प्रतीत होने लगा कि वह केवल नर्स की भावना से ही उनकी देख रेख नहीं करती बल्कि उसमें आन्तरिक मनोयोग भी है । वह यह बराबर लक्ष्य कर रहे थे कि जब वह बातें करते हैं, तब उसकी सारी भावनायें उन पर ही केन्द्रित रहती हैं । जब वह आँखें बन्द किए सोने का बहाना करते हैं तब वह सिरहाने बैठ उनको एकटक देखा करती है । जब वह उनके शिर पर हाथ फेरती तब उसकी उँगलियों की विद्युत–शक्ति उन्हें अभिभूत कर एक नया रोमांच उत्पन्न करती । वह आँख से आँख मिलाने में संकोच तथा लज्जा अनुभव करती, परन्तु छिपा कर देखने के लिए व्यग्र रहती वह स्वयं उसकी ओर धीरे धीरे इस प्रकार खिचे जा रहे थे, जैसे डोर से बँधी कोई वस्तु जल में अनायास खिचती है । प्रभा के स्पर्श से उनके मन में सुकुमार भावनांए उठती किन्तु वैसी नहीं जैसी पहले किसी तरुणी के स्पर्श से उठती थी । पहली भावनाएँ विलास के संसर्ग से उत्तप्त और उत्तेजक थीं किन्तु इन भावनाओं में शान्ति तथा शीतलता थी । उसके शान्त और सरल चेहरे पर सादगी तथा अपनत्व की सुषमा क्रीड़ा करती और उसकी चितवन विश्वास, भक्ति तथा श्रद्धा से सराबोर थी ।

प्रमोद के आने से उन दोनों के जीवन में एक अपरोक्ष सम्बन्ध स्थापित

हो गया । वह उनके नाम से परिचित था, और जब उसे मालूम हुआ कि बहु-प्रशंसित तथा चर्चित राणा यही हैं, तब वह हर्ष विभोर हो उठा, और उनका एकान्त भक्त बन उनके सम्बन्ध में प्रचलित अनेक गाथाएँ अपनी बहिन को सुनाने लगा । कीर्ति श्रवण से भक्ति, श्रद्धा की कोमल भावनाएँ जाग्रत होती हैं, और मन स्वयमेव उसकी ओर आकर्षित होने लगता है । उधर राणा भी खोद-खोद कर प्रभा के सम्बन्ध में अनेक बातें पूछते और वह उसकी त्याग-तपस्या, भक्ति-श्रद्धा, स्नेह-आदर की कहानियाँ सुनाने में कोई थकान महसूस नहीं करता । बड़ी कृतज्ञ वाणी में वह बताता कि किस प्रकार उसकी बहिन ने उसको पढ़ाने के लिए कितना उत्सर्ग किया है, किस प्रकार लड़कियों का ट्यूशन कर वह स्वयं पढ़ती तथा उसकी पढ़ाई का खर्च जुटाती थी । वह उसे ट्यूशन करने की अनुभूति इसलिये नहीं देती, क्योंकि उसकी पढ़ाई में व्याघात उत्पन्न होगा और उसको प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त नहीं होगा । जो श्रेय उसको प्राप्त हुआ है वह एक मात्र उसकी बहिन के त्याग और तपस्या से हुआ है ।

प्रमोद उन दोनों के विचार विनियम का एक साधन-सा बन गया था । उसके माध्यम से एक दूसरे के मन बहुत समीप आ गये थे, परन्तु वह समीपता वाणी के माध्यम तक उन्हें लाने में समर्थ नहीं हुई थी । वाणी की मूकता ने नयनों का मार्ग ढूंढ़ लिया और जब वे एक दूसरे को देखते; उनके नयन-युगल मन के सन्देश वाहक दूत बन जाते । मुख से कुछ भी न कह वे जानने लगे थे कि दोनों प्रेम के रेशमी धागों में बँध गये हैं और स्पर्श तथा दृष्टि अनंग के अदृश्य आशीर्वाद से पूरित है । अव्यक्त भाव से एक दूसरे की पूजा, आराधना और गुणगान में रत रहने लगे, किन्तु प्रत्यक्ष होने पर वे उस भाव को छिपाने का प्रयत्न करते और जितना वे छिपाते, उतना ही उनके मन में वह उज्ज्वल तथा प्रखर होता था ।

दोपहर का समय अस्पतालों में शान्ति का होता है । रोगी प्राय: उस समय या तो सोते रहते हैं अथवा कोई पुस्तक या समाचार पढ़ने में संलग्न रहते हैं । नर्सों को भी कुछ अवकाश मिल जाता है । राणा के समीप बैठ कर

प्रभा उस अवकाश का लाभ उठाती थी। राणा आंखें बन्द किए सोने का बहाना करते थे इस भय से कि वह जिसमें अन्यत्र न जावे क्योंकि वह लक्ष्य कर चुके थे कि ज्यों ही वह सजग होते त्यों ही उठ कर चल देती थी।

उस दिन भी यही नाटक चल रहा था। प्रभा उनके चेहरे पर दृष्टि जमाये और राणा अपनी आंखें दृढ़ता से बन्द किये पड़े थे, यद्यपि वे उसको देखने के लिये बराबर मचल रही थी। प्रभा धीरे से स्टूल उनके सिरहाने लाकर बैठ गई और पुन: तन्मय होकर उन्हें देखने लगी। उसने अनुमान किया कि वह शायद सो गये हैं, और उसका निर्णय करने के लिये वह झुक कर देखने लगी। झुकते-झुकते वह इतनी झुक गई कि उसकी श्वासें—मन की उमंगों का उत्ताप, उनके मस्तक, नयनों और नासिका पर बिखेरने लगा। राणा तो जाग ही रहे थे। उनके नयन भी उसे देखने को मचल उठे और हजार न खोलने का प्रयत्न करते हुये वे सहसा खुल गये और एक दूसरे के मनोभावों को स्पष्ट देखने लगे। प्रभा चौंक पड़ी। उसके कपोल लाल हो गये। धमनियों में रक्त की गति तीव्र हो गई और वह झिझक कर पीछे हटी। राणा ने अपने बाएँ हाथ से, उसके पलंग की पाटी पर रखे हाथ को पकड़ लिया। चोर की भाँति वह भागने का उद्योग करने लगी, किन्तु वह कृतकार्य नहीं हुई।

वाणी मूकता की परिधि को लाँघ कर मुखर हो उठी। राणा ने एक संक्षिप्त सम्बोधन किया—"प्रभे !"

उसने हाथ छुड़ाते हुए कहा—"छोड़िए, मुझे दूसरे रोगी देखने जाना है।"

राणा ने उसे दृढ़ता से पकड़ते हुये कहा—"एक समय सूरदास से भगवान कृष्ण ने अपना हाथ छुड़ाने का प्रयत्न किया था और छुड़ा लिया था, क्योंकि वह अन्धे थे, और यद्यपि इस समय मैं भी अवश हूं तथापि मैं इसे नहीं छोड़ सकता। जीवन रहते नहीं छोड़ सकूंगा।"

"क्या पागलपन करते हैं आप, कोई देखेगा तो क्या समझेगा ? मुझे रुसवा न कीजिए। मुझसे खता हुई, अपराध हुआ। क्षमा कीजिए। मेरी नौकरी मत लीजिये, नहीं तो मेरे भाई का यह वर्ष खराब जायगा।"

"उफ ! कुछ मुझे भी कहने दो । तुम अब नौकरी नहीं करोगी और तुम्हारे भाई का वर्ष भी खराब नहीं होगा । जब तक तुम मेरी पत्नी बनना स्वीकार नहीं करोगी, तब तक नहीं छोड़ूंगा ।"

"आप कैसी बेतुकी बात करते हैं । कहाँ आप राजेश्वर और कहाँ मैं रंक !"

"जिस धन से तुम राजेश्वरी हो, उसमें मैं रंक हूं ।"

"कैसे ?"

"तुम प्रेम, सेवा, त्याग, तपस्या के धन से विभूषित हो, और मैं उससे नितान्त हीन और दरिद्र हूं । वह धन अचल अडिग और अशेष है । जिस द्रव्य तथा ऐश्वर्य से तुम मुझे राजेश्वर बताती हो वह किता क्षणिक, क्षिप्र, और तुच्छ है !"

"प्रमोद सत्य कहता था कि तुम्हें कोई परास्त नहीं कर सकता ।"

"यह उसने ग़लत कहा था । तुमने मुझे सही माने में परास्त ही नहीं वरन अपना एकान्त भक्त तथा पुजारी बना लिया है ।"

"भावावेश में मत बहिए । बस इतना ही रहने दीजिए ।"

"भावावेश इसे न समझो । यह नितान्त सत्य है। हाँ, तुम्हारी अनुमति तथा सहयोग के बिना मैं सदैव असमर्थ रहूंगा । यदि प्रमोद के परोक्ष में तुम्हारा मन अन्यत्र बँध चुका हो तब.... ।"

"क्या ऐसी बातें भी प्रमोद से पूछते थे ?"

"स्पष्ट नहीं, किन्तु घुमा-फिरा कर अवश्य जानकारी प्राप्त को है ।"

"वह क्या ?"

"यही कि ईश्वर ने मेरी आराध्य देवी बनने के लिए तुम्हारी सृष्टि की है ।"

"आप मेरे सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते ।"

"जितना मैं जानता हूं, उतना तुम भी अपने को नहीं जानती । त्याग और तपस्या की महत्वाकांक्षा भी असीम है ।"

"मैंने न कुछ त्याग किया, और न तपस्या । आप व्यर्थ मुझे कांटों में

घसीटते हैं ।"

"हीरा अपने मुख से अपना मोल नहीं कहता । बोलो, तुम्हें मेरा प्रस्ताव मन्जूर है ?"

"यदि मैं "नहीं' कहूँ तो ?"

"तुम 'नहीं' कह नहीं सकती । तुम्हारा अन्तर्मानस मुझसे छिपा नहीं है ।"

"फिर क्यों व्यर्थ परेशान करते हो ?"

"प्रेम की स्वीकारोक्ति कितनी मधुर होती है । प्रेमी जानता, बूझता समझता हुआ भी सुनने का अभिलाषी रहता है । जहाँ अन्य ज्ञानेन्द्रियों की तृप्ति स्पर्श, गंध और दृष्टि से हो जाती है, वहाँ श्रवणेन्द्रियों की तृप्ति बिना बार-बार सुने नहीं होती ।"

"तब उसकी तृप्ति से वंचित रहिए ।"

इसी समय उस कक्ष में नवाबजादा के साथ सभी साथियों ने प्रवेश किया। शान्त वातावरण आन्दोलित हो उठा। राणा उसका हाथ छोड़ कर आगन्तुकों को रिस भरी दृष्टि से देखने लगे । दूसरे क्षण उनको पहचान कर वह हर्ष विभोर हो गए, और बड़े तपाक से कहा—"आइए नवाब साहब, आइए। खुशामदीद ।"

सब लोग प्रसन्नता से उनकी ओर अग्रसर हुए । मकबूल मियाँ सबसे आगे थे । उनको पहचान कर कहा— "अरे भाई मकबूल, तुम इनके साथ कैसे ? तुम तो चेशूल में खो गए थे !" और उन्होंने अपना बाँया हाथ बढ़ा दिया।

मकबूल ने हर्षोत्फुल्ल वाणी में उनका हाथ पकड़ते हुए कहा—"भाई जान, मुझे चीनी पकड़ ले गए थे । कैसी चालाकी से पकड़ा, मैं मान गया ।"

"तब भाई छूटे कैसे ?"

"उसकी लम्बी कहानी है, किसी दूसरे वक्त बताऊंगा ।"

नवाबजादा ने उसे अलग ठेलते हुए कहा—"मुझे पहले इनको अच्छी तरह देखने तो दे । कहो दोस्त! ···।" कहते-कहते उनका कंठ अवरुद्ध हो गया,

आँखें छलछला उठी ।

आंसुओं की मैत्री आँसुओं के साथ होती है । राणा भी विगलित हो उठे । नवाबज़ादा ने अपने मनोवेग को दमन करते हुए प्रभा से पूछा—"गोलियाँ कहां लगी है ?"

किन्तु प्रभा का नर्स भाव उस समय तिरोहित था । कुछ उत्तर न देकर वह भी आंसुओं को पीने लगी ।

राणा ने मुस्कराने की चेष्टा करते हुए कहा—"सिर्फ दो गोलियां लगी हैं नवाब साहब, एक जांघ में और दूसरी कन्धे के नीचे पखौरे में । घाव करीब-करीब भर गये हैं, सिर्फ दाहिने हाथ में कुछ कसर रह जायगी, बाकी चलने-फिरने में कोई रुकावट नहीं होगी ।"

"शुक्र है खुदा का, कि उसकी मेहरबानी से तुम और मकबूल इस कड़े इम्तिहान से सुर्खाब के पर लगा कर निकले । तुम दोनों की सुर्खरूई से तुम्हारे दोस्त भी सुर्खरू हुए ।" फिर सेठ ब्रजमोहनदास की ओर संकेत करके कहा "आप रमणीमोहन के वालिद हैं । उनका क़िस्सा फिर बयान करूंगा ।" फिर मकबूल को छुड़ाने वाली नर्स को सामने लाकर कहा—"और यह मेरी बेटी है, जिसने जान पर खेल कर मकबूल को बचा कर यहां तक ले आई है । राणा, हम सब तुम्हें साथ ले चलने के लिए आए हैं ।"

राणा ने मकबूल मियां को छुड़ाने वाली नर्स को देखते हुए कहा—"आप ने मेरे दोस्त की जान बचा कर हम लोगों पर जो अहसान किया है उसका बदला नहीं दिया जा सकता ।"

उसने केवल मुस्करा कर शिर नत कर लिया ।

नवाबजादा ने तुरन्त कहा—"अरे भाई राणा, मैंने इसको अपनी बेटी बनाया है । मेरी जायदाद में लड़कों के बराबर इसका भी हक रहेगा ।"

"आपसे यही उम्मेद है नवाब साहब । अब आप बहुत जल्द चलने की तैयारी कीजिए । हवाई जहाज में मेरे अलावा दो सीटें अधिक सुरक्षित कराइयेगा ।"

"वे दो सीटें किसके लिए ?"

राणा ने प्रभा की ओर संकेत करते हुए कहा—"मेरी होने वाली पत्नी प्रभा और उनके भाई प्रमोद के लिये।"

"तुम अपनी हरकत से बाज न आए राणा ?"

"नवाब साहब, अब पुरानी बातों का जिक्र न कीजिये। चीनियों की लड़ाई के साथ वे सब खत्म हो गई। दर असल हम सब चीनी माताहरियों के जाल में फंस गये थे। अब नई जिन्दगी का नया सबक शुरू होता है। प्रभा ने अपनी एकान्त सेवा और त्याग से मुझे नई दिशा और नया प्रकाश दिखाया है।"

प्रभा लाज से अवगुंठित सिमटी खड़ी थी।

सब लोगों की दृष्टियां उस पर केन्द्रित हो गई और मुबारकबादी की झड़ी लग गई।

३८

मेजर कुलदीप सिंह दिल्ली प्रस्थान के लिए सदैव चिन्तित रहते थे, तुषारपात के कारण डुवाँग मठ के स्वामी उन्हें अनुमति नहीं दे रहे थे। किन्तु बेकारी में बैठे-बैठे जहां उनका मन घबड़ा रहा था वहां प्रतिशोध की भावना उग्रतर होती रही जा थी।

जब एक दिन वह चिन्तित बैठे थे, तब नुवोंग-पो ने सूचना दी-"चीनियों ने युद्ध समाप्त कर अपनी सेनायें पीछे लौटा रहे हैं।"

मेजर ने चकित होकर पूछा—"यह समाचार आप को कैसे मिला ?"

"तोवाँग मठ से दो व्यक्ति उन वस्तुओं को लेने आये हैं, जिन्हें लाते हुए तुमसे मिला था, क्योंकि न मालूम क्यों चीनियों ने मठ को नष्ट नहीं, किया यद्यपि उन्होंने समग्र देश को उजाड़ दिया है। मठाधीश लाया सुरक्षित हैं और मठ की अन्य वस्तुएं भी अक्षुण्ण हैं।"

"यह बड़े आश्चर्य की बात है ?"

"आश्चर्य की बात तब थी जब वे उसको नष्ट-भ्रष्ट करते। भगवान बुद्ध की जीवन ज्योति से वह मठ आलोकित है। इसी विश्वास से मठाधीश ने अपना स्थान नहीं छोड़ा।"

"आश्चर्य है कि वह खूनी भेड़ियों से बच गए।"

"यह सत्य ही एक आश्चर्यजनक घटना है।"

"यही आश्चर्य मानवों की बुद्धि में धर्म की प्रतिष्ठा करता है। जो सदैव एक स्थिति, एकरूप सब काल में रहे, वही सत्य है।"

"किन्तु चीनी कोई अन्य परिभाषा सत्य की करते हैं।"

"इसीलिए उनकी शक्ति क्षणिक है। जल का बुलबुला आकार में बिन्दु से कई गुना बड़ा होता है, परन्तु फूट जाने पर एक लघु बिन्दु रह जाता है। इसी प्रकार चीन की शक्ति की विपुलता भी बिखर जायगी, जब वह किसी सशक्त राष्ट्र से टक्कर लेगा। शक्ति की धुरी है धर्माचरण, और धर्म है वही जो बहुजन हिताय हो। धर्म रहित शक्ति के पग नहीं होते।"

"किन्तु चीन संसार को त्रस्त कर विश्व विजय की महत्वाकाँक्षा रखता है।"

"विश्व विजय का स्वप्न आज तक किसी विजेता का साकार नहीं हुआ और न होगा। विजेता कुछ काल के लिए संसार के एक अंश को अपनी दानवी शक्ति से पराभूत करते हैं, परन्तु वे विजय करते–करते काल के गाल में समा जाते हैं। उनके सामने अथवा बाद में उनका अस्तित्व विजित देशों से लोप हो जाता है। विजय अभियान था भगवान बुद्ध का जो उनकी मृत्यु के पश्चात उत्तरोत्तर बढ़ता गया, और अभी भी बढ़ रहा है।"

"किन्तु भगवान बुद्ध सैनिक योद्धा नहीं थे।"

"शस्त्रों अथवा मूक पशुओं की भाँति सैनिकों के गिरोह से संसार विजित नहीं हुआ। विजय वह है जब मनुष्य का हृदय विजेता का मन-प्राण से अनुगामी बने। हृदय पर विजय प्राप्त करना सच्ची विजय है। वह गर्व, अभिमान, दर्प और दंभ पर आधारित नहीं, वरन् सत्य, सेवा, तपस्या और निष्ठा पर हैं।"

"इसी समय एक शिष्य ने आकर सूचना दी कि तोवांग मठ के शिष्य बुला रहे हैं।" यह सुनते ही नुवांग-पो ने उठते हुए कहा—"अब आप आराम कीजिए, मैं उनकी सेवा में जा रहा हूं।"

और वह उठकर शीघ्रता से चले गए।

× × ×

दूसरे दिन तुषारपात थम गया, और सूर्य के प्रकाश से वसुन्धरा देदीप्यमान हो गई। कई दिनों से बैठे-बैठे मेजर का मन ऊब गया था। घूमने और शिकार करने की इच्छा जाग्रत हुई। उनका आलाप डुवाँग गाँव के एक भूतपूर्व सैनिक के पुत्र से हो गया था, जो स्वयं सैनिक बनने का इच्छुक था। खुला दिन होने पर वह उनका पथ प्रदर्शक बन कर साथ जाता था। वह अपने साथ प्रायः एक कुत्ता भी ले जाता था। आज जब वह नहीं आया, तब वह उसको बुलाने उसके घर गए। युवक का नाम था 'आरमो' जो शायद 'अर्यमा' का अपभ्रंश था।

आरमो ने उन्हें देख कर कहा—"मैं स्वयं आ रहा था।"

"कोई हर्ज नहीं मैं ही चला आया। शिकार पर चलना है।"

"ठहरिए, मैं बन्दूकें ले आऊँ।" और दौड़ कर पुराने चाल की दो बन्दूकें और भुजालियाँ ले आया। मेजर उसी के पुराने शस्त्रों से शिकार खेलते थे, और चूंकि मठ में शस्त्रास्त्र रखना वर्जित था, इसलिए जब वह वापस लौटते, तब बन्दूक और भुजाली उसको लौटा देते।

"मेजर ने बन्दूक और भुजाली लेकर कहा—"तुम्हारा कुत्ता कहां है? क्या उसको साथ नहीं लोगे?"

"इधर-उधर घूमता होगा। अभी बुलाता हूं।"

आरमो, 'टुई-टुई' कह कर पुकारने लगा। थोड़ी देर बाद 'टुई' दौड़ता हुआ आया, और दुम हिलाता अपने स्वामी तथा मेजर के पैर सूंघने लगा।

आरमो और मेजर कुत्ते के साथ रवाना हुए।

मार्ग में आरमो ने कहा—"पहले पश्चिम और उत्तर के जंगलों में हम लोग गए हैं, किन्तु उधर पक्षियों के अतिरिक्त कोई बड़ा जानवर नहीं मिलता। आज पूर्व के जंगलों में चला जाय।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा। मैं यहाँ के मार्गों से परिचित नहीं हूँ, जिध

तुम्हारा मन हो, उधर चलो।"

"जिस जंगल से आपको रिमपोचे (रिमपोचे तिब्बती भाषा का शब्द है, जो ऋषियों के लिए प्रयुक्त होता है।) लाए थे, आज उधर चलने का विचार है। वहाँ प्रायः बड़े जानवर मिल जाते हैं।"

"क्या इस भयानक शीत में वे मिलेंगे ?"

"भालू मिलते हैं, क्योंकि वे अपना स्थान छोड़ कर नहीं जाते।"

"मैंने कभी भालू का शिकार नहीं किया। वे बड़े खूंखार होते हैं। दिन में शायद मिलते न होंगे।"

"वे अक्सर कन्दराओं में रहते हैं। उनके रहने की एक कन्दरा मुझे मालूम है। चलिए आपको दिखा लाऊं।"

"उनके शिकार का अभ्यास नहीं है।"

"कोई डर नहीं, मुझे काफी अभ्यास है। इन भालुओं की खालें बड़ी कीमती होती हैं। चीनी व्यापारियों से इनके अच्छे दाम मिलते हैं।"

"यदि तुम्हें लाभ हो तो मैं सहर्ष चलूंगा।"

"भालू का शिकार करना अत्यन्त सरल है। बन्दूक या भुजाली की कोई आवश्यकता नहीं। केवल दो मज़बूत डंडों से काम चल जाता है और उन में भी एक छोटा और एक बड़ा होना चाहिए।"

"तुम कैसी अजीब बात कर रहे हो। वह शेर से कम शक्तशाली नहीं होता।"

"शेर उछल कर वार करता है, लेकिन भालू खड़े होकर मल्ल युद्ध करता है।"

"मल्ल युद्ध में मनुष्य उसको पछाड़ सकेगा ?"

"उसकी भी एक तरकीब है। रीछ खड़े होकर आक्रमण करता है। आक्रमण होने पर आप अपना बड़ा डंडा उसके मुख में डाल दें। वह उसे अपने दोनों हाथों से पकड़ उसे निकालने में अपनी शक्ति लगावेगा। इसी बीच आप अपने छोटे डंडे से उसकी नाक पर प्रहार करें। जब तक वह शिथिल होकर गिर न पड़े, प्रहार करते जायं। थोड़ी देर में वह मर जायगा।"

"इसको करना उतना सरल नहीं, जितना कहना।"

"चलिए, अगर कोई भालू मिल गया तो मैं दिखा दूंगा कि उसका मारना कितना सरल है। आइए, इसी पहाड़ी की कन्दराओं में वे रहते हैं।"

आरमो आगे-आगे और उसके पीछे मेजर पहाड़ी पर चढ़ने लगे। पगडण्डी के इधर-उधर टुई दौड़ता-सूंघता चल रहा था।

वे अभी कुछ दूर गए होंगे कि बन्दूक की आवाज़ से वातावरण कम्पित हो गया। तीनों जहाँ के तहां स्थिर हो गए। टुई दिशा का अनुमान लगाकर उधर जाने वाला था, कि आरमो उसको पकड़ कर थपथपाने लगा। मेजर भी इधर-उधर टोह लेने लगे।

आरमो ने शंकित स्वर में कहा—"मालूम होता है कि चीनी सैनिक आ गए। आइए, इस खोह में छिप जांय। उनको जाने दें, नहीं तो किसी विपद में फँस जायेंगे।"

मेजर की प्रतिशोध भावना जाग्रत हो गई। आगे बढ़ते हुए कहा—"तुम छिप जाओ, मैं उन्हें ललकारता हूँ।"

"ठहरिए, जल्दी न कीजिए। यदि वे अधिक हुए तो हम लोग सेंतमेंत मारे जायेंगे। किसी जगह छिप कर देखें कि वे कितने हैं?"

उधर जंगल से हँसने–बोलने के शब्द प्रतिध्वनित होने लगे। इस समय वे पहाड़ की कन्दरा के समीप थे, और उसके नीचे के जंगल से आवाज आ रही थी। आरमो उनको घसीट कर एक बड़े पत्थर की आड़ में ले गया, और उनके प्रकट होने की प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी देर पश्चात् उसने दो चीनी सैनिकों को जंगल से निकलते देखा। उनमें से एक लम्बा, और एक छोटा था। दोनों फौजी वर्दी पहने थे। एक के हाथ में साधारण बन्दूक थी, और दूसरे के हाथ में टामीगन। जब वे प्रकाश में आए, तब मेजर को बन्दूक वाला व्यक्ति कुछ पहचाना–सा प्रतीत हुआ। दूसरे क्षण उन्होंने स्पष्ट पहचान लिया कि वह या तो सैनिक वेष में प्रकाश कौर है, अथवा उसी से मिलता-जुलता कोई अन्य। वह उसका पुरुष वेष देख चुके थे, किन्तु इस समय दूसरा वेष होने पर वह ठीक निर्णय न कर सके। मेजर ने अधीर होकर अपनी बन्दूक साधी, और जब

तक आरमो उनको रोके, तब तक उन्होंने बन्दूक दाग दी। निशाना टामीगन वाले सिपाही पर बैठा, और वह वहीं ढेर हो गया। आरमो को भी दूसरे पर निशाना साधने के लिए बाध्य होना पड़ा। उसकी गोली से दूसरा चीनी सैनिक भू लुंठित होने लगा। उनके गिरते ही मेजर दौड़ पड़े, किन्तु उनके पहले टुई भौंकता हुआ पहुँच गया, और उसकी गर्दन पकड़ने वाला था कि आरमो ने पहुँच उसका पट्टा पकड़ कर पृथक् किया। मेजर भी उस समय तक वहाँ पहुँच गए थे। उसे देख कर उन्हें निश्चय हो गया कि वह प्रकाश कौर ही है। जाते ही एक कसकर ठोकर लगाने वाले थे कि आरमो ने उन्हें पकड़ लिया, और कहा—"यह क्या अन्याय करते हैं! गिरे हुए पर पद प्रहार नहीं किया जाता।"

"तुम नहीं जानते कि यह कौन है?"

"क्या आप इसे पहचानते हैं?"

"यह वह है जिसके कारण मेरी चौकी के जवान बन्दी बनाए गए। इसी के मोहजाल में फँसने से मेरी यह अधोगति हुई। किसी को मुंह दिखाने योग्य नहीं रहा। मेरे जीवन को इसने विषाक्त बनाया है, मैं इसका रक्तपान करूँगा।"

मेजर की आकृति भयंकर हो गई। पराजय का आक्रोश साकार हो गया, और एक ठोकर लगाते हुए कहा—"होश में आ अभागिन, अब अपने पापों का प्राश्चित कर।"

वस्तुत: वह प्रकाश कौर थी, जो मेजर को ढूंढ़कर पकड़वाने आई थी। मेजर की ठोकर से वह चैतन्य हो गई, और बैठ कर उन्हें देखने लगी।

मेजर ने कड़क कर कहा—"देख अभागिन, भगवान् का न्याय। जैसे तुझे प्यार किया था, वैसे ही तुझे मौत के घाट उतारूँगा।"

प्रकाश उनके रौद्र रूप को देख कर हँसने लगी, फिर बोली—"मुझे मरने का कोई ग़म नहीं, किन्तु तुझको भी मेरे साथ चलना होगा। चीनी सैनिकों को धोखा देकर निकल भागा, किन्तु अब मुझ से भाग कर नहीं जा सकता। जासूस तो अपनी मृत्यु हथेली पर लिए घूमते हैं। तेरे जैसे हजारों भारतीय सैनिकों को कैद करवा दिया, बस मेरा कार्य समाप्त हो गया। थोड़ी

देर में मेरे साथी आने वाले हैं।"

मेजर भुजाली से प्रहार करने के लिए नीचे झुकते हुए बोले—"पहले तुझे मार लूं, फिर उनसे भी निबटूंगा।"

प्रकाश कौर करुण दृष्टि से देखती हुई बोली—"प्यारे के हाथ से मरने में भी सुख है। मेरी केवल एक प्रार्थना है, वह भी अन्तिम समय की। क्या उसे पूरी नहीं करोगे ?"

उसकी दीन दृष्टि ने मेजर का दिल हिला दिया। पुराना प्रेम, जो मुरझा गया था उसकी दीन दृष्टि की रस-धार से हरा होने लगा। उन्होंने पूछा—"क्या कहती है ?"

"तुम विश्वास न करोगे।"

"विश्वास करूँ या न करूँ, किन्तु तू कह तो।"

"मैं तुम्हें अब भी प्यार करती हूँ।"

"व्यर्थ की बातें छोड़ो। क्या कहना चाहती हो, कहो।"

"यही कि मारने के पहले मुझे एक बार प्यार कर लो।"

"तू अब भुजाली से प्यार की जायगी।" कहते हुए उन्होंने मारने के लिए भुजाली वाला हाथ ऊपर उठाया ही था कि, चीते की तरह सहसा उछलती हुई उसने एक छोटा छुरा अपने वस्त्र से निकाल मेजर की छाती में घुसेड़ दिया, और उधर मेजर की भुजाली उसकी गर्दन पर बैठी। दोनों के प्राण एक साथ,एक ही क्षण में शरीर से विलग हो गए, और दोनों के मृत शरीर एक दूसरे के ऊपर गिर कर तड़पने लगे।

पलक भाँजते सब काण्ड हो गया। आरमो मेजर का शव उठाकर पृथक् करने, और टुई बड़े वेग से भूंकने लगा।

मेजर ने अपने पाप का प्रतिशोध तथा प्रायश्चित प्रकाश कौर अथवा लूंग के प्राण लेकर और अपने देकर कर डाला। क्रिया की प्रतिक्रिया दोनों के बलिदान लेकर शान्त हुई।

३९

जिस तिथि को अमेरिका से लैम्बर्ट और रमणी मोहन भारत आने वाले थे, नवाबजादा अपने सब साथियों समेत ठीक एक दिन पहले दिल्ली आ गए। राणा अभी बिल्कुल स्वस्थ नहीं थे, किन्तु चलने-फिरने योग्य हो गए थे। वह जब अपने घर जाने लगे, तब नवाबजादा ने उन्हें किसी प्रकार नहीं जाने दिया, और अपने पुरफिजाँ महल में उनके ठहरने और शेष उपचार का प्रबन्ध कर दिया। प्रमोद और प्रभा को भी वह रखना चाहते थे, परन्तु राणा राजी न हुए, और वे अपने घर पहाड़गंज चले गये। मकबूल को छुड़ाकर लाने वाली नर्स भी उनकी अतिथि हुई, और ब्रजमोहन दास जी तो पहले से ही उनके मेहमान थे। नैयर और संतोष अपने-अपने घर गए।

पुरफिजाँ महल जो अभी तक शान्त और सूना था, पुनः चहल-पहल से मुखरित हो उठा। नवाबजादा की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था। अपने जीवन में वह इससे अधिक सुखी कभी नहीं हुए थे। सबसे अधिक आकर्षण था, उस नर्स की ओर, जिसकी बदौलत मकबूल मियाँ सही-सलामत घर लौट सके थे।

दिल्ली पहुँचते ही उन्होंने अपने प्रधान मुनीम से रत्न जड़ित आभूषण मँगवाए, और तीसरे पहर जब अन्य मेहमान विश्राम कर रहे थे, उनको लेकर उसके कमरे में गए, और बोले—"बेटी, मेरी भेंट मंजूर करो।"

उसने मुस्कराते हुए कहा—"माफ कीजिए, मैं मुआविजा की ख्वास्तगार नहीं, सिर्फ अमेरिका का पासपोर्ट बनवा दें।"

"यह कैसी अजीब बात है? बाप को छोड़कर अमेरिका किस लिए जाओगी?"

"अपने वालिद के खानदान का पता लगाने। देखूं, कोई मिलता है या नहीं।"

"तुम क्या चीनी नहीं, अमेरिकन हो?"

"मैं अमेरिकन बाप और चीनी माँ की औलाद हूँ। क्या मकबूल साहब ने आपको नहीं बताया?"

"न उसने बताया, और न तुमने। मेरे सवाल का जवाब अब मिल गया।"

"कैसा सवाल ?"

"मैं सोचता था कि बबूल के दरख्त में यह आम कैसे फला ? पैदायशी धोखेबाज चीनियों की औलाद क्या जाँनिसार हो सकती है ? यह सवाल बराबर खुटक पैदा कर रहा था। अब मालूम हुआ कि दरहकीकत तुम अमेरिकन बाप की औलाद हो, फिर क्योंकर तुम्हारे दिल में दर्द पैदा न हो।"

"आप यह क्यों नहीं सोचते कि मुझे मकबूल साहब की वजह से चीनियों की कैद से नजात मिली। मैं उनकी तहेदिल से अहसानमन्द हूँ, और जैसी हिफाजत से वह मुझे यहां तक ले आए, उसके लिए ताजिन्दगी अहसान मानूंगी। आप यह तोहफे रखिए। बस, मुझे पासपोर्ट की दरकार है।"

"लेकिन मैंने तुम्हें अपनी लड़की बनाया है, उसका भी ख्याल करो।"

"एक आवारा लड़की को आपने अपनी औलाद का रुतबा बख्शा, इतना काफी है। मैं ताजिन्दगी इस रिश्ते को फख्र के साथ निबाहूँगी।"

"लेकिन मैं तुमको अकेले अमेरिका नहीं जाने दूंगा।"

"अमेरिका में मुझे कोई डर नहीं है, और इसके अलावा मैं अपनी हिफाजत आप कर सकती हूँ। डर तो चीनियों की सरहद तक था।"

"लेकिन तुमको मकबूल की दुल्हन बनाने के लिए मैंने और राणा ने मशविरा किया है।"

"बगैर मुझसे दरयाफ्त किए ?"

"बेटी बनाने के बाद तुम्हारी शादी का हक मेरा है।"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। नवाबजादा ने अनुभव किया कि औषधि काम करने लगी है। उन्होंने आगे बढ़कर पितृस्नेह से उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा—"अगर मकबूल के साथ तुम रिश्ता पसन्द नहीं करती, तब तुम्हारी मर्जी मुताबिक किसी दूसरे से शादी कर दूंगा। लेकिन अब तुम अपने बूढ़े बाप को छोड़कर नहीं जा सकती। ये गहने रख लो। शाम तक तुम्हारे लिए नई–नई पोशाकें आ जाएँगी। कल सुबह कुछ मेहमान

अमेरिका से आ रहे हैं। मेरी तरफ से तुम उनकी पेशवाई करोगी।" यह कहकर नवाबजादा आभूषणों के डिब्बे रखकर चले गए। वह अपनी स्थिति पर विचार करने लगी।

दूसरे दिन पालम हवाई स्टेशन पर केवल नवाबजादा और सेठ ब्रजमोहनदास रमणीमोहन और लैम्बर्ट के स्वागत के लिए गए, और उन दोनों को भी वह अपने घर ले आए। लैम्बर्ट ने कहा भी कि उन्होंने केबिल द्वारा आकाश होटेल के अधिकारियों को सूचना देकर कमरे सुरक्षित करवा लिए हैं, परन्तु नवाबजादा अपनी जिद पर अड़े रहे। अन्ततोगत्वा उन्हें पुरफिजाँ महल आना पड़ा।

उसी सन्ध्या को नवाबजादा ने अपने मित्रों नैयर तथा सन्तोष को भी टेलीफोन से बुला लिया। वह बड़ी उमंग के साथ उस शाम की पार्टी का प्रबन्ध करने लगे। सबके आ जाने पर नवाबजादा ने उत्कृष्ट विलायती मदिरा गिलासों में ढालते हुए कहा—"आज वाकई मेरी बड़ी खुशनसीबी का दिन है। राणा और मकबूल दुश्मनों के दाँत खट्टे कर सही सलामत हमारे बीच फिर आ गए। मिस्टर लैम्बर्ट के साथ रमणीमोहन का वापस घर लौटना भी बेहद खुशी की बात है। एक बार फिर हमारे दोस्त नैयर और सन्तोष ने इस खुशी के जलसे में शिरकत करना मन्जूर किया। पस, हम सब हर माने में खुश हैं। और सबसे बड़ी खुशी की बात है कि मुझे इस जंग में एक लड़की मिली, जिससे मेरा घर रोशन हुआ।"

राणा ने सब पर दृष्टि डालते हुए कहा—"तारीफ की बात यह है कि जो लोग यहाँ इकट्ठे हुए हैं, सब चीनी जासूसों के षड़यन्त्र में बुरी तरह फँस चुके थे, लेकिन उसका भंडाफोड़ नवाब साहब और मिस्टर लैम्बर्ट के द्वारा हुआ, तथा हम सब बाल-बाल बच गए। इसलिए हम सबसे पहले नवाब साहब की तन्दुरुस्ती और सेहत के लिए ईश्वर को धन्यवाद देते हुए पी रहे हैं। नवाब साहब, चिरजीवी हों।"

गिलासों का स्पर्श होने लगा, और पहला दौर खत्म हुआ।

दूसरी बार राणा ने गिलासों में मदिरा ढालते हुए कहा—"अब दूसरी

बार मिस्टर लैम्बर्ट का हम अपने बीच स्वागत करते हैं, और उनकी सेहत के लिए स्वास्थ्य कामना करते हुए पुन: ईश्वर को धन्यवाद देते हैं।"

रमणीमोहन ने कहा—"राणा साहब, मिस्टर लैम्बर्ट ने हमारी भरपूर सहायता की है। आप लैम्बर्ट के छद्म नाम से चीनियों के षड़यन्त्र का भंडा-फोड़ करने में सफल हुए हैं।"

"इनका असली नाम बताइए।"

"मैं पहले अपने पिता को कुछ बातें लिख कर सूचना दे चुका हूँ। इनका असली नाम है मिस्टर जान वुडवर्थ। आप अमेरिका के प्रसिद्ध उद्योगपति और सिनेटर हैं, जो अपनी भतीजी की तलाश में पहले चीन गए। जब उन्हें पता लगा कि वह चीनी अधिकारियों द्वारा जासूसी कार्य में नियुक्त हुई है, तब उसका पता लगाते भारत आए, क्योंकि उनको मालूम हो चुका था कि चीनियों ने भारत में अपने गुप्तचरों का जाल बिछा दिया है। यहाँ उनकी भेंट मिस मिलर नामक चीनी जासूस से हुई जो अमेरिकन पिता और चीनी माता से उत्पन्न थी। उससे इतना मालूम हुआ कि उनकी भतीजी जीवित है, परन्तु उसका ठौर-ठिकाना नहीं मालूम हो सका। भटकते हुए यह दिल्ली आए, और यहाँ फिर मिस मिलर से मुलाकात हो गई। सुयोग से वह दिल्ली में उसी होटेल में ठहरे जहाँ मैं ठहरा था, यहां तक कि हमारे दोनों के कमरे बगल में थे। वहीं मेरा आलाप उनसे हुआ, और चूंकि वह बहुत मिलनसार स्वभाव के हैं, उनके साथ मेरी घनिष्टता हो गई। मिस मिलर से पुरानी जान-पहचान होने से वह होटेल में आने लगी। एक रात मिस मिलर को इतनी शराब पिलाई गई कि वह बेखबर हो गई उसकी छिपी जेबें ढूंढ़ने पर हमें एक नक्शा मिला, जिसमें चीन की भावी योजनाओं तथा लक्ष्य को स्पष्ट किया गया था। उस नकशे को हम लोगों ने अपने कब्जे में कर लिया। यहीं से चीनी गुप्तचरों का आक्रमण आरंभ होता है। मिस्टर लैम्बर्ट अथवा मिस्टर जान वुडवर्थ ने अपनी सहायता के लिए अमेरिका से एक प्रायवेट जासूसी एजन्सी के कई जासूसों को भी बुला लिया, जिन्होंने मिस मिलर का पीछा किया, और जब वह अपने एक सहायक के साथ

इनके कमरे में घुसी, उसे पकड़वाने का प्रबन्ध किया। आगे का हाल आप लोग जानते हैं।"

यह सुन कर सन्तोष और नैयर ने दृष्टि-विनिमय किया, और नैयर ने कहा—"आज उस हत्याकांड का पता चला। हम सब शिर फोड़ते रहे, और हमारी पुलिस को भी कोई सुराग नहीं मिला।"

रमणीमोहन ने फिर कथा का सूत्र पकड़ा—"यहाँ से मिस्टर वुडवर्थ कलकत्ता गए, और एक दिन उनसे मेरी अचानक भेंट हो गई। यह वही दिन था जब मुझको ढूँढ़ने के लिए आप लोग कलकत्ता गए थे, और मिसेज रिपुदमन सिंह, कला, और चीनी जासूसों के सरदार आपस में मर खप गए थे। मिस्टर वुडवर्थ के एक जासूस ने इस हत्याकांड की सूचना जिस समय दी, मैं भी उनके साथ उनके होटेल में बैठा था। मिसेज रिपुदमन सिंह और उसके साथियों की वास्तविकता प्रकट हो गई थी, अतएव उन्होंने मुझे अपने साथ अमेरिका चलने का निमंत्रण दिया, और मैंने उसे स्वीकार किया। अमेरिका में मिस्टर वुडवर्थ ने जी-जान से भारत को सैनिक सहायता प्रदान करवाने का प्रयत्न किया, और स्वयं इसी उद्देश्य से पुनः आए हैं।"

मिस्टर लैम्बर्ट अथवा जान वुडवर्थ के स्वास्थ्य की कामना की जाने लगी। इसी समय मकबूल मियाँ को बचाने वाली नर्स ने कमरे में प्रवेश किया। उसको देखते ही नबाब साहब की भौंहें तन गईं, परन्तु वह किसी ओर ध्यान दिए बिना जान वुडवर्थ के पास आकर बोली—"मैंने बाहर ठहर कर सब कहानी सुनी है। आपका नाम मिस्टर जान बुडवर्थ है। क्या आपके परिवार में कोई चार्ल्स बुडवर्थ भी था, अथवा उसके सम्बन्ध में कुछ जानते हैं?"

जान वुडवर्थ ने चकित दृष्टि से कहा—"चार्ल्स बुडवर्थ मेरा बड़ा भाई था, जो च्यांग काई शेक का फौजी परामर्शदाता था। लाल चीन के अधिकारियों ने उसे और उसकी चीनी पत्नी को मरवा दिया था, किन्तु उसकी पाँच-छः वर्ष की लड़की को नहीं मारा, तथा उसे जासूस बनाया है। मैं उसी की खोज में आया था।"

उसने कांपते स्वर में पूछा—"क्या उस अभागिन लड़की का नाम

आपको मालूम है ?"

"नाम ही क्यों, उसका फोटो भी उसी वयस का मेरे पास है। उसके साथ मेरे भाई तथा भौजाई का भी चित्र है, जिसकी संक्षिप्त प्रतिलिपि इस समय भी मेरे पास मौजूद है।" कहते हुए अपनी जेब से घड़ी निकाल और उसका पिछला पल्ला खोल कर दिखाते हुए कहा—"यह देखिए, इसमें जो स्त्री-पुरुष गोद में बच्चे को लिए बैठे हैं, वही मेरे बड़े भाई, भौजाई और उनकी लड़की मेरीना है। तुम कौन हो ?"

मेरीना उडवर्थ, थर-थर काँप रही थी। वह अपने को स्थिर न रख सकी और एक कुर्सी पर बैठ गई। उसने सजल नयनों से कहा—"मेरे प्यारे चाचा, मैं वही अभागिन मेरीना हूँ। मेरे पास भी इसी फोटो की प्रतिलिपि है, जिसके सहारे मैं अपने परिवार को ढूंढ़ निकालने का साहस करती थी।"

उसने अपने लाकेट से उसी के सदृश तथा आकार का फोटो निकालकर उनके सामने रख दिया।

नवाबजादा, राणा और उनके सब साथी चकित होकर उन दोनों को देखने लगे।

....

प्रातःकालीन कलेवा के समय नवाबजादा, राणा, लैम्बर्ट अथवा उडवर्थ, रमणी मोहन, ब्रजमोहन दास, मेरीना और मकबूल मियाँ इकट्ठे हुए। कुछ मामूली बातों के पश्चात्, लैम्बर्ट ने कहा—"नवाब साहब, चीनियों ने अपनी आन्तरिक परिस्थितियों के कारण युद्ध बन्द अवश्य किया है, किन्तु यह अस्थायी विराम है।"

रमणी मोहन—"यही मेरा अनुमान है। जो नकशा हमें चीनियों के मन्सूबों का मिला है, उसके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि उनकी योजनायें दीर्घकालीन हैं, और वे दुनियाँ को पुनः तीसरे महायुद्ध में घसीटना चाहते हैं। उनका विश्वास है कि युद्ध के बिना उनकी समस्यायें सुलझेंगी नहीं। अपने मानव बल के सहारे वह दुनियाँ को ललकार रहा है।"

मेरीना ने अनुमोदन करते हुए कहा—"बेशक, चीन की योजना समग्र

संसार पर शासन करने की है। वह साम्राज्यवादी है, और वह फिर तीसरे महायुद्ध का प्रारम्भ करेगा, यह निश्चित है।"

लैम्बर्ट ने मेरीना के समर्थन में कहा—"निश्चय ही तीसरे महायुद्ध के बादल घिरने लगे हैं। संसार के राजनीतिज्ञों के सामने एक विकट परिस्थिति आ गई है। विश्व एक ऐसे मोड़ पर आ गया है, जहाँ एक ओर प्रलय और विनाश है, और दूसरी ओर समृद्धि, सौरमण्डल के गृहों में प्रवेश और मानव-बुद्धि के चमत्कारिक अन्वेषणों से अनन्त सुख-शान्ति है। दूर क्षितिज पर चीनी अजदहे का व्यावर्तन संसार को अपनी पूंछ की लपेट में लेने को उद्यत हो रहा है। उससे संसार को बचाना है।"

नवाबज़ादा ने क्रोध और घृणा से कहा—"खतरा सिर्फ माओवाद से है। माओवाद को खत्म करने के बाद ही दुनियाँ में अमन चैन हो सकेगा।"

राणा ने जोश के साथ कहा—"माओवाद को नष्ट करने के लिए मैं भगवान कृष्ण की भाँति पुनः शस्त्र ग्रहण करूँगा।"

मकबूल मियाँ ने भी उसी जोश से कहा—"और मैं राणा भाईजान का छोटा भाई होने से लक्ष्मण की तरह छाया की तरह साथ रहूँगा।"

लैम्बर्ट ने मेज पर हाथ मारते हुए कहा—"और मैं विश्वास दिलाता हूँ कि स्वतन्त्र संसार का गढ़ अमेरिका, और सभी पश्चिमीय राष्ट्र इस चीनी व्यावर्तन को छिन्न-भिन्न करने में धन, शस्त्रास्त्रों से पूरी सहायता देंगे।"

रमणी मोहन ने उठकर नारा लगाया—"जयहिन्द, जय भारत।"

जय-जयकार की ध्वनि चीनी व्यावर्तन का संहार करने के लिये चीन की ओर अग्रसर हुई।"